ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2013-14 पंचम अंक

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

(डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से सम्बद्ध)

Scanned by CamScanner

कुछ रोचक तथ्य.......

- प्राध्यापकों को वर्कशॉप, सेमिनारों व कान्फ्रेंस हेतु प्रेरित करना।
- यू. जी. सी. द्वारा संचालित एकेडमिक स्टाफ कालेज, अलीगढ़ में ओरियन्टेशन व रिफ्रेशर कोर्स में लगभग 80 प्रतिशत प्राध्यापकों की सहभागिता।
- पी-एच. डी. चैम्बर ऑफ कामर्स तथा इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता कराना।
- महाविद्यालय द्वारा सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत समीप के छः गावों (पड़ियावली, मडराक, बढ़ौली फतेह खां, मईनाथ, न्यौटी, मुकन्दपुर) की निर्धन लड़कियों को बी. ए. में प्रवेश के समय शिक्षण शुल्क मुक्त करना व स्वराज्य स्वाबलम्बी योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में शिक्षित कन्याओं की शादी के सुअवसर पर उनको एक सिलाई मशीन उपहार स्वरूप प्रदान करना।
- महाविद्यालय की सहयोगी संस्था ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI) द्वारा ज्ञान स्वराज्य योजना के अन्तर्गत छात्रों को ₹ 5,000 रु. की छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- सत्रीय परीक्षाओं व प्रतियोगी परीक्षाओं में ओ.एम.आर. शीट का प्रयोग कराना।
- महाविद्यालय में योग्यतानुसार छात्रवृत्ति प्रदान करना।

विशिष्ट उपलब्धियाँ ....

- महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा नैक से ग्रेड ए को प्राप्त करना।
- मंडल में स्व-वित्त पोषित संस्थानों में उ.प्र. शासन द्वारा लेपटौप वितरण योजना के अन्तर्गत 745 छात्रों को सर्वाधिक लेपटौप का प्राप्त होना।
- महाविद्यालय की छात्रा हिमानी भारद्वाज को राष्ट्रीय स्तर पर शूटिंग में पदकों को प्राप्त करना।
- महाविद्यालय की छात्र सचिन सैनी द्वारा कुश्ती में जिला केसरी का पदक प्राप्त करना।
- महाविद्यालय द्वारा बी. बी. ए. तथा बी. सी. ए. के छात्रों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रत्येक को एक कम्प्यूटर टेबलेट उपहार में प्रदान करना।
- महाविद्यालय द्वारा त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'ज्ञान दर्शन', पुरातन छात्रों के लिए 'ज्ञान दीप' एवं वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' एवं शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा 'ज्ञान भव' जरनल का नियमित प्रकाशन करना।
- अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में छात्रों द्वारा विभिन्न पदकों को प्राप्त करना।
- आज की आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए सोशल मीडिया के अन्तर्गत फेस बुक पर 'ज्ञान वाटिका के माध्यम से छात्रों को नवीनतम जानकारी से अवगत कराना।

Scanned by CamScanner

ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2013–14

संरक्षक

डॉ. वाई. के. गुप्ता
(प्राचार्य)

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. एस.एस. यादव

मुख्य सम्पादक

डॉ. ललित उपाध्याय

सह सम्पादक

डॉ. समर रजा
डॉ. सोमवीर सिंह
श्री रंजन सिंह
श्रीमती रंजना सिंह

विशेष सहयोगी सदस्य

डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ
डॉ. हीरेश गोयल
डॉ. रेखा शर्मा
श्रीमती शोभा सारस्वत

परामर्श दाता सदस्य

श्री मनोज यादव
डॉ. बी. डी. उपाध्याय
डॉ. खजान सिंह
डॉ. रत्न प्रकाश

Scanned by CamScanner

सरस्वती आराधना

सुप्त वीणा के तारों को झंकार दे, शारदे, शारदे मेरी माँ शारदे।
कल्पनाओं को अनुरुप आधार दे, शारदे, शारदे मेरी माँ शारदे।।
हो मुदित मन मयूरा लगे नाचने, हो कृपा मूक भी श्रुति लगे वाचने।
पंगु के भी युगल पग थिरकने लगें। तू कृपा का जिसे माँ पुरस्कार दे।।
राह भूली हुई हूँ, बहुत दीन हूँ, नैन होते हुये ज्योति से हीन हूँ।
द्वार पर आज माँ तेरी बेटी खड़ी, ज्ञान दे, भक्ति दे, शक्ति दे, प्यार दे।।
मैं सृजन के नवल गीत गाऊँ सदा, गीतिका प्यार की गुनगुनाऊँ सदा।
लेखनी हो सबल, साधना हो सफल, कल्पना हो विमल, कर चमत्कार दे।।
शीश पर आशीष तेरा चलूँ मैं स्वयं, हो सृजित काव्य सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्।
आज वरदान दे मात वरदायिनी, निज ज्योत्सना पर वार दे।।

Scanned by CamScanner

हमारे प्रेरक

संस्थापक
डॉ. ज्ञानेन्द्र जी गोयल
22.09.1923 - 11.06.2002

समाज सेविका
श्रीमती स्वराज्य लताजी गोयल
22.09.1927 - 20.10.2011

श्रद्धासुमन

डॉ. गोयल साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे सक्रियता, विनम्रता, दयालुता, सजन्नता एवं सरल व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति थे। सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनकी कार्यशैली एवं मृदुभाषिता सबका मन मोह लेती थी। अलीगढ़ के एक निर्जन स्थान में ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना करने की योजना उनकी दूरदर्शिता एवं कल्पना शीलता की द्योतक है, जिसके लिए यहाँ के क्षेत्रवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे। ऐसे महामानव को हमारा शत-शत नमन। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वराज्यलता गोयल राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक एवं परोपकारिता की धनी तथा महान स्वन्तत्रता सेनानी थीं। आपका महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा।

Scanned by CamScanner

शुभकामना संदेश

राजकुमारी चौहान
सांसद
लोकसभा क्षेत्र, अलीगढ़
सदस्य :
- रेल संबंधी स्थायी समिति भारत सरकार
- परामर्शदात्री समिति स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार
- उ0प्र0 राज्य समाज कल्याण बोर्ड, उ0प्र0
- दूरभाष परामर्श समिति, अलीगढ़ उ0प्र0

सत्यमेव जयते

निवास : ☐ 73, साउथ एवेन्यू
नई दिल्ली –110011
☐ 4/67, किशोर नगर
आई.टी.आई. रोड, अलीगढ़
फोन : 0571–2406060
कार्यालय : ☐ निकट बन्नादेवी थाना
जी.टी. रोड, अलीगढ़
फोन : 0571–2513331

पत्रांक :.............

दिनांक : 07.02.2014

प्राचार्य
ज्ञान महाविद्यालय
आगरा रोड, अलीगढ

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि "ज्ञान दर्शन" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के विधार्थियों का मार्ग दर्शन करेगी तथा अभिवावकों एवं शुभचिन्तकों तक विद्यालय की उपलब्धियों को पहुंचायेगी मेरी बहुत–बहुत शुभकामनायें।

भवदीया

राजकुमारी चौहान
राजकुमारी चौहान
सांसद
लोक सभा क्षेत्र–अलीगढ़

Scanned by CamScanner

विवेक बंसल

सदस्य
उत्तर प्रदेश विधान परिषद
आगरा खण्ड स्नातक क्षेत्र

"अयोध्या कुटी"
मैरिस रोड, अलीगढ़-202 001
फोन : 0571-2403302, 2403476

दिनांक 29/01/2014

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प 2013–14" का प्रकाशन कराया जा रहा है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में विद्यार्थियों को ज्ञानवर्धक एवं रोचक सामग्री पढ़ने को मिलेगी।

मैं इस पत्रिका के निरन्तर अग्रसर होने की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(विवेक बंसल)

Scanned by CamScanner

ज़फर आलम
नगर विधायक, अलीगढ़
समाजवादी पार्टी
आवास : 4/15, केला नगर, अलीगढ़ - 202002

सदस्य विधान सभा
उत्तर प्रदेश

ظفر عالم (نگر ودھایک، علی گڑھ)
लखनऊ:
23-24, विधायक निवास, मीराबाई मार्ग-5, लखनऊ
कैंप कार्यालय :
महिला थाने के सामने, जेल रोड, अलीगढ़

पत्रांक ZA/2014/00024G

दिनांक 07/02/2014

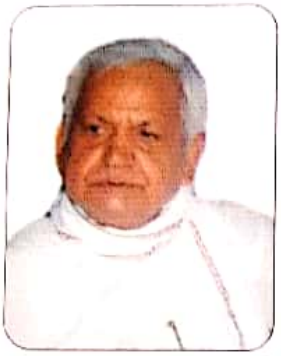

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' के पंचम संस्करण को प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय जहाँ एक ओर विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने में सहयोग कर रहा है। वहीं सामाजिक सरोकार के अन्तर्गत स्वराज्य स्वावलंबी योजना संचालित कर रहा है। गांव बढ़ौली फतेह खॉं से इस योजना का शुभारम्भ करते हुये मुझे सुखद अनुभूति प्राप्त हुई।

मैं 'ज्ञान पुष्प' के सफल प्रकाशन हेतु प्रबन्ध समिति, प्राचार्य, समस्त प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व विद्यार्थियों को शुभकामना प्रदान करता हूँ। मुझे आशा है कि मुख्य संपादक के नेतृत्व में संपादकीय टीम का प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

भवदीय

जफर आलम
नगर विधायक/लोक सभा प्रत्याशी
अलीगढ़

Scanned by CamScanner

शुभकामना संदेश

धर्मवीर
आई.पी.एस.
एस.एस.पी., अलीगढ़

दिनाँक फरवरी 07, 2013

"संदेश"

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि **ज्ञान महाविद्यालय**, अलीगढ़ द्वारा गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प 2013-14" प्रकाशित की जा रही है। समाज के निर्माण में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है तथा युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से प्रदान किये जाने में अहम् भूमिका है।

2. मुझे आशा है कि शिक्षक वर्ग अपने गुरूत्तर दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की शिक्षा एवं ज्ञान प्रदान कर समाज एवं देश के विकास की ओर अग्रसर करते रहेंगे। वार्षिक ज्ञान पुष्प पत्रिका में छात्रों द्वारा अपने ज्ञान के आधार पर विभिन्न विषयों पर लेख आदि प्रकाशित करने से अन्य छात्र एवं पाठक लाभान्वित होंगे तथा छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

2. मैं वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभ-कामनायें प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि ज्ञान महाविद्यालय सभी छात्र-छात्रओं के लिये प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करता रहेगा।

भवदीय,

(धर्मवीर)

Scanned by CamScanner

श्रीमती आशा देवी

अध्यक्षा

शुभकामना संदेश

बड़े हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञानपुष्प'' का प्रकाशन विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी होने जा रहा है। पत्रिका महाविद्यालय की प्रगति एवं उपलब्धियों का प्रतिबिम्ब होती है और यह उसकी शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक क्रियाकलापों का बोध कराती है। पत्रिका के माध्यम से छात्र/छात्राओं, शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की लेखन क्षमता को अभिव्यक्त करने का सुअवसर मिलता है। उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा निजीकरण के प्रारम्भिक काल में स्थापित यह महाविद्यालय ज्ञान-परिवार की अमूल्य निधि है जोकि शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

कर्मठ एवं योग्य चिकित्सक तथा शिक्षाप्रेमी संस्थापक स्व. डा. ज्ञानेन्द्र गोयल की तपस्थली यह महाविद्यालय विकास की सभी ऊंचाइयाँ छूने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

महाविद्यालय का अनुशासन और शैक्षणिक वातावरण अनुपम और अनूठा है, जिन्हें इस महाविद्यालय में अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ है। मेरी उन सभी विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं हैं कि वे अपनी परीक्षाएं अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण करें और वे विद्यार्थी जो इस वर्ष अपनी शिक्षा पूर्ण करने जा रहे हैं, वे जहाँ भी जाएं, जिस क्षेत्र में भी कार्य करें, पूर्ण ईमानदारी, लगन एवं निष्ठा से करें, जिससे राष्ट्र, समाज एवं उनकी भी उन्नति हो तथा महाविद्यालय का नाम भी उन्नत करें।

महाविद्यालय आज जिस गौरवपूर्ण स्थिति में है, उसे यहाँ तक लाने में प्रबन्धतन्त्र, प्राचार्य, प्राध्यापकगण, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों आदि सभी का उल्लेखनीय योगदान रहा है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी सभी इसी प्रकार पूर्ण लगन, निष्ठा एवं परिश्रम के साथ कार्य करते रहेंगे।

'ज्ञान पुष्प' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आशा देवी

अध्यक्षा

Scanned by CamScanner

दीपक गोयल
सचिव

शुभकामना संदेश

हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञानपुष्प-2013-14'' का प्रकाशन होने जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की इस पत्रिका में शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं शिक्षार्थियों द्वारा स्वरचित लेख, अभिव्यक्तियों एवं उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यो का वर्णन तो होगा ही, साथ ही यह महाविद्यालय सामाजिक सरोकारों, सहगामी गतिविधियों एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का भी निर्वहन कर रहा है। मुझे विश्वास है कि 'ज्ञान पुष्प' का यह पंचम अंक भी गत अंकों की भांति ही सभी दृष्टियों से उत्तम एवं संग्रहणीय अंक सिद्ध होगा।

इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों में एक अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। जो विद्यार्थी इस समय महाविद्यालय में अध्ययनरत है, वे मन लगाकर अध्ययन करें और अपनी परीक्षाएं अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण करें। इसके लिए मेरा सभी को आशीवर्चन है।

सभी प्राध्यापक पूर्ण योग्यता एवं अनुभव रखते हैं तथा यू. जी.सी. के अन्तर्गत एकेडेमिक स्टाफ कालिज, ए.एम.यू. अलीगढ़ द्वारा आयोजित समय-समय पर विभिन्न Orientation Refresher Courses में भी प्रतिभाग करते रहते हैं, जिससे उनकी कौशल एवं क्षमता वृद्धि का लाभ सीधे तौर पर विद्यार्थियों को मिल रहा है, जिसका सफल परिणाम परीक्षाफलों में परिलक्षित हो रहा है। इस प्रकार महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से अग्रसर हो रहा है।

महाविद्यालय को प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति में पहुँचाने में यहां का प्रबन्धतन्त्र, प्राचार्य, प्राध्यापकगण, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों आदि सभी का प्रयास सराहनीय है। मुझे आशा है सभी इसी प्रकार पूर्ण निष्ठा, परिश्रम एवं समर्पण भाव से कार्य करते हुए महाविद्यालय को प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने का क्रम निरन्तर बनाए रखेंगे।

मेरी शुभकामनाएँ हैं कि यह महाविद्यालय उन्नति के उच्चतम शिखर को स्पर्श करे।

दीपक गोयल
सचिव

Scanned by CamScanner

डॉ. वाई. के. गुप्ता
प्राचार्य

प्राचार्य की कलम से

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'ज्ञानपुष्प-2013-14' का 5वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। वार्षिक पत्रिका संस्था की वर्षभर की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का परिचय कराती है, साथ ही संस्था के शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को रचनाओं के माध्यम से अपने विचार रखने का सुअवसर प्राप्त होता है। पत्रिका के माध्यम से संस्था की शैक्षणिक, पाठ्य सहगामी एवं विकासात्मक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब झलकता है। महाविद्यालय में प्रासंगिक विषयों पर विभिन्न संकायों द्वारा आयोजित विशेषज्ञों के व्याख्यानों, परिचर्चाओं, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक-साहित्यिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन के माध्यम से छात्रों की सक्रियता बढ़ती है। वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा स्व. प्राचार्य डा. एल. सी. गौड़ मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामेन्ट का आयोजन क्रीड़ा क्षेत्र की विशेष उपलब्धि रही है।

महाविद्यालय में सेवारत सभी व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग तथा प्रबन्धतन्त्र के निर्देशन से महाविद्यालय में प्रेरणप्रद एवं शिक्षानुकूल वातावरण का सृजन हुआ है। मैं महाविद्यालय के शैशव काल से ही यहाँ अध्यापन का कार्य कर रहा हूँ। 1998 में अल्प विद्यार्थियों से प्रारम्भ हुआ यह महाविद्यालय आज वृहद, व्यवस्थित एवं सुगठित रूप धारण कर चुका है।

मुझे डॉ. गौतम गोयल के साथ महाविद्यालय में विकास कार्य करने का अप्रितम अवसर प्राप्त हो रहा है। आपकी स्फूर्तिदायक युवा कार्यशैली से महाविद्यालय निश्चित ही नये कीर्तिमान स्थापित करेगा और पूरा महाविद्यालय नैक के आगामी मूल्यांकन में सर्वोच्च अंकों के साथ विभूषित होगा।

महाविद्यालय परिवार के सभी घटक अपनी-अपनी योग्यताओं का उपयोग महाविद्यालय के विकास के लिए कर रहे हैं। अपने सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। अन्त में आशा करता हूँ कि सुधि पाठक 'ज्ञान पुष्प' के इस पंचम अंक के प्रकाशन से लाभान्वित होंगे।

डॉ. वाई. के. गुप्ता
प्राचार्य

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

डॉ. ललित उपाध्याय
मुख्य सम्पादक

'ज्ञान पुष्प' पत्रिका में ज्ञान महाविद्यालय परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने भावों को शब्दों में तो उकेरता ही है, साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों व प्रगति की जानकारी भी इसके माध्यम से प्राप्त होती है।

किसी भी राष्ट्र के नव निर्माण में ज्ञान एवं युवा विद्यार्थी शक्ति का योगदान सदा ही रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक विद्यार्थी को जो महान पाठ सीखना है, वह है परिश्रम, त्याग, अनुशासन और सर्वहित। इस उदात्त दृष्टिकोण के आधार पर ही युवा विद्यार्थी शक्ति राष्ट्रशक्ति बनकर राष्ट्र को समृद्धि, उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर ले जा सकती है। स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयंती वर्ष पर यह बात और भी प्रासंगिक हो गई है।

'ज्ञान पुष्प ' के मुख्य संपादक की चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी को निभाने का कार्य कुशल प्रबंध तंत्र, प्राचार्य, शुभचिन्तकों व गुरु के आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं था। इस अवसर पर गुरुजी को भी नमन करना चाहूँगा-

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया, चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

समय का सदुपयोग भी आज की महती आवश्यकता है। महाविद्यालय परिवार के सूत्रों में प्रमुख समय की महत्ता को अंगीकार करते हुए शिक्षक एवं शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के साथ-साथ सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों, खेलकूद, शैक्षणिक भ्रमण, कम्प्यूटर ज्ञान, अतिथि व्याख्यान, दीवाली मेला, ज्ञानार्जन दिवस, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय सेमीनारों व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभाग, कौशल वृद्धि आदि विभिन्न सहभागी क्रियाकलापों में सक्रिय सहभागिता निभा रहे हैं, जिसकी एक झलक 'ज्ञान पुष्प' के पंचम संस्करण में परिलक्षित हो रही है। विभिन्न उपयोगी शैक्षणिक व सहभागी गतिविधियों के साथ 'ज्ञान परिवार-आपका परिवार' मंत्र के साथ अपने दृष्टिकोण "Center for Excellence" की ओर तेजी से अग्रसर है। छात्र-प्राध्यापक के बीच आत्मीय सम्बन्धों की प्रगाढ़ता को प्राध्यापक शिक्षण के साथ 'Mentor' की भूमिका का सफल निर्वाह कर रहे हैं।

महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी, दूरदर्शी सोच रखने वाले कर्मठ सचिव श्री दीपक गोयल एवं डॉ. वाई. के. गुप्ता (प्राचार्य) के योगदान से ही 'ज्ञान पुष्प' वार्षिक पत्रिका सारगर्भित व आकर्षक कलेवर में पल्लवित व पुष्पित हो सकी है।

इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में संपादक मंडल के समस्त सदस्यगणों का अथक प्रयास, मेहनत व पूर्णनिष्ठा रंग लाई है। मैं 'ज्ञान पुष्प' को परिमार्जित एवं संशोधित करने में प्रबन्ध समिति व परामर्शदाताओं के महत्वपूर्ण योगदान हेतु हृदय से अपना धन्यवाद प्रेषित करता हूँ। इसके साथ ही वे महानुभाव भी साधुवाद व भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आत्मीयता के साथ पत्रिका के प्रकाशन में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय के विद्यार्थी चिन्तन-मनन के साथ अपनी पढाई पूर्ण कर उच्च पदों पर आसीन होंगे एवं ईमानदारी व लगन को अपने आचरण में लाने का प्रयास करेंगे, तभी आप सभी के सहयोग रूपी प्रयासों का यह 'ज्ञान पुष्प' का पंचम संस्करण ज्ञान की अविरल विचारधारा के साथ स्मरणीय बन सकेगा। मुझे आशा सहित पूर्ण विश्वास है कि इस प्रयास में अच्छाईयों को स्वीकार कर गलतियों को नजर अंदाज करेंगे।

विद्यार्थियों की सफलता के लिए आवश्यक है साहसी होना इसलिए कहा गया है कि-

सामने हो मंजिल, तो रास्ता मत छोड़ना। मन में हो जो सपना, उसे मत तोड़ना।।

हर कदम पर मिलेगी कामयाबी, बस सितारों को छूने के लिए जमीन मत छोड़ना।।

-डॉ. ललित उपाध्याय

Scanned by CamScanner

प्राचार्य के साथ समस्त संकायों के प्राध्यापकगण

Scanned by CamScanner

प्राचार्य के साथ शिक्षणेत्तर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीगण

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के विभिन्न संकाय, योजना एवं समितियों के प्रभारी

श्री मनोज यादव
प्रबन्धक

डॉ. वाई.के. गुप्ता
प्राचार्य

डॉ.एस.एस. यादव उप प्राचार्य
प्रभारी- विज्ञान संकाय, परीक्षा समिति एवं अध्यापक कल्याण समिति
सदस्य- कालिज विकास समिति

डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ
प्रभारी - छात्र कल्याण समिति
सदस्या - कालिज विकास समिति

डॉ. वी.डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी
प्रभारी - सामाजिक दायित्व कार्यक्रम एवं प्रवेश समिति
सदस्य-कालिज विकास समिति
कार्यक्रम अधिकारी-एन.एस.एस.

डॉ. रेखा शर्मा
प्रभारी - जन सम्पर्क, चिकित्सा एवं सांस्कृतिक समिति
सदस्या- कालिज विकास समिति

डॉ. जे. के. शर्मा
प्रभारी - वाणिज्य संकाय

डॉ. खजान सिंह
प्रभारी- शिक्षक शिक्षा संकाय एवं छात्रवृत्ति व शुल्क प्रतिपूर्ति

डॉ. विवेक मिश्रा
प्रभारी - कला संकाय

श्री ललित कुमार वार्ष्णेय
प्रभारी - प्रबन्धन संकाय

डॉ. रत्न प्रकाश
प्रभारी - शोध एवं प्रकाशन समिति
सदस्य - कालिज विकास समिति

श्रीमती आभा कृष्ण जौहरी
प्रभारी - साहित्यिक समिति एवं महिला प्रकोष्ठ

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के विभिन्न संकाय, योजना एवं समितियों के प्रभारी

डॉ. प्रमोद कुमार
प्रभारी – रैगिंग नियन्त्रण समिति

श्रीमती सरिता याजनिक
प्रभारी – पुरातन छात्र समिति

श्री लखमी चन्द्र
प्रभारी – अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति

श्री गिर्राज किशोर
प्रभारी – रोजगार व परामर्श समिति

डॉ. ललित उपाध्याय
मीडिया समन्वयक

श्री नागेन्द्र सिंह
प्रभारी – शारीरिक शिक्षा व खेलकूद

कु. सुषमा वर्मा
पुस्तकालयाध्यक्षा

श्रीमती मीना खान
कार्यालय अधीक्षिका

कालिज विकास समिति

बाएं से डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, डा. बी. डी. उपाध्याय, डा. एस. एस. यादव,
श्री मनोज यादव, डा. वाई. के. गुप्ता, डा. रत्न प्रकाश एवं डा. रेखा शर्मा

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के दृश्य

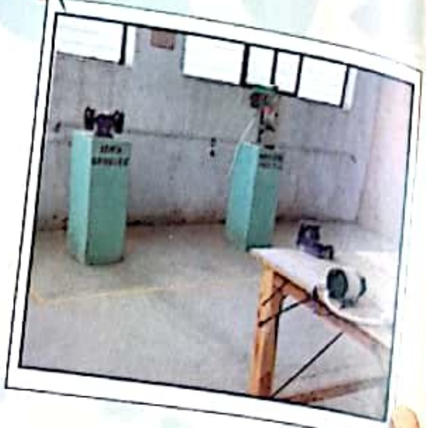
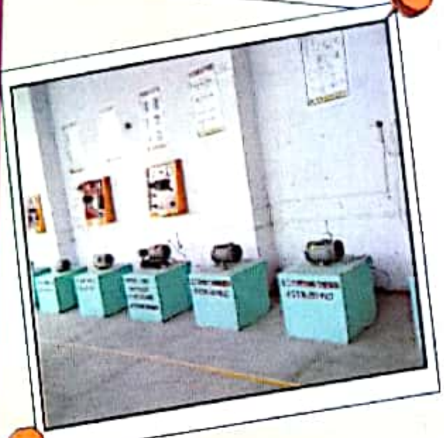
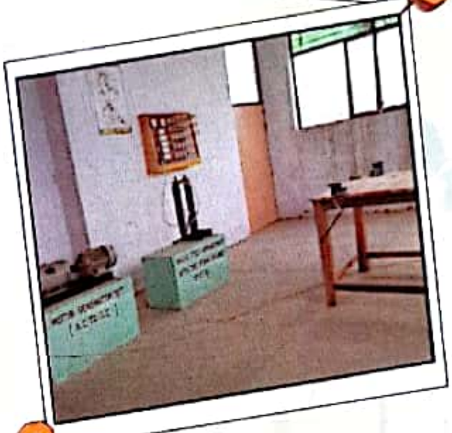

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	पृष्ठ सं.
	हिन्दी	
1.	सफलता किसके कदम चूमती है ?	01
2.	क्या आप जानते हैं?	02
3.	आधुनिक काल में मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता	03
4.	समाजसेवा हेतु जरूरी है, संवेदनशील, परोपकारी भाव	04
5.	योगासन : महत्व एवं मानव जीवन में उपयोगिता	06
6.	माँ	06
7.	'बाल मजदूर : एक सामाजिक अभिशाप'	07
8.	सामाजिक कुरीतियों की अवधारणा	09
9.	भूल	10
10.	भारतीय गणित का संक्षिप्त इतिहास	11
11.	क्या आप जानते हैं?	11
12.	सहनशीलता से सफलता मिलती है	12
13.	अरे ये तोता भी सबका...	12
14.	राजनीति एवं नेता	13
15.	हंसते मुस्कुराते	13
16.	देश के दुश्मन को मिट्टी में मिला देंगे	13
17.	नेता बनने की दवा...	14
18.	मुस्कान	14
19.	शायरी	14
20.	'आत्म विश्वास सफलता की कुँजी'	15
21.	माँ	15
22.	मनुष्य कब बनता है?	16
23.	देशोत्थान के उपाय	17
24.	खुद को बदलो, तुम्हारे लिए दुनिया स्वत: बदल जायेगी	19
25.	गणितज्ञ का प्रेम-पत्र	20
26.	अलगाववाद का फैलता जहर	21
27.	एक अनुरोध	21
28.	माँ	21
29.	दीप जलाने से क्या होगा ?	22
30.	माँ क्यों ?	22
31.	वृक्ष की पुकार	22
32.	सत्य और सुन्दर	23
33.	बेटियाँ	23
34.	नफस-नफस, कदम-कदम तथा बाल गीत	24
35.	आशा तथा नारी	24
36.	समय	25
37.	स्वप्न सुन्दरी तथा कौन हो तुम ?	25
38.	तराना-ए-कुदरत तथा कोशिश करो	25
39.	माँ	26
40.	माँ की हिदायत	26
41.	देशभक्ति गीत - शहीद	26
42.	सावन की बूंदें	27
43.	सफलता का मूल मन्त्र	27
44.	याद रखना	27
45.	गजल	28
46.	महीनों का करिश्मा	28
47.	भारत माता	28
48.	काम	29
49.	कैसी बुरी बलाय ?	29
50.	मेरे दोस्त	30
51.	'वीर बनें हम'	30
52.	जिंदगी का सच	31
53.	बेरोजगारी	31
54.	दिल की आवाज	31
55.	एक अजन्मी बेटी का सच	32
56.	दुनिया में सबसे बड़े माँ बाप	32
57.	दाल का दाना मोती है	32
58.	बचपन के दिन	33
59.	गुरु	33
60.	एक सेर मक्खन	33
61.	गुस्सा होने पर क्या करते हैं आप	34
62.	पार करो सारी बाधा	34
63.	आकांक्षा	35
64.	वक्त	35
65.	बचपन	35
66.	दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं	36
67.	शिक्षक	36
68.	करता है कोई-कोई	36
69.	हँसी के रसगुल्ले	37
70.	जीवन की कहानी	37
71.	सेनानी	38
72.	नगर की पहचान	38
73.	अनमोल विचार	38
74.	जमाना पब का है	38
75.	चार लोग क्या कहेंगे?	39

Scanned by CamScanner

76. संघर्ष ही जीवन है 39
77. अनमोल विचार 40
78. हिन्दी हिन्द की वाणी 40
79. भूल 40
80. विद्यालय में अनुशासन का महत्व 41
81. सूर्यदेव 41
82. यह छोटा है 41
83. ब्रह्म-मुहूर्त 42
84. शक्ति का स्रोत : स्वास्थ्य और सौन्दर्य 43
85. उत्तम स्मृति के लिए सिद्धान्त 44
86. शिष्टाचार 46
87. ज्ञान की बातें 46
88. युग प्रवर्तक - स्वामी विवेकानन्द 47
89. सफलता 51
90. सबसे बड़ा रुपया (आज के नैतिक पतन पर) 52
91. अनैतिकता के माहौल में दम तोड़ती भारतीय संस्कृति 53
92. माँ 54
93. बेटी ही बचाएगी 55
94. बेटी का संदेश 55
95. भावना 56
96. अनमोल वचन 56
97. शिक्षक शिक्षा में इग्नू की महती भूमिका 57

English Part

1. 26 Alphabets of the success of Life 1
2. Women in Twenty First Century 2
3. Role of Motivation in Our Life 3
4. News Papers 3
5. Think it Over 4
6. Effects of Global Warming on Earth 5
7. Empowerment of Muslim Women 7
8. Three Things 7
9. Ravindranath Tagore : The Gem of Anglo-Indian Literature 8
10. Test Your Knowledge about Computor 9
11. What is Abnormal ? 10
12. Mahatma Gandhi : The Messenger of Peace 11
13. Swami Vivekanand - The Pioneer of Spirituality 12
14. Diseases Around Us 13
15. Vedic View of the Environment 14
16. Teacher's Corner 15
17. Successful 15
18. Life of a Science Student 15
19. Thought 15
20. Electronic Commerce 16
21. The True Beauty 16
22. Important Quotes 16
23. Be Thankful 17
24. Thoughts 17
25. God is One 17
26. Body Cabinet 17
27. Friendship Quotations 18
28. Secret of Success 18
29. The role of youth in Strengthening Democracy 19
30. Do you Know ? 20
31. Challenges & Remedies of Education In India after Independence 21
32. Wordsworth : The Poet of Nature 23
33. Mahatma Gandhi 24
34. Swami Vivekanand : Ideal of Youths 24
35. Teaching : A mission, not a mere occupation 24
36. महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति 25
37. राष्ट्रीय सेवा योजना 27
38. महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट :
   - वाणिज्य संकाय 28
   - विज्ञान संकाय 28
   - कला संकाय 30
   - प्रबन्धन संकाय 31
   - B. C. A. Dept. 31
   - शिक्षक शिक्षा विभाग 32
   - बी. टी. सी. विभाग 33
39. पुस्तकालय 35
40. छात्र कल्याण समिति 36
41. अध्यापक कल्याण समिति 37
42. शोध एवं प्रकाशन समिति 38
43. अनुशासन समिति 38
44. स्वराज्य स्वावलम्बी समिति 38
45 स्वराज्य ज्ञान योजना 39
46. खेल विभाग 39
47. सत्र 2013-14 में आयोजित कार्यक्रम एक नजर में 40
48. Visitor's View 45
49. ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में 51

Scanned by CamScanner

सफलता किसके कदम चूमती है ?

✍ डॉ. विवेक मिश्रा
प्रभारी, कला संकाय

बुद्धिमत्ता की वर्णमाला संसार रूपी पाठशाला में आकर सीखी जाती है, जितने भी व्यक्ति आगे चलकर बड़े विद्वान, वैज्ञानिक एवं मनीषी बने हैं, जरूरी नहीं कि जन्म से ही ऐसे रहे हों। आनुवांशिकता एवं माता द्वारा गर्भकाल में दिए गए संस्कारों की अपनी महत्ता होती है। जब तक भरत व लवकुश के साथ शकुन्तला व जानकी का नाम लिया जाता रहेगा, यह तथ्य अपनी जगह अटल रहेगा। किन्तु यह भी नहीं भूलना चाहिये कि बरदराज, वोपमाल, कालिदास जैसे विद्वान भी इस देश में हुए, जिन्हें प्रारम्भ में मूर्ख, ढपोलशंख, बेवकूफ क्या-क्या नहीं कहा गया। किन्तु अध्यवसाय, साधना एवं पुरुषार्थ के बलबूते उन्होंने 'इडियट' से जीनियस बन कर दिखलाया।

यदि व्यक्ति प्रारम्भिक उपहास, निन्दा व प्रताड़ना से क्षुब्ध एवं निराश होकर प्रगति पथ की यात्रा बीच में ही छोड़ दे तो उस सौभाग्य से वंचित हो सकता है जो उसे प्रयास व पुरुषार्थ जारी रखने पर मिलता। धीरज एवं सतत् अध्यवसाय एक ऐसा गुण है, जो विरलों में मिलता है। सफलता का यह मूल मन्त्र है। कि जो व्यक्ति प्रारम्भ में साधारण थे किन्तु बाद में इतिहास में अपना स्थान बना गये। टेनीसन पाश्चात्य जगत के प्रसिद्ध कवि हुए। जब उन्होंने अपनी कविताओं को प्रसिद्ध पत्रिकाओं के सम्पादकों को दिखाया तो उनकी खूब हँसी उड़ाई गई और बाद में वही कविताएं शोध का विषय बन गईं।

'फ्रेलर्स मैग्जीन' के सम्पादक को एडवर्ड फिट्जगाराल्ड ने अपनी कविताओं की पाण्डुलिपि लाकर दी जिसका नाम 'अमर खैयाम की रुबाईयां' था। उन्होंने न केवल उनकी हँसी उड़ाई बल्कि चौकीदारों से बाहर खदेड़वा दिया। एडवर्ड निराश नहीं हुये। उन्होंने कुछ पैसे उधार लेकर उसे छपवाया। जब वह किताब आधे क्राउन में भी नहीं बिकी तो उन्होंने उसकी कीमत घटाकर एक शिलिंग कर दी। फिर भी न बिकने पर उन्होंने एक कबाड़ी के यहाँ कुछ प्रतियाँ रख दीं व एक बोर्ड लगा दिया कि जो कीमत उचित समझें, दे जायें। कुछ लोगों ने किताब पलटी व रख दी। कुछ मुफ्त में व कुछ एक दो पैसे रखकर चल दिये। जब ये प्रतियाँ प्रसिद्ध साहित्यकार रॉसेटी, क्वाइन बर्न एवं सर रिचार्ड वर्टन के पास पहुँची तो उन्होंने एक छिपी प्रतिभा को पहचाना। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

कार्लमार्क्स शायद फुटपाथ पर सोते-श्रमिक की तरह जीवन काटकर जीवन से चले जाते, यदि उन्हें अपनी बचपन की मित्र एवं बाद में जीवन संगिनी जेनीवॉन वेस्टफॉलेन का साथ न मिला होता। उसने न केवल उनकी हर विपत्ति में उनका साथ दिया, बल्कि उनकी प्रतिभा को पहचाना व सतत् प्रेरणा देते रहने का काम किया, जिससे वे 'दास कैपीटल' जैसी रचना विनिर्मित कर सके। स्वयं अमीर घर की होते हुये भी उसने गरीब किन्तु प्रतिभावान, पुरुषार्थी अपने पति के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों में जीना पसन्द किया और यहीं से जन्मा अर्थशास्त्र का दर्शन, जिसने बाद में विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या को प्रभावित किया।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ऐडीसन (जो तब तक अच्छी खासी ख्याति प्राप्त कर चुके थे) किन्तु जब उन्होंने बैंकर को बताया। कि इस प्रयोग से कुछ निष्कर्ष निकलेगा या नहीं, यह दो वर्ष बाद पता चलेगा, तो उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। फिर भी सीमित साधनों से उन्होंने वह कार्य प्रारम्भ किया एवं सफल हुये।

बैंजामिन डिजराइली को महानता की चरम स्थिति पर पहुँचने के लिये अच्छा खासा संघर्ष करना पड़ा। वे पार्लियामेन्ट का चुनाव लगातार तीन बार हारे। जब चौथीवार सफल हुये व पहला भाषण आरम्भ किया तो उनकी खूब खिंचाई हुई व हँसी उड़ी। वे जोर-जोर से चीखे कि एक समय ऐसा आयेगा कि आप सभी को मुझे सुनना पड़ेगा और ऐसा ही हुआ। इसे कहते हैं जीवटता एवं आत्म विश्वास। जो जीवन संग्राम में लड़ नहीं सकता वह आगे नहीं बढ़ सकता।

जार्ज लुई वोर्जेज जिन्हें अर्जेण्टीना का राष्ट्रकवि कहा जाता है, जन्म-जात अन्धे थे, पर कविता रचने से उन्हें वह अपंगता नहीं रोक सकी। लुई ब्रेल उन्होंने अन्धों के लिये लिपि बनाई, स्वयं तीन वर्ष की उम्र में नेत्रदृष्टि खो चुके थे। हेलनकीलर दो वर्ष की आयु में ही गूंगी व बहरी हो गई थीं, पर प्रगति पथ पर विकलांगता क्या उनकी बाधक बनी ?

जोसेफ पुलित्जर, जिनके नाम पर पत्रकारिता का पुरस्कार दिया जाता है 40 वर्ष की आयु में ही अंधे हो गये थे। पर जिस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिये उन्हें पत्रकारिता का प्रणेता माना जाता है, वह उन्हें 40 वर्ष बाद ही प्राप्त हुई।

बहुत से ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्हें सम्मान, राशि आयुष्य के उत्तरार्द्ध में मिली, पर उनकी साधना में कोई व्यवधान नहीं आया। इकत्तर वर्ष की आयु में मार्कट्वेन ने अपनी दो सबसे ख्याति प्राप्त रचनाएं 'इक्सडायरी एवं डालर तीस हजार विक्वेस्ट' रची थी। इसी श्रंखला में पण्डित दामोदर सातवलेकर जी का नाम भी लिया जाता है जो शताधिक जिये एवं पिचत्तर वर्ष की आयु के बाद जिन्होंने आर्ष ग्रन्थों का भाष्य आरम्भ किया।

असफलता का रोना-रोने वाले लोगों को इन महामानवों का जीवन चक्र क्यों नहीं दिखता ? हर व्यक्ति यदि पुरुषार्थ पारायण हो तो जिस क्षेत्र में चाहे सफलता प्राप्त कर सकता है। भाग्य लिखा हुआ नहीं आता, बनाया जाता है और बनाने हेतु पुरुषार्थ, लगन एवं अध्यवसाय चाहिये। ❑

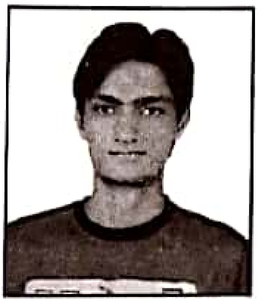

क्या आप जानते हैं ?

उत्कर्ष वार्ष्णेय
बी. एड.

प्रश्न – विश्व में कौन-सी चिड़िया के पंख नौ रंग के होते हैं ?
उत्तर – पिट्टा चिड़िया।
प्रश्न – विश्व में काले रंग के हंस किस देश में पाए जाते हैं।
उत्तर – आस्ट्रेलिया।
प्रश्न – कौन-सी मछली पानी के बाहर कई दिन तक जीवित रह सकती है ?
उत्तर – एशिया की मेंढक मछली।
प्रश्न – टार्च जैसी रोशनी लेकर चलने वाली मछली का क्या नाम है ?
उत्तर – जाईजेन्टेटिक्स
प्रश्न – उड़ने वाले मेंढक का क्या नाम है ?
उत्तर – राको फोरस
प्रश्न – विश्न में सबसे कम उम्र में कौन माँ बनी है ?
उत्तर – मराठा अर्तुनडुआगा (9 साल की उम्र में माँ बनी)
प्रश्न – हाथ पर पौधा उगाने वाले भारतीय का नाम क्या था?
उत्तर – डकौर के रामदास बोधानी
प्रश्न – विश्व की सबसे बड़ी लाइब्रेरी का नाम क्या है?
उत्तर – लेनिन लाइब्रेरी मास्को, जिसमें 2 करोड़ पुस्तकें हैं।
प्रश्न – विश्व की सबसे बड़ी सेना कौन-सी है ?
उत्तर – चीन की मुक्ति सेना जिसमें 20 लाख सैनिक हैं।
प्रश्न – विश्व में कौन-सा ऐसा देश है जो कभी किसी का गुलाम नहीं हुआ ?
उत्तर – नेपाल
प्रश्न – कौन-सी मछली करंट पैदा करती है ?
उत्तर – तारपीडो, इलेक्ट्रिक ईल मछली
प्रश्न – वह कौन-सी मछली है जो पानी में तैरती है, जमीन पर चलती है और हवा में उड़ती है।
उत्तर – गरनार्ड मछली
प्रश्न – भारत की किस फिल्म में बहत्तर गाने थे।
उत्तर – इन्द्रसभा (1940)
प्रश्न– विश्व का प्रथम परखनली वाला बच्चा कहाँ और कब पैदा हुआ ?
उत्तर – लुई ब्राउन (ब्रिटेन) 26 जुलाई 1978
प्रश्न – किस राजा ने दाढ़ी पर कर (टैक्स) लगाया था ?
उत्तर – पीटर दी ग्रेट ❑

Scanned by CamScanner

आधुनिक काल में मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता

✍ राम किशन शर्मा
प्रवक्ता,बी. एड. विभाग

प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए एक मूल्य परक प्रणाली रखता है जिसमें जीवन के मूल्य निर्धारित होते हैं। मूल्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, बफादारी, कर्त्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते हैं। हमें व्यक्ति, समाज तथा शिक्षा तीनों की गतिविधियों का अवलोकन करना होगा। मूल्य शिक्षा वह सीढ़ी है जिस पर व्यक्ति पॉव रखकर अपने संस्कारों को संवारता है और शिक्षा को नई दिशा प्रदान करता है।

आज वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय नहीं है। भाषण, नोट्ज तथा बने बनाये उत्तरों को दोहराने का कौशल ही शिक्षार्थी की परीक्षा का मापदण्ड है। शिक्षार्थी अपने अस्तित्व को न तो पहचान पाता है, न ही पुस्तकीय ज्ञान उसकी सहायता करता है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती हैं, शिक्षा में सुधार द्वारा आज की जरूरतों के अनुरूप उन्हें संवारा जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेमपूर्वक जीवन यापन करना सीखें, हमें बालक को ऐसा मनुष्य बनाना है, जो स्वयं स्वेच्छा से शाश्वत मूल्यों के पालन का प्रयास करे, जिससे व्यक्ति व समाज सभी का कल्याण सम्भव हो।

आज हमने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि यातायात, संचार व चिकित्सा में हम बहुत आगे निकल गये हैं परन्तु इसके साथ ही दूसरी ओर जब हम अपनी संस्कृति व मूल्यों पर विचार करते हैं तो हमें बहुत ही शर्म का अनुभव होता है। चूंकि मूल्यों की दृष्टि से हमारा दिन-प्रतिदिन पतन होता जा रहा है। हमें भारतीय मूल्यों का ज्ञान तो है परन्तु हम उनके प्रति आस्था नहीं रखते और मूल्य विहीन व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। आधुनिकता की दौड़ में हम इतनी तीव्र गति से चलना चाहते हैं, कि हमारे मूल्य उस दौड़ में कहीं लुप्त हो जाते हैं। आज हमारे लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि हम सार्थक शिक्षा के द्वारा छात्रों को सही मूल्यों का ज्ञान करायें।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं विकास उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है और शिक्षा, अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य मानव जीवन में मूल्यों का निर्माण करना है "Values can be caught and not to be taught" अर्थात् मूल्य ग्रहण किये जा सकते हैं, पढ़ाये नहीं जा सकते। शिक्षक का कार्य तो एक चतुर माली की भाँति बालक रूपी पौधे की जड़ों में आदर्श शिक्षा की खाद रोपित करना है, जिसमे राष्ट्र का भविष्य उज्जवल होता है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फॉबेल ने कहा है कि बालक एक पौधे के समान है और अध्यापक एक माली के सदृश, जो पौधे को आवश्यकतानुसार सींचकर खाद आदि डालकर तथा काट-छांटकर सुव्यवस्थित रूप से पनपाता है, जिससे वह एक सुन्दर और मोहक वृक्ष बन सके। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था "The teacher is nation builder." अर्थात अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है, वर्तमान शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक शिक्षा को बोझ न समझें, बल्कि उससे अभिप्रेरित होकर समायोजित जीवन यापन करना सीखें।

सबसे पहली शिक्षा बालक माता-पिता से लेता है। अत: माता-पिता का व्यवहार मूल्यों से सम्बन्धित होना चाहिये। इसी प्रकार हर छात्र का आदर्श उसका शिक्षक होता है, वह वही कार्य करने की चेष्टा करता है, जैसा वह शिक्षक को करते हुए देखते हैं। शिक्षक जिन मूल्यों को छात्रों में देखना चाहता है, वह स्वयं उसमें भी अभिव्यक्त होने चाहिए।

आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। हम अपने मूल्यों को भूल चुके हैं, जिन मूल्यों के लिए भारत विश्व में जाना जाता था। हमें इस संकट से उभरने के लिए मूल्य परक शिक्षा विद्यालयों में प्रदान करने मात्र से कार्य नहीं चलेगा, वरन जन जागरण के लिए भी कदम उठाने पड़ेंगे। मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए सर्वप्रथम छात्रों में गिरावट को रोकना होगा। छात्रों में गिरावट का मुख्य कारण है शिक्षा में गिरावट। अत: शिक्षा में गिरावट को रोकना होगा। ❑

Scanned by CamScanner

"समाज सेवा के लिए जरूरी है, संवेदनशील, परोपकारी भाव"

✍ डॉ. ललित उपाध्याय
प्रवक्ता, समाजशास्त्र

सीखो और सिखाओ, जीवन बनाओ

विगत दिनों महाविद्यालय के स्नातक स्तर में अध्ययनरत कई छात्र-छात्राएँ मेरे पास आए और बोले- सर, हमें राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता कर स्वयंसेवी बनना है। कई छात्र बोले; राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रमाण पत्र लेने के लिए मुझे एन.एस.एस. चाहिए, कुछ छात्र बोले-समाजसेवा के लिए मुझे एन.एस.एस. स्वयंसेवक बनना है। युवा विद्यार्थियों के पृथक-पृथक दृष्टिकोणों ने मुझे कई दिनों तक विचलित रखा। अन्त में यह सोचा कि मुझे राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवी या स्वेच्छासेवी बनने जा रहे या वे युवा छात्र जो समाज सेवा करने के इच्छुक है, उन्हें मार्गदर्शित कर सही दिशा दिखाने की आवश्यकता है, सो यह आलेख कलमबद्ध हुआ।

समाज सेवा करने की भावना रखना अच्छे विचार हैं लेकिन 'समाज सेवा' के शब्दों के साथ पल-पल जीना कर्मयोगी ही सिखा सकता है। ऐसी ही कर्मयोगिता के धनी महापुरुष स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा को समझकर ही समाज सेवा के संकल्प को पूरा किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द जिनका 150 वाँ जन्म दिवस मनाया जा रहा है, ने कहा था- "जब तक अपने आप पर विश्वास नहीं होता तब तक तुम ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकते।" निःसंदेह नई सदी में अनेक चुनौतियाँ हैं। चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना हमारा कर्त्तव्य हैं। कर्त्तव्यपरायणता के लिए दृढ़ संकल्पित प्रसास होना आवश्यक है और इसी गौरवशाली राष्ट्र की परम्परा एवं सेवाकार्य व विकास की संजीवनी बूटी को सुदूर ग्रामीण अंचलों के घरों में पहुँचाने का कार्य "युवा शक्ति" (आप और हम) को स्वेच्छासेवी या स्वयंसेवक के रूप में करना है। छात्र जीवन में यह सेवा कार्य राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी. व स्काउट-गाइड स्वयंसेवकों के रूप में आसानी से किया जा सकता है लेकिन प्रमाण-पत्र की प्राथमिकता के साथ नहीं, अपितु इंसान और इंसानियत के साथ समाज को कुछ देने के लिए। समाज सेवा करने से पहले समाज और सेवा के भावार्थ को समझना होगा।

समाज का अभिप्राय : समाज, एक से अधिक लोगों का समुदाय है जिसमें सभी व्यक्ति मानवीय क्रियाकलाप करते हैं। क्रियाकलाप में आचरण, सामाजिक सुरक्षा और निर्वाह आदि की क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। सामाजिक विकास परिवर्तन की एक अनवरत प्रक्रिया है जो सदस्यों की आकांक्षाओं और पुनर्निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में उन्मुख रहती है।

सेवा या परोपकार का आशय : गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है-"परहित सरिस धर्म नहीं भाई" अर्थात् दूसरों की भलाई या सेवा करने के समान कोई धर्म नहीं है। परोपकारी मनुष्य यह सुकर्म निः स्वार्थ और आत्म त्याग के द्वारा करता है समाज में वह प्रत्येक कार्य अपना समझकर ही करता है।

सेवा कार्य हेतु परोपकारी बनें : परोपकारी व्यक्ति समय की सबसे बड़ी आवश्यकता और अपेक्षा के प्रतिनिधि होते हैं क्योंकि उन्हें जीवन की तनिक भी परवाह नहीं होती और वे आत्म त्याग में जुटे रहते हैं।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने परोपकार और परोपकारी की व्याख्या की है-

मरा वह नहीं कि जो जिया न आपके लिए।
वही मनुष्य है कि जो मरे मनुष्य के लिए।।

यद्यपि परोपकार करते हुए मानव को कष्ट जरूर सहना पड़ता है। इसके बावजूद परोपकारी को आत्म संतोष व सुख मिलता है। उसकी आत्मा प्रसन्न होती है, वह आत्म बलवान होता है।

प्रकृति भी सिखाती है, त्याग करना : मानव ही नहीं प्राकृतिक नियमों व प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं में भी हमें परोपकार देखने को मिलता है। प्रकृति प्रदत्त चन्द्रमा जहाँ शीतलता और प्रकाश देता है वहीं सूर्य प्रकाश, ऊष्मा व जीवों को जीवन देता है। पेड़-पौधे व वनस्पति अपना सब कुछ न्यौछावर कर प्राणी मात्र का भला करते हैं। नदियाँ अपना जल देकर सभी प्राणियों को जीवित बनाए रखती हैं। परोपकारी तत्वों के कारण प्रकृति, मानव की निरंतर प्रगति को जीवंत किए हुए है।

परोपकारी मनुष्य स्वेच्छासेवी के रूप में अपनी शक्ति और सामर्थ्य के उचित प्रयोग द्वारा परोपकार करते हुए प्रेरणादायक कार्यों को ही चुनता है। ऐसे स्वयं सेवकों द्वारा किये गये कार्य से सामूहिक कल्याण की झलक देखने को मिलती है। दीन-दुखियों, घायलों, अपंगों, अनाथों तथा सुविधा वंचित गरीब लोगों की मदद करने में इन स्वयंसेवियों या स्वेच्छासेवियों को हार्दिक प्रसन्नता होती है।

Scanned by CamScanner

छात्र जीवन से ही परोपकार अपनायें : विद्यार्थियों को अपने अध्ययन के साथ-साथ परोपकार अपनाकर मानव व प्रकृति कल्याण कार्य व सेवा प्रकल्पों में आगे आना चाहिए जैसे- रक्तदान, वृक्षारोपण, आश्रयहीनों की मदद करना, श्रमदान, निरक्षरों को शिक्षित करना और साक्षर बनाना, राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक सद्भाव विकसित करना, स्वास्थ्य एवं जीवन शैली को सुधारने हेतु गाँव-गाँव, शहर की मलिन व उपेक्षित बस्तियों में जनजागरण करना, पल्स पोलियो अभियान, टीकाकरण, नेत्रदान हेतु उत्प्रेरण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, परिवार नियोजन की जानकारी, स्वच्छता, नशाखोरी के विरुद्ध अभियान, कन्याभ्रूण हत्या के खिलाफ अभियान, महिला एवं बाल विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, पर्यावरण व जैव संरक्षण आदि कार्य।

लोक मंगल सेवा भाव हेतु महाव्रत लें : स्वामी विवेकानन्द ने कहा है – ''भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं; त्याग और सेवा। आप इन धाराओं में तीव्रता उत्पन्न कीजिए और शेष अपने आप ठीक हो जाएगा।'' अर्थात् लोकमंगल की भावना से सेवा करने वाले स्वेच्छासेवियों को लक्ष्य, चिन्तन, श्रमशीलता, सुव्यवस्था, शिष्टता, संयमशीलता, उदार, चरित्र शीलता, आत्मीयता, दूरदर्शिता, विवेकशीलता व आत्म अनुशासन जैसे विशेष सद्गुणों को समझने, अपनाने व बढ़ाने के लिए महाव्रत लेकर अनवरत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

बहुत कठिन है डगर सेवाधर्म की : सेवा का महत्व व जीवन विकास के लिए उसकी आवश्यकता समझ लेने के बाद प्रत्येक छात्र या व्यक्ति के मन में सेवा धर्म की उमंग उठना स्वाभाविक है। अधिकांश छात्रों या व्यक्तियों में इस तरह की उमंग उठती है कि मैं समाज व देश के लिए कुछ ऐसा करूँ जिससे समाज को कुछ बल मिले और मुझे मान-सम्मान के साथ याद किया जाए। वे इस उमंग के अनुरूप सेवा के मार्ग में प्रवृत्त भी होते हैं किन्तु उस पथ पर अधिक समय तक चल नहीं पाते। इसका कारण यह है कि लोक सेवा व मानव कल्याण के प्रति आवश्यक उत्साह व निष्ठा का जागरण नहीं हो पाता। कुछ लोग डगर में कठिनाई आती देख घबरा जाते हैं या झमेला समझकर छोड़ देते हैं। कठिन डगर को आसान करने के लिए समय के महत्व, स्वयंसुधार, स्वस्थतन में स्वस्थ मन के परिदृश्यों को आत्मसात करना होगा।

समय अमूल्य है, सदुपयोग करें : मानवता कल्याण व सेवा कार्य में समय बड़ा बलवान है। जिसकी सदुपयोगिता व अमूल्यता को समझकर ही राष्ट्र- निर्माण व जनकल्याण को समय सीमा में पूर्ण करने की चेष्ट की जा सकती है।

समय की महत्ता पर कबीर ने कहा भी है –

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।

अर्थात् कल पर अपने काम को न टालें। प्रत्येक काम का अपना अवसर होता है। अवसर निकल जाने पर काम का महत्व ही समाप्त हो जाता है तथा बोझ भी बढ़ता जाता है।

इसका ताजा उदाहरण है फेलिट तूफान से ओडिशा व आंध्रप्रदेश के तटीय क्षेत्रों में भारी तबाही के संकेत मौसम विभाग द्वारा किए जा रहे थे। सरकार ने आपदा प्रबंधन के कार्य को पूर्व में समझते हुए लोगों का जीवन बचाने की प्राथमिकता के साथ तूफान आने से पहले ही ओडिशा में 4.5 लाख व आंध्रप्रदेश में एक लाख लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा कर लोगों का जीवन समय रहते बचाया है। समय पर कर लिए गए उपायों से ही लाखों लोगों की जान बचाई जा सकी है जबकि तूफान की तीव्रता का स्तर 6 था जो तबाही के मंजर में इन सुरक्षित लोगों की जीवन लीला समाप्त कर देता, यदि उन्हें तूफान आने से पहले हटाया गया नहीं होता। यही समय का महत्व है।

युग बदलने के लिए 'सृजेता' बनना होगा : समय की मांग है, समाज निर्माण हेतु नेता के सद्गुणों को सृजेता के रूप में अपनाया जाए। युग बदलने के लिए शुरूआत खुद के सुधार से करनी होगी। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है- इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा। अर्थात् सीखो और सिखाओ, जीवन बनाओ।

स्वयंसेवी बनकर हम होंगे कामयाब : नये ज्ञान से प्रकाशमान आधुनिक युवा शक्ति सम्भावना और सार्थकता से परिचित है। केवल युवा छात्रों को उनकी ऊर्जा एवं क्षमता के अनुरूप सही दिशा में उचित मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। कार्य जितना चुनौतीपूर्ण होगा, एक चमत्कारिक प्रभावशाली स्वयंसेवी नेतृत्व के उभरने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

नवसंकल्प सेवाभाव के साथ सच्ची श्रद्धान्जली : युवा-छात्र शक्ति, स्वयंसेवी या स्वेच्छासेवी बनने के लिए हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार नन्द दुलारे बाजपेयी की इन पंक्तियों को आत्मसात कर सफलता का वरण अवश्य करेगी- ''प्रतिभा किसी की वन्दिनी नहीं होती और परिश्रम किसी के द्वार का याचक नहीं होता। आग्रह यही है कि स्वाबलम्बी बन जीवन के कुछ पल, इंसान और इन्सानियत को भी समर्पित करें।'' यही स्वेच्छासेवियों के मार्गदर्शक स्वामी विकानन्द के 150 वीं जयंती वर्ष में उनके कर्म, धर्म और सेवा के लिए युवा छात्रशक्ति की ओर से सच्ची श्रद्धान्जली होगी। ❑

Scanned by CamScanner

योगासन : महत्व एवं मानव जीवन में उपयोगिता

✍ डॉ. रेखा शर्मा
प्रवक्ता, बी.एड.

शारीरिक और मानसिक स्थिरता प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई शरीर की आराम दायक तथा विशेष अवस्था आसन कहलाती है। योगासन केवल शारीरिक व्यायाम ही नहीं बल्कि मानसिक अभ्यास भी होता है, क्योंकि इसका प्रभाव मन पर भी पड़ता है।

योगासन को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **ध्यानोपयोगी आसन–** शरीर के स्थिर एवं आराम से बैठने की व्यवस्था को ध्यानोपयोगी योगासन कहा जाता है।
2. **व्यायात्मक योगासन–** शरीर की भिन्न–भिन्न मांस-पेशियों में उचित प्रवाह लाने के लिए जो प्रक्रियाएँ करते हैं, उनको व्यायात्मक योगासन कहा जाता है। इनसे मांसपेशियां निरंतर मजबूत बनी रहती हैं।
3. **विश्रामदायक योगासन –** जो आसन लेटकर किए जाते हैं, उनको विश्रामदायक योगासन कहा जाता है, इससे मन तथा शरीर को विश्राम मिलता है।

योगासन से मांसपेशी एवं अस्थितंत्र, पाचनतंत्र, प्रजनन तंत्र, स्नायु तंत्र, श्वसन तंत्र, रक्त संचरण तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, अन्त: स्रावी ग्रंथियाँ तथा आध्यात्मिक महत्व ठीक प्रकार से चलता है।

मनुष्य केवल भौतिक सुखों में ही जीवन की शांन्ति या पूर्णता पाने में सर्वथा असफल रहा है, यदि उसने चिर शांति पायी है तो शरीर व मन के तादात्म्य से। योग के लिए कहा जाता है कि योग; चित्तवृत्ति निरोध। अत: योगासनों से अगाध रोगों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। आरंभ से ही योग क्रियाओं के माध्यम से रोगों एवं दु:खों का निवारण किया जाता है। इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बातें निम्नांकित है :

1. योग सदा स्वच्छ, स्वास्थ्य प्रद व शांत वातावरण में करना चाहिए।
2. आसनों को रोग की स्थिति में कभी नहीं करना चाहिए।
3. आसनों को निरंतर सहज होकर ही करना चाहिए।
4. आसनों को करते समय अधिक ताकत का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
5. आसनों को झटके के साथ प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।
6. योगिक आसनों को सदैव सरल से जटिल की ओर ले जाना चाहिए।
7. आसनों में स्थिरता तथा आराम की स्थिति अत्यंत आवश्यक होती है।
8. आसनों में मांसपेशियों की तान अत्यन्त महत्वपूर्ण है न कि उनका बार–बार सकुंचन एवं प्रसार अत: प्रत्येक व्यक्ति को योग करना अत्यन्त आवश्यक है, जो जीवन को सुरक्षित व सफल रखता है। ☐

माँ

संदीप कुमार
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

हम सरफरोश हैं उसी जमीं के,
जिसने हमें खुद पर चलाया है।
हम शुक्रगुजार हैं उस लम्हे के
जो हमें इस मुकाम तक लाया है।
खुदा तो सिर्फ जिन्दगी बनाता है,
हम तो कर्जदार हैं उसके, जिसने हमें बनाया है,
कर्म तो अपना सभी निभाते हैं,
खुशियों में खुश रहना तो सभी जानते हैं।
उसे हम क्या कहे हमें समझ नहीं आता है,
आज तक हमने उसे (माँ) कहकर बुलाया है। ☐

Scanned by CamScanner

"बाल मजदूर : एक सामाजिक अभिशाप"

डॉ. सोमवीर सिंह
असिस्टैन्ट प्रोफेसर भूगोल विभाग

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं प्रगति में बच्चों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कहा भी गया है "बच्चे देश का कर्णधार हैं" इस कथन से यही स्पष्ट है कि भारत का भविष्य बच्चों में निहित है। इसलिए परिवार और सरकार का यह दायित्व है कि वे इन बच्चों के बचपन की रक्षा करें और बाल मजदूरी जैसे घोर अभिशाप से उन्हें मुक्त करायें। सम्पूर्ण मानव समाज के लिये कलंक बन चुकी यह समस्या अपना विकट रूप धारण कर रही है। अन्य गम्भीर समस्याओं की भाँति इस अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का प्रभाव पूर्ण निदान करना अति आवश्यक है। बाल मजदूर आज की शताब्दी की देन नहीं हैं बल्कि यह प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन वैश्वीकरण के बाद यह अपने और व्यापक रूप में सामने आयी है। इसे दूर करने के लिये सरकार और गैर-सरकारी संगठन आज भी प्रयासरत हैं।

बाल मजदूर की समस्या से आज न केवल तीसरी दुनियाँ के देश (पिछड़े देश) ग्रस्त हैं बल्कि विकसित देश भी इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मन, आदि देशों में बाल मजदूर की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। दिखाने के लिये तो विकसित देश विकासशील देशों से होने वाले आयातों पर इस कारण प्रतिबन्ध लगाते हैं कि ये वस्तुएं बाल श्रमिकों द्वारा बनाई गयी हैं, लेकिन अपने ही देश में युवा पीढ़ी को लालच देकर बाल मजदूरी करने के लिये मजबूर कर देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र अन्तरर्राष्ट्रीय बाल संकट कोष (यूनीसेफ) द्वारा 2010 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में 24.6 करोड़ बच्चे किसी न किसी प्रकार के श्रम करने को मजबूर हैं। इनमें से 15.2 करोड़ एशिया में, 7.6 करोड़ अफ्रीका तथा शेष 1.8 करोड़ बाल मजदूर लेटिन अमेरिकी देशों व अन्य देशों में मौजूद हैं। वैश्विक स्तर पर देखा जाये तो पाकिस्तान में बनने वाली कालीनों का 80 प्रतिशत 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे ही बनाते हैं।

अब बात करते हैं अपने देश की- हमारे देश की कुल आबादी का 15.42 प्रतिशत बच्चे हैं। हमारा देश भी बाल मजदूर जैसी जटिल समस्या से अछूता नहीं है। बाल विश्व सम्मेलन में यह चिन्ताजनक निष्कर्ष निकाला गया है कि बाल मजदूर के दृष्टिकोण से भारत की स्थिति सोचनीय व विचारणीय है।

प्रत्येक वर्ष बाल दिवस (14 नवम्बर) वड़े ही उत्साह से मनाया जाता है। इस अवसर पर सभी दिग्गज विद्वान और राजनेता मिलकर अनेक रणनीति तैयार करते हैं लेकिन दुःख की बात यह है कि ये रणनीतियाँ सिर्फ उसी दिन तक सीमित रह जाती हैं। वो बच्चे तकदीर वाले हैं,जिनके हिस्से में बाल दिवस की खुशियाँ नसीब हैं। बाल मजदूर के पेट की आग में न जाने कितने बाल दिवस फॅना हो गये। मेहनत- मजदूरी करते हुए अपने परिवार का पेट पालना बाल मजदूरों की नियति बन गयी है। उनके लिये बाल दिवस ज्यादा जरूरी नहीं बल्कि इस बात की चिन्ता करना है कि क्या दिन भर की मशक्कत के बाद जब उनका पसीना रुपये में बदलेगा तो उससे उनका और उनके परिवार का पेट भर पायेगा या नहीं। बीमार माँ-बाप की दवा आपायेगी या नहीं। गोद में भूख से विलखने वाली नन्हीं-सी बहिन को दूध मिलेगा या नहीं।

हमने बाल दिवस पर एक बाल मजदूर से बातचीत की। हमने बाल दिवस के बारे में पूछा तो उसने कहा बाल दिवस तो बच्चों के लिये होता है, हम कहाँ बच्चे रहे।

मजदूर के रूप में कार्य करते-करते बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास अवरूद्ध हो जाता है, जो देश के विकास में बाधक है। विचारणीय प्रश्न यह भी है कि बाल मजदूरों को जिन कार्य स्थल पर, जिन परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है, वे चिन्ताजनक है। तमिलनाडू के कुछ जिलों में पटाखों और माचिस के कारखानों में लगभग 50,000 बच्चे, कार्यरत हैं। फिरोजाबाद में काँच के कारखानों में लगभग 46,000 बच्चे

Scanned by CamScanner

और पूर्वी उ. प्र. के कालीन के कारखानों में लगभग 1 लाख बच्चे काम कर रहे हैं। इसी तरह बनारस में 5,000 बच्चे रेशम बुनने के कार्य में तथा दिल्ली में 60,000 से अधिक बच्चे ढावों या चाय स्टालों पर कार्य कर रहे हैं। अलीगढ़ में कारखानों/औद्योगिक इकाइयों में 2,200 बच्चे, दुकानों में लगभग 1000 बच्चे, घरेलू औद्योगिक इकाइयों में लगभग 600 बच्चे, कृषि कार्य में 150 बच्चे, केवल घरेलू कार्य में 5,600 बच्चे और अन्य कार्यों में 1200 बाल मजदूर कार्यरत हैं। अलीगढ़ में बाल मजदूरों की संख्या लगभग 10,750 है।

ये मजदूर बच्चे अपना बचपन भुलाकर होटल, ढावा, कारखाने, खेतों या घरों में दिन रात कठिन परिश्रम करते हैं। दुख की बात है कि दिन रात कठिन मेहनत करने के बावजूद इन अबोध बच्चों को न तो पूरी मजदूरी मिलती है बल्कि मालिकों की डाट फटकार, मार, अपमान, तिरस्कार एवं यातनायें भी झेलनी पड़ती हैं। ये बाल मजदूर शिक्षा, स्वास्थ्य खेल व मनोरंजन से कोसों दूर हैं।

बाल मजदूरी समस्या से मुक्ति पाने के उपाय : वर्तमान बालश्रम सम्बन्धी समस्या एक वैश्विक समस्या के रूप में उभरकर सामने आ रही है। इस समस्या से निजात पाने के लिये सर्वसाधारण को खुलेमन से प्रयत्न करना होगा और पूँजीपतियों पर अंकुश लगाना होगा तथा सरकार को अपने द्वारा बनाये गये कानूनों का सख्ती से पालन करना होगा। बाल मजदूरी के कारणों में गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और कम मजदूरी दर आदि प्रमुख हैं। इसलिये विभिन्न विभागों के सहयोग से कार्यक्रमों का सीधा लाभ बाल मजदूरों को दिलाने का प्रयास करना चाहिये जिससे उन परिवारों को वैकल्पिक आय का स्रोत मिल सके, जो इन बाल मजदूरों की कमाई पर निर्भर हों। ऐसे गरीब परिवारों को कपड़े, मिट्टी का तेल आदि अन्य आवश्यक वस्तुएँ सस्ती दर पर उपलब्ध कराई जाएँ। गरीब बच्चे किसी तरह पढ़ लिख जायें तो उन्हें नौकरी नहीं मिलती है। ग्रामवासियों की यह धारणा बन जाती है कि शिक्षा प्राप्त करना उनके लिये पैसे और समय दोनों की बर्बादी है। अतः रोजगार परक शिक्षा ही बाल श्रम पर अंकुश लगा सकती हैं।

- सरकार द्वारा काम करने की स्थितियों में सुधार किया जाए।
- न्यूनतम मजदूरी, स्वास्थ्य और शिक्षा की व्यवस्था सरकार द्वारा व्यावहारिक रूप से की जाए।
- विकास कार्यक्रम/योजनाओं का वास्तविक लाभ बाल श्रमिकों के परिवारों को दिया जाय।
- बच्चों की रोटी, कपड़ा और मकान की अनिवार्य आवश्यकता सरकार द्वारा पूरी की जाये।
- बालश्रम कानून का उल्लंघन करने वालों को कठोर दण्ड दिया जाए।
- बालश्रम के विरोध में जन जागरुकता फैलायी जानी चाहिये।
- बाल श्रम निषेध सम्बन्धी पाठायक्रम, शिक्षा में शामिल किया जाए।

अंत में हम कह सकते हैं कि बाल मजदूरों की फौज न केवल देशकी अर्थव्यवस्था पर कलंक है अपितु विकास के कार्य में भी अवरोधक है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुये इस समस्या के लिए उत्तरदायी मूलभूत कारणों–गरीबी, बेरोजगारी अशिक्षा व जनसंख्या वृद्धि पर एक साथ कड़ा प्रहार करने की अति आवश्यकता है। जब तक बाल श्रमिकों के परिवारों के भरण–पोषण का स्थायी समाधान नहीं होता तब तक बाल मजदूर से सम्बन्धित सभी कानून एवं परियोजनाओं का प्रभाव न के बराबर ही रहेगा। बाल श्रम की समस्या मानवीय संवेदना, सहानुभूति एवं सहभागिता के बल पर ही सुलझाई जा सकती है। अतः समाज के प्रत्येक सदस्य में बाल श्रमिकों के प्रति संवेदना जागृत कर दी जाए तो निश्चित रूप से इस समस्या का समाधान शीघ्र एवं स्थायी रूप से हो जायेगा।

संदर्भ :

- जिला बाल श्रम विभाग की पुस्तिका
- जुलाई 2011 प्रतियोगिता दर्पण

Scanned by CamScanner

सामाजिक कुरीतियों की अवधारणा

✍ वीरेश कुमार
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

प्रत्येक समाज में अनेक प्रकार की रीतियाँ एवं परम्पराएँ प्रचलित होती है, जो उस समाज की व्यवस्था का संचालन करने में सहायता करती हैं। इन परम्पराओं का समाज में सम्मान होता है तथा समाज के प्रत्येक सदस्य द्वारा इन रीतियों का पालन सहर्ष किया जाता है। जब इन रीतियों को व्यक्ति अपने निजी स्वार्थो हेतु परिवर्तित कर देता है अर्थात उनके मूल स्वरूप को विकृत कर देता है, तो वह रीतियाँ जो समाज को एकता एवं सम्पन्नता के सूत्र में बाँध रहीं थी, समाज के लिए अभिशाप बन जाती हैं। इस प्रकार की रीतियों के लिए एक नवीन शब्द ''कुरीति'' का जन्म होता है। इन कुरीतियों को मिटाने के लिए डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने अनेक प्रयत्न किए और जनता का मार्ग दर्शन किया तथा कहा, संर्घष करो, आगे बढ़ो इन शब्दों का लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। कुरीतियों को दूर करने के लिए समाज में बुद्धिजीवी वर्ग को उपाय खोजने पड़े हैं। वर्तमान समय में सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन इस परिवर्तित व्यवस्था का ही परिणाम है।

सामाजिक कुरीतियों का अर्थ : सामाजिक कुरीतियों के शाब्दिक अर्थ पर विचार किया जाए तो जो बुरी रीतियाँ हैं उन्हें कुरीतियाँ कहते हैं। जो पहले कभी रीतियाँ थी उनका स्वरूप परिवर्तित होने पर वह कुरीति में परिवर्तित हो जाती है। जैसे- प्राचीन काल में हमारे समाज में दहेज लेना एवं देना एक स्वस्थ परम्परा के रूप में था, जिसे देने वाला दान समझकर देता था तथा ग्रहण करने वाला उसे सहर्ष स्वीकार करता था, इसे सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक एवं आर्थिक शोषण का माध्यम बनाकर कुरीतियों की श्रेणी में खड़ा कर दिया। जो समाज दान स्वरूप दहेज की रीति को स्वीकार करता था एवं सराहना करता था, वही समाज आज उसे अपराध मानने लगा है। इसे कई वाणियों द्वारा कहा गया है कि :

1. सामाजिक रीतियों का विकृत स्वरूप ही सामाजिक कुरीतियाँ है।
2. डॉ. वीरेश कुमार सिन्हा द्वारा, ''सामाजिक रीतियों के विरूद्ध आचरण ही सामाजिक कुरीतियाँ हैं।

प्रमुख सामाजिक कुरीतियाँ : भारतीय समाज में विद्यमान प्रमुख कुरीतियों की चर्चा निम्नलिखित रूप से की जा सकती है।

1. भ्रष्टाचार : वर्तमान समाज में सामाजिक कुरीतियों में भ्रष्टाचार एक महत्वपूर्ण सामाजिक बुराई है। नियम के विरूद्ध आचरण करना मानव ने अपनी प्राथमिकता बना ली है। मनुष्य द्वारा व्रक्रगति से चलना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि वह नियम बद्ध आचरण करना ही नहीं चाहता है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने विचारों में कहा-

''शिक्षा शेरनी का वह दूध है जो पीयेगा सो दहाड़ेगा।''

भ्रष्टाचार मिटाना है, देश को आगे बढ़ाना है।

2. बाल विवाह : भारतीय समाज में बाल विवाह एक जटिल कुरीति है। सरकार के द्वारा बाल विवाह को निषेध बताने के बाद भी व्यक्ति इस सामाजिक कुरीति को त्यागना नहीं चाहता है। आज भी भारत-वर्ष के अनेक क्षेत्रों में बाल विवाह होते हैं, जिसे सामाजिक रूप से स्वीकार किया जाता है। बाल विवाह के कारण दाम्पत्य जीवन में कलह, बच्चों की अकाल मृत्यु, स्त्रियों की अकाल मृत्यु एवं अस्वस्थ बच्चों का जन्म लेना आदि समस्यायें जन्म लेती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सभी छात्र-छात्राओं से अनुरोध है कि आस-पड़ोस में बाल विवाह रोकने चाहिए ताकि उन्हें परेशानी का सामना न करना पड़े। कहते हैं कि-

ब्रह्मा थे सृष्टि के दाता, मनु ने खोला खाता,
त्रेता गया, द्वापर बीता, आया कलयुग खाता पीता,
वर्तमान को कलयुग मान, मानव आया कीट समान,
सूरज जैसा रूप बढ़ाया, हनु ने अपना रूप घटाया,
मानव की बढ़ती संख्या से, सारे ध्वस्त हुए अनुमान,
क्या होगा आगे भविष्य का सोच न पाते हम नादान।।

''वीरेश कुमार''

3. दहेज प्रथा : वर्तमान समय में दहेज प्रथा एक प्रमुख

Scanned by CamScanner

सामाजिक कुरीति के रूप में है। इसके विकृत स्वरूप के कारण दहेज की दानव का नाम प्रदान किया गया है। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों का प्रमुख कारण दहेज ही है। दहेज लेना और देना दोनों की कानून की दृष्टि में अपराध हैं। स्त्रियों को जीवित जला देने की अनेक घटनाएँ दहेज की माँग पूर्ति न होने के कारण हुई हैं। इसलिए जो दहेज एक श्रेष्ठ सामाजिक परम्परा थी, वह वर्तमान में सामाजिक कुरीति बन गयी है।

4. स्त्रियों पर अत्याचार : भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा उचित नहीं मानी जाती है। भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है। स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार आज भी प्राप्त नहीं है। आज भी पुरुष को वंश चलाने वाला कहा जाता है। बालक एवं बालिका में भेद किया जाता है। आज भी समाज में 90 प्रतिशत व्यक्ति बालक के जन्म पर प्रसन्न होते हैं तथा बालिका के जन्म पर दु:खी होते हैं, इसलिए उसके पालन-पोषण में विशेष ध्यान दिया जाता है तथा बालिका की उपेक्षा की जाती है।

5. अस्पृश्यता : भारतीय समाज में छूआ-छूत एक प्रमुख सामाजिक बुराई है, इसमें जाति विशेष के व्यक्तियों को छू-लेने पर उच्च जाति के व्यक्ति अपने को अपवित्र समझते है तथा स्नान करके मन्त्रों द्वारा पवित्र होते हैं। ईश्वर ने सभी व्यक्तियों को समानता के आधार पर भेजा है। उसके यहाँ मानवता, नैतिकता तथा आध्यात्मिकता के आधार पर श्रेष्ठता प्रमाणित होती है।

6. जाति प्रथा : वैदिक काल में जाति एवं वर्ण का विभाजन समाज के विकास एवं व्यवस्था के सफल संचालन के लिए किया गया था। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार कार्य दिया जाता था, जिससे सम्पूर्ण समाज सुखी थी। वर्तमान समय में जाति प्रथा ने विकृत रूप धारण कर लिया है। जातिवाद की बुराइयों को खत्म करने के लिए बुद्धिजीवी डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने लोगों को जागरूक किया।

7. पक्षपात : समाज में व्यक्ति अपने परिवार, गाँव, जिले एवं राज्य के प्रति विशेष प्रेम रखता है। यह एक श्रेष्ठ परम्परा है। जब वही व्यक्ति इस प्रेम में अन्धा होकर दूसरे राज्य, जिले, ग्राम एवं परिवार के व्यक्तियों का करता है तो वह पक्षपात की श्रेणी में आता है। प्रत्येक व्यवस्था को न्याय संगत बनाने के लिए पक्षपात के स्थान पर समानता का दृष्टि कोण अपनाना चाहिए।

यही पशुप्रवृति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

सामाजिक कुरीतियों का समाधान

1. बाल विवाह से होने वाली हानियों से जन-सामान्य को अवगत कराया जाय तथा इससे सम्बन्धित कानून का पालन दृढ़ता से कराया जाय। दोषी व्यक्तियों को दण्ड भी दिया जाय।
2. दहेज को आर्थिक शोषण का हथियार न बनाया जाय तथा श्रद्धा के अनुसार प्राप्त दान को जो विवाह में मिलता है, स्वीकार किया जाय।
3. सभी व्यक्ति एक ही ईश्वर की सन्तान हैं इसलिए हमें ऊँच-नीच, छूआ-छूत से ऊपर उठकर एक सच्चा मानव बनना चाहिए।
4. समाज में वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए उपाय किए जाने चाहिए जिससे समाज में प्रत्येक परम्परा का अनुकरण उसके हानि एवं लाभों पर विचार करके किया जा सके।
5. अत: हमें ज्ञान प्राप्त होना चाहिए
   "विद्या वह है जो मुक्ति दिलाये।

इसलिए छात्र-छात्राओं, आपसे मेरा कहना है कि

शिक्षित बनो! संगठित रहो!! संघर्ष करो!!!

भूल

जो भूल कर भूल जाये, उसे नादान कहते हैं,
जो भूल करता रहे, उसे इंसान कहते हैं,
जो भूल करके मुस्करायें उसे शैतान कहते हैं,
जो भूर पर भूल करता जाए, उसे मूर्ख कहते हैं।
जो भूल करके भूल से सीखे, उसे बुद्धिमान कहते हैं,
जो कभी भूल न करें, उसे भगवान कहते हैं।

Scanned by CamScanner

भारतीय गणित का संक्षिप्त इतिहास
[Brief History of Indian Math]

✍ अमित कुमार वार्ष्णेय
प्रवक्ता- गणित विभाग

पृथ्वी पर मानव सर्वाधिक विवेकशील, चिन्तनशील और बुद्धिमान प्राणी है। वेदोत्तर कालीन ग्रन्थों से विदित होता है। कि "जिस प्रकार मयूरों की शिखाएँ और सर्पो की मणियां; शरीर में सर्वोपरि मुर्धा स्थान (मस्तक) पर विराज-मान है। उसी प्रकार वेदों सब अंगों तथा शास्त्रों में गणित शिरोमणि है।" प्रसिद्ध जैन गणितज्ञ महावीराचार्य ने गणित के सन्दर्भ में तो यहाँ तक कहा है कि "बहुत अधिक प्रलाप करने से क्या लाभ है। इस सचराचर जगत में जो कुछ भी वस्तु है, वह सब गणित के बिना समझना संभव नहीं है।

वैदिक साहित्य में वर्णित यज्ञों में यज्ञवेदी और हवन कुण्ड आदि के निर्माण में त्रिभुज, आयत, वर्ग, वृत्त आदि ज्यामितीय आकृत्तियों का प्रयोग होता रहा है। लेकिन प्रमाणिक आधार पर प्राचीन भारतीय गणितज्ञों में आर्यभट्ट का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ आर्य भट्टीय ज्योतिष एवं गणित में अंकगणित, बीजगणित, समतल गोलीय त्रिकोणमिति के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। उन्होंने ही यह बताया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर चक्कर लगाती है, जिससे दिन-रात होते हैं। इस महान गणितज्ञ के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिये राष्ट्र ने 1975 ई.० में छोड़े गये, अपने भू-उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा।

आर्यभट्ट के बाद ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य द्वितीय, बाराहमिहिर, श्रीधर, श्रीपति, बोधायन, नेमीचन्द आदि का विशेष योगदान शुद्ध गणित (Pure Mathematics) के क्षेत्र में रहा है। वैदिक काल शून्य तथा दाशमिक स्थान मान पद्यति का आविष्कार गणित के क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व देन है। भास्कराचार्य ने अंकगणित के आठ मल नियम (जोड़, बाकी, गुणा, भाग, वर्ग, घन, वर्ग मूल, घनमूल) प्रतिपादित किये। बौद्ध साहित्य में गणित को पर्याप्त महत्व दिया गया है। उन्होंने संख्याओं का वर्णन तीन रूप संख्येय, असंख्येय तथा अनन्त (Infinity) में किया है; अर्थात् भारतीय मनीषियों को अनन्त का भी सुस्पष्ट ज्ञान था।

यह कहना अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं होगा कि बारहवीं शताब्दी तक भारत गणित के क्षेत्र में विश्व का "ज्ञान गुरु" था। ❑

क्या आप जानते हैं?

कु. प्रियंका
बी.ए. द्वितीय वर्ष

1. व्यक्ति खाना खाए बिना कई दिन गुजार सकता है, लेकिन सोए बिना केवल 11 दिन रह सकता है।
2. जिस हाथ से आप लिखते हैं, उसकी उँगलियों के नाखून तेजी से बढ़ते हैं।
3. हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि उससे, एक इंच लम्बी कील तैयार की जा सकती है।
4. मनुष्य अपने पूरे जीवन काल में लगभग 2 लाख किलो-मीटर चलता है।
5. फिलिपीन्स में पाया जाने वाला वोया पक्षी प्रकाश में रहने का इतना शौकीन होता है कि अपने घोंसले के चारों और जुगनू भरकर लटका देता है।
6. वेटिकन सिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल 0.2 वर्गमील है और इसकी आबादी लगभग 770 है। इनमें से कोई भी इसका स्थायी नागरिक नहीं है। ❑

Scanned by CamScanner

सहनशीलता से सफलता मिलती है

✍ लखमी चन्द
प्रवक्ता, बी.एड.

एक रोज घर से घूमने निकला मूर्तिकार दो बडे पत्थरों को देखकर रूचिवश उनको तराश कोई कलाकृति बनाने की जुगत में लग जाता है। मूर्तिकार प्रथम पत्थर के पास जाकर बोला–

मूर्तिकार – क्या आप मेरी बात सुनेंगे ?

पत्थर – आप अपनी बात तो सुनाओ।

मूर्तिकार – आपको मेरी छैनी और हथौड़ी की थोड़ी चोट सहनी होगी।

पत्थर – ऐसा क्यों ?

मूर्तिकार – मैं आपको तराश कर ऐसा बनाना चाहता हूं कि आपकी ख्याति विश्व–विख्यात हो जाए।

पत्थर – न ही हमें आपकी ख्याति चाहिए और न ही आपकी चोट हमें सहनी है।

इस प्रकार प्रथम पत्थर से सकारात्मक उत्तर न पाने पर भी मूर्तिकार हिम्मत नहीं हारता और अपनी सोच को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से वह दूसरे पत्थर के पास पहुँचकर बार्तालाप करता है :

मूर्तिकार – क्या आप मेरी बात सुनेंगे ?

पत्थर – हाँ क्यों नहीं, बिल्कुल सुनेंगे।

मूर्तिकार – मैं आपको तराश कर ऐसा बनाना चाहता हूँ कि आपकी ख्याति विश्व– विख्यात हो जाए।

पत्थर – मुझे क्या करना होगा ?

मूर्तिकार – आपको मेरी छैनी और हथौड़ी की थोड़ी चोट सहनी पड़ेगी।

पत्थर – यदि थोड़ी सी चोट से मैं विश्व विख्यात हो सकता हूँ तो निश्चित तौर पर मैं तैयार हूँ।

इस प्रकार दूसरे पत्थर के तैयार हो जाने पर मूर्तिकार ने अपनी कला के माध्यम से उसको तराश कर माता दुर्गा की सुन्दर मूर्ति में बदल दिया। ऐसा करने के पश्चात् उसने तराशे गये पत्थर की मूर्ति तथा बिना तराशे पत्थर दोनों को ही एक मन्दिर में रख दिया। तब से नियमित लोग, तराशे गये पत्थर अर्थात् थोड़ी चोट खाए पत्थर पर दूध, जल, फल, फूल, मीठा शहद आदि अर्पित करते हैं, जबकि साथ रखे बिना तराशे गये पत्थर पर नियमित गरी के गोले ही फोड़े जाते हैं। स्पष्ट है कि कठिनाई दुःख, दर्द सहते हुए सफलता के मार्ग पर बढ़ने से ख्याति मिलतीहै।

किन्तु कठिनाई, दुःख दर्द आदि के भय से आगे न बढ़ने से कदाचित सफलता की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

क्यों चाहते हो बनना फूल, इक न इक दिन मुरझा ही जाओगे बनना ही है तो बनो राह का वो पत्थर, गर तराशे गये तो पूजे जाओगे। ❑

अरे ये तोता भी सबका...

संदीप कुमार
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

एक कम्प्यूटर इंजीनियर तोता खरीदने गया। दुकानदार ने उसे तीन तोते दिखाए। कहाँ सबसे अंत वाले तोते की कीमत 500₹ है। यह कम्प्यूटर चलाना जानता है।

उसके बगल में दूसरे तोते की कीमत 1000₹ है। यह सारे ऑपरेटिंग सिस्टम चला सकता है। तीसरा तोता जो सबसे अलग बैठा है। उसकी कीमत 20,000₹ है।

कम्प्यूटर इंजीनियर ने पूछा, यह इतना मँहगा क्यों। यह क्या करता है।

दुकानदान ने जवाव दिया, मैंने इसे कभी काम करते तो नहीं देखा, लेकिन दोनों तोते इसे बॉस (Boss) कहते हैं।

Scanned by CamScanner

राजनीति एवं नेता

पंकज शर्मा
बी.एड.

1. नीति नहीं है राजनीति में, अविश्वास की है परिभाषा।
जितने अक्षम उतने निन्दक, पृथक-पृथक है जिनकी भाषा॥

2. हिंसक, हिंसा मिल बैठे हैं, राजनीति अब युद्ध क्षेत्र है।
समदर्शन में आग लगा दी, चूल्हा-चूल्हा कुरूक्षेत्र है॥

3. शब्द जाल में निपुण निराले, षडयंत्रों के खलनायक हैं।
श्वाँस, श्वाँस गाली से पूरित, भारत के ये खलनायक हैं॥

4. द्वारपाल के योग्य नहीं जो, भारत के राजा बन जाते।
शब्दों से दुर्गन्धित करते, हिंसक सारे पूजे जाते॥

5. नेता अपने 'नेति' 'नेति' हैं, अस्थिरता के शुद्ध पुजारी।
कुर्सी की लिप्सा में आतुर, चिपक रहे हैं खरे भिखारी॥

6. जनता झौंकी युद्ध क्षेत्र में, स्वयं अधीक्षक दूर खड़े हैं।
एक दूसरे से भिड़वाकर, खुद सारे निश्चिन्त पड़े हैं॥

7. अन्धकार में असम डुबोया, श्रीनगरी श्री हीन बना दी।
पीड़ा में पंजाब प्रताड़ित, हर अंकुश की परिधि हटा दी॥

8. श्रीहीन भारत है अपना, केवल नेता ही श्री पति हैं।
सारा देश बनाकर निर्धन, लक्ष्मीपति ही अब अधिपति हैं॥

9. 'भारत' नाम देश का सुन्दर, श्री नगरी शोभा की सागर।
वंचित आज उसी सुषमा से, प्यास बहुत, पर खाली गागर॥

10. भारत भूमि भार से बोझिल, नेताओं की जनसंख्या से।
अब तो राजघाट भी लज्जित, झूठी शपथों की संख्या से॥

हँसते मुस्कुराते

कनिका वार्ष्णेय
बी.एड.

लैला ने अपने आलसी मंजनू से कहा, कि चाचा नेहरु ने कहा है कि 'आलस्य' हमारा सबसे बड़ा शत्रु है।
उस पर मंजनू ने उत्तर दिया कि महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि हमें अपने शत्रु से भी प्यार करना चाहिए।

❀ ❀ ❀ ❀

सन्ता डॉ. से- कोई लम्बी उम्र का तरीका बताइए।
डॉ. बोला- शादी कर लो।
सन्ता ने कहा- क्या इससे उम्र लम्बी हो जाएगी,
डॉ. बोला- नहीं....... यह शौक समाप्त हो जाएगा।

❀ ❀ ❀ ❀

बच्चा अपने पापा से बोला- आपके कुछ बाल सफेद क्यों हैं ?
पापा- बेटा, जब तुम मुझे दु:खी करते हो, तो मेरे कुछ बाल सफेद हो जाते हैं।
बच्चा मुस्कुराते हुए : अब मैं समझा, दादा जी के सारे बाल सफेद क्यों हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

पत्नी- क्या बात है जो आज आप मेरी फोटो में फोटो खींच रहे हो ?
पति- कुछ नहीं पगली.................आज मुझे बाइल्ड लाईफ फोटोग्राफी करने का मन कर रहा है।

❀ ❀ ❀ ❀

बनिया- ये केले कैसे दिये ?
ठेले वाला- एक रुपये के।
बनिया- साठ पैसे के दे दो।
ठेलेवाला – साठ पैसे में तो सिर्फ छिलका मिलेगा।
बनिया- ये लो चालीस पैसे, छिलका रख लो, केला दे दो। ❑

देश के दुश्मन को मिट्टी में मिला देंगे

विजेन्द्र सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

हम हिन्द के बासी हैं, हिन्दुस्तान सजा देंगे॥
हम हिन्द के नारों से, धरती को हिला देंगे॥

धरती तो धरती है, आकाश हिला देंगे॥
ए हिन्दू-मुसलमानों, जरा एक तो हो जाओ॥
हम देश के दुश्मन को, मिट्टी में मिला देंगे॥

Scanned by CamScanner

नेता बनने की दवा...

विकास कुमार
बी.बी.ए. तृतीय वर्ष

रोग सब लोगों को होता है और दवाई भी मिलती है। पर हम जिस दवा से आपको परिचित करा रहे हैं, वह शायद किसी भी मेडिकल स्टोर पर नहीं मिलेगी। इस समय नेता बनने का व्यापक रोग फैल रहा है, हमने इसकी दवाई की खोज की है, जो लोग नेता बनने के इच्छुक हैं, उन्हें ही हम दवाई बनाने की विधि बता रहे हैं। यह विधि इस प्रकार से है:

1.	धोखे की जड़	150 ग्राम
2.	बकवासों की छाल	100 ग्राम
3.	बेइमानी का अर्क	300 ग्राम
4.	रिश्वत खोरी की डाली	200 ग्राम
5.	वेशर्मी के बीज	500 ग्राम
6.	वायदा खिलाफी के फल	250 ग्राम
7.	दगाबाजी की पत्ती	50 ग्राम
8.	क्रोध की गुठली	100 ग्राम

बनाने की विधि : इन सब दवाओं को 500 ग्राम दुश्मनी के अम्ल के साथ मिलाकर बड़ी-बड़ी गोलियाँ बना लें, प्रतिदिन सुबह, दोपहर, शाम एक-एक गोली काली चाय के साथ मिलाकर खायें।

परहेज : दवाई खाने के तीन घण्टे बाद तक सच्चाई व भलाई को दिमाग में नहीं लाना चाहिए, नहीं तो रिएक्शन कर जायेगी। ❑

मुस्कान

मुहम्मद इरसाद
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

1. **अध्यापक (छात्रों से) :** अगर न्यूटन पेड़ के नीचे नहीं बैठते और उनके सर के ऊपर सेब नहीं गिरता तो गुरूत्वाकर्षण का सिद्धान्त हमें कैसे पता चलता ?
   छात्र (अध्यापक से) : बिल्कुल सही कहा आपने, अगर न्यूटन हमारी तरह क्लास में बैठकर इसी तरह किताब पढ़ रहे होते तो वो भी कोई अविष्कार नहीं कर पाते।

2. **मोहन :** यार, जब तुम्हें गर्मी लगती है तो क्या करते हो ?
   रोहन : तब हम ए.सी. के सामने बैठ जाते हैं।
   मोहन : और जब तुम्हें बहुत ज्यादा गर्मी लगती है तो क्या करते हो ?
   रोहन : जब हमें ज्यादा गर्मी लगती है तो फिर ए.सी. को ऑन कर देते हैं।

3. संगीत के अध्यापक ने अपने एक छात्र से पूछा– तुम किस ताल के विषय में अधिक जानते हो।
   छात्र ने तुरंत उत्तर दिया, सर मैं हड़ताल के विषय में अधिक जानता हूँ।

4. एक भारतीय यात्री जब जापान पहुँचा तो उसके जापानी मित्र ने पहली बार उसे जापानी शराब पीने के लिए पेश की।
   भारतीय यात्री ने पहला घूँट लिया ही था कि अचानक दीवारें लड़खड़ाने लगीं, फर्श हिलने लगा। भारतीय यात्री घबराकर बोला– उफ यह तो बहुत तेज शराब है, पहले ही घूंट में यह हाल कर दिया।
   जापानी मित्र बोला, फिक्र न करो दोस्त, इस गड़बड की वजह शराब नहीं भूकम्प है। ❑

शायरी

विजेन्द सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

1. न थी जिसको दोस्ती की कदर,
   इत्तिफाक से उसी को चाह रहे थे हम।
   उसी दीये ने हमें जला डाला, जिसे हवा से बचा रहे थे हम।।

2. क्या पता कब मौत का पैगाम आ जाए,
   इस जिन्दगी की आखरी शाम कब आ जाए।
   हम तो ऐसे मौके को तलाशते हैं,
   कि हमारी जिंदगी भी किसी के काम आ जाए।।

Scanned by CamScanner

'आत्मविश्वास सफलता की कुँजी'

✍ सचिन कुमार भास्कर
बी.एड.

प्रत्येक व्यक्ति के प्रयास में शामिल कर्म ही उनकी सफलता और प्रसन्नता की वास्तविक कुंजी होती है। लेकिन सफलता प्राप्त करना सरल नहीं है। यदि ऐसा होता, तो प्रत्येक व्यक्ति सफल होता, फिर भी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ना इतना कठिन नहीं है जितना कि यह प्रतीत होता है। लेकिन एक उद्देश्य पूर्ण और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, उसके लिए यह कहावत-चरितार्थ होगी-

"Today's crazy ideals may becomes tomorrow's reality" अगर मन में विश्वास हो, हौसले दृढ़ हों तो मंजिल आसान हो जाती है।

"ऊँचे लक्ष्य को वही पाते हैं जो दृढ़ निश्चयी होते हैं। उनके लिए राह के काँटे भी फूल बन जाते हैं।।"

यह सत्य है कि सफलता किसी को विरासत में नहीं मिलती। व्यक्ति को अपनी मंजिल पाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि सफलता को आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह भी सत्य है कि व्यक्ति के हौसले बुलन्द हों, तो वह पहाड़ों तक के रुख मोड़ सकता है।

"लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिलाकर चल सफलता तेरे चरण चूमेगी। आज नहीं तो कल" खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले, खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है।"

अपने आप को इस भ्रम में रखने से आपको कोई लाभ नहीं होने वाला है,कि सफलता को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। वैसे सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना ही पर्याप्त नहीं।

सभी प्रकार के कार्यों को करने का एक उद्देश्य और महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। जो उद्यमी नहीं होते वे कभी नहीं जीतते और जो जोखिम नहीं उठाते, उन्हें कभी लाभ नहीं होता। जो आकाश को छूने की चाह नहीं रखते, वह कभी सफल नहीं होते।

"हाथ उठाओ, चाहो तो आकाश छूलो तुम।
बात कद की नहीं, हौसले की है।"

जीवन में सफलता का एक और मन्त्र है, कभी भी लकीर के फकीर न बने और केवल अपनी शैक्षिक योग्यताओं से जुड़े हुए कैरियर पर निर्भर न रहें। इसकी वजह से आप ऐसे क्षेत्र में अपने कैरियर की तलाश कर सकते हैं, जहाँ आप के विचार में आप अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सकते हैं। दूसरों की नकल मत करो, तभी आप सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। सदैव यह ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए कि-

"Nothing is impossible and every thing is possible." ❑

माँ

सचिन कुमार भास्कर
बी.एड.

जिस माँ को देखा नहीं, उसको तो सभी मानते हैं,
जिस माँ ने तुमको जन्म दिया, क्यों उसको सभी भुलाते हैं।
दर्शन करने जगदम्बा के, पर्वतों पर ठोकर खाते हैं,
पर जन्म दायिनी माँ के पास, नहीं हाथ जोड़ने जाते हैं।
जो स्वयं मूक हैं उसके आगे, नये-नये भजन सुनाते हैं,
पर जिसने तुमको लोरी सुनाई, उसको अपशब्द सुनाते हैं।
जो पत्थर से बनी है उसके आगे, नित्य नये-नये भोज सजाते हैं,
जिसने तुमको अपने दूध से पाला, उसको ही आँसू पिलाते हैं।
बिन सोचे इस दुनियाँ में, क्यों नादानी करते हैं।
अपनी माँ को सुख दे नहीं सकते, जग की जननी माँ को खुश करते हैं।
❑

मनुष्य कब बनता है?

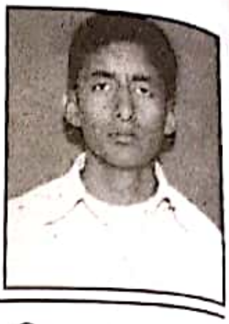

अचल कुमार अत्री
बी.टी.सी.

मनुष्य उसी को कहना चाहिए जो कि मननशील होकर स्वात्मबल द्वारा अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे तथा दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करे जो खुद को अच्छा लगता हो ऐसा व्यवहार न करे जो खुद को अच्छा नहीं लगता हो तभी वह मनुष्य बन सकता है।

हम समाज में देखते है कि व्यक्ति चार प्रकार के होते हैं-

1. एक प्रकार के वे बहुत अच्छे लोग हैं, जो कि अपना काम न हो, पर दूसरे का हो जाए- ऐसा सोचते तथा करते हैं।
2. दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति होते हैं, अपना भी काम बन जाए, दूसरे का भी बन जाए, इन्हें मध्यम श्रेणी के लोग कहते हैं।
3. तीसरे प्रकार के वे होते हैं कि अपना काम हो जाए, चाहे हमारी वजह से दूसरे का खराब हो जाए, इन्हें निम्न श्रेणी के लोग कहते हैं।
4. चौथे प्रकार के वे लोग होते हैं चाहे अपना काम बने या न बने, दूसरे का भी नहीं बनने देते, ऐसे लोग नकारात्मक श्रेणी में आते हैं।

इसी प्रकार से हमें अच्छे मनुष्य के गुणों को अपनाना चाहिए। यदि व्यक्ति अपने अन्दर से एक बुराई को छोड़कर अच्छाई ग्रहण करता है तो निश्चय ही वह अच्छाई की ओर बढ़ता चला जाता है। एक भी बुराई ग्रहण करने से वह अवनति की ओर बढ़ता चला जाता है, जैसे- कूँआ खोदने वाला व्यक्ति नीचे की ओर बढ़ता चला जाता है और दीवार चिनने वाला व्यक्ति ऊँचाई की ओर बढ़ता है।

इसीलिये हमें बुरे कर्मों को छोड़कर अच्छे गुणों को धारण करना चाहिये।

समाज में देखते हैं कि व्यक्ति के अन्दर अहंकार की भावना बहुत होती है, धनवान् अपने धन पर अभिमान करता है, जब कि धन तो आता जाता है, इस पर भी अभिमान नहीं करना चाहिए, विद्वान विद्या पर अभिमान करता है, यदि देखा जाए तो विद्या से तो हमेशा विनय आती है, नम्रता आती है, तो यह अभिमान की भावना कैसे आयी। जो अभिमानी होते हैं वे विद्वान नहीं, अविद्वान होते हैं। बलवान अपने बल पर घमण्ड (अभिमान) करता है।

इस पर विचार करें तो देखते हैं बल एक दिन के बुखार में उड़ जाता है, शरीर की एक नस भी अपने स्थान से हटने पर बैचेन कर देती है चाहें आप कितने ही बलवान क्यों न हो।

इस सम्बन्ध में हिन्दी के महान् कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय ने लिखा है-

मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जो था मुँडेरे पर खड़ा,
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।
मैं झिझक उठा, हुआ बैचेन-सा,
लाल होकर आँख भी दु:खने लगीं
मूँठ देने लोग कपड़ों की लगे।
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।
जब किसी ढंग से निकल तिनका गया,
तब समझ ने यों मुझे ताने दिये,
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिये॥

ऐसे दुर्गुणों को व्यक्ति जब तक नहीं छोड़ेगा, तब तक वह मनुष्य नहीं बन सकता, मनुष्य बनने के लिए अच्छे गुणों को अपनाना होगा तभी मनुष्य बन सकते हो। मनुष्य शब्द का अर्थ है जो मनन अर्थात् जो चिन्तन पूर्वक कार्य करता है, वही मनुष्य है। ☐

Scanned by CamScanner

बी.टी.सी. विद्यार्थियों का स्वागत एवं विदाई समारोह (सत्र 2013)

माल्यार्पण करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. राजेन्द्र सिंह (चेयरमेन शारीरिक शिक्षा विभाग अ.मु.वि.) अलीगढ़

समारोह में उपस्थित मंचासीन अतिथिगण

त्रिमासिक पत्रिका ''ज्ञान दर्शन'' का विमोचन करते हुए अतिथिगण

सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती छात्राएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई बी.टी.सी. की छात्राएं

उपस्थित प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थीगण

अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी मुख्य अतिथि डॉ. राजेन्द्र सिंह को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय पर्व : स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण करते हुए मुख्य अतिथि
डॉ. एस.पी.एस. जादौन, पूर्व प्राचार्य, एस.वी.कालेज, अलीगढ़

गणतंत्र दिवस पर छात्र विचार व्यक्त करते हुए

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण करते
प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता व श्री सुरेश चन्द्र

शिक्षक दिवस

शिक्षकों को सम्मानित करते हुए बी.एड. के विद्यार्थी

प्राध्यापिका डॉ. सुहैल अनवर को सम्मानित करती हुई छात्रा

प्राध्यापिका डॉ. सन्ध्या सेंगर को सम्मानित करती हुई छात्रा

शिक्षक श्री अजय कान्त पाठक को सम्मानित करते हुये छात्र

Scanned by CamScanner

प्रतिभा परिचय (बी.एड. विभाग) सत्र 2013-14

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई बी.एड. की छात्राएं

डॉ. गौतम गोयल बी.एड. छात्रा को उपहार देते हुए

श्री चन्द्रशेखर (वरिष्ठ पत्रकार) बी.एड. छात्र को उपहार देते हुए

उदबोधन करते हुए महाविद्यालय सचिव श्री दीपक गोयल

माता की चौकी एवं डांडिया

हवन करती हुई महापौर श्रीमती शकुंतला भारती एवं आर.ए.एफ. कमाण्डेण्ट श्री अनिल ध्यानी की धर्मपत्नी

पूजन करते श्री दीपक गोयल (सचिव) व श्रीमती आशा देवी (अध्यक्षा)

डाण्डिया डांस प्रस्तुत करते महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं व प्राध्यापकगण

रक्तदान शिविर एवं संगोष्ठी

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत रक्तदान शिविर के यादगार पल

रक्तदान

महादान

मचासीन अतिथि डॉ. आर. पी .सिंह अपर निदेशक (स्वास्थ्य) के साथ सम्मानित रक्तदाता विद्यार्थी गण

शिविर का उद्घाटन करते हुए सी.एम.ओ. डॉ. अर्जुन सिंह

रक्तदाताओं को सम्बोधित करते हुए सी.एम.ओ. डॉ.अर्जुन सिंह

मंचासीन अतिथि गण, प्राचार्य व उप प्राचार्य

रक्तदान करते हुए महाविद्यालय के शिक्षिका डा. रेखा शर्मा

रक्तदान करते हुए महाविद्यालय के छात्रगण

Scanned by CamScanner

वार्षिकोत्सव (2013)

विशिष्ट अतिथि श्रीमती ऐश्वर्या सचान (पत्नि श्री धीरेन्द्र सचान ए.डी.एम. सिटी) का तिलक लगाकर स्वागत करती हुई छात्रा

मुख्य अतिथि डॉ. ए.आर. किदवई (निदेशक) ए.स.सी., ए.एम.यू., अलीगढ़) दीप प्रजलित करते हुए

नगरायुक्त श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह का स्वागत करते हुए उप प्राचार्य डॉ. एस.एस. यादव

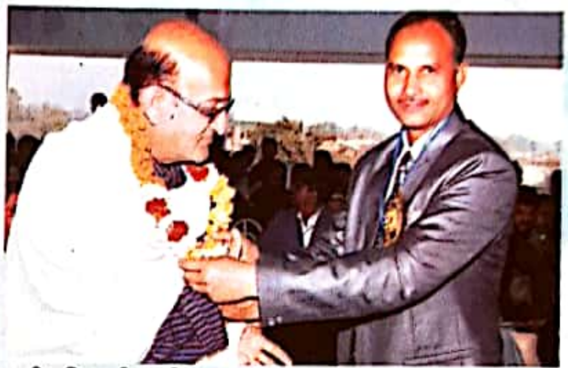

श्री रवि सरीन जी का स्वागत करते हुए डॉ. खजान सिंह

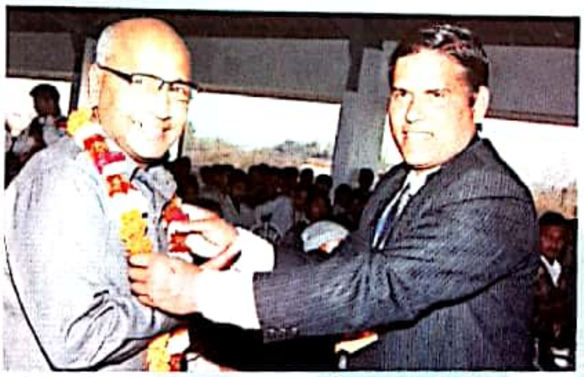

श्री काशीनाथ जी का स्वागत करते हुए डॉ. बी.डी. उपाध्याय

अध्यक्षा का स्वागत करते हुए श्रीमती रंजना सिंह

श्री रमेशचन्द्र जी का स्वागत करते हुए डॉ. रत्न प्रकाश

राष्ट्रीय शूटर व छात्रा हिमानी भारद्वाज को ज्ञान गौरव पुरस्कार व ₹ 51 हजार की धनराशि का चैक प्रदान करते हुए अतिथि गण

Scanned by CamScanner

वार्षिकोत्सव (2013)

मंचासीन अतिथिगण

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' का विमोचन करते हुए अतिथिगण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय के छात्र

कार्यक्रम का आनन्द उठाते हुए दर्शकगण

मुख्य अतिथि प्रो. ए.आर. किदवई (निदेशक यू.जी.सी. एकेडमिक स्टॉफ कालिज) का स्वागत करते हुए अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

नगर आयुक्त श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह को प्रतीक चिन्ह देते हुए सचिव श्री दीपक गोयल साथ में श्री शमीम अहमद (सी.डी.ओ.)

Scanned by CamScanner

देशोत्थान के उपाय

✍ चन्द्रवीर सिंह
बी.टी.सी.

देश के उत्थान के बारे में अथर्ववेद में कहा है–

"श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता"

अर्थात् देश की उन्नति श्रम के द्वारा, तप द्वारा, आस्तिकता द्वारा ही हो सकती है। मन्त्र में पहली बात कही गई है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए। जिस देश में लोग परिश्रम से कतराएँ, वह देश सदा दुःखी होकर पिछड़ा रहेगा। दुर्भाग्य से हमारे देश में भी यह दुर्गुण वास्तविक शिक्षा के अभाव से तथा लम्बे समय तक गुलाम होने के कारण प्रायः प्रत्येक व्यक्ति काम से बचना चाहता है। पढ़ाई–लिखाई का उद्देश्य भी यही समझा जाता है कि इसके सहारे बिना परिश्रम के अथवा कम श्रम करके अधिक धन कमाया जा सकता है और उस धन से अत्यधिक उपभोग की सामग्री जुटाई जा सकती है।

स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् होना यह चाहिए था कि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार राष्ट्र–निर्माण में जुट जाता, किन्तु यहाँ स्वतन्त्रता का अर्थ यह लिया गया कि अब हमें कुछ करने धरने की आवश्यकता नहीं। अब तो सर्वत्र केवल अधिकार–प्राप्ति की धुन है। हम देखते हैं कि जितने छोटे–बड़े सरकारी उद्योग–धन्धे हैं, सब के सब करोड़ों के घाटे में हैं। पहले तो श्रमिक वर्ग काम नहीं करता फिर ऊपर के अफसर उस उत्पादन में भी हेराफेरी करके जेबें भरते हैं। कोई यह विचार करने को उद्यत नहीं है कि अन्ततः इस राष्ट्र का बनेगा क्या?

आज प्रत्येक राष्ट्रवासी को सोचना चाहिये कि अपनी आवश्यकता पूर्ति के बदले में देश को मैं यदि कुछ देता नहीं हूँ तो देश पर भार हूँ और बिना कुछ प्रत्युपकार किये मुझे रोटी खाने और कपड़े पहनने का भी कोई अधिकार नहीं।

भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है ताकि वह अपनी कठिनाईयों को समझकर उन्हें दूर करने का उपाय सोचे। उसे हाथ और समर्थ शरीर इसलिए दिया है कि विचारी हुई बात को परिश्रम करके सफल बनाए। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद में कहा है कि– "**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवेष इच्छत समाः**" अर्थात मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। हम देखते हैं कि व्यक्ति बिना कर्म किये हुये फल की इच्छा करता है और फल की प्राप्ति न होने पर भाग्य को कोसता है कि यह तो मेरे भाग्य में ही नहीं।

किसी ने कहा है कि–

"आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भगः॥

अर्थात् बैठने वाले का भाग्य भी बैठ जाता है और जो खड़ा हो जाता है उसका भाग्य भी खड़ा हो जाता है। जो सो जाते हैं उनका भाग्य भी सो जाता है, और जो चलने लगते हैं उनका भाग्य भी चलने लगता है, इसलिए परिश्रम करना चाहिए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि– "**परिश्रम वह है जो कि भाग्य के फाटक को खोल देता है।**" किन्तु समाज का बहुत बड़ा वर्ग भाग्य को ही सब–कुछ मानने लगा। ऐसे साधु और सन्त हुए जो समाज को निष्क्रियता का उपदेश देते रहे–

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम,
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय॥

ऐसे विचारों ने देश की बहुत बड़ी हानि की। समाज में भाग्यवाद इतना प्रबल हो गया है कि लोग परिश्रम की ओर से उदासीन हो गए– "**भाग्य फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरूषम्**" विद्या और परिश्रम बेकार है, जो भाग्य में लिखा है, वही होना है। इन्हीं विचारों के कारण हमारा देश अवनति की ओर जा रहा है।

यदि हम विचार करें तो कर्म करने से ही भाग्य बनता है तथा समाज में लोकोक्ति भी है– "**जैसा करोगे वैसा भरोगे**"। कर्म भी तीन प्रकार के होते हैं– 1. क्रियमाण 2. सञ्चित 3. प्रारब्ध। वर्तमान में जो जो काम किया जा रहा है,

Scanned by CamScanner

वह 'क्रियमाण' कर्म हुआ। जैसे– किसान खेत में बीज बोता है तो हमारी बुबाई तक की अवधि क्रियमाण होती है। आगे बोया हुआ बीज अंकुरित होकर फल पकने तक जिस स्थिति में रहता है, उसका नाम सञ्चित है। सञ्चित का अर्थ है– जमा। जो कर्म किया था, वह अभी जमा है। जब किसान पकी हुई फसल काटकर दाने निकालकर घर ले जाता है उसका नाम प्रारब्ध है। प्रारब्ध का अर्थ है जो कर्म किया था उसका फल मिलना प्रारम्भ हो गया, अर्थात् किया हुआ कर्म जब फल देने की स्थिति में पहुँचता है, उसी का नाम प्रारब्ध है। प्रारब्ध ही भाग्य है।

गोस्वामी तुलसीदास ने लंका पर आक्रमण के समय जब राम समुद्र को देखकर भाग्य की बात करने लगे तो लक्ष्मण द्वारा पुरूषार्थ के विषय में प्रेरक शब्द कहलवाए हैं। लक्ष्मण ने कहा–

मारहु वाण सिन्धु करि सोपा।
नाथ दैव करि कौन भरोसा॥
दैव दैव आलसी पुकारा।
पुराषार्थ कर्त्तव्य हमारा॥

देशोत्थान के लिए दूसरी बात कही है– राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को तपस्वी होना चाहिए। तप का लक्षण महाभारत में बताया है– **''तपः स्वकर्म–वर्तित्वम्''** अर्थात् अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही तप है। बात के धनी मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह कोई तपस्वी ही बेखटके उत्तर दे सकता है। राम ने कहा था–

लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्।
अतीयात् सागरो वेलान्न प्रतिज्ञात्रंह पितुः॥

अर्थात् ''चाहे चाँदनी चन्द्रमा से पृथक हो जाय, चाहे हिमालय हिम का परित्याग कर दे, चाहे समुद्र अपने किनारों को लाँघ जावे, किन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा से विमुख नहीं हो सकता।''

देश की उन्नति के लिए तीसरी बात कही है कि– राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों को आस्तिक होना चाहिए। जब मनुष्य के हृदय में यह भाव होंगे कि इस विश्व को नियन्त्रण में रखने वाली ऐसी शक्ति है जो प्रत्येक अच्छे बुरे कर्मों को देखती है तथा अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल अवश्य मिलता है, किसी ने कहा भी है– ''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'' अर्थात् व्यक्ति जैसा कर्म करेगा, चाहे शुभ हो, चाहे अशुभ हो, उसे उसका फल अवश्य ही वैसा मिलेगा। यदि व्यक्ति ऐसा विचार करके कार्य करे तो निश्चय ही रिश्वत लेना, चोरी करना तथा आतंक फैलाना आदि दुर्गुण खत्म हो जायेंगे। तब हमारा देश पहले की तरह सोने की चिड़िया कहलायेगा।

यह भारत देश वह भारत देश है, जिसके एक शासक अश्वपति ने यह घोषणा की थी कि–

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात्, मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस और शराबी नहीं है, कोई यज्ञ न करने वाला नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है, और जब कोई पुरुष दुराचारी नहीं है तो दुराचारिणी स्त्री तो हो ही नहीं सकती।

एक बार यूरोप में विश्वशान्ति सम्मेलन हो रहा था तो इस विश्वशान्ति सम्मेलन के अध्यक्ष–पद से बोलते हुए मिस जटस्कू ने प्रतिनिधियों से कहा था–

"O you assembled scholors of earth, if you desire to keep the atmosphere of the world, quite and calm, go to the saints in the caves and forests of India. Sit at their feet and learn Devine wisdom from their holy lips and then propagate it in Europe and America."

अर्थात् '' इस भूमण्डल के समस्त विद्वानों ! यदि आप संसार के वातावरण को क्षोभरहित और शान्त रखना चाहते हैं, तो भारत के वनों और गुफाओं में तप करते हुए महात्माओं की सेवा में जाओ और उनके चरणों में बैठकर उनके पवित्र ओष्ठों से जो विचार सुनो, उनका प्रचार और प्रसार यूरोप और अमेरिका में करो, तब संसार में शान्ति हो सकती है, आपके विचारों से यह सम्भव नहीं।''

इससे सर्वथा स्पष्ट है कि राष्ट्र की शान्ति और उन्नति के लिए आस्तिकता और अपनी भारतीय संस्कृति को अपनाना होगा। इससे देश अवनति से उत्थान की ओर बढ़ता चला जायेगा। □

Scanned by CamScanner

खुद को बदलो, तुम्हारे लिए दुनिया स्वतः बदल जायेगी

पूनम शर्मा
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

हमारा देश भारत एक ऐसा देश है जहाँ के निवासियों कि संस्कृति एवं परम्परायें विश्वभर में सर्वोपरि रही हैं। कहते हैं कि भारत देश की मिट्टी से दर्शन की सुगन्ध आती है। यही कारण है कि भारत को जगत गुरु कहा जाता है। यहाँ के धार्मिक ग्रन्थों के मर्म को समझने के लिए विदेशियों की उत्कंठा आज भी बनी हुई है। भारतवर्ष की भूमि पर ऐसी अनेक विभूतियों ने अवतार लिया है जिन्होंने अपने सिद्धान्तों को स्थापित करके संसार में हर मानव को जीने की कला सिखायी।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए बदलाव बहुत ही आवश्यक है। यहाँ बदलाव का अर्थ यह नहीं है कि बुरी बातों के प्रभाव से नकारात्मक परिवर्तन आना; बल्कि बदलाव वह है- अच्छी बातों से प्रभावित होकर अपने अन्दर की बुराइयों को खत्म कर अच्छाइयों को अपनायें तथा अच्छा ज्ञान प्राप्त कर पूरी दुनिया को बदल दें, अर्थात् ''बदलाव वह सब है जो हम अपने जीवन में सीखते हैं और जिसके कारण हमारे अन्दर सकारात्मक परिवर्तन आता है।''

कहते हैं कि खुद को बदलो तुम्हारे लिए दुनिया स्वतः बदल जायेगी, जो कि सत्य कथन है। जब हम किसी के साथ दुश्मनी या प्रेम का व्यवहार करते हैं तो दूसरा व्यक्ति भी हमारे लिए वही दुश्मनी या प्रेम की भावना अपने मन में रखता है तथा जब हम स्वयं को बदलकर जिस तरह से ढालेंगे और अपने आप में परिर्वतन लायेंगे तो दुनिया भी हमें परिवर्तित हुई प्रतीत होगी।

अपने लक्ष्य को प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य और अधिकार है लेकिन इसके लिए स्वयं को बदलना आवश्यक है।

जो बदलता नहीं है, वह उन्नति नहीं कर सकता।

व्यक्ति अपने आप में बदलाव विद्या तथा ज्ञान के आधार पर करता है तो वह उन्नति के मार्ग पर जाता है। विद्या स्वर्ण है परन्तु भूमि की मिट्टी और मलिनता से लथपथ विद्यारूपी स्वर्ण को जब तक प्रयोग की मिट्टी में तपाया न जाये अर्थात् उसे व्यवहार में न लाया जाये तब तक उस पर कांति एवं आभा नहीं आती और जब तक कांति एवं आभा नहीं आती तथा जब तक विद्यारूपी स्वर्ण कर कांति और आभा लाने का प्रयास केवल विद्यार्थी ही कर सकता है।

सच्चा विद्यार्थी वही है जिसके मन में विद्यार्जन के प्रति सच्ची जिज्ञासा और लगन हो और जो विद्या प्राप्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को देखकर आनन्दित होता हो। प्रत्येक विद्यार्थी का यह कर्तव्य है कि वह ज्ञान प्राप्त कर स्वयं में बदलाव लाकर राष्ट्र निर्माण की दशा में अपना सक्रिया योगदान दे। कहते हैं बदलो, यही वक्त की पुकार है। आत्म विश्वास से भरा व्यक्ति बेहतर ढंग से काम करता है लेकिन सच यह भी है कि कोई भी महान काम अकेले नहीं किया जा सकता है। अपने साथ अपने सहयोगियों को लेकर चलना भी आवश्यक है और दूसरे व्यक्ति भी हमारे साथ तभी चलेंगे जब हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे अर्थात व्यवहार में परिवर्तन लाकर ही हम बदल सकते हैं।

स्वयं सचेत रहते हुए सजगता का वातावरण उत्पन्न करना, नैतिकता पर आधारित गुणों का विकास करना आवश्यक है। मनुष्य का विकास स्वस्थ बुद्धि और चिन्तन के द्वारा ही होता है। इन गुणों का विकास नैतिक विकास पर आधारित है और नैतिक विकास हम तभी समझेंगे जब ज्ञान प्राप्त कर स्वयं में परिवर्तन लाएंगे। अस्थिर बने रहने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

अब यह बात सामने आती है कि क्या सामाजिक बदलाव व्यक्तिगत बदलाव के बिना सम्भव है? इसे हम इस प्रकार स्पष्ट करते हैं कि- मानव समाज की एक प्रमुख विशेषता है- उसमें परिवर्तन होना स्वाभाविक है। परिवर्तन निरन्तर परिवर्तित एवं विकसित होता रहता है यह समाज के

Scanned by CamScanner

विकास की प्रारम्भिक अवस्था है। सामाजिक विकास के लिए व्यक्तिगत परिवर्तन जरूरी है। "समाज में रहकर दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार करना चाहिए जिसे हम अपने लिए पसन्द करते हैं।"

बदलाव की आवश्यकता : बदलाव की आवश्यकता सभी को होती है अगर बदलाव नहीं होगा तो समाज व देश की उन्नति नहीं होगी। लेकिन हम अपने देश की संस्कृति एवं मूल्यों को भूलते जा रहे हैं जैसे कि आजकल अपनी मातृभाषा हिन्दी को छोड़कर अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दे रहे हैं, यह हमारी मातृभाषा का अपमान है। आजकल लोग दादा-दादी, माता-पिता के सम्बोधन को ही भूल गये हैं। यदि इस तरह से बदलाव हुआ तो हमारे देश की संस्कृति एवं परम्पराएँ मिट्टी में ही मिल जायेगी। इसलिए शिक्षा के द्वारा नई पीढ़ी को संस्कृति तथा मूल्यों का स्थायित्व मिल सके, इसके लिए उन्हें शिक्षा का ज्ञान देना जरूरी है।

व्यक्तिगत परिवर्तन ही देश का परिवर्तन है : सामाजिक बदलाव व्यक्तिगत बदलाव के बिना सम्भव नहीं है क्योंकि समाज व्यक्तियों के आपसी सम्बन्धों से ही बनता है तथा हमारे आपसी सम्बन्ध तभी अच्छे होंगे जब हम खुद को बदलेंगे।

इसलिए हम कह सकते है कि खुद को बदलो तुम्हारे लिए दुनिया स्वतः बदल जायेगी। ❑

गणितज्ञ का प्रेम-पत्र

सचिन कुमार
बी.एड.

पता- 40 डिग्री, 18 मिनट, 5 सेकेण्ड सिग्मा स्ट्रीट,
अल्फा कालोनी, कैलकुलेशन सिटी

प्रिय शून्या,

जब से तुमसे से दूर हुआ हूँ, लगभग शून्य (zero) हो गया हूँ। मेरा दिल ऐसे टूट गया है जैसे कोई व्यंजक टूट जाता है। गुणन खण्ड करने पर मेरा दुःख दिन-प्रतिदिन वैसे ही बढ़ रहा है जैसे चक्रवृद्धि ब्याज से मिश्रधन। मुझे याद है वह स्वर्णिम समय जब हमारे प्रेम का ग्राफ उचिष्ठ स्थिति यानी Maximum Position पर था। हमारे मिलने की बारम्बारता उच्च थी। हमारा प्रेम Calculation से परे tan 90° की सीमा को भी पार कर गया था। साथ-साथ जीने-मरने की कसमें खाई थीं हमने, पर देखते ही देखते हमारे प्रेम के समीकरण बिगड़ गये। हमारे अवकलन-समाकलन का फल यह निकला कि हम कभी न मिलने वाली दो समानान्तर रेखाओं जैसे हो गये। पर इसके बाद भी तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम की कोई सीमा (Limit) नहीं है। एक बार तुम मुझे भूल भी जाओ पर मेरा प्यार कभी भी शून्य की ओर अग्रसर (Tends to zero) नहीं हो सकता है।

हमारे प्रेम का शत्रु तुम्हारे परिवार का वह समुच्चय (Set) है जिसके तीनों पदों (तुम्हारे मम्मी, पापा और भाई) को हमारा विजातीय प्रेम स्वप्न में भी स्वीकार नहीं है।

अन्ततः काफी Calculation के बाद मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि अब तुम्हें इस समुच्चय (Set) और मुझमें से केवल एक का ही चयन करना होगा। निर्णय तुम्हारे हाथ में है।

तुम्हारा और सिर्फ तुम्हारा प्रिय
अनन्त देव ❑

Scanned by CamScanner

अलगाववाद का फैलता जहर

लखमी चन्द्र
प्रवक्ता, बी.एड.

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं; गीत गाते हुए शहीद होने वाले आजादी के दीवानों को शायद ही पता रहा होगा कि उनके साथ फाँसी के फन्दे पर झूलने वाला व्यक्ति हिन्दू है या मुसलमान। यह समय था जब देश में न कोई जाति थी न ही कोई बिरादरी, न कोई धर्म था न ही सम्प्रदाय, किन्तु आजादी के बाद से ही भारत जाति, धर्म, क्षेत्र व सम्प्रदाय के साथ-साथ भाषावाद तक के आगोश में तेजी से समाता चला गया। राजनीति की आंधी ने तो भाई-भाई के रिश्तों पर भी धूल की मोटी परत चढ़ा दी। इसने तो हिन्दू मुसलमान के मध्य एक अमिट खाई खोद दी। सच तो यह है कि आज समूचा देश जातिवाद, धर्मवाद के रंग से बदरंग होता जा रहा है। देश की दुर्दशा का यह दौर देश को कहाँ ले जा रहा है, कोई नहीं जानता। कल तक दारू के अड्डे चलाने वाला आज देश चला रहा है, सिनेमाघरों के बाहर टिकटों को ब्लैक में बेचने वाला आज देश की नीतियों का निर्धारण कर रहा है। धर्मवाद, जातिवाद की आग में धधक रहे इस अलगाव की इन लपटों ने देश के किसी भी विभाग व हिस्से को अपनी पहुँच से अछूता नहीं रखा है। अनेक विभागों में तो वरिष्ठ अधिकारी अपनी सेवा के अन्तिम दिनों में रंग-बिरंगी टोपी पहनने की जुगत में लग जाते हैं। जितनी तेजी से समूचे देश में अलगाववाद का यह वृक्ष पनप रहा है, उतनी ही तेजी से हम देशवादी इसे स्वीकार करते जा रहे हैं। ऐसे में शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे देश के भावी नागरिकों को इस राजनैतिक कदाचार से आगाह करें, क्योंकि उनकी खामोशी देश में भावी लोकतंत्र को बीमार बना देगी। ❑

एक अनुरोध

मनोज कुमार निगम
प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान विभाग

यह सितारों भरी रात फिर हो न हो,
आज है जो वही बात फिर हो न हो।
एक पल और ठहरो तुम्हें देख लूँ,
कौन जाने मुलाकात फिर हो न हो।।

बस एक मुस्कान मन के लिये,
बस एक सपना नयन के लिये।
तुम रूको तो सही,
आज तुम से तुम्हें माँगता हूँ,
फकत एक क्षण के लिये।

आँधियों का नगर जिन्दगी के दिये,
क्या कहें किस तरह टिम-टिमाया किये।
क्या पता फिर मुलाकात हो इस तरह,
तुम रुको और बस एक पल के लिये।।

चाँदनी मिल गई तो गगन भी मिले,
प्यार जिससे मिला वह नयन भी मिले,।
और जिससे मिली खुशबुओं की लहर,
यह जरूरी नहीं वह सुमन भी मिले।।

जब कभी हो मुलाकात मन से मिले,
रोशनी में धुलें आचरण से मिले।
दो क्षणों का मिलन भी बहुत है अगर,
लोग उन्मुक्त अन्त: करण से मिले ।। ❑

माँ

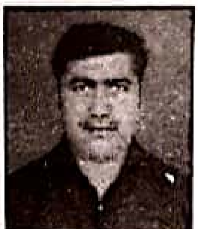

रजनेश कुमार
बी.टी.सी.

माँ तुम मेरे जीवन की अमूल्य निधि हो, तुम ही आगे बढ़ने में हमेशा प्रेरणास्रोत बनकर मेरा मार्गदर्शन करती रही हो।

हम कह सकते हैं-

लबों पे उसके कभी बददुआ नहीं होती।
बस एक माँ है जो मुझसे खफा नहीं होती।।

Scanned by CamScanner

"दीप जलाने से क्या होगा"

शिवम तिवारी
बी.बी.ए.

ऐ मोमबत्तियाँ जलाकर चलने वालो,
यूँ रैली निकालने से क्या होगा ?
जलाना है तो बुराइयों को जलाओ,
यूँ दीप जलाने से क्या होगा ?

आती है शर्म मुझे ऐसे नेताओं पर,
जो खुद गंदे कर्म तो करते हैं,
हो जाए कितना भी अनर्थ मेरे देश में,
वही पुराने रटे-रटाए भाषण बकते हैं।
अरे करना है तो देश का भला करो,
ये भाषण बाजी करने से क्या होगा ?
और देना है सजा तो कातिलों को दो,
लोगों पर लाठी चलवाने से क्या होगा।

है धिक्कार मुझे ऐसे इंसानों पर भी,
जो खुद गलत सोच तो रखते हैं,
पर रैलियों में जाकर नारे लगाने को
वो अपनी शान समझते हैं।
भरी है अगर गंदगी दिल में तेरे,
तो चेहरे पर मुखैटा लगाने से क्या होगा।
बनाना है तो अच्छा समाज बनाओ,
इस तरह कानून बनाने से क्या होगा ? ❑

माँ क्यों

वैशाली श्रोत्रिया
बी.बी.ए.

सम्बन्ध नहीं है माँ केवल सम्पर्क नहीं है,
आदर्श है जीवन का केवल संबोधन नहीं है।

जन्मदात्री है वो, मात्र इन्सान नहीं है,
व्यक्तित्व बनाती है, केवल पहचान नहीं है।

ममता की प्रतिभा है, केवल नारी का एक रूप नहीं है,
स्नेह की छाया है, केवल कठोरता की धूप नहीं है।

हृदय है इसका प्रेम का सागर, जिसकी कोई थाह नहीं है
आघातों से पीड़ित है, फिर भी मुख पर आह नहीं है।

आघात जो मिले हैं अपनों से, सहने के अतिरिक्त राह नहीं है,
दण्डित करने की अधिकारी है, मात्र क्षमता की प्रवाह नहीं है।

कृतघ्न है वो जो माता को आहत करते हैं,
कर्त्तव्यों से मुँह मोड़, अधिकारों का दावा करते हैं।

संतान के रक्षण हेतु माँ न जाने क्या क्या करती है,
पीड़ाओं को सहकर भी आँचल की छाया देती है।

कभी देवकी बनकर वो निरपराध ही दण्ड भोगती है,
कभी अग्नि में पश्चाताप की कैकेयी सी बन जलती है।

सुपुत्रों से आज है मेरा ये नम्र निवेदन,
दु:ख न दे उसे, भले न दें सुख का आँगन को। ❑

वृक्ष की पुकार

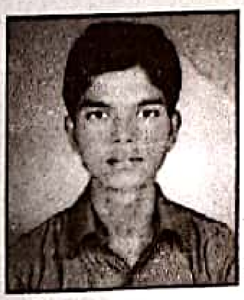

राजकुमार
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

देख क्रूर मानव हाथों को, वृक्ष यों हँसकर बोला,
अपने ही हाथों से तुमने, मृत्यु द्वार क्यों खोला।
मिटा के तुम जीवन मेरा, घुट-घुट कर मर जाओगे,
वातावरण प्रदूषित होगा, तुम रोक इसे न पाओगे।
पी लेते हैं हम जिस विष को, तुम न उसे पी पाओगे,
हमें मारकर विष पीने को, विवश तुम भी हो जाओगे।
स्वच्छ हवा देते हम तुमको, हम काम तेरे कितने आते,
वाह-वाह रे अपने को बढ़ा के, तुमने हमको हटा दिया।
अपने ही हाथों से ऐसा गुनाह कर, बेमौत हमे मार दिया।
जीवित है तब तक तू, जब तक मैं हूँ,
ऐसा विचार करके तू, मुझ पर जुल्म न कर। ❑

Scanned by CamScanner

"सत्य और सुन्दर"

ममता रानी
बी.टी.सी.

बहुत समय पहले की बात है। एक राजा थे, जिनका नाम बहादुर सिंह था। वे वास्तव में बहुत बहादुर थे तथा वे कला का सम्मान करने वाले भी थे। एक बार युद्ध करते समय उनकी एक आँख बेकार हो गयी थी।

एक दिन उन्होंने अपने दरबार में चित्रकारों को आमंत्रित किया। तमाम देश व विदेश के चित्रकार, कलाकार दरबार में पधारे। उन्होंने अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन किया। किसी ने राजा को राजदरबार में स्वर्ण सिंहासन पर बैठा दिखाया, तो किसी ने घुड़सवारी करते दिखाया। तरह-तरह के सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये गये।

जब ये चित्र राजा के सामने प्रस्तुत किये गये तो राजा ने इस सभी चित्रों में से एक-एक करके तीन चित्र छाँट लिये। राजा ने इन तीनों में से पहला चित्र उठाया, जिसमें राजा का एक मोहक चित्र था। इसमें राजा की दोनों आँखें दिखाई गई थी। चित्र देखकर राजा ने कहा कि यह चित्र अति सुन्दर है परन्तु सत्य नहीं।

अब राजा ने दूसरा चित्र उठाया, जिसमें राजा की एक आँख ही दिखाई गई थी। राजा ने चित्र देखा ओर कहा- "चित्र सत्य है, परन्तु सुन्दर नहीं, क्योंकि किसी भी चित्र से उसकी शोभा ही छीन ली जाए तो वह सुन्दर तो हो ही नहीं सकता।"

अब तीसरे और अन्तिम चित्र की बारी थी। राजा ने उस चित्र को देखा ओर बहुत खुश हुआ। उसने चित्रकार को पुरस्कृत किया। इस अन्तिम चित्र में राजा को किसी विशेष वस्तु का निशाना लगाते दिखाया गया था। जब हम किसी चीज का निशाना लगाते हैं तो अपनी एक आँख बन्द कर लेते हैं। राजा के शब्दों में "यह चित्र सत्य भी है और सुन्दर भी। वास्तव में सत्यता को इस प्रकार दर्शाया जाना चाहिए कि वह सुन्दर लगे, असुन्दर नहीं।"

बेटियाँ

ममता रानी
बी.टी.सी.

पग-पग संघर्ष करती हैं बेटियाँ,
अजन्मी आज मरती हैं बेटियाँ॥

कुछ न पाने की चाहत में फूल सी खिली,
आजन्म खुशबू बिखेरती हैं बेटियाँ।

बेटों की अभिलाषा में जीने वालो,
बेटों से बढ़कर होती हैं बेटियाँ।

घर या बाहर की हो रूपहली दुनियाँ,
भिन्न-भिन्न रंगों में संवरती है बेटियाँ।

पत्नी से माता बन, भाई की बन बहना,
सभी रूपों में दर्द को सहती हैं बेटियाँ।

चाँद सी शीतल ही नहीं, धूप सी प्रखर भी,
इस विरोधाभास में पलती हैं बेटियाँ।

विपरीत हालातों में जीवन जीकर भी,
दहेज की ज्वाला में जलती हैं बेटियाँ।

गमों के साये में रहकर भी,
सबके घरों को रोशन करती है बेटियाँ॥

Scanned by CamScanner

नफस-नफस, कदम-कदम

कौशल शर्मा
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

नफस-नफस, कदम-कदम,
बस एक फिक्र दम-दम,

घिरे हैं हम सवाल से, हमें जवाब चाहिए,
जवाब दर-सवाल है कि इन्कलाब चाहिए,

इन्कलाब जिन्दाबाद,
जिन्दाबाद इन्कलाब।

जहाँ आवाम के खिलाफ, साजिशें हों शान से,
जहाँ पे बेगुनाह हाथ धो रहे हो जान से,
वहाँ न चुप रहेंगे हम, कहें तो कहेंगे हम,
हमारा हक हमारा हक, हमें जनाब चाहिए,

इन्कलाब जिन्दाबाद,
जिन्दाबाद इन्कलाब। ❑

बाल गीत

थी कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि,
अनगिनत सैन्य-दल खड़े हुए,
इक ओर सभी कौरव-दल था,
सम्मुख पांडण्व थे अड़े हुए।

भाई थे कौरव पांडव सब,
दोनों के एक ही दादा थे,
पर समय आज कुछ ऐसा था।
लड़ मरने पर आमादा थे।

शत सगे भ्रात थे कौरव गण,
था ज्येष्ठ सभी में दुर्योधन,
पांडव थे केवल पाँच,
प्रमुख उनमें प्रवीण योद्धा अर्जुन।

थी भुजा फड़कती अर्जुन की,
आतुर, रण करने को तत्पर,
अन्यायी को दंडित करने का,
मिला आज था शुभ अवसर। ❑

आशा

ललित मोहन वर्मा
बी.टी.सी.

आशा तो वो प्रतीक्षा है,
जिसके आने से खिल उठे,
वन-उपवन नदी निरझर,
हर कण, मन में बसी है,
वो एक उठती ज्वाला है।

आशा एक वो दीपक है,
जो करती सबको उज्जवल है,
वो रब की सी प्रतिमा है,
जो हृदय में सबके बसती है,
हर जन में नया करने की उमंग भरती है।

आशा वो अभिलाषा है,
जो दुखों को कम करती है,
जिसे अपनों से मिलने की आस रहती है,
आशा रब का दिया उपहार है,
जिसे चाहूँ, तरासू मैं प्रतिक्षण।

आशा तो एक प्यास है,
जो दूर है पर मेरे बहुत पास है,
जो मेरे अपनों में सबसे खास है,
लगता है उसमें छिपा कोई राज है,
जिस पर मुझे होता बहुत नाज है। ❑

नारी

नारी है इस जग की जननी,
वह है शक्ति की अवतारी।
दुनिया में यश पाने वाली,
नारी ही दुश्मन की छाती पर ललकारी।

यह जग में है दुखियारी,
गला घोंटते हैं अत्याचारी।
नहीं जानते तुम नारी को,
क्यों करते हो यह नादानी।

नारी ही है बहना प्यारी,
नारी है शिव-भवानी।
वह ही सबको अपनाती है,
फिर भी दुनिया में दु:ख पाती है। ❑

Scanned by CamScanner

समय

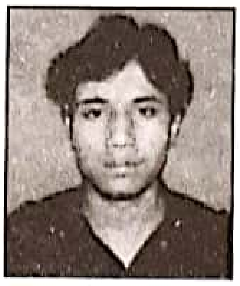

देवेश पाठक
बी.ए. प्रथम वर्ष

समय हमारा मूल्यवान हैं,
इसे न व्यर्थ गवाएँ,
पल-पल का उपयोग करें,
हम नयी सफलता पायें॥

जो करता बर्बाद समय को,
वही सदा पछताता है
वह जीवन के अनमोल,
खजाने से वंचित हो जाता है॥

जिसने समझा वेग समय का,
वही सफल हो पाता है।
जीवन की हर कठिनाइयों से,
सीधे निकल पाता है॥

❑

स्वप्न सुन्दरी

संजीव कुमार
बी.टी.सी.

यह बहकी-बहकी चाल, हवा बहकाने आयी है।
सौरभ का जादू डाल, फूल महकाने आयी है॥
सुरभि-द्वीप की कली, ज्योति मन मन्दिर सूने की।
यह मधुवन की मधुर ज्वाल, हृदय दहकाने आयी है॥
यह बहकी-बहकी............

❑

कौन हो तुम?

स्वप्न के धुँधले नगर की, क्या मनोरम सुन्दरी हो।
पवन पंखों पर थिरकती, गुनगुनाती किन्नरी हो॥
क्या किसी सात्विक हृदय के, राग की तुम यामिनी हो।
या किसी कवि के कलपते, भाव की तुम दामिनी हो॥
क्या स्वयं स्वच्छन्द मनसे, बोलने को मौन हो तुम ?
अधर से तुम सही, कह दो सहेली कौन हो तुम ?

❑

तराना-ए-कुदरत

धर्मेन्द्र कुमार
बी.ए. प्रथम वर्ष

इबादत यूँ भी होती है, ये दुनिया को है समझाना।
लगा कुछ पेड़ पौधे, परिन्दों को खिला-दाना॥
कहीं बरगद, कहीं दरिया-चरिंदे और परिन्दे हैं।
इन्हीं सब के हवाले से, खुदा को हमने पहचाना॥
हकीकत को भला कैसे, मिटाओगे बताओ तुम।
न आदम थे न हव्वा ही, मगर बुलबुल का था गाना॥
सुकूँ देता है मौसम को, मुसाफिर को घना साया।
ये हरियाली की खूबी है, इसे कुदरत ने है माना॥
मकानों में घरोंदे कुछ, बनाके टाँग दें गर सब।
सजीले पंख के मेहमान का, होगा आना और जाना॥

कोशिश करो

करें कोशिश अगर इन्सान, तो क्या-क्या नहीं मिलता,
वो उठ कर चल के तो देखे, जिसे रास्ता नहीं मिलता॥
भले ही धूप हो, काँटे हों, पर चलना ही पड़ता है,
किसी प्यासे को घर बैठे, कभी दरिया नहीं मिलता॥
कमी कुछ चाल में होगी, कमी होगी इरादों में,
जो कहते कामयाबी का, हमें नक्शा नहीं मिलता॥
कहें क्या ऐसे लोगों से, जो कहकर लडखड़ाते हैं,
कि हम आकाश छू लेते, मगर मौका नहीं मिलता॥
हम अपने आप पर यारों, भरोसा, करके तो देखें,
कभी भी गिड़गिड़ाने से, कोई रुतवा नहीं मिलता॥

❑

Scanned by CamScanner

माँ

कोपल अग्रवाल
बी.एड.

जब छोटा था तू तो माँ की शय्या गीली रखता था,
अब बड़ा हुआ तो माँ की आँखे, गीली रखता है।

माँ पहले आँसू आते थे और तू याद आती थी,
आज तू याद आती है और आँसू आते हैं।

पेट में पाँच बेटे जिनको भारी नहीं लगते हैं,
वह माँ, बेटों के पाँच फ्लैटों में भी भारी लगती है।

घर की माँ को तू रूलाये और मंदिर की माँ को चुँदरी ओढ़ाये
अरे नादान ये तू क्या जाने उसने तेरे लिये कितने जोखिम है उठाये।

जिस बच्चे को माँ ने बोलना सिखाया था,
आज तूने उनको मौन रहना सिखा दिया।

4 वर्ष का तेरा लाड़ला तेरे प्रेम की प्यास रखे,
तो 60 वर्ष के तेरे माँ-बाप क्यों न तुझसे आस रखें।

जिस दिन तुम्हारे कारण माँ-बाप की आँख में आँस आयेंगे,
याद रखना उस दिन तुम्हारे धर्म आँसू में बह जायेंगे।

पत्नी पसन्द से मिल सकती है, माँ पुण्य से ही मिलती है,
पसंद से मिलने वाली के लिये, तु पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकराना।

आज तू जो कुछ भी है वो उस माँ की बदौलत है,
क्योंकि तुझे जन्म दिया है उसने वो तो करुणा की मूरत है। ❑

माँ की हिदायत

संजय सिंह
बी.एड.

माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पे जा।
सख्त है ये मसहला, जान को कर दे फिदा॥

दुश्मनों का वार है, सीमा से पुकार है।
तेरा इंतजार है, जंग आर-पार है।
पीठ तू दिखला नहीं, गोलियाँ सीने पे खा।
माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पे जा॥

याद कर भगत को तू, याद कर सुभाष को।
याद कर सुखदेव को, याद कर आजाद को॥
याद तू वीरों को कर, जोश को भर ले जरा।
माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पे जा।

हिन्द की ये सर जमी, अन्न तू है पा रहा।
अन्न धरती माँ का है, जिसको तू है खा रहा॥
एक माँ ने जन्म दिया, एक माँ ने अन्न दिया।
माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पर जा॥

हिन्द का तू वासी है, वीर तू कहलायेगा।
जान को कर दे फिदा, अमर तू हो जायेगा॥
कफन तिरंगे का ले तू, नाम शहीदों में पायेगा।
माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पे जा॥

फौज आये चीन की, या हो पाकिस्तान की।
जम कर तू लड़ना वहाँ, कसम है ईमान की॥
जंग तू करले फतह, उसके बाद घर पे आ।
माँ ने मुझसे कह दिया, लालू तू सरहद पे जा॥ ❑

भारती
बी.टी.सी.

देशभक्ति गीत

शहीद

याद करो उन वीरों को,
जो चरणों में माँ के सो गये,
लुटा दी जिंदगी मुल्क पर,
सदा के लिए इतिहास के पन्नों में खो गये।

खुद को जलाया गोलियों की आग में,
जीने के लिए आजादी हमको दे गये,
जीना कहाँ लिखा था भाग्य में उनके,
चरणों में लाल माँ के सो गये।

गर्व है मुझे उन शहीदों पर,
जो हँसते-हँसते प्राण वतन को दे गये,
नाज है मुझे उन महान हस्तियों पर,
जो सर्वस्व अपना यहाँ लुटाकर चले गये। ❑

Scanned by CamScanner

सावन की बूँदें

सुजाता
बी.टी.सी.

अब के बरस सावन ऐसे बरसा,
दिल में उमंग उसके लिए थी,
गंगा की जैसी विस्तृत धारा,
पवित्रता अपने में लिए थी,
बहारों में भावना कुछ कम थी,
जिन्दगी तो मानो बस यहीं खत्म थी।
अब के बरस सावन ऐसे बरसा,
नयनों में अश्रु धारा थी,
जिसकी पलकें किनारा थी,
पलकों पर जमे सपने वो जमाने के,
आँसू की गरमी से जैसे पिघल गये,
एक पल में मेरे अरमानों को निगल गये।
अब.........................
सावन ने एक नगमा भी सुनाया,
उसमें कुछ बेरुखी का भाव भी आया,
पुराना जमाना एक पल में निगाहों में था,
वो एक बार भी नजरों में न आया,
उसी वक्त मुझे गम में जीना आया।
अब के.........................
दिल में लिए एहसास उसका,
हर दिन वर्षा में नहाती रही मैं,
बीच आँगन में गगन की ओर,
अपनी आँखों को खोलकर,
हर पल, हर लम्हा मुस्कराती रही मैं।
अब के.........................
बारिश में चेहरे पर जैसे मेरे,
हर बूँद गिरकर ठहरती रही,
पलकें गिरती बूँदों के भय से,
हर एक बार झपकती रही,
जैसे कोशिश सपनों को कैद करने की है।
अब के.........................
हर बूँद जिन्दगी का अध्याय थी,
कुण्ठा दिल में बसा कर भी मैं,
हर बूँद पर खुशी की कहानी लिखती रही,
हर गम, हर तृष्णा को किनारे करती रही,
हर पल में सफलता के बीज बोती रही।

सफलता का मूल मन्त्र

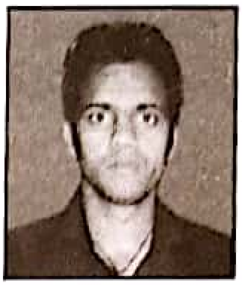

यतेन्द्र कुमार
बी.एड.

केवल मन के चाहे से ही
मनचाही होती नहीं किसी की।
बिना चले कब कहाँ हुई है;
मंजिल पूरी यहाँ किसी की॥

पर्वत की चोटी छूने को,
पर्वत पर चढ़ना पड़ता है,
सागर से मोती लाने को।
गोता खाना ही पड़ता है॥

उद्यम किये बिना तो चींटी,
अपना घर ना बना पाती है।
उद्यम किये बिना न सिंह को,
अपना शिकार मिल पाता है॥

इच्छा पूरी होती तब जब,
उसके साथ जुड़ा है उद्यम।
प्राप्त सफलता करने का है,
मूल मन्त्र उद्योग-परिश्रम॥

याद रखना

गौरव कुमार सागर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

1. शीशे की तरह टूट के, मिटना नहीं अच्छा।
आँसू किसी के देखकर, हँसना नहीं अच्छा॥
2. तुम अपने में खुश हो, होना ही चाहिए।
औरों को देखकर, जलना नहीं चाहिए।
3. चल पढ़ो सफर में, मंजिल भी मिलेगी।
पैरों के जख्म देखकर, ठहरना नहीं अच्छा॥

Scanned by CamScanner

गजल

संयज कुमार
बी.एड.

किस्सा मेरे जुनून का बहुत याद आयेगा,
जब-जब, कोई चिराग हवा में जलायेगा।

रातों को जागते हैं कि इसी वास्ते ख्वाब,
देखेगा बंद आँखें तो फिर लौट आयेगा।

कब से बचा के रखी है, एक बूँद ओस की,
किस रोज तू मेरी वफा को आजमायेगा।

वो कागज की किस्तियाँ भी बड़ी काम आयेंगी,
जिस दिन हमारे शहर में सैलाब आयेगा।

दिल को यकीन है, बदलेगा यह जमाना,
जब कभी कोई पागल मेरी गजल गुन गुनायेगा।

पीछे खाई आगे दलदल है,
क्या बतलाऊँ कैसा ये पल है।

बाहर तन शव जैसा शीतल है,
भीतर सुलग रही दावानल है।

जन्मा हूँ तब से मेरे पीछे,
पड़ा हुआ पीड़ाओं का दल है।

भुनी मछरिया खिसक गई जल में,
भाग्य हुआ मेरा राजा नल है।

खड़ी फसल पर ओले बरसे,
प्रकृति कर रही कैसा ये छल है।

इस पृथ्वी पर ही क्यों जीवन है,
मिला ना इसका कोई हल है।

अब ना किसी का कोई बोझ उठाता,
संजय तू बता कैसा ये कल है।

और घाट-घाट का पानी पीया,
मन मेरा फिर भी गंगा जल है।

❑

महीनों का करिश्मा

अलका भारतद्वाज
बी.एड.

जनवरी जान से प्यारी,
फरवरी फरियाद लाती है।

मार्च में मौत आती है,
जब परीक्षा पास आती है।

अप्रैल आराम की प्यासी,
मई मौज दिलाती है।

जून में जान निकलती है,
जब रिजल्ट की बात आती है।

जुलाई नए जनों से मिलती है,
अगस्त में आजादी आती है।

सितम्बर करे सितम जब,
ऋतु मच्छरों की आती है।

अक्टूबर राहों में बीता,
नवम्बर दिवाली लाता है।

दिसम्बर ठिठुरते बीता,
बताओ पढ़ाई कहाँ हो पाती है।

❑

भारत माता

प्रदीप कुमार
बी.एड.

भारत माता जग में न्यारी। है, मुझको प्राणों से प्यारी॥
नहीं रूठती कभी किसी से, सबसे करे बराबर प्यार।
ममता की मूरत है माता, लक्ष्मी दुर्गा का अवतार॥
सुत को सदा हँसाती रहती, विपदाएँ हर लेती सारी।
सत्य बोलने की शिक्षा दे, सेवा पथ का ज्ञान कराती॥
प्रेमभाव से मिलकर रहने, का हमको है पाठ पढ़ाती।
पूजन, वंदन अभिनंदन की, माँ ही है केवल अधिकारी॥

Scanned by CamScanner

काम

निधि वार्ष्णेय
बी.एड.

काम का इस जगत में काम ही इनाम है,
काम जब छूट जाये आता काम ही काम है।
काम ही दिलाए काम कहता यह पुराण है,
काम से जो दूर भागे निर्जीव वो प्राण है॥
काम के हैं काम प्यारे सैकड़ों जहान में,
काम से ही बनते काम धरती आसमान में।
काम ही करे तमाम सारे संसार में,
काम ही करे दफन भारी दीवार में॥
काम की करे फिकर काम न करे मगर,
काम से डरा रहे, काम की न चले डगर।
कलयुगी अवतार में वो आदमी महान है,
काम का इस जगत में काम ही इनाम है॥
काम को करे अगर तो काम ही तकदीर है,
काम से महान नहीं हाथ की लकीर है,
काम को जो जीत ले तो काम ही गुलाम है।
काम से ही कामयाबी काम का ही नाम है,
काम ने ही छीन लिया सुख चैन इंसान का,
काम ने ही तार दिया जीवन अंजान का,
काम के हजार रूप काम ही जनता
काम जिसे न मिले खाक वही छानता।
काम के पीछे भागे काम की तलाश में,
काम से ही दाम मिले प्रभु कैलाश में,
काम जब मिले कभी काम से ही पूंछ ले,
काम जब मिले जिसे काम की ही पूंछ ले,
काम की ही कोशिशें हैं काम की ही राहतें,
काम से ही हो महान काम की ही चाहते।
काम से ही बनी सारी कहावतें संसार की,
काम पर टिकी हैं सारी इमारतें प्यार की,
काम से ही दोस्ती काम से ही दुश्मनी,
काम से ही दो जगत में आंखों की लाली तनी।
काम को तमाम कर, काम में ही नाम कर,
काम से ही आसरा, नाम से ही काम कर,
काम से ही चले काम, बैठ न बेकाम कर,
काम से ही ले पहचान, नाम न बेनाम कर,
काम का मान कर, मान से शान कर,
काम पर रात दिन जीवन कुर्बान कर। ❑

कैसी बुरी बलाय ?

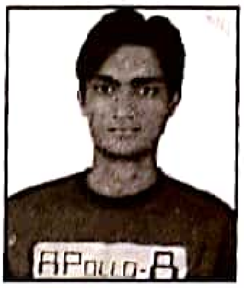

उत्कर्ष वार्ष्णेय
बी.एड.

जिसको देखा आजकल, वही हुआ बदरंग,
अपनी-अपनी रागिनी अपनी-अपनी चंग।
नेता बगुला भगत बन पल घात लगाय
धन्य डियर इन्जीनीयर ऊँचे इनके ठाठ,
इनके बलबूते खड़ी आज देश की खाट।
मुवक्किलों की जेब पर झपटे जैसे चील,
रेट पेट से का लें काबिल वही वकील।
चपरासी जी से बड़ा कोई नहीं लखाय,
वह भी सौ के नोट में साहब से मिलवाय।

..............कैसी बुरी बलाय

क्लर्क नाम का जीव भी है अजीव इन्सान,
बड़े-बड़े भी टेकते इसके आगे कान।
लेखपाल की चाल भी करती क्या-क्या काम,
खेत किसी का है मगर हुआ किसी के नाम।
मौज उड़ाए डाकिया, चिट्ठी देत जलाय,
फिर भी कुछ ना कह सके कैसी बुरी बलाय।
कूलर की ठण्डी हवा पड़े हुए श्री मान,
भीषण गर्मी में तप रहे हैं- मजदूर किसान।
ऐसे अब विद्यार्थी भारत माँ के लाल,
विद्या की अर्थी उठा करते है हड़ताल।

..............कैसी बुरी बलाय

दुखी वृद्ध माँ-बाप को बेटे मारें लात,
पत्थर पूजें सिर झुका करें धर्म की बात।
निर्धन आवत सगे को चेहरा ले मुरझाय,
धनी मीत को देख के धावत मन हरसाय।
देखो देश-समाज का कैसा बदला ढंग,
भ्रष्टाचार आतंक को दूर करेगा संघ॥

..............कैसी बुरी बलाय
❑

Scanned by CamScanner

मेरे दोस्त

चन्दन वार्ष्णेय
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

1. आपकी दोस्ती से हम मशहूर हुए,
आपके संग हँसने लगे तो आँसू दूर हुए,
बस एक आप जैसे दोस्त की बदौलत,
आज हम काँच से कोहिनूर हुए।

2. निशाना जो साधे वो शूर वीर,
निशाने पे जो लग जाए, वो वीर,
दिल में जो उत्तर जाए वो तस्वीर,
आपके जैसे दोस्त का साथ मिल जाए,
तो वो मेरी अच्छी तकदीर।

3. हमारी महफिल को फसाना मिल गया,
हमारी गजल को अफसाना मिल गया,
आपकी दोस्ती ऐसी मिली दोस्त,
जैसे खुदा की तरफ से कोई नज़राना मिल गया।

4. इस कदर हमारी दोस्ती का इम्तिहान न लीजिए,
क्योंकि हो खफा बयाँ तो कीजिए,
कर दो माफ अगर हो गई खता,
यूँ याद करके सजा न दीजिए।

5. कर्ज़ जिंदगी में चुकाना नहीं होता,
अहसान जिंदगी में जताना नहीं होता,
बस सलामत रहे अपनी ये दोस्ती,
क्यों कि ये वो रिश्ता है जो कभी पुराना नहीं होता।

6. दोस्त को भुलाना गलत बात है,
उन्हीं का जिन्दगी भर का साथ है,
अगर भूल गये तो खाली हाथ है,
और अगर साथ रहे तो ज़माना कहेगा क्या बात है।

7. दोस्ती के मायने हमसे क्या पूछते हो,
हम अभी इन बातों से अंजान हैं,
सिर्फ एक गुजारिश है कि भूल न जाना हमें,
क्योंकि आपकी दोस्ती हमारी जान है।

8. मेरी दोस्ती का अन्दाज न लगा पाओगे,
खुद को भूल जाओगे मगर हमको न भूल पाओगे,
एक बार हमसे जुदा होकर तो देखो,
हमारे बगैर जीना भूल जाओगे।

9. दोस्त कौन है?
दोस्त वो है जो बिना बुलाये आए,
बेवजह सिर खाए,
आप एक बोलें और वो आपको चार सुनाए!
और कभी सताए कभी रूलाए,
लेकिन हमेशा साथ निभाए।

10. गम में खुशी की वजह बनती है दोस्ती,
दर्द में यादों की वजह बनती है दोस्ती,
जब कहा भी अच्छा नहीं लगता दुनिया में,
तब जीने की वजह बनती है दोस्ती। ❑

'वीर बनें हम'

ललित कुमार
बी.एड.

वीर बनें निर्भीक बनें हम, अन्यायों से सदा लड़े हम।
सद्‌गुण वाणी शान्तिदूत बन, भारत की तस्वीर गढ़ें हम।।
आदर करें बड़े-बूदों का, मात-पिता में मोद-भरें हम।
गाँव गली- गलियारों में भी, सबका सच्चा मान करें हम।।
राष्ट्रदूत हर राष्ट्रपूत है, नवभारत निर्माण करें हम।
राष्ट्र-धर्म पर मर मिटने को, जन-जन का आह्वान करें हम।।
दुश्मन की घात भेदते को, नित उसके काल-कराल बनें हम।।
तूफानी लहरों पर तिरते, शान्ति दूत जलयान बनें हम।
वीर बनें निर्भीक बनें हम ।। ❑

Scanned by CamScanner

जिंदगी का सच

मनोज कुमार राजपूत
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

जिन्दगी एक किराये का घर है,
एक न एक दिन बदलना पड़ेगा॥ 2
मौत जब तुझको आवाज देगी,
घर से बाहर निकलना पड़ेगा॥

रूठ जायेंगी जब तुझसे खुशियाँ,
गम के साँचे में ढलना पड़ेगा।
वक्त ऐसा भी आयेगा नादां॥
तुझको काँटों पै चलना पड़ेगा॥2

इतना मासूम हो जायेगा तू,
इतना मजबूर हो जायेगा तू,
ये जो मखमल का चोला है तेरा,
ये कफन में बदलना पड़ेगा॥2

कर ले ईमां से दिल की सफाई,
छोड़दे-छोड़ दे तू बुराई।
वक्त बाकी है अभी सँभल जा,
वरना दोजक में जलना पड़ेगा॥ 2

ऐसी हो जायेगी तेरी हालत,
काम आयेगी दौलत न ताकत।
छोड़ कर अपनी ऊँची हवेली,
तुझको बाहर निकलना पड़ेगा॥2

जलवा ऐ हुसून बीजा बजा है,
और खतरा तो भी है ज्यादा।
जिन्दगानी का ये रास्ता है,
हर कदम पर सँभलना पड़ेगा॥2

बाप, बेटे, ये भाई भतीजे,
तेरे साथी हैं सब जीते जी के।
अपने आँगन से उठना पड़ेगा,
अपनी चौखट से टलना पड़ेगा॥2
जिन्दगी एक ....

बेरोजगारी

हर्ष बर्धन
बी.एड.

एक दिन शर्मा जी ने मुझे चाय पर बुलाया
अपने चारों बेटों से मेरा परिचय कराया।
यह जो खाट पर लेटा है, मेरा बड़ा बेटा है
लन्दन से इन्जीनियरिंग की डिगरी लाया है।
दूसरा बेटा जो नल पर पानी भर रहा है।
एम.ए. कर चुका है। पी.एच.डी. कर रहा है॥
तीसरा बेटा एम.बी.बी.एस. पास है।
उसका नाम हर्ष है, पर रहता उदास है॥
चौथे का दिमाग जरूरत से ज्यादा हाई है।
पढ़ लिख नहीं पाया इसलिए नाई है॥
अपना हैयर कटिंग सैलून चलाता है।
अच्छों-अच्छों की हजामत बनाता है॥
मैंने कहा रेपुटेशन सम्भालिये।
बाकी सब ठीक है पर इस नाई को निकालिये।
शर्मा जी बोले भाई निकाल तो दूँ,
पर आज कल यह बड़ा काम आ रहा है,
बाकी सब बेरोजागार हैं, घर का खर्चा यही चला रहा है।

दिल की आवाज

हर्ष बर्धन बी.एड.

दिल की आवाज किसी को सुनाकर तो देखो,
किसी से एक बार नजरें मिलाकर तो देखो,
किस तरह से जीते हैं, यहाँ के लोग मर-मर कर,
घर गरीबों के रोज जाकर तो देखो।

आये तूफान, न बुझेगी कभी आग,
दीपक दिल में मोहब्बत का जलाकर तो देखो,
छाँव में रहते हो, पेड़ों पर गुजरती है क्या,
जान जाओगे कभी धूप में जाकर तो देखो।

अपने दिल में प्यार के फूल खिलाकर तो देखो,
क्या पता आज हो जिन्दगी की शाम आखरी,
इसलिए दिल की आवाज किसी को सुनाकर तो देखो।

Scanned by CamScanner

एक अजन्मी बेटी का सच

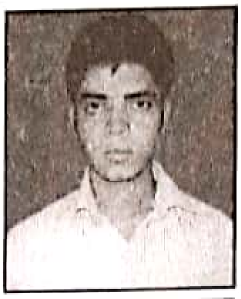

योगेश सिंह
बी. एड.

सौभाग्य मिला माँ बनने का तो माँ का कार्य किया होता,
क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता,
तू भी किसी की बेटी है, इस बात को कैसे भुला दिया,
बेटी होकर एक बेटी को, जागने से पहले ही सुला दिया।
शायद मैं भी तेरे जीवन की बगिया में खुशबू बिखरा देती,
छूकर के नयी ऊँचाईयों को, नाम रोशन तेरा मैं कर देती,
मासूम कली ये खिल जाती, यदि तुमने रहम किया होता,
क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता।
गर्भ में है बेटी सुनकर माँ, तुम क्यों इतना लाचार हुई,
नारी की दुश्मन नारी है, यह बात आज साकार हुई,
लक्ष्मी, सावित्री, शकुन्तला, सीता पन्ना धाय हुयी,
बेटी तो कल्पना चावला और सुनीता भी, जो अंतरिक्ष के पार हुई।
इतिहास बेटियों का पढ़कर, माँ कुछ तो मनन किया होता,
क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता,
दुत्कारेगी दुनियाँ तुझको, तू नजरों से गिर जायेगी,
फिर सोच तू अपने बेटे को बहू कहाँ से लायेगी,
ये भी तो एक हत्या है, तू हत्यारिन कहलायेगी,
पिघलेगा ममत्व माता का और ममता भी शर्मायेगी,
ममता का ज्ञान लिया था तो, किसी नारी से पूछ लिया होता।
क्यों दफन कोख में कर दिया मुझको भी जन्म दिया होता। ❑

दुनिया में सबसे बड़े माँ बाप

तुलसीराम
बी. एड.

माँ–बाप से बढ़कर जग में कोई दूजा नहीं खजाना,
जिसने तुझे जनम दिया रे, दिल उनका नहीं दुखाना,
पहले तो तुझे तेरी माँ ने, नौ मास पेट में ढोया,
सीने का खून पिलाया, जब–जब बन्दे तू रोया,
बड़ा कर्ज है तुझ पर माँ का, तेरा फर्ज है कर्ज चुकाना,
जिसने तुझे जनम दिया रे, दिल उनका नहीं दुखाना,
अज्ञानी बनकर जब तू माँ के आँचल में आया,
तुझे होश नहीं था बन्दे, क्या अपना क्या है पराया,
पहचान ले बन्दे माँ को, तेरा फर्ज है, माँ को पाना,
जिसने तुझे जनम दिया रे, दिल उनका नहीं दुखाना।
अँधेरे मन में तेरे, तेरी माँ ने दीप जलाया,
तुझे ज्ञान का सागर देकर, जीवन का पाठ पढाया,
तू कोई भी दुःख देकर के, ना माँ को कभी रूलाना,
जिसने तुझे जन्म दिया रे, दिल उनका नहीं दुखाना।
माँ–बाप से बढ़कर कोई दूजा नहीं धरती पे आया,
सब छोड़ दे तीरथ बन्दे, तू पा ले इनका साया,
उपकार करेंगे तुझ पर, गर है उपकार को पाना,
जिसने तुझे जनम दिया रे दिल उनका नहीं दुखाना। ❑

दाल का दाना मोती है

होमेन्द्र पाल सिंह
बी.एड.

महँगाई का दामन पकड़े, भूख सिसक कर रोती है,
चाँद हुआ टुकड़ा रोटी का, दाल का दाना मोती है।
बनियें का पर्चा पर्व से, ज्यादा भारी लगता है,
बोझ ग्रहस्थी का मेरी माँ, जाने कैसे ढोती है।
जीवन नभ में तम छा जाता, महँगाई के मौसम में,
सूरज जैसी एक अठन्नी, बटुए से जब खोती है।
इस साजिश में और हैं शामिल, ये कह देना ठीक नहीं,
महँगाई का बीज अकेले, किस्मत–कुदरत बोती है।
सिर पे रख आशा का छप्पर, आँखों में उम्मीद जगा,
कम होगी मँहगाई कहकर, चैन से दिल्ली सोती है।
उनके जादू भरे आँकड़ों पर, मत जाना 'मीत' कभी,
चेहरे पर निर्धन के हर एक, चीज कीमती होती है।

Scanned by CamScanner

खेल-कूद सप्ताह की गतिविधियाँ : 2013-14

ज्ञान खेल सप्ताह (2013-14) का उद्घाटन करते हुए जिला खेल अधिकारी श्री आले हैदर व अन्य अतिथि गण

जिला खेल अधिकारी श्री आले हैदर को प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

रस्सा कसी प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुए प्राध्यापक गण

दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेती हुई छात्राएं

खेल सप्ताह के दौरान बी.ए. व बी.कॉम. के मध्य क्रिकेट मैच में खिलाड़ियों से परिचय करते हुए प्राध्यापक गण

खेल सप्ताह के समापन पर उपस्थित मुख्य अतिथि डी.एफ.ओ. के साथ डॉ. एल.सी. गौड़ मैमोरियल क्रिकेट ट्रॉफी की विजेता बी.ए. की टीम

खो-खो प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार छात्राएं

Scanned by CamScanner

COLLEGE TOPPER'S 2013

K. Gaurav Maheshwari
M.Com. (F) A/c & Law Group

Akansha Varshney
M.Com. (P) A/c & Law Group

Priyanka Dixit
M.Com. (P) Busi. Admn. Group

Akash Pathak
B.Com. Ist year

Meenu Verma
B.Com. IInd year

Deepak Singh
B.Com. IIIrd year

Priyanshu Garg
B.B.A. Ist year

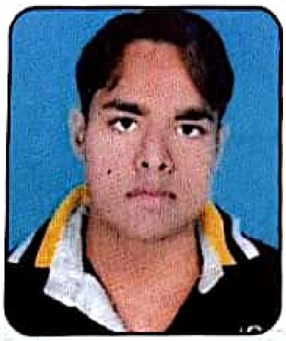

Arjun Chaudhary
B.C.A. Ist year

Udit Gautam
B.C.A. IInd year

Nidhi Verma
B.C.A. IIIrd year

Rashmi Gupta
B.Sc. Ist year (PCM)

Uma Shankar Sharma
B.Sc. Ist (ZBC)

Scanned by CamScanner

COLLEGE TOPPER'S 2013

Shubham Saxena
B.Sc. IInd (PCM)

Reshul Gupta
B.Sc. IInd (ZBC)

Priyabhan
B.Sc. IIIrd (PCM)

Swati Mishra
B.Sc. IIIrd (ZBC)

Abhay Yadav
B.A. Ist

Bhageshwari Bhardwaj
B.A. IInd

Sunil Kumar
B.A. IIIrd

Sakshi
B.T.C.

Vineeta Verma
B.T.C.

मन्जिल उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।।

Scanned by CamScanner

सामाजिक सरोकार एवं विविधा

उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ितों के लिये दैनिक जागरण उत्तराखण्ड आपदा कोष में अंश दान देते हुए उप प्राचार्य व प्रभारी सामाजिक सरोकार

बी.टी.सी. के दिवंगत छात्र के अभिभावक को 121000 रु. की धनराशि की एफ.डी. देते हुए सचिव श्री दीपक गोयल व डॉ. ए.के. डिमरी (क्षे.निदे.इग्नू)

पी-एच.डी. चैम्बर में आयोजित ग्लोबल सी.एस.आर. समिट में भाग लेते हुए डॉ. गौतम गोयल, डॉ. बी.डी. उपाध्याय व डॉ. ललित उपाध्याय

स्वराज्य ज्ञान योजना की ग्राम न्हौटी में आयोजित बैठक में योजना की जानकारी देते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता व अन्य प्राध्यापक

निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता पंजीकरण केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर छात्रों का सम्बोधन करते एस.डी.एम. कोल श्री विजय कुमार

मकर संक्राति के अवसर पर मिशनरी ऑफ चैरेटी जमालपुर, अलीगढ़ में खिचड़ी वितरण कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक गण

डोऐक सोसाइटी, नई दिल्ली (NIEIT) से मान्यता प्राप्त बी.सी.सी. व सी.सी.सी. कोर्स का प्रशिक्षण देते हुए प्राध्यापक श्री पुष्पेन्द्र सिंह

छात्र कल्याण समिति द्वारा आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेती छात्राएं

Scanned by CamScanner

दीवाली मेला - 2013

महापौर श्रीमती शकुन्तला भारती का स्वागत करते हुए संयोजिका डॉ. रेखा शर्मा, श्रीमती मधु चाहर, श्रीमती रंजना सिंह

बी.एड. के छात्रों द्वारा लगाये स्टॉल पर व्यजनों का स्वाद लेते हुए सचिव श्री दीपक गोयल व निदेशक डॉ. गौतम गोयल

बी. ए. के विद्यार्थियों द्वारा लगाया गया स्टॉल

बी.बी.ए. व बी.सी.ए. की छात्राओं द्वारा लगाया गया स्टॉल

दीवाली मेले में स्टॉल पर बी.एस-सी. के छात्र व छात्राएं

ज्ञान आई.टी.आई. के छात्रों द्वारा लगाया गया स्टॉल

बी.टी.सी. के छात्रों द्वारा लगाये गये निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर में जाँच कराते हुए सचिव श्री दीपक गोयल

दीवाली मेले में उपस्थित महाविद्यालय के प्राध्यापक गण व स्टॉफ

Scanned by CamScanner

ज्ञानार्जन दिवस- 2013

ज्ञानार्जन दिवस (संस्थापक दिवस दि. 11.09.2013) की मुख्य आकर्षक झलकियाँ

श्री मनोज यादव (प्रबन्धक) का स्वागत करते हुए प्राध्यापक डॉ. आर.के. कुशवाह

मंचासीन अतिथि गण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं

जर्नल "ज्ञानभव" का विमोचन करते हुए अतिथि गण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र

कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए प्राध्यापक गण, छात्र एवं छात्राएं

महाविद्यालय परिसर का भ्रमण करते हुए अतिथि गण

विशिष्ट अतिथि डॉ. अनवर जहाँ जुबैरी को प्रतीक चिन्ह देते हुए सचिव श्री दीपक गोयल

Scanned by CamScanner

ज्ञानार्जन दिवस- 2013

ज्ञानार्जन दिवस (संस्थापक दिवस 11.09.2013) की मुख्य आकर्षक झलकियाँ

अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी व मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र दीक्षित (अपर आयुक्त, अलीगढ़ मण्डल) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

संस्थापक स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए श्री चाँद गोयल (आई.ए.एस.)

श्री चाँद गोयल (आई.ए.एस.) का स्वागत करते हुए मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. बी.डी. उपाध्याय

पूर्व कुलपति कालीकट विश्वविद्यालय की डॉ. अनवर जहाँ जुबैरी का स्वागत करती हुई प्राध्यापिका डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ

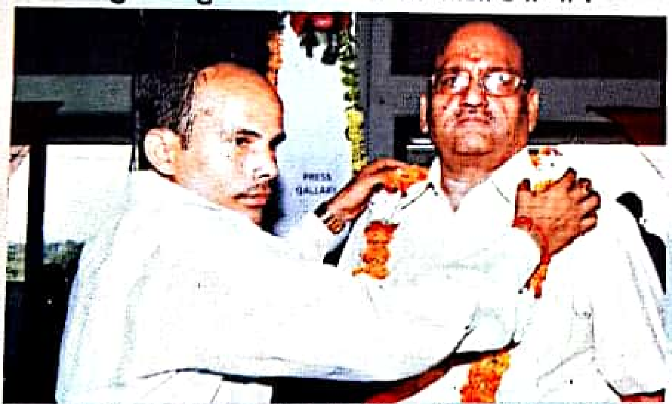

प्राध्यापक श्री गिर्राज किशोर, अतिथि श्री अनिल खण्डेलवाल का स्वागत करते हुए

प्राध्यापक डॉ. राजेश कुमार कुशवाह अतिथि का स्वागत करते हुए

श्री असलूब अहमद (कोषाध्यक्ष) का स्वागत करते हुए प्राध्यापक श्री लखमी चन्द्र

प्राध्यापक डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. गौतम गोयल निदेशक, ज्ञान आई.टी.आई. का स्वागत करते हुए

Scanned by CamScanner

ज्ञान दिवस- 2013

ज्ञान दिवस पर बी.टी.सी. के छात्र लघु नाटक प्रस्तुत करते हुए

ज्ञान दिवस पर पुरातन छात्रों हेतु समाचार पत्रिका "ज्ञान दीप" का विमोचन करते हुए डॉ. ए.के. डिमरी (क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू) व अन्य

पुरातन छात्र समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारी अतिथियों के साथ

ज्ञान दिवस पर उपस्थित प्राध्यापक गण, विद्यार्थी व अन्य

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र : लोक गीत व लोक नृत्य

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र उ.प्र. सरकार व ज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित लोक गीत व लोक नृत्य में उपस्थित अतिथि गण

लोक सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा मयुर नृत्य की प्रस्तुति

राजस्थानी लोक नृत्य प्रस्तुत करती बी.एड. की छात्राएं

लोक नृत्य प्रस्तुत करते वृन्दावन (मथुरा) के लोक कलाकार

Scanned by CamScanner

बचपन के दिन

सुलेखा रानी
बी.एड.

जाने कब हम हुए सयाने,
बीत गया बचपन कब जाने।
छोटी-छोटी जिद पर अड़ना,
वो गुस्से के भाव दिखाकर।
काम अनोखे और मनमाने,
वो मिट्टी का ढेर बनाना।
सारे खेलों में था प्यारा,
वे पल आज हुए अनजाने।
जाने कब हम हुए सयाने,
बीत गया बचपन कब जाने।
पल में लड़ना, पल में झगड़ना,
धरती पर पैरों को रगड़ना।
कागज की कश्ती पानी में तैराना,
वो गुड़िया का खेल पुराना।
जाने कब हम हुए सयाने,
बीत गया बचपन कब जाने। ❑

गुरु

सुनीता
बी.एड.

गुरु का स्थान है जीवन में सबसे ऊँचा,
वही बताते हमको क्या झूठा क्या सच्चा।
गुरु ने हमारे मन में ज्ञान की जोत जगाई,
उन्होंने बताया जीवन की क्या है सच्चाई।
गुरु है भगवान से भी महान,
गुरु करते हैं शिष्यों का कल्याण।
जीवन में कितना महत्व रखती है पढ़ाई,
यह बात भी गुरु ने ही समझाई।
गुरु ने बताया क्या है सदमार्ग, सद्मार्ग
सदैव सिखाया हमको सद्भाव।
गुरु का करो सदा अभिवादन,
सभी कार्य करो उन्हीं से संचालन।
गुरु ने कहा सदैव करो भलाई,
उन्होंने ही जीवन की नय्या पार लगाई।
गुरु का जो व्यक्ति करते है सम्मान,
वो प्राप्त करते हैं, सदा ज्ञान व मान। ❑

एक सेर मक्खन

गौरव प्रसाद अग्रवाल
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

एक किसान एक बेकर को रोज एक सेर मक्खन बेचा करता था। एक दिन बेकर ने यह परखने के लिए कि मक्खन एक सेर है या नहीं, उसे तौला और पाया कि मक्खन कम था। इस बात से वह गुस्सा हो गया और किसान को अदालत में ले गया। जज ने किसान से पूछा कि उसने तौलने के लिए किस बाट का इस्तेमाल किया था ? किसान ने जवाब दिया "हुजुर, मैं अज्ञानी हूँ। मेरे पास तौलने के लिए कोई सही बाट नहीं है, लेकिन मेरे पास एक तराजू है।" जज ने पूछा, तो तुम मक्खन को कैसे तौलते हो ? किसान ने जबाव दिया, "इसने मक्खन तो मुझसे अब खरीदना शुरू किया, मैं तो बहुत पहले से ही इससे एक सेर ब्रेड रोजाना खरीद रहा हूँ। रोज सुबह जब बेकर ब्रेड लाता है तो मैं ब्रेड को बाट बनाकर बराबर का मक्खन तौल कर दे देता हूँ। अगर इसमें किसी का दोष है तो वह है बेकर का। जिंदगी में हमें वही वापस मिलता है, जो हम दूसरों दे देते हैं। ❑

Scanned by CamScanner

गुस्सा होने पर क्या करते हैं आप?

"पार करो सारी बाधा"

भावना गुप्ता बी.कॉम. तृतीय वर्ष

एक बार एक वृद्ध गुरू अपने शिष्य के साथ विहार कर रहे थे। वे एक झील से होकर गुजर रहे थे। गुरू को प्यास लगी तो उन्होंने एक जगह रुककर अपने शिष्य को पानी लाने को कहा, शिष्य झील के पास गया तो उसने देखा कि उसी समय मवेशियों का झुंड झील से गुजरा और इस वजह से पानी मटमैला हो गया। शिष्य ने सोचा कि वह गंदा पानी गुरू को पीने के लिए कैसे दे सकते हैं। वह वापस आया और अपने गुरू से कहा, पानी गंदा था और मुझे लगता है कि उसे पीना सेहत के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

कुद समय बाद गुरु ने शिष्य को फिर पानी लाने को कहा। शिष्य ने फिर पूरी विनम्रता से गुरू के आदेश का पालन किया पर इस बार भी पानी की स्थिति वैसे ही थी। उसने फिर आकर गुरु को बता दिया। कुछ समय बाद गुरु ने शिष्य को फिर पानी लेकर आने के लिए कहा। शिष्य अबकी बार गया तो देखा कि पानी बिल्कुल साफ हो गया है और अब उसे पीया जा सकता है, मिट्टी नीचे वैठ चुकी थी। उसने पानी एक बर्तन में लिया और गुरू के पास चला गया। गुरू ने पहले पानी देखा और देखते हुए कहा, देखो तुमने इस पानी को साफ करने के लिए क्या किया। तुमने कुछ समय इंतजार किया और पानी की मिट्टी अपने आप नीचे चली गयी। हमारा दिमाग भी ऐसा है, तनाव और परेशानी के समय इसे कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए। उसे व्यवस्थित होने के लिए समय देंगे तो वह अपने आप शांत हो जाएगा। उसे शांत करने के लिए आपको कोई प्रयास नहीं करना पड़ेगा।

सीख :

कई बार कार्य स्थल पर कई ऐसी स्थितियां उत्पन्न होती हैं, जो सहज ही गुस्सा दिला देती हैं। वह गुस्सा आपके लिए कितना राहत देने वाला होगा या आपकी परेशानी को और बढ़ा देगा, यह इस पर निर्भर करता है कि आप कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। अधिकतर गुस्से में निकले बोल, परेशानियों को बढ़ाने वाले होते हैं। ऐसे समय में स्थितियों को अपने अनुकूल करने और चुनौतीपूर्ण समय में भी सही फैसले लेने के लिए अपने गुस्से को शांत होने देने के लिए कुछ समय देना अच्छा रहता है। ❑

एक दिन एक किशान का गधा कुएं में गिर गया। गधा घंटो जोर-जोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा क्या करना चाहिए, क्या नहीं। अंततः उसने निर्णय लिया चूंकि गधा काफी बूढ़ा हो चुका है, अतः उसे बचाने से कोई ला होने वाला नहीं, इसलिए उसे कुएँ में दफना देना चाहिए।

किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को बुलाया। सभी एक-एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर जैसे ही गधे की समझ में आया कि यह क्या हो रहा है, जोर-जोर से चीखने-रोने लगा और फिर वह अचानक शांत गया। सब लोग चुपचाप कुएँ में मिट्टी डालते रहे। तभी किस ने कुएँ में झांका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया। अपनी पीठ पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह गधा एक आश्चर्य जनक हरकत करने लगा।

वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता औ फिर एक कदम बढ़ाकर उसपर चढ़ जाता था। जैसे-जैसे किसा तथा उसके पड़ौसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे-वैसे व हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ी ऊपर च जाता। जल्द ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह गधा कुएँ किनारे पर पहुंचा और फिर कूदकर वह बाहर भाग गया।

ध्यान रखो तुम्हारे जीवन में भी तुम पर बहुत तरह मिट्टी फेंकी गयी होगी, बहुत तरह की गंदगी तुम पर गिरे जैसे कि, तुम्हें आगे बढ़ने से रोकने के लिए कोई तुम्हा आलोचना करेगा, कोई तुम्हारी सफलता से ईर्ष्या के कारण, तु बेकार में भला-बुरा कहेगा। कोई तुमसे आगे निकलने के लि ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दीखेगा, जो तुम्हारे आदर्शों के विरु होंगे। ऐसे में तुम्हें हतोत्साह होकर कुएँ में ही नहीं पड़े रहना बल्कि साहस के साथ उठकर हर तरह की गंदगी को गिरा दे और उससे सीख लेकर, उसे सीढ़ी बनाकर, बिना अपने आद का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है।

इसलिए याद रखें जीवन में हमेशा आगे बढ़ने के लिए-

1. नकारात्मक विचारों को उनके विपरीत सकारात्म विचारों से विस्थापित करते रहें।
2. आलोचनाओं से विचलित न हों, बल्कि उन्हें उपयोग लाकर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें।

Scanned by CamScanner

आकांक्षा

चंचल शर्मा
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

एक दिन नीले आसमान में,
सूरज बन मुस्कुराएँगे।
चाँद सितारों से भी सुन्दर,
अपना देश बनाएँगे।
हर घर में खुशहाली होगी,
होली और दीवाली होगी।
हर आँगन में खुशियों के,
मिलकर फूल खिलाएँगे।
भेद-भाव का नाम ना होगा,
छोटा कोई काम ना होगा।
छोड़ के पीछे दुनियाँ सारी,
हम आगे बढ़ जाएँगे,
हम अपना देश बनाएँगे।

क्या आप जानते है ?

चूहे अपनी मूँछों के स्पर्श से पता लगा लेते हैं कि किसी वस्तु की सतह चिकनी है या खुरदरी।

अंधेरे में रास्ता तलाशने में भी चूहे की संवेदनशील मूँछे ही मददगार होती हैं।

❑

वक्त

अजय वर्मा
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

वक्त इंसान की हर चाल बदल देता है,
वक्त इंसान के ख्यालात बदल देता है,
वक्त से न जूझना ऐ मेरे दोस्त,
वक्त इंसान के हालात बदल देता है।
वक्त इंसान का सम्मान करा देता है,
वक्त इंसान का अरमान मिटा देता है,
वक्त के साथ बदलती है जहाँ की तस्वीर,
वक्त इंसान की पहचान करा देता है।
वक्त दे साथ तो तूफान सर झुकाते हैं,
वक्त दे साथ तो गैर अपने बनाते हैं,
वक्त क्या बदला जमाने ने बदल ली नजरें,
वक्त बदले तो नजारें भी बदल जाते हैं।
वक्त से नजरे मिला के देखेंगे,
वक्त तो अपना बनाके देखेंगे,
वक्त ने साथ दिया गर यारो,
मुस्कराकर वक्त के साथ हम भी देखेंगे।
वक्त से होते हैं गर्दिश में सितारे,
वक्त से होते है, दुश्मन भी हमारे,
वक्त जो रहा साथ अपने,
तोड़ लाएंगे जमीं पर हम तारे।

❑

बचपन

इशू वार्ष्णेय
बी.एड.

आज फिर वात्सल्य की महक ने,
मेरा जीवन महकाया है,
आज फिर इस आंगन में,
मैंने अपना बचपन पाया है।
शायह यही है मेरी पहचान,
ये जग खट्टे मीठे अनुभव की खान,
सुबह-सुबह भाई से झगड़ा,
फिर और बड़ों की डाँट।
फिर चंद समय के बाद,
अपना सब मैंने पाया,
शायद यही मेरी पहचान,
ये जग खट्टे-मीठे अनुभव की खान।

Scanned by CamScanner

दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं

विजेन्द्र सिंह
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

एक कवि नदी के किनारे खड़े होकर नदी में पड़े हुए कन्या के मृत शरीर से पूछता है :

1. कौन हो तुम ओ सुकुमारी, जो बह रही नदी के इस जल में।
कोई तो होगा तेरा अपना, मानव निर्मित इस भूतल में॥
2. किसके घर की तुम बेटी हो, किस क्यारी की कली हो तुम।
किसने तुमको डाला है बोलो, क्यों दुनिया छोड़ चली हो तुम॥
3. किसके नाम की लाली बोलो, माथे पर ये सजी है तेरे।
बोलो किसके नाम की मेंहदी, हाथों पर रची है तेरे॥
4. लगती हो तुम राजकुमारी, या देवलोक से आई हो।
उपमा रहित है रूप तुम्हारा, ये रूप कहाँ से लाई हो॥

कवि की बातें सुनकर, कन्या का मृत शरीर कवि से कहता है :

5. बाबा मुझको क्षमा करो तुम, मैं गरीब पिता की बेटी हूँ।
इसलिए मृत मीन की भाँति, मैं जल धारा पर लेटी हूँ॥
6. ये रूप रंग और सुन्दरता ही, मेरी पहचान बताते हैं।
बिंदिया, चूढ़ी, कंगन, मेंहदी, सुहागन मुझे बनाते हैं॥
7. पति के सुख को सुख समझा, और पति के दु:ख में दुखी थी मैं।
जीवन के इस तन्हा पथ पर, पति के संग चली थी मैं॥
8. पर पति मेरा सौदागर निकला, उसकी लौ में जली थी मैं।
धन,दौलत और दहेज की खातिर, उसके रंग में ढली थी मैं॥
9. जिसको मैंने माली समझा , उसके द्वारा छली हूँ मैं।
ईश्वर से अब न्याय माँगने, शव शय्या पर पड़ी हूँ मैं॥
धन लोभी इस समाज में दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं.......

–दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं।

शिक्षक

तोषी शर्मा
बी.एड.

अज्ञान के अँधेरे में ज्ञान का दीपक जलाया,
पहले खुद पढ़ा फिर हमें पढ़ाया।
शिक्षक ही करता है सृजन नये युग का,
और बनाता है कल का राष्ट्र भी।
शिक्षक ने राष्ट्र को पायलट, इंजीनियर
वैज्ञानिक और डाक्टर दिए,
कितने ही शास्त्री और हमीद तैयार कर दिए।
नहीं चुका सकते शिक्षक का ऋण, न बच्चे न ये देश,
हमेशा ही उसका कुछ रहेगा हम पर शेष।
मगर अफसोस आज शिक्षक का उतना सम्मान नहीं रहा
समाज को उसकी गरिमा का ध्यान नहीं रहा।
मगर धन्य है ये सृजनकर्ता,
जो अपनी पीड़ा को दवाकर कभी उदास रहकर
कभी मुस्कराकर, आज भी अपना कर्तव्य निभा रहा है।

करता है कोई-कोई

अनिता अग्रावत
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

फूलों को सब छूते हैं, पर काँटो को छूता है कोई–कोई,
खुशियों को सभी चाहते हैं, पर गम चाहता है, कोई–कोई,
गलती तो सभी करते हैं, पर सुधारता है कोई–कोई,
आग तो सभी लगाते हैं, पर बुझाता है कोई–कोई।
प्रश्न तो सभी करते हैं, पर उत्तर देता है कोई–कोई
रुलाते तो सभी हैं, पर हँसाता है कोई–कोई,
गिराते तो सभी हैं, पर उठाता है कोई–कोई,
पढ़ाते तो सभी हैं, पर सिखाता है कोई–कोई।

Scanned by CamScanner

हँसी के रसगुल्ले

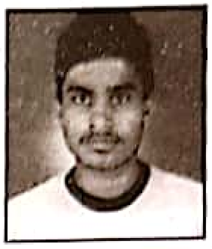

सौरभ
बी.एस-सी. प्रथम

1. **अध्यापक अजय से** – अगले जन्म में तुम क्या बनना चाहोगे?
अजय– सर, मैं जिराफ बनना चाहूँगा।
अध्यापक – क्यों ?
अजय– ताकि कोई अध्यापक मुझे थप्पड़ न मार सके।
2. **लेडी डॉक्टर** – तुम रोज सुबह क्लीनिक के बाहर खड़े होकर औरतों को क्यों घूरते हो ?
आदमी– जी आपने ही तो बहार लिखा है कि औरतों को देखने का समय प्रातः 8 से 10 बजे तक।
3. **डॉक्टर अपने नौकर से–** जाओ, बगल वाले डॉक्टर को बुलाकर लाओ, मेरी तबियत खराब हो रही है।
नौकर– सर, आप भी तो डॉक्टर हो!
डॉक्टर– क्या तुम्हें पता नहीं कि मेरी फीस उससे ज्यादा है।
4. **पिता (पुत्र से)–** क्या कर रहे हो ?
पुत्र– बल्ब पर आपका नाम लिख रहा हूँ।
पिता– क्यों ?
बेटा– इससे आपका नाम रोशन होगा।
5. **चिंटू–** पिताजी, आज मुझे एक लड़के ने मारा।
पिताजी – क्या तुम उसे पहचान सकते हो।
चिंटू– हाँ पापा मैं उसके दाँत साथ लाया हूँ।
6. **एक आदमी–** लंगड़ाता हुआ आ रहा था। उसे देखकर दो डॉक्टर आपस में झगड़ने लगे।
पहला डॉक्टर– लगता है, उसका अँगूठा टूट गया है।
दूसरा डॉक्टर– लगता है उसके पैर की हड्डी टूट गई है। दोनों में काफी बहस हो रही होती है तो तीसरा डॉक्टर बोलता है – चलो उससे ही पूछ लेते हैं।
डॉक्टर– तुम्हारी पैर की हड्डी टूट गयी है क्या ?
व्यक्ति– नहीं मेरी चप्पल टूट गई है।
7. तूफान में एक मच्छर उड़ते हुए एक नारियल के पेड़ से चिपक गया, जब तूफान थम गया तो मच्छर ने पसीना पौंछा और बोला–
उफ– आज मैं नहीं होता तो इस पेड़ का क्या होता?
8. **पहला–** यार हम हिन्दी में बोलते हैं, अंग्रेजी में बोलते हैं, लेकिन गणित में क्यों नहीं बोलते?
दूसरा – ज्यादा 3–5 मत कर और 9–2–11 हो जा वरना 4–5 धर दूँगा और 6 के 36 दिखाई देने लगेंगे समझा ?
9. **टीचर–** बताओ बच्चे! हिन्दी की पहली साइलेंट फिल्म कौन सी थी ?
एक छात्र – सर, जब वो फिल्म साइलेंट थी, तो आपको कैसे पता चला कि वो फिल्म हिन्दी में है।
10. सन्ता अपने पिता के सामने सिगरेट पी रहा था। बंता ने कहा तुम्हें डर नहीं लगता, अपने पिता के सामने सिगरेट पी रहे हो ?
सन्ता– वो मेरे पिता हैं, कोई पेट्रोल पम्प नहीं।
11. **ग्राहक–** कैसा साबुन दिया, सारे कपड़े सिकुड़ गये।
दुकानदार– नाराज क्यों होते हो उसी साबुन से आप भी नहा लेना, कपड़े पहनने के लायक हो जायेंगे।
12. एक महिला ने अपने पति से पूछा– स्वतन्त्रता दिवस कब आएगा?
पति– जब तुम अपने मायके चली जाओगी। ❑

जीवन की कहानी

जीवन क्या है– एक फूल है,
हर फूल खिले जरूरी तो नहीं।
जीवन क्या है– एक नदी है,
बिना किसी धारा के बहे जरूरी नहीं।
जीवन क्या है – एक सपना है,
हर सपने पूरे हों जरूरी तो नहीं।
जीवन क्या है– एक प्यार है,
सबको मिले जरूरी तो नहीं।
जीवन क्या है– एक पहेली है,
सबा के समझ में आए जरूरी तो नहीं।
जीवन एक सबक है,
अगर कोई सीखे तो।
जीवन सँवर सकता है,
न समझे तो जीवन,
नरक बन सकता है। ❑

Scanned by CamScanner

सेनानी

हेमलता सिंह
बी.बी.ए. तृतीय वर्ष

ऐ माँ मेरी यादों को, इस दिल में छूपा लेना,
बदनाम न हो आँसू, दामन में छुपा लेना।
आजादी का परवाना, अब जाता है जलने को,
हँस-हँस के जल जाऊँ, बस इतनी दुआ देना॥
ऐ माँ मेरी यादों को ....
मैं याद अगर आऊँ, भरना ना कभी आहें,
तुम मेरी निशानी को, सीने से लगा लेना,
ए माँ मेरी यादों को ....
आये तेरे कूचे जब राख मेरी उड़कर,
उस राख पे ऐ माता, एक दुनिया बसा लेना,
ऐ माँ मेरी यादों को..

नगर की पहचान

क्या आप जानते हैं किस नगर को किस नाम से पुकारा जाता है।

श्रृंगार नगर व पाँचवीं दिल्ली	-	फिरोजाबाद
पेठानगर	-	आगरा
तालानगरी	-	अलीगढ़
जुड़वा नगर	-	हैदराबाद व सिकन्द्राबाद
सूर्य नगर	-	जोधपुर
ब्यूटीफुल नगर	-	चंडीगढ़
गुलाबी नगर	-	जयपुर
भारत का स्वीटजरलैण्ड	-	कश्मीर

अनमोल विचार
मेरे विचारानुसर

प्रीति गोस्वामी
बी. ए. प्रथम

1. वास्तव में मानव जैसा स्वयं होता है या सोचता है, कर्म करता है, सामने वाले में उसे वे लक्षण ही दिखा देते हैं।
2. बुराई-भलाई यह देखने का अभिप्राय है, जैसे रंग की ऐनक आँखों पर लगा कर देखोगे वैसा ही रंग दिखेगा।
3. सज्जन संत व्यक्ति दूसरों में भलाई देखता हैं, एवं स बुराईयाँ अपने अन्दर ही जानकर उनको दूर करता है।
4. स्वार्थ पूरा न होने पर स्वार्थी व्यक्ति को हर मनुष्य कमियाँ-बुराईयाँ ही दिखती हैं, वह अज्ञानी नह जनता कि तेरे अन्दर का स्वार्थ तुझे सिर्फ बुराई दिखा रहा है, दूसरे में भलाई नहीं।
5. दयावान कभी किसी का बुरा सोचने से भी दूर रहता है उसे तो हर समय दूसरों के दुःखों को दूर करने हे दूसरों का सहयोग करने की चिन्ता रहती है। ऐसे दया व्यक्ति पर प्रभु एवं मानव दोनों का ही स्नेह बरसता है।
6. दूसरों के दुःख से दुखी एवं उनके दुःख दूर करने उपाय एवं परमार्थ करते रहने पर भी परोपकारी संसा में दुःखी रहते हुये भी सुख की अनुभूति करता है।

जमाना पब का है

विजेन्द्र सिंह
बी. एस-सी. द्वितीय वर्ष

दुनिया तक दरकार नहीं। वो तैराक गजब का है॥
तू प्यासा है पानी को। और जमाना पब का है॥
शेर तेरे सब अदबी है। दौर मगर करतब का है॥
ध्यान दिये (दीपक) ने जब खींचा। लौ देकर जब भभका है॥
हम समझे थे रब का है। वो तो बस मजहब का है॥
सुख-दुःख साथ है सबके। किस्सा जाने कब का है॥

Scanned by CamScanner

चार लोग क्या कहेंगे?

श्रीमती डेजी आर्य
प्रशासक, ज्ञान महाविद्यालय

बचपन से सुनती रही माँ की ये सहलाह
ये मत करो, वो मत करो,
वरना चार लोग क्या कहेंगे ?
उन चार लोगों के भय के भूत से
मैं अपने आपको ढालती रही।
एक अच्छी बच्ची बनकर इठलाती रही।
यही इतिहास जब आज के माहौल में पली
अपनी बिटिया के सामने दोहराया (तो)
वो पूछ बैठी,
माँ, कौन हैं, वो चार लोग ?
मुझे लगा जैसे मेरी सोती चेतना को
किसी ने झकझोर कर जगा दिया
मैं सोचने के लिए विवश हो गई
हाँ कौन हैं, वो चार लोग
जो न जाने सदियों से
कितने लोगों के अस्तित्व को
मिटाते आ रहे हैं।
समाज का वह गूँगा, लँगड़ा, बहरा वर्ग,
जिसको सुनने, देखने से भी डर लगता है।
कुछ पल के लिए, मैं मौन हो गई
बिटिया ने पूछा, माँ क्या सोच रही हो ?
मुझे लगा जैसे किसी अँधेरी गली से
निकल आई उजाले में,
मैंने केवल ये कहा,
वो भय के 'भूत' भूतकाल तक जिन्दा थे,
वे आज मर चुके हैं।
तुम खुद आज, अपना दपर्ण हो, आइना हो
तुम खुद अपना पैमाना हो
तुम्हें खुद ही तय करनी है
जिन्दगी की मंजिलें......

❑

संघर्ष ही जीवन है

राजेश कुमार
प्रवक्ता, बी.एड.

एक पंछी का जीवन दूर से देखने पर,
है कितना सुन्दर, कितना निर्मल
मानों कोई चिन्ता नहीं बस आकाश की गहराई,
और उसको चीरते पंख, न किसी से ईर्ष्या,
न किसी से द्वेष, हर उड़ान में भरता वो प्यार वेग।
यह देखकर, मेरे दिल में अनायास ही ख्याल आता है।
काश! मैं भी एक पंछी होता,
दिन भर आकाश में खूब घूमता-फिरता, न पढ़ने का
झंझट होता, न नौकरी की जरूरत होती।
हर पल मस्ती, जिन्दगी की क्या मौज होती।
पर क्या वाकई इतना सरल है, एक पंछी का जीवन ?
आग बरसाता हो सूरज, चाहे होती हो बरसात,
या हो कड़कती ठंड, रोज उसे है काम पर जाना,
अपने बच्चों के लिए दाना जो चुगकर लाना
तिनका-तिनका जोड़कर,
एक घर बनाए तो भी उसकी छत है खुली आसमां
एक बार घोंसला से निकला, तो उसे भी पता नहीं कि,
वापस बच्चों के पास आयेगा या किसी शिकारी का
शिकार बन जाएगा
और फिर पिंजरे से भी बदतर जिन्दगी बिताएगा।
वास्तविकता तो यह है कि आसान नहीं कोई भी जीवन,
हो चाहे वो जिसका जीवन,
बस एक चुनौती है जीवन,
एक संघर्ष है यह जीवन।

❑

Scanned by CamScanner

अनमोल विचार

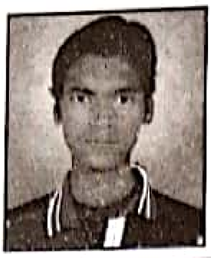

अरुण कुमार
बी.ए. प्रथम

1. जो हाथ सेवा के लिये उठते हैं,
वे प्रार्थना करने वाले होठों से,
अधिक पवित्र होते हैं।

2. दुनिया का सबसे बड़ा जेवर,
आपकी अपनी मेहनत है,
स्वार्थ में अच्छाईयाँ ऐसे खो
जाती है, जैसे समुद्र में नदियाँ।

3. जीतने के लिये कोई चीज है,
तो वह है प्रेम, जिसे कोई भी
नहीं हरा सकता।

4. सत्य से कमाया धन हर प्रकार से
सुख देता है, छल व कपट से कमाया
धन दु:ख ही दु:ख देता है।

❑

हिन्दी हिन्द की वाणी

देवेन्द्र कुमार
बी.एड.

हिन्दी हिन्द की वाणी है, फिर भी बेगानी है, हिन्दी अपनी सरलता-सहजता और अन्य भाषाओं को आत्मसात करने के गुणों के कारण सदियों से विकसित हुई और आज भी हो रही है। इसे जनसमर्थन शुरू से ही रहा है यह किसी खास क्षेत्र की भाषा नहीं बल्कि भारत की जनभाषा एवं सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा है। हिन्दी समूचे हिन्द की अभिव्यक्ति की वाणी है। आजादी की लड़ाई इसके माध्यम से लड़ी गयी। भारतीय संविधान में इसे राष्ट्रभाषा घोषित किया गया है। अत: सरकार का दयित्व है कि इसका क्रियान्वयन करें। हिन्दी आज विश्ववाजार में पहुंच रही है, लेकिन दु:ख की बात है कि हमारे अपने मंत्री, नेता, अधिकारी आदि जो आज उच्च पदों पर आसीन हैं, को अपनी मातृभाषा हिन्दी बोलने में शर्म आती है। धिक्कार है ऐसे लोगों पर जो हिन्दी/क्षेत्रीय भाषा बोलने वालों को हेय दृष्टि से देखते हैं और अंग्रेजी बोलने वालों को पलकों पर बैठाते हैं।

❑

भूल

जो भूल कर भूल जाये, उसे नादान कहते हैं,
जो भूल करता रहे, उसे इंसान कहते हैं,
जो भूल करके मुस्करायें उसे शैतान कहते हैं,
जो भूल पर भूल करता जाए, उसे मूर्ख कहते हैं।
जो भूल करके भूल से सीखे, उसे बुद्धिमान कहते हैं,
जो कभी भूल न करें, उसे भगवान कहते हैं।

Scanned by CamScanner

विद्यालय में अनुशासन का महत्व

✍ डॉ. बी. डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी

अनुशासन का शाब्दिक अर्थ मानसिक और नैतिक प्रशिक्षण है। दूसरे शब्दों में किसी संस्था देश यासमाज में प्रचलित व्यवस्था के प्रति श्रद्धा और उसमें नियमों का पालन ही अनुशासन है। विद्यालय के सन्दर्भ में इसका अभिप्राय उस विद्यालय के छात्रों के व्यवहार, सज्जनता, गुण, नैतिकता और नियम पालन से है। विद्यालय एक ऐसी संस्था है, जहां देश का नेतृत्व करने वाले नवयुवकों का निर्माण होता है। उनमें उन गुणों का विकास किया जाता है। जिसके द्वारा वह अपने समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी बन सकेगा। यदि विद्यालय में अनुशासन नहीं होगा तो कोई भी कार्य सुचारू रूप से नहीं चल सकेगा। आज कल देश की समस्याओं और आवश्यकताओं को देखते हुए अनुशासन की महत्ता सर्वोपरि है। अनुशासन राष्ट्रीय उत्थान का आधार और संस्थाओं के सुसंचालन की धुरी है। अनुशासन प्रत्येक देश और प्रत्येक समाज में जीवन के लिए सबसे अमूल्य निधि है। विद्यार्थियों को अनुशासन से लगाव होना चाहिए जिससे वे देश के सभ्य नागरिक बन सकें।

विद्यार्थियों में चहुमुखी विकास के लिए अनुशासन परम आवश्यक है एवं विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यालय में जाने से पूर्व खुद को जांच लें कि वह विद्यालय द्वारा निर्धारित यूनीफॉर्म में है या नहीं और विद्यार्थियों द्वारा अपने गुरुजनों का आदर करना यह अनुशासन का एक प्रमुख अंग है। आत्मा संयम और अनुशासन ही जीवन में सफलता का द्वार है जिससे वह सभी अभीष्ट कार्य सिद्ध कर सकता है। ❑

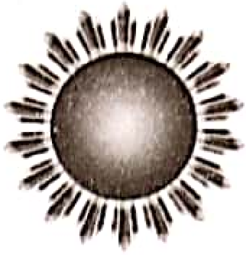

सूर्यदेव

✍ डॉ. बी. डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी

हलचल मची दिशा पूरब में फैला मंद उजाला।
धीमी गति से घुसा रवि और भेद हुआ मतवाला॥
कोई चितेरा स्वर्णिम रंग से पोत रहा जग सारा।
सुरमई भीगी हुई सुनहरी छिटका रंग अँगारा॥
नाम ग्राम न पता कोई सदियों से धाक जमाता।
जगमग-जगमग ज्योति जले ब्रह्माण्ड सकल सजाता॥
साथ लिए अनगिन मतवाली किरन सुन्दरी बाला।
इन्द्रधनुष की ओढ़ चुनरिया घूँघट मुखड़ा डाला॥
जादूगर या कुशल चितेरा कण-कण अलख जगाया।
अंतरिक्ष से पृथ्वी, तल, जलवायु तक में छाया॥
'अमर' वरद उपहार नाम 'दिनकर' इसने पाया।
धन भाव उपहार जगत में कीर्ति नाम फहराया॥
दर्शन पा तन-मन हर्षित संतों में संत कहलाया।
परहित जले करे परमारथ 'सूर्यदेव' वंदित काया॥ ❑

'यह छोटा है'

हस्त स्थूलवपुः स चांकुशवशः किं हस्तमात्रोऽकुशः।
दीपे प्रजवलिते प्रणश्यति तमः किं दीपमात्रं तमः ॥
वज्रेणापि हताः पतन्ति गिरयः किं वज्रमात्रो नगः।
तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः॥

(अर्थात् – स्थूल हाथी को एक छोटा-सा अंकुश वश में कर सकता है, एक नन्हा-सा दीपक सघन अंधकार का हरण कर सकता है, बड़े-बड़े पहाड़ों को छोटा-सा वज्र धराशायी कर सकता है। इसलिए 'यह छोटा है' यह समझकर किसी की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।) ❑

बन्दरगाह पर खड़ा हुआ जहाज सुरक्षित होता है, मगर सोचो क्या जहाज इसीलिए बनाए जाते हैं।

Scanned by CamScanner

ब्रह्म-मुहूर्त

✍ डॉ. सोमवीर सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर

रात्रे रश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रनोधने॥

(अर्थात्– रात्रि के अन्तिम पहर का जो तीसरा भाग है, उसको 'ब्रह्म-मुहूर्त' कहते हैं। यह अमृत-बेला है। सोकर उठ जाने और भजन-पूजन इत्यादि सत्कर्मों के लिये यही समय शास्त्रानुकूल है।)

प्रायः उच्च अधिकारियों एवं विशेष महत्वपूर्ण व्यक्तियों के कार्यालय अथवा निवास पर उनके नाम और पद की तख्ती देखी जा सकती है, जिस पर उनके मिलने का समय भी अंकित रहता है। उस निश्चित समय पर किसी को भी उनसे मिलने, संदेश देने अथवा अपनी व्यथा सुनाने में कोई भी असुविधा नहीं होती।

इसी प्रकार परब्रह्म परमेश्वर को अपनी इच्छा व्यक्त करने, दुःख निवारण हेतु प्रार्थना और अपनी व्यथा सुनाने का समय भी निश्चित है। यदि आप निश्चित समय से तनिक पूर्व से ही प्रयास करते हैं, तो स्पष्ट है कि आप भी परमेश्वर से मिलने और बातचीत करने का पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।

यूँ तो परब्रह्म परमेश्वर की हर प्राणी पर सदैव ही प्रतिपल कृपा बनी रहती है। वह हर प्राणी को समान रूप से देखते हैं। कभी किसी को निराश नहीं करते हैं, तथापि उनसे मिलने, प्रार्थना करने का जो समय निश्चित है, उसे शास्त्रों ने ब्रह्म मुहूर्त कहा है। धार्मिक ग्रन्थों में ब्रह्म मुहूर्त का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर (प्रातः चार बजे से पाँच बजकर तीस मिनट) को शुभ मानते हुये उस समय को अमृतकाल, ब्रह्मबेला अथवा 'ब्रह्म-मुहूर्त' कहा गया है।

श्री मनु महाराज ने इस अमृतकाल के सम्बन्ध में उपदेश दिया है कि ''ब्राह्मे मुहूर्ते बच्येत धमार्थोचाता चिन्तयेत।'' जिसका भावार्थ है- 'हे भद्र पुरुषो! ब्राह्ममुहूर्त में बिस्तर छोड़कर, पवित्र और स्वच्छ होकर धर्म, अर्थ, मोक्ष इत्यादि के उच्च विचार किया करो।'

धर्मग्रन्थ बतलाते हैं कि ब्रह्ममुहूर्त में उठते ही सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों की हथेलियों की रेखाओं को देखते हुये भगवान को स्मरण कर प्रार्थना करें–

''कराग्रे वसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥''

(हाथों के अग्रभाग में लक्ष्मी जी, बीच में सरस्वती जी और मूल में ब्रह्माजी हैं। इसलिये प्रातः काल उठते ही हाथों के दर्शन करने चाहिये।)

सनातनी धर्मशास्त्रियों, ज्ञानी साधु-सन्तों का मानना है कि इस अमृतकाल (ब्रह्ममुहूर्त) में साधकों द्वारा किये गये धर्म-कर्म, ईश्वर-चिन्तन तथा धार्मिक अनुष्ठानों का शीघ्र ही शुभ प्रभाव होता है, क्योंकि इस दिव्य काल में किये गये सभी जप-तप, प्रार्थना सद्ग्रंथ वाचन और हर धार्मिक कार्यों का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से रहता है। इस अमृत बेला में ''वह'' सबकी प्रार्थना, सबकी इच्छाओं और व्यथाओं को सुनकर मनवाँछित कामनाओं को पूर्ण करता है।

ऋषि-मुनियों ने ब्रह्मकाल को मधुमय-काल भी बतलाया है। प्रकृति भी इस बेला में खुलेमन से सहयोग प्रदान करते हुये अपनी मनभावनी छटा बिखेरते हुये, अपनी मधुरता फैलाती रहती है। स्वास्थ्यवर्धक, आनन्ददायक, सुखद और शीतल समीर बहने लगती है, जो आपके जीवन में स्फूर्ति, नव-प्राण और आत्मशान्ति का पूर्ण वेग से संचार करती है।

ब्रह्म-बेला में परमपिता परमेश्वर चारों ओर अपनी माया फैलाते हुए गुप्त रूप से समक्ष रहते हैं। आप विश्वास रखें कि भगवान कोई व्यक्ति विशेष नहीं बल्कि एक महान शक्ति है। वह सर्वज्ञाता और सर्वव्यापी हैं, जो स्वयं हर प्राणी को बल, बुद्धि, विद्या, विवेक, समृद्धि और सौंदर्य का उपहार बाँटते रहते हैं। लम्बी आयु की इच्छा रखने वाले प्रत्येक प्राणी की दीर्घायु और अनन्तकाल तक आत्म-तृप्ति प्रदान कर उसे सुमार्ग पर चलने की सुमति भी प्रदान करते हैं। किन्तु अज्ञानी अपनी अल्पबुद्धि के कारण इस सुअवसर को खो बैठते हैं। अपने अन्त समय में वे पछताते हैं, एवं अनेकानेक दुख झेलते हुये अपना शेष जीवनयापन करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने पिछले कर्मों को भूलकर ईश्वर तथा अपने भाग्य को दोष देते रहते हैं।

वैज्ञानिक शोधों ने इस अमृतकाल (ब्रह्ममुहूर्त) को प्रदूषण रहित होना बतलाया है, जबकि आयुर्वेद के विद्वानों ने इस समय की तुलना संजीवनी शक्ति से की है।

सभी धर्मग्रन्थों ने इस ब्रह्मबेला को अमृतमय, मंगलमय मानते हुये विवाह आदि सभी शुभ कार्यों में यहाँ तक कि वर-वधु के सात फेरे, हवन और पवित्र मंत्रोच्चारण हेतु कल्याणकारी और अटूट विवाह- सम्बन्ध बने रहने का शुभ समय माना है।

यह भी कहा जाता है कि प्रातः काल में देखे गये स्वप्न प्रायः सच होते हैं।

महर्षि वाल्मीकि जी ने 'श्री बाल्मीकि रामायण में श्री सीताजी की खोज में श्री हनुमान जी का अशोक-वाटिका में

Scanned by CamScanner

प्रवेश करने का यही समय बतलाते हुए उल्लेख किया है-

विचिन्यतइत वैदेहीं किञ्छिेपा निशा भवत्।
पडङ: वेदविदुपां कतुप्रचर याजि जाम।
शुश्राव ब्रह्म घोपान स विरात्रे ब्रह्म रक्षसाम॥ सु.क. 18

अर्थात्, इस प्रकार श्री सीताजी की खोज करते- करते रात्रि थोड़ी शेष रह गई तब श्री अनुमान जी ब्रह्ममुहूर्त में वेदज्ञ और याज्ञिक विद्वानों तथा ऋषियों द्वारा किये जाने वाले पाठ का श्रवण किया।

विश्व के सभी महान ऋषिमुनि, श्रेष्ठ परमहंस, साधक और विद्वानों ने ब्रह्ममुहूर्त में ही अपनी साधना, तप, यज्ञ, हरि चिन्तन और कीर्तन किया हैं। पवित्र धर्मग्रन्थों का लेखन कार्य भी ब्रह्मबेला में प्रारम्भ किया जाना बतलाया जाता है। उन्होंने अपने इष्टदेवता को मानसिक रूप से अपने प्रत्यक्ष पाकर अपनी व्यथा सुनाते हुये स्वयम् अपने-आपको ही 'श्रीहरि' को समर्पित कर दिया। सर्वव्यापी परमेश्वर की ओर से उन्हें संकेत प्राप्त हुए, जिनका पालन करते हुए उन्होंने उन्होंने दीर्घायु और सुखी जीवन प्राप्त कर विश्व में महान कीर्ति प्राप्त की है। हम भी अमृतबेला (ब्रह्महूर्त) में अपनी आत्मा में दिव्य विचारों का संग्रह करने का प्रयास करें।

आत्मा, परमात्मा का ही एक अंश है। हम जिस रूप में अपने आराध्य देव की आराधना और चिन्तन करेंगे, ईश्वर उसी रूप में हमारी सहायता करेंगे। हम स्वयं ही अनुभव करेंगे कि हमारे कर्म, हमारे गुण और हमारे स्वभाव में भारी परिवर्तन आ रहा है। अतएव, समय पर ही जागकर चैतन्य होना होगा, तभी हमारा जीवन सुखद, सफल और सार्थक सिद्ध होगा। ❑

शक्ति का स्रोत

स्वास्थ्य और सौन्दर्य

बिजेन्द्र सिंह
बी. एस-सी.

सूर्य सौरमंडल का स्वामी है

सौरमंडल के 9 ग्रहों में पृथ्वी का विशिष्ट स्थान है क्योंकि पृथ्वी पर मानव जीवन होता है। पशु जन्म लेते हैं, अपने बच्चों को जन्म देते हैं पालते हैं। सूर्य की सीधीकिरणें पृथ्वी पर पड़ती हैं। फल, पौधों पर सूर्य किरणें उन्हें शक्ति ऊर्जा और स्फूर्ति देता है। यदि सूर्य के या उनकी किरणों के दर्शन ना हो तो कहर छा जाए। तभी प्रात: सूर्य को नमन कर जल चढ़ाने का विधान है। सूर्य शक्ति स्रोत-पुंज है। ऊर्जा का साधन है।

सूर्य किरण जब अपनी त्वचा पर पड़ती है तो शक्ति देती है, स्फूर्ति बढ़ाती है और त्वचा रोगों को नष्ट करती है। सूर्य किरणों में रोगशमन शक्ति होता है। सूर्य रिणों से नाना प्रकार के विभिन्न रोगों का उपचार किया जाता है।

सूर्य प्रकाश में सात रंगों की ज्योति होती है सर इजहाक न्यूटन ने 1666 में सूर्य किरणों का विश्लेषण किया तो प्रिज्य की सहायता से बंद कमरे का पर्दे पर पड़ते प्रकाश से प्रकाश के रंग दृष्टिगत हुए। लाल, पीला, नारंगी व नीला अधिक दृष्टिगत हुए हैं।

सूर्य चिकित्सा में चीनी, पानी, आदि को हरे, लाल, नीले, पीले, बैंगनी रंगों के जार-बोतल में सूर्य किरणों में 8 घंटे प्रतिदिन रखने से उसका प्रताप बोतल में प्रविष्ट हो जाता है और चिकित्सा उसी के अनुरूप हुआ करती है।

शीत प्रकोप, आन्त रोग, मूत्र रोग, यकृत रोगों, कफजनित रोगों में साध्य चिकित्सा है।

सूर्य चिकित्सा में गठिया, वायु रोगों की चिकित्सा, खांसी, बलगम बनना, बुखार, क्षय रोग, फेफड़े की समस्याओं की अनुभूत चिकित्सा होती है। स्नायु, दुर्बलता, लाल वर्णों की शरीर में कमी की भी सूर्य चिकित्सा होती है।

सूर्य किरणों को वायलैट इसीलिए कहा जाता है कि वह पाँच रंगों का कमाल है। जैसे जरूरत हो सूर्य चिकित्सक उसे ग्रहण कर सेवन कर लेते हैं। तभी इसे शक्ति-पंज कहा जाता है। इसे ग्रहण करें लाभ स्वयं होगा।

माँस-पेशियों की मालिश सूर्य किरणों के समक्ष करने से उनका संचालन बढ़ जाता है। ग्रहण करना, शमन करना ये हमारी शक्ति पर आश्रित हैं।

सूर्य किरणों में बाग में बैठना, वायलेट चिकित्सा प्राकृतिक ढंग से करना कही जा सकती है। त्वचा की एलर्जी समाप्त होती है।

सूर्य से मित्रता का भावनात्मक चेतनात्मक नाता जोड़कर सतर्क, सजग रहकर समर्थ बन सकते हैं। सूर्य से 100 से 125 साल जीने की शक्ति ली जा सकती है। ❑

Scanned by CamScanner

उत्तम स्मृति के लिए सिद्धान्त

डॉ. जे. के. शर्मा
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग

भली–भाँति याद रखने के लिए एवं प्रभावपूर्ण ढंग से स्मरण करने के लिए हमें निम्नांकित सिद्धान्तों का ध्यानपूर्वक पालन करना चाहिए।

साहचर्य :

हम यह जानते हैं कि एक पंक्ति क्या होती है, यदि हम चार समान पंक्तियों को एक से एक कोने को मिलायें तो हम वर्ग बना लेते हैं। यदि छः वर्गों को साथ में मिलायें तो एक क्यूब बन जाता है। यह कितना सरल है लेकिन बिना यह जाने कि एक पंक्तिया क्या है और एक वर्ग क्या है। कोई भी यह नहीं जान सकता कि एक क्यूब क्या है?

जो बात ज्योमिती में सही है, वही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सही है। हम प्रत्येक नयी चीज़ को सीखते और याद रखते हैं। केवल उसके पहले से जानी हुई चीज़ के साथ जोड़कर ज्ञानार्जन की कोई अन्य विधि नहीं है।

यदि आप संस्कृत शब्दों के सीखने के बारे में सोचें तो आप तुरंत इस कथन की सत्यता को देख पायेंगे। यह सीखने के लिए कि पानी को संस्कृत में जल कहते हैं, तो हमें पानी और जल के मध्य एक सम्बन्ध बनाना होगा और यदि वह सम्बन्ध मजबूत होगा तभी आवश्यकता पड़ने पर हम उस संस्कृत शब्द को बतला पायेंगे। एक बार हमारे मस्तिष्क में पानी और जल के बीच का मार्ग दृढ़तापूर्णक स्थापित हो जाए, तो इनमें से किसी भी शब्द को याद कर सकते हैं।

मैं भली भाँति जानता हूँ कि अब तक आपने ऐसा सम्बन्ध नहीं बनाया है। कई बार हम ऐसे साहचर्य बनाने के बारे में जागृत नहीं होते। हम ऐसा अज्ञात रूप से करते हैं। जैसे एक छोटा बालक शब्द को अपने पिता से जोड़ लेता है। इस सम्बन्ध या साहचार्य को जाने बिना। ऐसे साहचर्य बनाना हितकर रहता है जो हमारी व्यक्तिगत स्मृति के प्रकार और उसकी आवश्यकता के अनुकूल हों।

स्मृति में विश्वास :

हमको अपनी स्मृति पर विश्वास रखना चाहिए। कुछ करने से पूर्व हमको अपनी स्मृति पर विश्वास रखना चाहिए। अपनी स्मृति में निम्नांकित शब्द दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाने चाहिए।

मेरा मस्तिष्क इस संसार के सर्वोत्तम कम्प्यूटर से भी अधिक अच्छा है।

यदि आप यह सोचते हैं कि आप किसी चीज को भली–भाँति याद नहीं रख पायेंगे तो आप उसे भली–भांति याद नहीं रख पायेंगे। आपने पैंतालीस वर्ष से अधिक आयु के लोगों को यह कहते हुए सुना होगा कि मुझे आपका नाम याद नहीं आ रहा है या मेरी स्मृति खराब है। सुबह उठने से पूर्व और उसके बाद हमें स्वयं से कहना चाहिए, मैं अपनी स्मृति पर विश्वास करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह एक कम्प्यूटर की भांति ही कार्य कर सकती है।

अपनी स्मृति में अपने विश्वास को सुधारने के उत्तम तरीकों में से एक है, स्वयं सुझाव या स्वयं बार–बार दोहराना कि मैं अधिक अच्छी तरह से याद रख सकता हूँ। यदि आप प्रत्येक से यह कहते हैं कि मेरी स्मृति खराब है तो आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि आपकी स्मृति आपको उत्तम सेवा दे सकती है। अपनी स्मृति में आत्मविश्वास को रखना इतना महत्वपूर्ण है।

ध्यान केन्द्रित करना :

ध्यान के केन्द्रीयकरण का अर्थ है, एक समय में एक ही वस्तु पर दृढ़ता से विचार करना, जो कुछ आप देख या सुन रहे हैं, उसके अतिरिक्त अन्य प्रत्येक चीज को अपने मस्तिष्क से मिटा या हटा दीजिए। अपने विचारों को भटकने न दीजिए। अन्त में यह देखिये कि आपकी स्मृति आपका मानसिक बैंक है अगर आप ऐसा कर सकते हैं तो आप ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। जिस प्रकार हम जितना अधिक एक गधे को खींचते हैं, उतना ही अधिक वह अवरोध करता है। ऐसा ही ध्यान केन्द्रीकरण के बारे में है, अर्थात् जितना अधिक बिखरे विचारों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहेंगे, उतना ही आपके विचार इधर उधर भागेंगे। एक गधे को आगे चलाने की युक्ति यह है कि उसके

Scanned by CamScanner

आगे एक सब्जी लटकायें और वह उसके पीछे चलेगा जहाँ कहीं भी आप उसे ले जाना चाहेंगे, अतः एक विशेष विषय पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए हमें उस विषय में रुचि का निर्माण करना चाहिए।

इन्द्रियों की शक्तियां :

जो कुछ आप अपनी स्मृति में जमा करना और बाद में निकालना चाहते हैं, उसे आपको स्पष्टतया देखना और सुनना चाहिए। याद की जाने वाली वस्तु पर अपना ध्यान केन्द्रित कीजिए और उसे अपनी कल्पना में देखिए, सुनिये और संभवतः उसका स्वाद लीजिये या उसे अनुभव कीजिये। जब आप अपनी इन्द्रियों को इसमें शामिल करते हैं तो उनके प्रभाव सदैव पैने होते हैं और सुगमतापूर्वक भुलायें नहीं जाते हैं। किसी चीज़ को याद करते या सीखते समय निम्नांकित सभी छः इन्द्रियों को उसमें शामिल करने का प्रयास कीजिये।

1. सुनने की इन्द्रिय
2. देखने की इन्द्रिय
3. सूंघने की इन्द्रिय
4. चखने की इन्द्रिय
5. स्पर्श की इन्द्रिय
6. गति संवेदन की इन्द्रिय अर्थात शारीरिक स्थिति और गति के प्रति जागरुक होना।

रंग :

हम बस स्वप्न देखते हैं और कभी-कभी दिन में स्वप्न देखते हैं। कभी-कभी हम अपने स्वप्नों की मित्रों के साथ चर्चा करते हैं, लेकिन क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि क्या आपका स्वप्न रंगीन था या काला सफेद यह विश्लेक्षण करने का प्रयास कीजिए कि क्या आपका स्वप्न बहुत स्पष्ट था या धुंधला था। यदि वह धुंधला था तो पुनः अपनी कल्पना के पर्दे पर उसे जितना संभव हो, स्पष्टता से देखने का प्रयास कीजिए जहां तक संभव हो, अपने चित्र और चिंतन को अधिक स्मरणीय बनाने के लिए रंगों की विविधता का प्रयोग कीजिए।

बढ़ चढ़कर प्रस्तुत करना :

हमारे मस्तिष्क की यह विशेषता है कि वह बढ़ा चढ़ाकर कही गई बातों को अधिक शीघ्रता से याद रख लेता है उन्हें हमारे जाग्रत मस्तिष्क में अधिक लम्बे समय तक स्थिर रखता है तो फिर क्यों न इस विशेषता को सकारात्मक भाव से काम में लें। क्यों न मस्तिष्क की इस सुंदरता को एवं अन्य चीजों को अधिक लम्बे समय तक याद रखने के लिए काम में लें। अतः जहां तक संभव हो, मानसिक चित्र को गहरे रूप में देखने का प्रयास कीजिए। यह कल्पना कीजिए कि एक मोटे आदमी को हम कैसे भूल पायेंगे यदि हम उसके पेट को एक बड़े बर्तन और चेहरे को फुटबॉल के रूप में मस्तिष्क में छवि बनायें।

चित्र :

जो कुछ आप याद रखना चाहते हैं, उसकी एक मानसिक छवि बनाने का प्रयास कीजिए। विचार, तारीख, सिद्धान्त या किसी भी चीज की एक मानसिक छवि बनायें क्योंकि मानसिक छवि बनाने से याद करने की प्रक्रिया तेज होती है।

अजीबो-गरीब बातें :

मान लीजिए कि आप एक विद्यार्थी हैं और एक दिन आपके अध्यापक अपने सिर पर हैल्मेट पहनकर अपना भाषण देते हैं। आप मुझसे सहमत होंगे कि आप उस दिन को भी नहीं भूल पायेंगे। वह एक अजीबो-गरीब बात थी। मस्तिष्क की यह सुन्दरता है कि वह अजीबो-गरीब चीजों को शीघ्र स्वीकार कर लेता है और लम्बे समय तक याद रखता है। अतः क्यों न हम इसका प्रयोग चीजों को याद करने में करें। जीवन में कोई भी चीज़ इतनी बेकार या गंभीर नहीं होती कि उसे याद करने योग्य रोचक न बनाया जा सके। जब कोई चीज हास्यपूर्ण होती है तो उसे याद रखना आनन्ददायक क्रिया बन जाती है।

विचार :

आप यह मानेंगे की अमूर्त बातों को याद रखना बहुत कठिन होता है। अतः यह आवश्यक है कि अमूर्त विचारों को किसी मानसिक तस्वीर में बदल दिया जाये तब यह मानसिक तस्वीर हमें उन अमूर्त विचारों को याद रखने में मदद करेगी। मूलतः हम अपनी स्मृति में कोई भी बात जमा नहीं कर सकते जब तक कि हम उसे किसी ऐसी चीज़ में बदल न दें जिसे हम देख सकें या चित्रित कर सकें। विदेशी मुद्रा को अपने खाते में जमा करने से पहले हमें उसे अपने समान मूल्य की भारतीय मुद्रा में बदलना तो होगा ही। इसी प्रकार एक अमूर्त विचार को अपनी स्मृति में जमा करने के लिए आवश्यक है कि उसे किसी एक रूप में बदला जायें, जिसे हम समझ सकें तथा जिसे हम देख सकें। तभी हमारा मस्तिष्क प्रभावपूर्ण ढंग से ग्रहण करेगा।

कश्ती हर तूफान से गुजर सकती है।
बुझी हुई शमां फिर से जल सकती है।।
अभी भी समय है, अपने इरादे फिर से मजबूत कर लें।
क्योंकि किस्मत कभी भी बदल सकती है।।

Scanned by CamScanner

शिष्टाचार

सत्यवान उपाध्याय
उप प्रबन्धक

शिष्टाचार हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है। विनम्रता, सहजता से वार्तालाप, मुस्कराकर जवाब देने की कला प्रत्येक व्यक्ति को मोहित कर लेती है। जो व्यक्ति शिष्टाचार से पेश आते हैं, वे बड़ी-बड़ी डिग्रियां न होने पर भी अपने-अपने क्षेत्र में पहचान बना लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे शख्स से शिष्टाचार और विनम्रता की आकांक्षा करता है। शिष्टाचार का पालन करने वाला व्यक्ति स्वच्छ, निर्मल और दुर्गणों से परे होता है। व्यक्ति की कार्यशाली भी उसमें शिष्टाचार के गुणों को उत्पन्न करती है। सामान्यतः शिष्टाचारी व्यक्ति अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाला होता है। हमारे जीवन का उद्देश्य ईश्वर की दिव्य योजना का एक अंग है। ऐसे में शिष्टाचार का गुण व्यक्ति की अभूतपूर्ण सफलता और पूर्णता प्रदान करता है।

यदि व्यक्ति किसी समस्या या तनाव से ग्रस्त है, लेकिन ऐसे में भी वह शिष्टाचार के साथ पेश आता है तो अनेक लोग उसकी समस्या का हल सुलझाने के लिए उसके साथ खड़े हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी समस्या के समाधान तक पहुंच जाता है। शिष्टाचार को अपने जीवन का एक अंग मानने वाला व्यक्ति अकसर अहंकार, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध आदि से मुक्त होता है। ऐसा व्यक्ति हर जगह अपनी छाप छोड़ता है। कार्यस्थल से लेकर परिवार तक हर जगह वह और उससे सभी संतुष्ट रहते हैं। शिष्टाचारी व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति सद् विचारों से पूर्ण व सकारात्मक नजरिया रखता है। उसके मन के सद्भाव उसे प्रफुल्लित रखते हैं। चिकित्सा विज्ञान भी अब इस तथ्य को सिद्ध कर चुका है कि अच्छे विचारों का प्रभाव मन पर ही नहीं, तन पर भी पड़ता है। मस्तिष्क की कोशिकाएं मन में उठने वाले विचारों के अनुसार कार्य करती हैं। इसके विपरीत नकारात्मक विचारों का मन व तन पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। जेम्स एलेन ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अच्छे विचारों के सकरात्मक व स्वास्थ्यप्रद और बुरे विचारों से नकारात्मक व घातक फल आपको वहन करने ही पड़ेंगे। व्यक्ति जितना अधिक अपने प्रति ईमानदार और शिष्टाचारी होता है, वह उतनी ही ज्यादा सच्ची और वास्तविक खुशी को प्राप्त करता है। ❑

ज्ञान की बातें

1. पैसों को तिजोरी में बंद करके रखा जा सकता है, पर समय को बंद करके नहीं रखा जा सकता है। अतः अपने अमूल्य समय को व्यर्थ के कामों में खर्च नहीं करना चाहिए।
2. भलों के संग से विष भी अमृत हो जाता है बुरों के संग से अमृत भी विष में बदल जाता है। गाय मामूली तिनकों से दूध बना देती है, और अमृतमय दूध को सांप जहर में बदल देता है।
3. किसी भी देश के नागरिक की भाषा से उसके मूल देश का परिचय मिलता है और उसके द्वारा किए गए आदर, सत्कार से उसके हृदय की उदारता और कृपणता का अनुमान लगाया जा सकता है।
4. जैसे वृक्ष की जड़ सींचने से उसकी सभी शाखायें और पत्ते तृप्त हो जाते हैं, वैसे ही परमात्मा की भक्ति से सारे देवता आप ही प्रसन्न हो जाते हैं।
5. आज की तारीख, आज का दिन दोबारा कभी नहीं आयेगा, इसीलिए आज जितना अधिक कर सकते हो, करो। काम को यह सोचकर करो जैसे आपको आज ही मर जाना है, क्योंकि कल शायद आये न आये।

Scanned by CamScanner

युग प्रवर्तक – स्वामी विवेकानन्द

डॉ. हीरेश गोयल
अंसि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

भारत में उस समय अंग्रेजी राज और ईसाई संस्कृति का तीव्र गति से प्रसार हो रहा था। देश के उच्च वर्ग का विश्वास अपने धर्म और सभ्यता से टूट गया था। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि कुछ ही समय में इस देश में ईसाइयत की पताका फहरने लगेगी। उसी समय अपने सनातन धर्म के सच्चे स्वरूप को संसार के सामने रखने वाले अनमोल रत्न युग प्रवर्तक 'स्वामी विवेकानन्द' का जन्म 12 फरवरी, 1863 ई. को कलकत्ता के मध्यम वर्गीय बंगाली परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनके पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के वकील थे, तथा माता भुवनेश्वरी देवी अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। वे शिव की अनन्य भक्त थीं। भगवान वीरेश्वर की कृपा से इस बालक को पाकर माता भुवनेश्वरी इन्हें प्यार से 'बिले' नाम से बुलाती थीं। ये बचपन में अत्यन्त नटखट व चंचल स्वभाव के थे। माता भुवनेश्वरी इनके खाने के लिए बैठी रहतीं, कभी-कभी रो पड़तीं और खटिया पकड़कर स्वयं को कोसने लगतीं। कहतीं, "महादेव! मैंने घर का चिराग माँगा था, तूने ये क्या दे डाला इससे तो मैं बेऔलाद ही भली थी।" वह रोते-रोते खटिया की पाटी पर सिर रखकर सो जातीं। तब ये बालक उछल कूद करके आता माँ को ढूंढ़ता, माँ के गले में हाथ डालकर झूलते हुए कहता, "ले माँ मार, खूब मार! ये संटी पड़ी है, इससे मुझे रूई की तरह धुनडाल। मैने आज फिर वचन तोड़ा, तुझे फिर सताया, ऐसे दुष्ट को सजा मिलनी ही चाहिए।" वह स्वयं अपने गाल पर थप्पड़ मारने लगता। माँ का हृदय पसीज उठता वह उसका हाथ पकड़ लेतीं और कहतीं, "ना रे बिले मुझे ऐसा ही करना था, तो तुझे महादेव से क्यों माँगती? तू तो महादेव का धन है मेरे प्यारे बिले!" वह संटी उठाकर दूर फेंक देतीं, उनका सारा गुस्सा पलभर में गायब हो जाता। यो पूछता, "तूने कुछ खाया माँ?" "जब तक तू नहीं खायेगा मैं कैसे खाती?", माता कहती। वह आँखों में आँसू भरकर कहता, "मेरी प्यारी माँ तू कितनी अच्छी है, मुझे कितना प्यार करती है और मैं तुझे कितना सताता हूँ। अब आगे से तुझे कभी नहीं सताऊंगा।" दोनों कान पकड़कर वह माँ के सामने बैठ जाता, माता निहाल हो उसे अपने आँचल में चिड़िया के पंखों की तरह छिपा लेतीं उसकी बलैया लेतीं। इनकी प्रखर बुद्धि व प्रतिभा से मि. हेस्टी अत्यन्त प्रभावित थे। बचपन से ही नरेन्द्र को 'ईश्वर से साक्षात्कार' की धुन सवार थी। इसलिए ये अल्पायु में ही उच्च वर्ग के नव शिक्षित लोगों द्वारा स्थापित संस्था 'ब्राह्म समाज' में जाने लगे, जहाँ निरन्तर ध्यान व प्रार्थना से ईश्वर के दर्शन नहीं हुए तो ब्राह्म समाज से इनका ध्यान भंग हो गया, इनके ईश्वर की खोज में भटकने की बैचेनी को देखकर इनके काका ने कहा, यदि तुझे वास्तव में ईश्वर के दर्शन करने हैं तो दक्षिणेश्वर ठाकुर रामकृष्ण के पास जा। फिर क्या था नरेन्द्र पैदल ही दक्षिणेश्वर कालीवाड़ी माँ काली के परम भक्त स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास आ पहुँचे। श्री रामकृष्ण ने इन्हें अपने पास बिठाया तो नरेन्द्र ने अधीरता से पूछा, "क्या आपने ईश्वर को देखा है?" परमहंस जी ने बड़े स्नेह से कहा, "हाँ देखा है, जिस प्रकार मैं तुमसे बातें कर रहा हूँ, वैसे बातें भी की हैं।" नरेन्द्र को स्वामी जी में दिव्य शक्ति का अनुभव हुआ, उसे लगा मेरी मंजिल तो यही थी पता नहीं कहाँ-कहाँ यूंही व्यर्थ में भटकता रहा।

1884 में नरेन्द्र एम.ए. में पढ़ रहे थे, तभी इनके पिता का देहान्त हो गया। पिता घर पर काफी कर्जा छोड़ गये थे, घर की स्थिति दयनीय थी। नौकरी इन्हें मिल नहीं पा रही थी। संकट की घड़ी में रामकृष्ण की याद आई। उनके पास पहुँचे। बोले, "हमारे दुर्दिन चल रहे हैं, रोटी के लाले

Scanned by CamScanner

पड़ रहे हैं, माँ काली से कहिये वे हमारी मदद करें।" राम कृष्ण बोले, "ना रे नरेन्द्र! जगदम्बे से मैं कुछ नहीं कह सकता। उसके दरबार में बिचौलिये की कोई जगह नहीं है, तू स्वयं उनसे प्रार्थना कर! यदि पुकार सच्चे मन से हुई तो वे तेरी अवश्य सहायता करेंगी। आज मंगलवार है। आज रात काली मन्दिर जाना माँ के चरणों में प्रणाम करके जो तुझे चाहिए माँग लेना, मिल जायेगा।" नरेन्द्र माँ के मन्दिर गये। रात का गहरा सन्नाटा, माँ के चरणों में शीश झुकाया, उनके सामने बैठ गये, माँ के चरणों में ध्यान लगाया, सारी दुनिया भूल गये। मन में भक्ति का उदय हुआ। चित्त में सात्विक प्रेम की गंगा उमड़ी। विनती कर उठे, "माँ मुझे विवेक दो, वैराग्य दो, भक्ति दो।" माँ ने प्रकट होकर कहा, 'तथास्तु'। वे लौट आये। श्री रामकृष्ण ने पूछा, माँ से आर्थिक तंगी दूर करने की प्रार्थना की। नहीं ठाकुर। क्या माँ ने मना कर दिया। नहीं ठाकुर, ऐन मौके पर मेरी बुद्धि मारी गयी, माँगना था क्या माँग क्या बैठा? ठाकुर बोले, तू कितना मूर्ख है, मेरे सामने तो रोता है, अपना दुःखड़ा कहता है लेकिन माँ के सामने जाते ही माटी का माधो हो जाता है। जा फिर जा प्रार्थना कर, माँ भोली हैं, मान जायेगी। नरेन्द्र फिर गये, माँ को शीश झुकाया ध्यानमग्न हो फिर माँग बैठे, माँ मुझे विवेक दो, वैराग्य दो, भक्ति दो।" इसी प्रकार वे अगली बार गये। पर माँ से यही एक बात कहते। वे सोचने लगे मैं क्या माँगने जाता हूँ, माँ से क्या माँग बैठता हूँ। वे दौड़ते हुए आए और श्री रामकृष्ण के चरणों में गिर पड़े, अश्रुधारा बहने लगी। कहने लगे ठाकुर! मेरी माँ जगदम्बे आदि जो भी हो, आप ही हो। मैं जानता हूँ, आप ही मेरी बुद्धि फेर रहे हो। मेरे परिवार की गुजर बसर हो सके, ये आशीर्वाद दो, वरना आपके पाँव नहीं छोड़ूँगा, सिर पटक-पटक के मर जाऊंगा। ठाकुर बोले चल मैं माँ से प्रार्थना करूँगा कि तेरे परिवार को मोटे अन्न, वस्त्र का अभाव न रहने दें।

16 अगस्त 1886 स्वामी श्री रामकृष्ण जी ने समाधि लेने से पूर्व अपनी सिद्ध की हुयी सारी शक्तियों को नरेन्द्र के शरीर में प्रविष्ट करा दिया। स्वामी रामकृष्ण के कार्यों को पूर्ण करने के लिए नरेन्द्र 1888 में विविदिषानन्द बनकर भ्रमण पर चल दिए। विविदिषानन्द के सम्बोधन में लोगों से गलती हो रही थीं। तो वे सच्चिदानन्द बन गये। वे वृन्दावन से भ्रमण कर हाथरस पहुँचे। यहाँ का स्टेशन मास्टर शरतचन्द इनका भक्त बन गया और नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। हिन्दू ही नहीं मुसलमानों के समूह इनके दर्शनार्थ आने लगे। स्वामी सच्चिदानन्द कहते, "क्या हवा, पानी, अग्नि, धरती; हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख ईसाई का भेद करते हैं। क्या गंगा मुसलमानों को नहाने, कुल्ला करने, पीने से रोकती है? फिर भेद क्यों? छोटा बड़ा क्यों?" इनकी वाणी अमृतमयी थी, मुद्रा सहज तनिक भी आकांक्षा नही, अहंकार नहीं। अब वे पुनः विविदिषानन्द बन खेतड़ी के राजा अजीतसिंह के यहाँ पहुँचे। नाम बदलने का उनका अपना सुख था। राजा अजीतसिंह ने इनकी विद्वता व सादगी देखकर इनसे गुरु दीक्षा ले ली। राजा के सभी दरबारी बैठे हुए थे। स्वामी जी की सद्चर्चा चल रही थी, तभी नर्तकियों का दल आया। उसे देख स्वामीजी चलने लगे तभी एक अतिमधुर आवाज आई, "स्वामीजी ठहरिये!" सारी सभा स्तब्ध। सहसा एक कमसिन, छरहरी, कंचन काया की युवती, सौन्दर्य की मल्लिका साक्षात रति की प्रतिमूर्ति जो अत्यन्त मादक लग रही थी आगे बढ़कर आयी। स्वामी जी बोले, "क्या है नर्तकी?" वह बोली, "मैं वैश्या की लड़की हूँ तन अभी बिका नहीं खरीदार दिन-रात लार टपकाते हैं। यहाँ मुझे इसीलिये लाया गया है कि यहाँ उच्च कोटि के खरीददार मिल जायेंगे। मै बिकना नही चाहती। क्या करूं? कैसे बचूं? मैं जानती हूँ न तो मैं ही आम्रपाली हूँ और न ही आप महात्मा बुद्ध।" स्वामी जी ने उस पर भरपूर नजर डाली। वह हँसकर कहने लगी, हम और आप एक जैसे हैं स्वामी जी, आपने संन्यासी होकर समस्त सम्बन्धों को स्वेच्छा से त्यागा है और मुझे समाज ने, जिसने मुझे सारे रिश्ते भूलकर यारों का मन बहलाने का खिलौना बना दिया है। जिन्हें बचपन में खिलौने से खेलने का सौभाग्य नहीं मिला वे हम जैसे जीवित खिलौनों से खेलना अपना हक समझते हैं। पहले उसने मधुर कंठ से गायत्री मंत्र गाया, फिर गा उठी, "हमारे प्रभु अवगुन चित न धरौ।"

स्वामी जी का सिर चकराया। उसके पास आये और बोले, "माँ जगदम्बे तेरे कितने रूप हैं। तेरी तपस्विनी

Scanned by CamScanner

वैश्या बनी स्वयं से विद्रोह कर तुझे चुनौती दे रही हैं। हे ज्ञानदायनी माँ, तूने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे क्षमा कर देना माँ! मैंने तुझे घृणित दृष्टि से देखा।'' वह बोली, ''वाह संन्यासी! आज तूने एक कुँवारी को माँ बना दिया। तो सुन पुत्र! तुझे यह माँ आशीर्वाद देती है कि तू न केवल अपने लक्ष्य में सफल होगा बल्कि अपने होने का डंका बजवा देगा।'' अच्छा संन्यासी अब हम चलेंगे। राजा अजीतसिंह ने उसे इनाम देना चाहा तो उसने बड़ी शालीनता से कहा, एक सन्यासी की माँ को कौन क्या देगा हुजूर! जो देना था वह उसके पुत्र ने उसे दे डाला। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' स्वामीजी खेतड़ी से चलने लगे तो, राजा अजीतसिंह ने स्वामी जी से विनती करते हुए गुरू दक्षिणा में श्रद्धापूर्वक 'विवेकानन्द' नाम अर्पित किया और कहा आज से आपका नाम 'विवेकानन्द' प्रकाश में आयेगा।

स्वामी पुनः सच्चिदानन्द बन घूमते-घूमते कर्णवती (अहमदाबाद), फिर लिमड़ी (काठियावाड़) आ गये। पैदल चलने से भूख जोर से लगी थी। रास्ते में एक आश्रम दिखायी दिया उसी में जा पहुँचे। किन्तु वहाँ का नजारा देख कर ज्ञात हुआ कि वे गलत जगह आ ठहरे हैं। यहाँ के साधु वाम मार्गी हैं। कुत्सित अनुष्ठान करते हैं, सम्भोग उनके योग का केन्द्र बिन्दु है। स्वामी जी ने वहाँ से भागने का प्रयत्न किया तो इन्हें पकड़कर मुख्य पुजारी के पास लाया गया। जिसे अर्द्धनग्न युवतियाँ मदिरापान करा रहीं थीं, सेवा कर रही थीं। पुजारी स्वामी जी से बोला, ''तपस्वी संन्यासी! तुम निःसन्देह शुद्ध ब्रह्मचारी हो, तुमने नारी का स्पर्श कभी नहीं किया है। सच है ना।'' स्वामी जी बोले, ''हाँ मैं ब्रह्मचारी हूँ।'' ''मुझे ऐसे ही ब्रह्मचारी की तलाश थी जो हमारी समाधि का अंग बने। यहाँ 20 साधु 12 संन्यासिनियाँ हैं। कल एक ब्रह्मचारिणी को लाया गया है जो अभी रजस्वाला भी नहीं हुई है अति सुन्दर है, देखते रह जाओगे।'' उसने ताली बजाकर छरहरी काया वाली युवती को बुलाया और स्वामी जी से बोला, ''तुम्हें अपना ब्रह्मचर्य इसे दान करना होगा।'' स्वामी जी के मना करने पर इन्हें कैद कर लिया गया। स्वामी जी ने आश्रम के एक कर्मचारी के छोटे लड़के द्वारा लिमड़ी के राजा को अपनी कैद का सन्देश भिजवा दिया। इधर वही युवती अर्द्धनग्न अवस्था में स्वामी जी के कमरे में आयी बोली, ''ब्रह्मचारी उठो। तुम्हें युवतियाँ दुग्ध स्नान करायेंगी। फिर आपका और मेरा मधुर मिलन होगा।'' स्वामी जी कुछ कहते इससे पहले ही लिमड़ी के राजा की सेना ने चारों ओर घेरा डालकर आश्रम अपने नियन्त्रण में ले लिया और स्वामी जी को सकुशल बचा लिया। स्वामीजी ने उठकर ठाकुर और माँ काली का स्मरण कर धन्यवाद दिया।

स्वामी जी यहाँ से मैसूर, मदुरै, पाँडिचेरी होते हुए मद्रास जा पहुँचे। यहाँ के राजा श्री भास्कर सेतुपति व दीवान बहादुर रघुनाथराज ने स्वामी जी से शिकागो धर्म सम्मेलन में जाने की विनती की। स्वामी जी, ठाकुर श्री रामकृष्ण व माँ काली का आशीर्वाद मिलते ही विश्व धर्म सभा में जाने को तैयार हो गये तो आलासिंगा, पेरुमल जो मद्रास हाईस्कूल में शिक्षक थे ने स्वामीजी के जाने के लिए धन संग्रह करना शुरू कर दिया। उन्होंने चार हजार रुपये इकट्ठे कर लिये। राजा अजीतसिंह ने स्वामी विवेकानन्द के नाम से जहाज की टिकट बनवा दी। स्वामी जी समुद्र तट पर आ गये। पी एण्ड ओ का विशाल जहाज पेलिन सुलर शिकागो जाने को तैयार खड़ा था। धन के अभाव में वे कन्याकुमारी के शिलाखण्ड तक तैर कर गये। वहाँ खतरनाक मानव भक्षी, शार्क, मछलियाँ रहती थीं। यहाँ कोई भी परिचित मछुआरा तैरने का दुस्साहस नहीं कर पाया था किन्तु ठाकुर उनके साथ थे कैसा डर। जहाज का भौंपू बजा जहाज हिला हिचकोला खाया और चलने लगा। सभी ने स्वामी विवेकानन्द की जय का उद्घोष किया। स्वामी जी की आँखें भर आयीं। जहाज में धीरे-धीरे सभी सहयात्री स्वामी जी के आकर्षण से बँधते चले गये। जहाज हाँगकाँग जा पहुँचा। सभी घूमने चल दिये जहाज के डॉ. आन्द्रे ने कहा, स्वामी जी यहाँ विदेशियों को चीनी मन्दिरों को देखने पर प्रतिबन्ध है। स्वामीजी बोले, ''मैं तो देखना चाहूँगा।'' स्वामी जी उस प्रतिबन्धित क्षेत्र की ओर चल दिये। साथ में दुभाषिया या अन्य लोग उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। दुभाषिया कह रहा था, स्वामी जी लौट चलो यहाँ के लोग हमें पकड़कर मारेंगे। बन्दी बना लेंगे। पहले तीन-चार बार इन्होंने लोगों को इतना पीटा है कि वे मर गये हैं। स्वामी जी बढ़ते जा रहे थे अचानक दुभाषिया चिल्लाया सज्जनो! भागो! वे लोग क्रोधावेश में हाथों में लाठियाँ

Scanned by CamScanner

उछालते हुए भागते आ रहे हैं, सभी सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए, कुछ छिप गये। दुभाषिया भागने लगा तो स्वामी जी ने जोर से उसकी कलाई पकड़ ली, उससे बोले चीनी भाषा में संन्यासी या सन्त को क्या कहते हैं? दुभाषिया वह शब्द बताकर भाग खड़ा हुआ। सभी पेड़ों की आड़ में छिपकर देखने लगे कि स्वामी जी अपनी जगह पर अटल हैं वे लोग चीखते हुए स्वामी जी के पास आ गये। उनकी लाठियों में तीखे नुकीले फल लगे थे। स्वामी विवेकानन्द ने चीनी भाषा में तेज स्वर में अपनी छाती पर हाथ मारकर कहा मैं संन्यासी हूँ..... योगी हूँ....... साधू हूँ...... वे सब पास आये, अपनी लाठियाँ जमीन पर रख दीं और स्वामी जी के चरणों में गिर गये। स्वामी जी ने अपना हाथ उनके सिर पर रखकर आशीर्वाद दिया। सभी छिपे हुए यात्री व दुभाषिया अचम्भित यह कैसा जादू? अब चीनी लोग स्वामी जी से कुछ माँगने लगे तो उन्होंने दुभाषिये को बुलाकर पूछा उसने कहा ये भूत प्रेत व अपवित्र प्रभावों से बचने के लिए रक्षा कवच माँग रहे हैं। स्वामी जी ने एक कागज उठाया, उसके कई टुकड़े करके वेद का पवित्र शब्द "ॐ" लिखा और एक-एक को बुलाकर कागज थमा दिया। उससे वे बड़े प्रसन्न हो, माथे से लगा कुछ कहते हुए स्वामी जी को अपने मठ में ले गए। वहाँ संस्कृत व बाँग्ला की हस्तलिखित पोथियाँ देखीं। स्वामी जी ने उन्हें कुछ मधुर श्लोक सुनाकर उनसे विदा ली।

चलते-चलते 30 जुलाई, 1893 की रात को वे शिकागो पहुँच गए। वहाँ न कोई उनका परिचित था, ना उनका ठिकाना, उनकी वेश-भूषा देखकर बच्चे ताली बजाकर हँसते, बड़े खिल्ली उड़ाते। वहाँ भीख माँगने पर जेल की सजा थी, पैसे ज्यादा नहीं थे। ठाकुर का स्मरण किया ट्रेन में मिस कैथरीन स्वामी से प्रभावित हो अपने घर ले आईं, वहीं प्रो. हैनरी राइट इनके प्रशंसक बन गये। इन्होंने ही हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में इनके पंजीकरण हेतु सम्मेलन के प्रमुख जॉन हेनरी बैरोज के लिए पत्र लिख कर दिया। वे सम्मेलन में पहुँचे। सभागार खचाखच भरा हुआ था। 12 देशों के वक्ता बोल चुके थे, इनका 13 वां नम्बर था। सभी अपना भाषण लिखकर लाये थे, स्वामी जी खाली हाथ गये थे। वे क्या बोलेंगे? कुछ समझ नही आ रहा था। उन्हें बैचेनी होने लगी तभी ठाकुर मुस्कराते हुए आये, माँ काली भी साथ थीं बोलीं, "वत्स तू आगे बढ़, संकोच त्याग, घबराहट छोड़, तेरे साथ तेरी माँ खड़ी है, तेरा ठाकुर है फिर कैसी और किसकी चिन्ता?"

विवेकानन्द के कंठ से संगीत का सुरभिमय स्वर फूट पड़ा, "प्यारे अमेरिकावासी बहनो और भाइयो"। स्वामी जी का इतना कहना था कि पूरा सदन आन्तरिक आह्लाद की करतल ध्वनि से गूँज उठा और 2-3 मिनट ऐसे ही गूँजता रहा। कब से इस अक्षय अमृत को सुनने व देखने को अमेरिकावासी लालायित थे। उन्होंने दिखा दिया कि भारत जब राग-रागनियों के तार छेड़ता है तो हर दिल के साज उनके साथ बजने लगते हैं। जब वेद बोलते हैं तो विश्व के समूचे सद्ग्रन्थ अपलक नयन खोले चित्रवत से देखते सुनते रह जाते हैं। विवेकानन्द की सुगन्ध से सारा शिकागो महक उठा। सभी समाचार पत्रों में स्वामी विवेकानन्द छाये हुए थे। 27 सितम्बर, 1893 को सभा का 17 वाँ दिन था और स्वामी जी का 9वाँ व्याख्यान। उन्होंने बज्र शब्दों में कहा, "हिन्दू न ईसाई बने और न ईसाई हिन्दू, यही प्रक्रिया अन्य धर्मों पर भी लागू हो। अमरपुत्रो, इस विश्व धर्म सम्मेलन में हमें जो सीखने को मिला है वह यह है कि आध्यात्मिकता, पवित्रता और उदारता किसी एक धर्म की सम्पत्ति नहीं है। वह सभी धर्मों में यथा शक्ति विद्यमान है। अन्त में मैं कहूँगा, सहयोग करो, संघर्ष या प्रतिस्पर्द्धा नहीं। हमें विनाश नहीं शान्ति चाहिए।" शिकागो के राजमार्गों पर स्वामी जी के आकार के तिरंगे चित्र नजर आने लगे। लोग उन्हें पैदल चलता हुआ देखकर रुक जाते, उतरकर उनका अभिनन्दन करते।

महासभा की विज्ञान सभा की अध्यक्ष मरविन मेरी स्नेल ने लिखा, "विश्व धर्म सम्मेलन और अमेरिका वासियों पर विवेकानन्द ने जैसा प्रभाव डाला है, वैसा अन्य कोई धर्म नहीं डाल सका।" हिन्दू धर्म के सर्वाधिक रेखांकित हस्ताक्षर तथा श्रेष्ठतम प्रवक्ता थे 'स्वामी विवेकानन्द'। सर्वाधिक लोकप्रिय। जनजन में गूंज उठी थी उनकी वाणी। वहाँ कई बालाओं ने स्वामी जी से प्रणय निवेदन किया तो स्वामी जी द्वारा उन्हें बहिन व माता से

Scanned by CamScanner

सम्बोधन करने पर इन बालाओं को घोर पश्चाताप हुआ कि इस देवदूत से हमने कितनी घृणित मंशा जाहिर की और उन्होंने हमें माँ और बहिन बना लिया। श्री रामकृष्ण का कार्य पूर्ण कर स्वामी विवेकानन्द 15 फरवरी, 1897 को कलकत्ता पहुँचे। माँ काली और श्री रामकृष्ण के कक्ष में पहुँचकर प्रणाम किया। मन ही मन कहा,''लो आ गया तुम्हारा कीर्तिमान! संभालो।.... मुझे क्या से क्या बना दिया। अब और क्या आज्ञा है।'' स्वामी जी का स्वास्थ्य अब शिथिल होने लगा था। बहुमूत्र रोग से वे ग्रसित हो गये थे। आज स्वयं उन्होंने अपना कमरा साफ किया और ठाकुर रामकृष्ण के सामने खड़े होकर बोले, ''तेरा काम पूरा हो गया ठाकुर, अब मुझे अपने पास बुलालो'' तभी भोजन के लिए बुलावा आ गया सभी ने साथ-साथ भोजन किया। सभी को हँसाते रहे फिर खाना खा कर निवेदिता के हाथों पर पानी डालकर तौलिया से पौछते रहे। निवेदिता बोली, ''यह हमें करना चाहिए आपको नहीं।'' स्वामी जी बोले, ''ईसामसीह ने अपने शिष्यों के हाथ पैर धोये थे कि नहीं?'' लेकिन वो तो ईसा का अन्त समय था तो क्या स्वामी जी इच्छा मृत्यु का संकेत दे रहे हैं। निवेदिता अन्दर ही अन्दर कांप गई पर प्रकट नही होने दिया। सभी शिष्यों में काम बाँटकर बोले कि तुम्हें ये करना है। फिर बोले अब मैं विश्राम करुंगा। वीरेन्द्र पंचाग उठा और पढ़। वीरेन्द्र बोला, कहाँ से? बोले दूसरे पृष्ठ से। वीरेन्द्र 4 जुलाई शुक्रवार विराम। जा उसे रख आ वीरेन्द्र। पंखा झल, आज गर्मी है। मन ही मन जाप करते हुए एक लम्बी सांस ली। स्वामी का दाहिना हाथ काँपा। वीरेन्द्र को बालक का दुःख भरा स्वर सुनाई दिया। घड़ी ने नौ बजाये। फिर स्वामी जी ने गहरी सांस छोड़ी। उनकी देह हिली वीरेन्द्र ने देखा कि स्वामी के दोनों नेत्र भृकुटी के बीच स्थिर थे। वीरेन्द्र उस पंचाग को पुनः देखने लगा। स्वामी जी ने पहले ही उसमें आज के दिन पर चिह्न बना पूर्वाभास दे दिया था। 39 वर्ष 5 माह 24 दिन की अल्पायु में ये महान विभूति गोलोक वासी हो गई। हम उनकी 150 वीं जन्म वर्ष गाँठ पर उन्हें सादर कोटि कोटि प्रणाम करते हैं।

❑

सफलता

✍ भूमिका माहेश्वरी
महात्मागांधी हाउस
बी.एड. विभाग

कभी नहीं जो तज सकते हैं, अपना न्योचित अधिकार।
कभी नहीं जो सह सकते है, शीश नवाकर अत्याचार॥
एक अकेले हो या उनके साथ, खड़ी हो भारी भीड़।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़॥

निर्भय होकर घोषित करते, जो अपने उद्‌गार-विचार।
जिनकी जिह्‌वा पर होता है, उनके अन्दर का अंगार॥
नहीं जिन्हें चुप कर सकती है, आततियों की शमशीर।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़॥

नहीं झुका करते जो, दुनिया से करने को समझौता।
ऊँचे से ऊँचे सपनों को, देते रहते जो न्यौता॥
दूर देखती जिनकी पैनी आँख, भविष्य का तमचीर।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़॥

जो कभी अपने कन्धों से, पर्वत से बढ़ टक्कर लेते हैं।
पथ की बाधाओं को, जिनके पाँव चुनौती देते हैं॥
जिनको बाँध नहीं सकती है, लोहे की बेड़ी-जंजीं।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़॥

जिनको यह अवकाश नहीं है, देखें कब तारे अनुकूल।
जिनको यह परवाह नहीं है, कब मद्रा है कब दिग्शूल॥
जिनके हाथों को चाबूक से, चलती है उनकी तकदीर।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़॥

❑

Scanned by CamScanner

सबसे बड़ा रुपया
(आज के नैतिक पतन पर)

डॉ. संध्या सैगर
असिस्टेंड प्रोफेसर

स्कूल में हम हिन्दी के आचार्य से ज्यादातर मुहावरे सुना करते थे जैसे– '**जिसकी लाठी उसकी भैंस**'। कभी लोग लाठी के बल पर भैंस छीनते होंगे। पर बदलते समय के साथ आज बहुत कुछ बदल गया हो, किन्तु यह मुहावरा आज आज भी प्रासंगिक है। आज लोग भैंसपति बनने के लिए किस्मत के साथ–साथ शराब, छलबंल, झूठ–फरेब आदि को अपनाते हैं। जिसने ऐसा किया तो वह यही सोचता है कि मानो उसे भैंस मिल गयी हो। अब उसे किसी चीज़ की कोई जरूरत ही नहीं है पहले के समय में यह पढ़ाया जाता था कि **धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, पर चरित्र गया तो सब कुछ नष्ट हो गया।** परन्तु आज के युग में इसका उलटा हो गया है। 21 वीं सदी का सत्य यह बन गया है कि चरित्र गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, लेकिन धन चला गया तो सब कुछ चला गया। इस युग का सच यही है कि धनवान ही बलवान है, पंडित है, ज्ञानी है, उसका ही मान–सम्मान करो। मानों संसार के सभी गुण सोने में ही स्वीकार किए गए हों। प्रसिद्ध सूक्ति में यही कहा गया है कि **'बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ रुपइया'**। 'चरित्र की हानि कोई हानि नहीं' इस सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले जानते हैं कि थोड़ा चरित्र खो देने से इज्जत नहीं घटती। जिन्होंने चरित्र का सौदा किया हो, अरबों–खरबों का घोटाला किया हो, जीवन में नैतिकता से नाता पूरी तरह तोड़ लिया हो, उन्हीं के दर्शन पाने के लिए दूरदर्शन और समाचार पत्रों के फोटोग्राफर पीछे–पीछे भागते हैं। वे राष्ट्रीय समाचार में छाए रहते हैं। संसद और विधान सभाओं में उन्हीं का दबदबारहता है। यदि वे जेल जाएं तो उनके तेज से जेल पांच सितारा होटल बन जाती है तथा उनके मान–सम्मान का ध्यान रखते हुए सरकारी विश्राम ग्रहों को ही उनके लिए जेल बना दिया जाता है तथा चरित्र को खोने वाले ऐसे महान व्यक्ति सरकारी मेहमान नबाजी का सुख भोगते हैं। आई. बी. या सी.बी.आई. की जांच उनकी इज्जत को चार चाँद लगा देती है।

अब तो सारी दुनिया जान गई है कि सत्ता नाम की भैंस पर अधिकार हो जाए तो फिर सभी लाठियां भैंसपति की हो जाती हैं और वे लाठियाँ उनके संकेत मात्र से ही चलती और बरसती हैं, मानवाधिकारों के हनन, अत्याचार और जोर-जबरदस्ती के आरोप उन्हीं पर लगते हैं, जिनके हाथ में लाठी होती है, और वही भैंसपति अथवा सत्तापति अभिनन्दन समारोहों की नायक बना रहता है, फूल मालाओं में सदा लदा रहता है तथा लाठियों के दुरुपयोग पर भाषण भी झाड़ता रहता है।

कुछ विद्वान कहते हैं कि भगवान की लाठी बिना आवाज किए अन्यायी को मारती है। मेरा तो यह विश्वास बन गया है कि सत्तापति की लाठी भी कुछ कम नहीं है, बस अन्तर इतना है कि वह अकसर न्याय मांगने वालों पर ही बरसती है सत्ता के हानि–लाभ का गणित ही उसका न्याय है। जैसे–अगर कोई अनाज का व्यापारी भैंसपति के संकेतों को नहीं समझता है तो उसके गोदाम सील कर दिये जाते हैं। उन्हें जो सामान लाने के लिए रेलगाड़ियां मिल रही हैं वह भी रोक दी जाती हैं तथा जो समझदार व्यक्ति होते हैं, वह हमेशा भैंसपतियों की शरण में रहते हैं। उन्हीं के मुताबिक काम करते हैं तो सत्ता संभालते हैं, वह कुछ भी कर सकते हैं। ईमानदार अफसर को गबन के आरोप में फंसा सकते हैं तथा पेट्रोल पम्प के तेल को मिलावटी सिद्ध कर सकते हैं। भैंस पर कब्जा करने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनके बेटे तथा पोते भी भैंस (सत्ता) का सुख भोगते हैं। उनमें सारे गुण हों न हों फिर भी वे सर्वगुण सम्पन्न दिखाई देते हैं। उनमें प्रधानमंत्री, विधायक तक बनने के गुण दिखाई देने लगते हैं। इसीलिए यह मानना है कि लाठी के बल पर भैंस पर कब्जा जमाने का युग बीत गया है। उस खेल में नुकसान भी हो सकता है। इसीलिए दंड–भेद से भैंस पर कब्जा करना चाहिए तभी लाठियां स्वयं ही उसकी सेवा में हाजिर रहेंगी। ❑

Scanned by CamScanner

अनैतिकता के माहौल में दम तोड़ती भारतीय संस्कृति

डॉ. राजेश कुमार
प्रवक्ता वाणिज्य संकाय

विश्व की महान संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन एवं महानतम् है। यहां की पावन भूमि पर समय-समय पर महान ऋषियों-मुनियों व विद्वानों ने जन्म लेकर अपने अमूल्य विचारों से न केलव भारत को बल्कि समस्त संसार को अज्ञान के अंधेरे से निकालने का प्रयास किया है। यहाँ की विश्वबन्धुत्व की भावना लोगों के हृदय में उदारता का भाव पैदा करने वाली है। भारतीय विद्वानों ने सदैव ही विश्व को एक परिवार की भांति माना है, उन्होंने मानवता के कल्याण हेतु अनेक कार्य किए एवं कभी भी देश, सीमा या जाति के आधार पर भेदभाव में विश्वास नहीं किया। यहाँ की संस्कृति की विराटता के अंतर्गत वसुधैव कुटुम्बक, अहिंसा परमोधर्म:, सत्यमेव ज्यतें, सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामय। आदि मानवीय पक्ष अपनी कीर्ति का यशोगान करते हैं। यहां की संस्कृति कुरीतियों एवं बुराइयों से दूर रहने की सलाह देती है एवं अज्ञान के प्रकाश तथा शाश्वत् मूल्यों व सदव्यवहार का पान करने हेतु उत्साहित करती है।

भारत अपनी कला संस्कृति दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव से गर्व करता रहा है।, परन्तु आज अनास्था तथा पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये है। आधुनिकता की भ्रमाक अवधारणा, अस्तित्वादी जीवन, अनात्मपरक वास्तिविकता, पाश्चात्य सभ्यता अविश्वास एवं स्व. में अनास्था आदिकारणों से हमारे पुराने मूल्य पूद्रपित हो गये हैं। स्वयं पर अनास्था का परिणाम है- आत्मनाश , अथात् अपने आदर्शों एवं मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक बाहरी या विदेशी चिंतन प्रणाली को प्रतिष्ठित करना। इसके फलस्वरूप हमारे पुराने मूल्य दब से गये है। वस्तुत: वे पूर्णत: नष्ट नहीं हुये हैं, वरन् विघटित हो गये हैं आज भी मानव-मानव के बीच रागात्मक सम्बन्ध है, भले ही वह वांछित रूप से न हो ।मानव नारी का सम्मान करता है। वह झूठ, चारी, डकैती आदि को गलत मानता है। वह परपीड़न को पाप व परोपकारी को पुण्य स्वीकारता है, वह सम्मान के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है। इस प्रकार आज का प्रत्ये भारतीय संक्रान्तिकाल से होकर गुजर रहा है। दूसरी तरफ कभी वह रातन मून्ल्यों की तरफ झुकता है तो कभी आधुनिकता की भ्रावक अवधारणा की ओर।

आज का भारतीय पाश्चात्य उपभोक्ता संस्कृति का पोषक बन गया है, उसने व्यावसायिक मानव का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। वह कतव्यप्रधान आस्थाभाव कली संस्कृतिक का प्रतिनिधि नहीं बनना चाहता है। भौतिकता की चकाचौंध में स्वयं को विदेशी जैसा प्रदर्शित करने में गर्व महसूस करने लगा है। भारतीयता, अनैतिकता के माहौल में दम तोड़ रही है और उसक आध्यात्मिकता निरर्थक सिद्ध हो रही है। उपभौक्ता संस्कृति ने हमारी चेताना को इतना निस्तेज तथा निष्प्रभ कर दिया है कि आज अच्छे बुरे का भेद तो छोड़िये, जिसे हम ठक समझते है, उसे करते और जिसे हम देय समझते है, उसे बड़ी सरलता से बिना किसी आत्मग्लानि से करते जाते हैं। श्रेयस्ते ा स्थान उपयोगिता ने ले लिया है। इस प्रकार इस संस्कृति ने चिंतन और कर्म दूसरे शब्दों में कथ्नी और करनी में हक चौड़ी खाई उत्पन्न कर दी है।

आज का माननव जातिवादी बन गया है वह छल प्रपंची बन गया है दूसरों को नीचा दिखाना उसे उपयुक्त लगता है। मानव मन दिग्भ्रमित हो रहा है। वर्तमान प्रतिकूल परिस्थितियां 21 वीं सदी में हमारे अस्तित्व को शर्मसार बना रही है। अत: 21 वीं शताब्दी में सुखद भविष्य को सुनिश्चित करना कल्पना मात्र रह गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है- हमारे बहुवर्गीय समानप में शिक्षा को सर्व व्यापी और शाश्वत् मूल्यों को प्रौत्साहित करना चाहिए तथा राष्ट्रीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिकवाद, हिंसा,अंधविश्वास व भाग्यकर को समाप्त किया जा सके। हमें यह भी ध्यान करना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास नहीं कर सकता अत: उसकी शिक्षा विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक विश्वजनीय शाश्वत मूल्यों से जुड़ी हुई होनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण प्रजातंत्र, स्वतन्त्रता, बन्धुला समाजवाद तथा सर्वनिरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा कभी स्तरों के लिए आवश्यक है। प्रारम्भिक

Scanned by CamScanner

स्तर पर मूल्य परक शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं मूल्यों की तार्किकता को समझकर उन्हें विचार व कार्य रूप में डाल सकेंगे।

वर्तमान समय में मानव समाज अपने शाश्वत मूल्यों सत्यंशिमं आज विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ने मानव को विलासितामय जीवन देकर उसे आध्यात्मिकता से दूर कर दिया है। चारों तरफ अंधकार छाया हुआ है। मानव मानव का शत्रु बन गया है नैतिकता एवं सदाचरण नाम की कोई चीज़ नहीं रह गयी है। हम जब टेलीविजन पर समाचार सुनते हैं या समाचार सुनते हैं या समाचार पत्र पढ़ते हैं तो पता चलता है कि सब जगह मारकाट, हिंसा, लूटपाट, डकैती, दरिंदगी एवं हशत का माहौल छाया हुआ है। मनुष्य अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर पाता है। एक तरफ समाज में अमीरी बढ़ रही है तो दूसरी तरफ ऐसे लोगों की कोई भी कमी नहीं है जो अपनी जीविका चलाने को मजबूर न हों। आर्थिक स्तर पर इस पढते हुए अन्तर ने मानव से मानव केबीच कटुता, हिंसा वैमनण्यता को बढ़ावा दिया है। राजनैतिक पार्टियां अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर अपराध, छल, कपट, पाखण्ड दूसरों का अहित तथा अनैतिक कार्य करने में तनिक भी संकोच नहीं करतली स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में अपराध प्रतृत्तियों का प्रभाव बालकों पर भी स्पष्ट रूप से पड़ रहा है। हम देखते हैं कि स्कूल के बालक अपने साहस का प्रदर्शन करने के लिये अपने साथियों,, शिक्षकों तथा प्रधानाचार्य को धमकाने या मारपीट करने या फिर उसकी हत्या करने से भी नहीं डरते है। इस दृष्टि से स्कूल अब सामाजिक संस्था न होकर अपराधा का घर बन गया है। ऐसी स्थिति4 में हमारी सपूर्ण शिक्षा व्यवस्था आदर्श विहीन हो रही है किसी ने कहा है कि –

शील, विनय, आदर्श, श्रेष्ठता, तार बिना संकार नहीं।
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, अब नैतिकता आधार नहीं।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि वर्तमान शिक्षा पर दुःख व्यक्त करते हुये कहा– भारत सहित सारे संसार के दुःखों का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न होरक केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है। 21 वीं सदी की चकाचौंध युवा पीढ़ी को इतना फैशनेबल और हाइटेक बना दिया है कि वे राह से भटक कर न जाने किस दिशा की ओर बे–लगाम दौड़े जा रहे हैं। टी.वी. चैनलों पर अश्लीलता और रीमिक्स गानों में फंसता युवा वर्ग मायावी विज्ञापना, अपराधी जगत व राजनीति के अद्भुत कारनों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है, ग्लोबराइजेशन और उदारीकरण के साथ मीडिया जगत में निरंतर बढ़ती प्रतिस्पधा ने हमारी प्राचीन विरासत को गम्भीर आघात पहुंचाया है। बलात्कारी, हत्या, लूट अपहरण जैसी निरंतर बढ़ती अपराधिक घटनाओं के रूप में इसकी परिणति सामने खड़े होकर मुंह चिढ़ा हरी है। टी.वी. चैनलों के धारावाहिकों के प्रभाव से सामाजिक मान्यताएं बदल रही है। विज्ञापनों में नारी देह का फूहड़ प्रदर्शन, भाषा शैली और फैशन परेड सामाजिक मर्यादाओं को सरेआम अंगूठा दिखा रहे हैं।। इनसे निपटने के लिये राष्ट्र, समाज और पारिवारिक के बीच स्वच्छ और पवित्र सोच पैदा करने की आवश्यकता है।

मानव जीवन को सुंदर बनाने के लिये क्या आवश्यक है और किस उपकरणों की ओर साधनों की आवश्यकता है, इस विषय पर ध्यान देते हुये हम शिक्षा का अर्थ , आधार, क्षेत्र, प्रकृति, कार्य, उद्देश्य, प्रक्रिया आदि की ओर आकृष्ट होते है। प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा होती है कि उसका जीवन सुखमय हो और वह अपने जीवन में अधिक से अधिक शारीरिक, मानसिक व आत्मिक सुख प्राप्त कर सके। वेदों के समान विद्या से क्या–क्या नहीं प्राप्त होता अर्थात् सब कुछ प्राप्त होता है। ❑

गौरव कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

माँ

घुटनों से रेंगते–रेंगते, कब पैरों पर खड़ा हुआ
तेरी ममता की छओं में, जाने कब मैं बड़ा हुआ
काला टीका दूध मलाई, आज भी सब कुछ वैसा है
मैं ही मैं हूँ हर जग, प्यार ये तेरा कैसा है
भोला–भाला सीधा–साधा, मैं ही सब से अच्छा हूँ
कितना भी हो जाऊ बड़ा, (माँ) मैं तो तेरा बच्चा हूँ ❑

बेटी ही बचायेगी

धरा की धरोहर हैं बेटियाँ..........

✍ सुगंधा पंवार
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

- ये इतिहास है. जो लिखा जा चुका है, जो लिखा जा रहा है, जो लिखा जायेगा। गर्व से फूले नहीं समाओगे, जब बेटी के नाम से पहचाने जाओगे। ये सृष्टा है, ये श्रेष्ठ है, इसे दुलार करो, इस पर सब कुछ निसार करो, इसे बचा लो, तुम भी बच जाओगे, संसार बस जायेगा।
- पुत्रों से बढ़कर पुत्री माता-पिता की करती है देखभाल,
  करती है सच्चे दिल से प्यार,
  फिर उसका क्यों होबुरा हाल।
- बेटी है तो कल है............ खुशियाँ लाती है बेटियाँ,
  हमारे जीवन को मुस्कानों से भर देती हैं बेटियाँ,
  कल वे दुनिया संभालेंगी।
  उनका होना, कल की आशाओं का होना है।
- कहती है बाँह पसार, मुझे चाहिये प्यार दुलार,
  बेटी की अनदेखी क्यूं करता है निष्ठुर संसार।
  सोचो! जरा हमारे बिना बसा सकोगे घर परिवार?
  गर्भ से लेकर यौवन तक मुझ पर लटक रही तलवार।
  मेरी व्यथा, वेदना का अब हो स्थाई उपचार।
- बेटी तीन घरों की धरोहर है,
  पहला माता-पिता, दूसरा सास-ससुर,
  तीसरा खुद पति-पत्नी का।
  बेटी बचाओ......... बेटी ....।
- कन्या भ्रूण हत्या समाज के लिए अभिशाप है,
  जिसे दूर करना हम सभी लोगों का फर्ज है।
  स्वाभिमान जगाओ.........बेटियां बचाओ......।
- बेटी का जीवन बचाओ, मानव दुनिया में कहलाओ।
- उसको भी जीने का अधिकार चाहिए,
  उसको भी थोड़ा सा प्यार चाहिए।
  जन्म से पहले ना उसे मारो,
  कभी तो अपने मन में विचारो।
  शायद वही बन जाये सहारा,
  डूबते को मिल जाये तिनके का सहारा।
- बेटियाँ शुभकामनाएं हैं, बेटियाँ पावन दुआएं हैं।
  बेटियाँ जीनत हदीसों की, बेटियाँ जातक कथाएँ हैं।
  बेटी है तो कल है....
- बेटी कुदरत का है उपहार, नहीं करो इसका तिरस्कार।
- बेटी तो घर में जरूरी है, वो नहीं कोई मजबूरी है।
- बेटी को सम्मान दो जीवन उसको दान दो।
- बेटी-बेटे का त्यागो भ्रम, लेने दो बेटी को जन्म।
  बेटों से बेटी भली, क्यों जन्म से पूर्व उसकी बलि॥
- हर क्षेत्र में लड़की आगे, फिर क्यों हम लड़की से भागे।
- जिस घर में बेटी आयी, समझो स्वयं लक्ष्मी आयी। ❑

बेटी का संदेश

✍ कु. मोनिका वर्मा
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

पहुँचा दो सन्देश उन धनिकों के कानों में,
लूटे जो कफन देवियों का दहेज के दान में।
बेटों की बोलियाँ लगाते जो शान से,
गद्दार हैं वो समाज के सारे जहान से।
पढ़ती हूँ अखबार में जब किसी बहिन की पुकार,
आँखों में आँसू आते हैं रोती हूँ बार बार।
किस्सा मैं सुनाती हूँ तुम्हें एक गरीब का,
सब लुट गया दहेज में उस गरीब का।
बेटी थी उसकी निर्मला अट्ठारह साल की,
लेकिन कमी थी उसके पास धन और माल की।
एक दिन निर्मला का विवाह हो गया,
घर का सामान बेच कर दहेज में दे दिया।
लेकिन हवस की खोपड़ी अभी भरी नहीं,
कहते थे तेरे बाप ने कुछ दिया नहीं।
इस तरह निर्मला पर जुल्मों सितम होने लगा।
उस बदनसीब का अब भाग्य रोने लगा।
एक दिन वो भी गम की सूली पर चढ़ गई,
बाप को पता चला कि अब बेटी बिछुड़ गई।
निर्मला की माँ का किस्सा क्या करूँ बयां,
ओ दहेज के दानवों तुम्हें आई नहीं दया।
दहेज लेने की प्रथा अब करनी होगी बन्द,
सबको आज मेरे साथ खानी है सौगन्ध। ❑

Scanned by CamScanner

भावना

✍ रिचा गौतम
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

भावना जीवन का अभिन्न अंग है। भावना तो पशुओं में भी होती है। भगवान को भी भाव प्रिय हैं। शास्त्रों में कहा भी कहा गया है कि भगवान को भक्त से सोना-चाँदी, हीरे जवाहरात, दूध-मेवा, फल-मिष्ठान आदि कुछ भी नहीं चाहिए, वह तो भक्त के भाव के भूखे हैं। भाव के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा समय-समय पर अपने जो विचार प्रकट किए हैं, उनमें से कुछ निम्नांकित हैं :

- भावना ही मनुष्य का जीवन है, भावना ही प्रकृति है, भावना ही सत्य है और नित्य है।
  भावनाओं के मामले में मनुष्य विवश है।
  –भगवती चरण शर्मा
- जहां भावों का सम्बन्ध है, वहाँ तर्क और न्याय से काम नहीं चलता **–प्रेमचन्द**
- काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्व होता है जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने से छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाये तो उसकी कोई बड़ी कीमत नहीं हो सकती।
  –पूर्व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद
- भावना से ही कर्तव्य की उत्पत्ति होती है। **–अज्ञात**
- भावना में बह जाना स्त्री के लिये बड़ा आसान है।
  –भगवतीचरण वर्मा
- मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
  यादृशीभावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥
  (मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, औषध व गुरु में जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि मिलती है।) **–पंत्रतंत्र**
- अच्छी भावना मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है। वह ही उसका सबसे बड़ा सौंदर्य है। **–कहावत**
- Fancy rules over two-thirds of the universe, the past and future, while reality is confined to the present. (भावना दो-तिहाई विश्व पर शासन करती है-भूत और भविष्य पर, जबकि यथार्थता वर्तमान पर सीमित है।) **Ritcher**
- जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन वैसी॥
- जहाँ जैसी हमारी मानसिक भावना रहती है वहाँ परमेश्वर हमारे लिए उसी रूप में प्रकट हो जाते हैं।
  –तुलसी
- भावना का स्थान हृदय में है अगर हम हृदय शुद्ध न रखेंगे तो भावना हमें गलत रास्ते पर ले जायेगी।"
  –महादेवी वर्मा
- भावना शून्य जीवन, ठंडे लोहे के समान है।
  –श्रीराम शर्मा
- भावुकता जीवन का अभिन्न अंग है। **–रामचन्द्र शुक्ल**
- भाव से शून्य मनुष्य कभी भी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता। **–मैथिलीशरण गुप्त**
- जीव सोता है, न सोती भावना,
  विश्व का गुरुभार ढोती भावना।
  शून्य में आँसू कहाँ सम्भाव्य हैं ?
  भूमि का अंचल भिगोती भावना॥ **–नाथूलाल नम्र**

□

अनमोल वचन

✍ अक्षय यादव
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

- क्रोध क्षण भर का पागलपन है। कोई तलवार इतना बेदर्दी से नहीं काटती, जितना कि कटुवचन।
- बदला लेने की खुशी एक बार होती है। लेकिन क्षमा करने का गौरव सदा रहता है।
- दूसरों के आनन्द को सम्मान से देखो, अन्यथा ईर्ष्या की अग्नि जला देगी।
- भूल होना बुरा नहीं, भूल का बार-बार होना बुरा है।
- पेट की भूख का अहसास दिन में दो बार होता है किन्तु प्रशंसा की भूख तो सपने में भी लगी रहती है।
- संस्कार रहित जीवन निर्जन वन के समान है। संस्कार युक्त जीवन उपवन है। शील और सदाचार से शोभित जीवन नंदन वन है।

□

Scanned by CamScanner

शिक्षक शिक्षा में इग्नू की महती भूमिका

डा. भानु प्रताप सिंह सहायक निदेशक, इग्नू

अपने बहुआयामी कार्यक्रमों के माध्यम से इग्नू ने हर उस व्यक्ति को शिक्षा पाने का मौका दिया है, जो परिस्थितिवश या अन्य कारणों से नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इग्नू के कार्यक्रम न्यूनतम खर्चे में ही शिक्षार्थियों के लिये उपलब्ध हैं और देश भर में व्यवस्थित नेटवर्क के माध्यम से इसे हर शख्स तक उपलब्ध कराने की उत्तम व्यवस्था भी है। इग्नू हमेशा से अपने कोर्सों तथा अध्ययन के तरीकों के लिये प्रसिद्ध रहा है। दूर शिक्षा प्रणाली की शुरूआत और उसकी बढ़ती लोकप्रियता में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। हर किसी तक शिक्षा की पहुंच, नवीन तकनीकों का बढ़ता प्रयोग, कम खर्चे में सर्वसुलभ शिक्षा, यह सब इग्नू की बढ़ती लोकप्रियता का कारण है। इग्नू पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जिसने शिक्षा को आसान बनाने हेतु अपना एक अलग रेडियो स्टेशन तथा टीवी चैनल लांच किया। मुक्त विश्वविद्यालय में मुक्त शब्द इसलिए जोड़ा गया क्योंकि इस नई और उभरती शिक्षा प्रणाली ने लोगों के लिए कुछ मौलिक स्तर की तैयारियों के साथ ही बगैर किसी बेसिक योग्यता के ही उच्चतर शिक्षा उपलब्ध कराने के अवसर दिए। विभिन्न पाठ्यक्रमों के चयन में लचीलेपन तथा अच्छे दूरस्थ, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली संस्थानों से टेलर-मेड तथा संक्षिप्त अध्ययन सामग्री की उपलब्धता ने पूरे विश्व में कहीं भी लोगों को अधिक से अधिक संख्या में इससे जोड़ दिया है।इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत का औपचारिक शिक्षा क्षेत्र छः दशक से अधिक समय के दौरान भी अपेक्षित काम नहीं कर पाया है। ऐसी स्थिति में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसके जरिए आने वाले दिनों में अधिकतम साक्षरता हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

पुरातन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च व श्रेष्ठतम स्थान दिया गया है। उसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं, वे बच्चे ही भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं कि 'समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक परम्परायें तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायक होता है।'' शिक्षक सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी है, जिनमें पाठ्यक्रम, पाठ्य वस्तु, पाठ्य पुस्तकें, मूल्यांकन शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षण उददेश्य आदि आते हैं। इस प्रकार अध्यापक, शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु है तथा किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षक पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में कहा गया है कि शिक्षक का कर्त्तव्य विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करना है। इसके लिए अध्यापक स्वयं भी उन गुणों से युक्त हो, जिन गुणों की शिक्षा वह बालकों को दे रहा है। यदि अध्यापक में ही सद्गुण नहीं होंगे तो वह बालकों में कैसे अच्छे गुणों का विकास कर सकेगा। अतः अध्यापकों में ऐसे गुण व क्षमताओं का विकास करने के लिए उन्हें निरन्तर अध्ययनरत रहना चाहिए। अध्यापक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री सैयदन कहते हैं ''यदि शिक्षक जलता हुआ दीप नहीं है तो वह दूसरों में ज्ञान के प्रकाश को प्रसारित करने में सदैव असमर्थ रहेगा'' रवीन्द्र ठाकुर के शब्दों में, 'एक अध्यापक वास्तविक अर्थों में कुछ नहीं सिखा सकता, जब तक कि वह स्वयं भी सीख न रहा हो।' एक दीपक तब तक दूसरे दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकता, जब तक कि उसकी अपनी ज्योति जलती न रहे। समाज के प्रत्येक वर्ग के शिक्षक प्रदान करने के उद्देश्य से सम्पूर्ण राष्ट्र में अनेकों उच्च विद्यालयों के साथ-साथ विभिन्न केन्द्रीय तथा राजकीय विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी, किन्तु भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र में समाज के प्रत्येक शिक्षक को सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षक शिक्षा प्रदान करना कोई सरल कार्य नहीं था, जिसके परिणामस्वरूप दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा का उद्भव हुआ। सन 1985 में स्व. इन्दिरा गाँधी की जन्मतिथि 19 नवम्बर से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) का श्रीगणेश हुआ। भारतीय समाज में अध्यापक शिक्षा, उसके उददेश्य एवं स्वरूप से जुड़े पक्षों पर निरन्तर विचार-विमर्श होता रहा है। दिन प्रतिदिन समाज में अध्यापक शिक्षा का बढ़ता महत्व, शैक्षिक संस्थाओं के सामने खड़ी तमाम चुनौतियाँ, बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा शिक्षण या अन्य कारणों से समाज

Scanned by CamScanner

का एक बड़ा अध्यापक समुदाय जो सेवारत अध्यापक शिक्षा से वंचित रह रहा है, ऐसे में उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में इग्नू की बढ़ती एवं महती भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

इग्नू द्वारा चलाये जा रहे सभी शैक्षिक कार्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) और देश की अन्य सभी संवैधानिक परिषदों, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (ए. आई.यू.) तथा इसी प्रकार के अन्य अन्तर्राष्ट्रीय निकायों से मान्यता प्राप्त है।

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहलाल नेहरू स्वतंत्रता संग्राम हेतु इलाहाबाद में अक्सर जेल में रहते थे या अन्य आंदोलनों के कारण व्यस्त रहते थे। तब नेहरूजी मंसूरी में रह रही अपनी पुत्री इन्दिरा प्रियदर्शनी को पत्र लिखा करते थे। पत्रों की रूपरेखा इस प्रकार रहती थी कि ''जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझसे बहुत सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जबाव देने की कोशिश करता हूं। लेकिन अब जब तुम मंसूरी में हो और मैं इलाहाबाद जेल में हूँ। ऐसे में हम दोनों बातचीत नहीं कर सकते, इसलिए मैंने यह इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएं लिखा करूं।''[3] इस प्रकार इन्दिरा जी को दूरस्थ शिक्षार्थी (डिस्टेन्स लर्नर) के रूप में देखा जा सकता है।

वर्षों से देश जिन सर्वोच्च चुनौतियों का सामना कर रहा है, उनमें देश के हर कोने में रह रहे 116 करोड़ लोगों को साक्षर बनाने का काम भी शामिल है। इसके अतिरिक्त स्कूल स्तर पर शिक्षण कार्य के लिए शिक्षण के क्षेत्र में उपयुक्त डिग्रीधारी शिक्षकों की उपलब्धता भी काफी अधिक होती है। यह सही है कि शिक्षण संस्थान में अध्ययन के लिए पात्र जनसंख्या (स्कूल या उच्चतर अध्ययन हेतु) आज भारतीय स्कूल प्रणाली के अंतर्गत तीन से चार मिलियन प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है जोकि सामान्य स्थितियों में शामिल करना एक असंभव कार्य प्रतीत होता है। अतः सोचना यह है कि क्या इन सब कठिनाइयों के विकल्प के रूप में इस समय दूरस्थ शिक्षण प्रणाली ही अधिकतर समस्याओं के हल के लिए लाभदायक और प्रभावकारी औजार का काम कर सकता है। देश भर में औपचारिक शिक्षण प्रणाली के तहत 400 से अधिक नियमित विश्वविद्यालयों तथा 22,000 कॉलेजों में पोस्ट-सेकेण्ड्री स्तर पर देश के कुल छात्रों का 76 प्रतिशत भाग शिक्षा प्राप्त करता है। इसके मुकाबले उच्चतर शिक्षण के लिए पात्र कुल छात्रों की जनसंख्या की शिक्षण की जरूरतों का 24 प्रतिशत भाग दूरस्थ शिक्षण प्रणाली पूरा करती है और यह सब लगभग 15 दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों के जरिए हो रहा है तथा करीब 207 परंपरागत विश्वविद्यालयों में भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण (ओ. डी.एल.) प्रणाली की व्यवस्था है, जिसके द्वारा भी छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।

यदि एक शिक्षक या शोधार्थी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की खामियों से नाखुश है, और उन्हें कॉलेज और विश्वविद्यालय के नियम-कानूनों में बांधकर, विषयों के पिंजड़ों में कैद कर दिया गया है, लेकिन वे सभी सृजनात्मकता के पंख लगाकर अपने अध्ययन और शोध की गहराइयों में गोते लगाना चाहते हैं तो दूरस्थ शिक्षा में सबके सामने उम्मीदें हैं। जहां न कोई दीवार है, न बेड़ियां हैं, विद्यार्थी जिस दिशा में आगे बढ़ना चाहेंगे, उनके विचारों को सही दिशा मिल सकेगी।

भारत में बहुत कम लोग यह जानते हैं कि शिक्षक शिक्षा प्राप्त करने का एक दूसरा साधन दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा भी है, जिसके लिए शिक्षक को विद्यालय या कॉलेज नहीं जाना पड़ता, अपितु शिक्षा शिक्षक के द्वार/कार्यस्थल तक स्वयं पहुँच जाती है।

अध्यापक शिक्षा हमारे शैक्षिक ढांचे का एक आवश्यक अंग है। आजादी से पूर्व एवं पश्चात बहुत सी कमैटियां एवं सिफारिशें अध्यापक शिक्षा में सुधार हेतु गठित की गयीं लेकिन आज भी ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण में गुणवत्ता मील का पत्थर जैसा ही है।

देश में नियमित शिक्षक शिक्षा का स्तर इतना गिर गया है कि आम आदमी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा पाना लोहे के चने चबाना है। कालेजों में तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नाम मात्र की रह गयी है आज देश में शिक्षक प्रशिक्षण डिग्रियाँ तो मिल सकती हैं, मगर उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा बिल्कुल नहीं है। आजकल नियमित व्यावसायिक कार्यक्रमों जैसे बी.एड, बी.टी.सी., सी.टी बी.पी.एड. तथा डी.पी.एड. आदि का दौर चल रहा है जो कि अत्यधिक महँगे होने के कारण कुछ विशेष वर्ग तक ही सीमित हैं। ऐसी स्थिति में मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा संस्थान नियमित शिक्षा के पर्याय के रूप में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा, नियमित शिक्षा के पूरक के रूप में समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान कर रही है। क्योंकि भारत की इतनी बड़ी जनसंख्या को नियमित शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर पाना असम्भव ही नहीं अपितु अकल्पनीय है।

Scanned by CamScanner

आज शिक्षक प्रशिक्षण में शताब्दियों पूर्व की विधियों प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है और अपेक्षा की जा रही है कि आज के बालक को गुणवत्ता पूर्ण एवं नवीन ज्ञान की प्राप्ति हो। नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है न कि शिक्षण। इसके लिए आवश्यक है कि बालक के साथ-2 अध्यापक भी सृजनशील रहें।

आज के शिक्षक में सम्भवतया एक ही गुण परिलक्षित हो। आज एक ऐसी शिक्षा का प्रावधान हो जिसमें शिक्षक को सोने की भाँति तपाकर कुन्दन के रूप में श्रेष्ठ शिक्षक का निर्माण करना हो। यदि वास्तविक रूप से गौर किया जाये तो एक वर्ष का प्रशिक्षण मात्र एक माह का प्रशिक्षण होकर रह गया है क्योंकि एन.सी.टी.ई. के अनुसार वर्श में 210 दिवसों की उपस्थिति अनिवार्य है। लेकिन कुछ संस्थान अनुपस्थिति पर ध्यान न देखकर केवल फीस पर ध्यान देते हैं और उन्हें परीक्षा में बैठने हेत अनुमति प्रदान कर देते हैं। सूक्ष्म शिक्षण के नाम पर लीपापोती करके एवं परीक्षार्थी परीक्षा देकर बी०एड० की उपाधि धारण कर लेते हैं लेकिन एक अच्छे शिक्षक होने का गुण धारण नहीं कर पाते। इसी कारण भारत में प्रशिक्षित स्नातकों के बेरोजगार होने की समस्या अत्यधिक पायी जा रही है।आज हर तीसरा व्यक्ति भेड़चाल की तरह बी०एड० कर रहा है। जबकि शिक्षक होने के लिए प्रशिक्षण के साथ-2 एक दृढ़ ईच्छा-शक्ति होना भी आवश्यक है। आज के शिक्षक यदि अर्जुन जैसे छात्र की चाह रखते हों तो उन्हें भी गुरु द्रोणाचार्य की तरह सर्वगुण सम्पन्न एवं श्रेष्ठ शिक्षक होना होगा। तभी भारत के बालकों की तस्वीर एवं तदवीर बदली जा सकती है। मूल रूप से देखा जाये तो सेवारत शिक्षक तीन श्रेणी के होते हैं :

1. **प्राथमिक/ उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षक :** ये शिक्षक कक्षा एक से कक्षा आठ तक के विद्यार्थियों को शिक्षण का कार्य करते हैं। ऐसे शिक्षक इग्नू के निम्नांकित कार्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपनी शिक्षण गुणवत्ता में तो बढ़ोत्तरी कर ही सकते हैं, साथ ही साथ प्राथमिक स्तर की मुख्य समस्या जैसे अवरोधन, अपवयन व शाला त्याग आदि को रोकने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

   इग्नू में शिक्षण आवश्यकताओं के अनुसार बहुत सारे अन्य रोजगारपरक कार्यक्रम उपलब्ध हैं, जिनका लाभ प्राथमिक / उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षक उठा सकते हैं।

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	कार्यक्रम में प्रवेश हेतु योग्यता	फीस	कार्यक्रम की अवधि न्यूनतम–अधिकतम
1.	गाइडेंस में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CIG)	किसी मान्यता प्राप्त संस्था में शिक्षक या हाई स्कूल	1,100	6 माह – 2 वर्ष
2.	प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CTPM)	किसी मान्यता प्राप्त संस्था में शिक्षक या हाई स्कूल	1,500	6 माह – 2 वर्ष
3.	अंग्रेजी शिक्षण में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CTE)	स्नातक या त्रिवर्षीय B.EL.ED या दो दो वर्षीय PTT, ETT या 10 + 2 के साथ 2 वर्ष का शिक्षण अनुभव	2,000	6 माह – 2 वर्ष
4.	पर्यावरण अध्ययन में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CES)	10 + 2	2,000	6 माह – 2 वर्ष
5.	खाद्य व पोषण में सर्टिफिकेट (CFN)	कोई औपचारिक योग्यता नहीं, आयु 18 वर्ष होनी चाहिए	1,100	6 माह – 2
6.	पोषण एवं बाल्य सुरक्षा में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CNCC)	10 + 2	1,500	6 माह – 2 वर्ष
7.	पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा में डिप्लोमा (DNHE)	10 + 2	2,000	1 वर्ष – 4 वर्ष

सी.आई.जी. कार्यक्रम किसी भी पृष्ठभूमि के अभ्यर्थी/शिक्षक कर सकते हैं। जबकि विषयानुसार शिक्षकगण सी.आई.जी. के साथ अन्य तारांकित (*) कार्यक्रम कर सकते हैं जैसे गणित के शिक्षक सी.आई.जी. के साथ सी.टी.पी.एम., अग्रेजी के शिक्षक सी.आई.जी. के साथ सी.टी.ई. तथा विज्ञान के शिक्षक सी.आई.जी. के साथ सी.ई.एस. कार्यक्रम कर सकते हैं।

Scanned by CamScanner

2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक : माध्यमिक स्तर के शिक्षक कक्षा नो से कक्षा बारह तक के विद्यार्थियों को शिक्षण का कार्य करते हैं। ऐसे शिक्षक इग्नू के निम्न कार्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपनी शिक्षण गुणवत्ता में तो बढ़ोत्तरी कर ही सकते हैं, साथ ही साथ माध्यमिक स्तर की मुख्य समस्याओं के समाधान में अपना सहयोग दे सकते हैं।

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	फीस	कार्यक्रम की अवधि न्यूनतम-अधिकतम
1.	शिक्षा स्नातक (B.Ed.)	20,000	2 वर्ष - 4 वर्ष
2.	शिक्षा स्नातकोत्तर (M.Ed.)	40,000	2 वर्ष - 4 वर्ष
3.	विद्यालय नेतृत्व एवं प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDSLM)	5,000	1 वर्ष - 2 वर्ष
4.	शैक्षिक प्रोद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDET)	5,500	1 वर्ष - 2 वर्ष
5.	शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDEMA)	5,500	1 वर्ष - 4 वर्ष

3. कॉलेज/ विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षक : ऐसे शिक्षक जो स्नातक कक्षा से पी.एच.डी. तक के विद्यार्थियों को शिक्षण का कार्य करते हैं। ऐसे शिक्षक इग्नू के निम्न कार्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपनी शिक्षण गुणवत्ता में तो बढ़ोत्तरी कर ही सकते हैं साथ ही साथ उच्चतर शोध में अपना सहयोग दे सकते हैं।

क्र.	कार्यक्रम का नाम	फीस	कार्यक्रम की अवधि न्यूनतम–अधिकतम
1.	दूरस्थ शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P. G. D. H. E.)	4,500	1 वर्ष - 4 वर्ष
2.	उच्चतम शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P. G. D. H. E.)	2,500	1 वर्ष - 4 वर्ष
3.	विभिन्न विषयों में एम. फिल. (M. PHIL.)	As per IGNOU Notification	1 वर्ष - 4 वर्ष
4.	विभिन्न विषयों में पी-एच. डी. (Ph. D.)	As per IGNOU Notification	2 वर्ष - 5 वर्ष

इग्नू एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, जिसकी मान्यता न केवल भारत में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। इग्नू के सभी कार्यक्रम तुलनात्मक रूप से मितव्ययी (सस्ते) एवं गुणवत्तापूर्ण हैं। इग्नू अपने विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीयस्तर की अध्ययन सामग्री निःशुल्क उपलब्ध करवाता है तथा इग्नू के प्रवेश एवं परीक्षा नियम विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर लचीले हैं। इग्नू वर्ष में दो बार प्रवेश (जनवरी एवं जुलाई सत्र) एवं परीक्षा (दिसम्बर एवं जून) का आयोजन करता है।

उक्त कार्यक्रम शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, विद्यालय प्रबंधन एवं विद्यार्थियों को परामर्श देने में उपयोगी साबित होते हैं तथा आने वाले समय में अन्य अभ्यर्थियों की तुलना में आप अधिक योग्य साबित हो सकते हैं। क्रम संख्या 5, 6 एवं 7 में उल्लेखित कार्यक्रम गृहणियों के लिए अत्यधिक उपयोगी साबित हो रहे हैं। उक्त कार्यक्रमों को करके वे आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य क्षेत्र एवं स्वयं सेवी संगठनों में रोजगार प्राप्त कर रही हैं।

❖

Scanned by CamScanner

टैबलेट एवं लैपटॉप वितरण

महाविद्यालय द्वारा बी.बी.ए. व बी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों को निःशुल्क टैबलेट वितरण

एच.पी. कम्पनी के ट्रेनिंग आफिसर लैपटॉप चलाने का प्रशिक्षण देते हुए

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वितरित लैपटॉप के साथ महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएं

My Living ICON (Org. by INTACH, NEW DELHI)

के. पी. इण्टर कालेज में प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के साथ स्कूल के प्राचार्य व अन्य अध्यापकगण

सरस्वती वि.म.उ.मा. विद्यालय में प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के साथ स्कूल के प्राचार्य व अन्य अध्यापकगण

पेन्टिंग प्रतियोगिता में पदम भूषण डॉ. गोपालदास नीरज जी की पेन्टिंग बनाते हुए छात्र

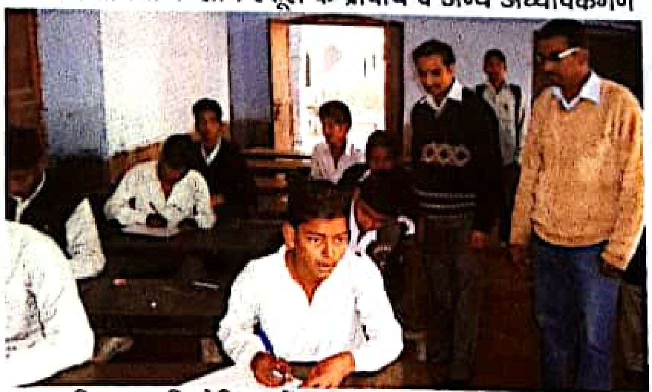

निबन्ध प्रतियोगिता में पदम भूषण डॉ. गोपालदास नीरज जी पर निबन्ध लिखते हुए छात्र

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस पर उदबोधन देते डॉ. जे. के. शर्मा

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बी. डी. उपाध्याय, एक दिवसीय शिविर में स्वयं सेवकों को सम्बोधित करते हुए

राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय विशेष शिविर में उपस्थित प्राचार्य व प्राध्यापकगण

वृक्षारोपण करती प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती विमल सक्सैना व अन्य

स्कूल के छात्रों व स्वयं सेवकों के साथ कार्यक्रम अधिकारी

औचक निरीक्षण में उपस्थित सचिव श्री दीपक गोयल, डॉ. गौतम गोयल व प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

शिविर में उपस्थित स्वयं सेवक व स्वंय सेविकाएं

सात दिवसीय विशेष शिविर में ग्रामीण स्वच्छता का संदेश देते हुए स्वयं सेवकों द्वारा सफाई अभियान

Scanned by CamScanner

स्काउट एवं गाइड शिविर (बी.एड. विभाग)

शिविर में उपस्थित स्काउट व प्राध्यापक गण

लघु नाटिका प्रस्तुत करते हुए स्काउट छात्र

शिविरों का अवलोकन करते हुए अतिथि गण

शिविर के समापन पर उपस्थित अतिथि गण व प्राध्यापक गण

बेटी ही बचाएगी (अमर उजाला व ज्ञान महाविद्यालय)

'बेटी ही बचायेगी' कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए सचिव श्री दीपक गोयल व अतिथि गण

विशिष्ट अतिथि द्वारा समाज में बेटी के महत्व पर सम्बोधन

'बेटी ही बचायेगी' कार्यक्रम में संकल्प पत्र के साथ उपस्थित विद्यार्थी व प्राध्यापक गण

'बेटी ही बचायेगी' कार्यक्रम में उपस्थित सचिव, प्राचार्य, प्राध्यापक गण एवं विद्यार्थी

Scanned by CamScanner

अतिथि व्याख्यान माला

डॉ. कृष्णा अग्रवाल, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, श्री वार्ष्णेय कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्रभारी कला संकाय व प्राध्यापक

डॉ. कवि शंकर वार्ष्णेय, एसो. प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग, डी.एस. कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए उप प्राचार्य

डॉ. भगत सिंह, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, श्री वार्ष्णेय कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्रभारी कला संकाय व प्राध्यापक

डॉ. वेदवती राठी, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी.एस. कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्रभारी कला संकाय व प्राध्यापिका

डॉ. अन्जुल सिंह, एसो.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग, डी.एस. कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्राचार्य व उप प्राचार्य

डॉ. ए. के. तौमर, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, डी.एस. कालेज द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व उपस्थित प्रवक्ता गण

डॉ. बीना अग्रवाल एसो. प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, डी.एस. कालेज को अतिथि व्याख्यान के समापन पर प्रतीक चिन्ह् देते प्राचार्य व उप प्राचार्य

Scanned by CamScanner

अतिथि व्याख्यान माला

डॉ. गिरीश वार्ष्णेय (चैयरमैन ग्लोबल एजुकेशनल सोसाइटी, अलीगढ़ द्वारा एन.पी.एस. पर अतिथि व्याख्यान

डॉ. वी.के. वार्ष्णेय (एसो. प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान) डी.एस. कालेज अलीगढ़ द्वारा जन्तु विज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान

कला संकाय के भूगोल विभाग में आयोजित अतिथि व्याख्यान में उपस्थित अतिथि डॉ. एस. एल. गुप्ता, एसो. प्रोफेसर भूगोल विभाग पी. सी. बागला कालेज, हाथरस के साथ उपस्थित प्राध्यापकगण व प्रतीक चिन्ह् देते हुए प्राध्यापक

वाणिज्य संकाय में आयोजित अतिथि व्याख्यान में उपस्थित अतिथि डॉ. जी. के. मोदी, प्राचार्य, राजकीय कालेज, मांट (मथुरा) के साथ उपस्थित प्राध्यापकगण व व्याख्यान देते हुए प्राचार्य डॉ. जी. के. मोदी

डॉ. रेखा आर्य, विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग, टी.आर.कन्या कालेज को प्रतीक चिन्ह् देते हुए डॉ. एस.एस. यादव व डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ

मंचासीन डॉ. अचलेश कुमारी, विभागाध्यक्ष गणित विभाग, श्री वार्ष्णेय कालेज, ज्ञान कालिज के प्राचार्य, उप प्राचार्य व प्रवक्ता

Scanned by CamScanner

विभिन्न संकायों के शैक्षणिक भ्रमण

शैक्षणिक भ्रमण पर बी. ए. के विद्यार्थियों को बस द्वारा रवाना करते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

बी.कॉम. के विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण पर बस द्वारा रवाना होते हुए

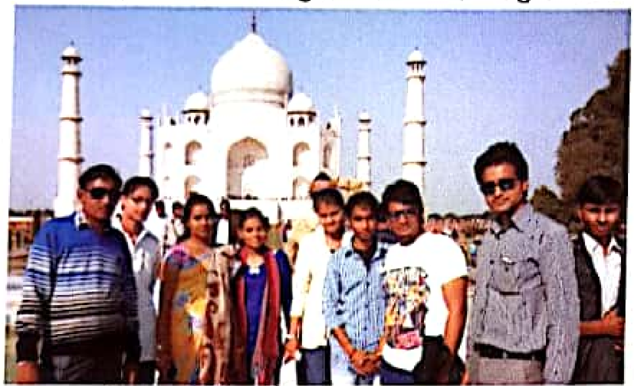

बी.कॉम. के विद्यार्थी व प्राध्यापक गण ताजमहल (आगरा) का शैक्षणिक भ्रमण करते हुए

बी.एस-सी. व बी.कॉम. के विद्यार्थी द्वारा ताजमहल का अवलोकन

बी.एड. के विद्यार्थी व प्राध्यापक गण नैनीताल (उत्तराखण्ड) में शैक्षणिक भ्रमण करते हुए

गुलिस्तान ए सैयद में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी में उपस्थित विज्ञान संकाय के विद्यार्थी व प्राध्यापक गण

गुलिस्तान ए सैयद में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी में विभिन्न प्रजातियों के पुष्पों का अवलोकन करते हुए विद्यार्थी व प्राध्यापक गण

पुष्प प्रदर्शनी में उपस्थित विद्यार्थी व प्राध्यापक गण

Scanned by CamScanner

THE 26 ALPHABETS OF SUCCESS OF LIFE

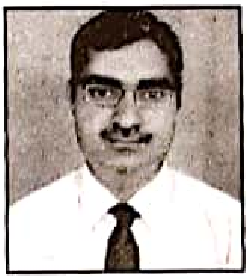

Dr. J.K. Sharma
Faculty of Commerece

A - Always speak truth.
B - Be regular and punctual.
C - Character is crown of glory.
D - Dedication is best virtue.
E - Early to bad, early to rise. Make a man healthy, wealthy and wise.
F - Failures are the pillars of success.
G - Glorify your nation.
H - Honesty is the best policy.
I - Industry the key to progress.
J - Join the company of good people.
K - Kindness is the ornament of the human beings.
L - Look before you leap.
M - Make hay while the sun shines.
N - Never lose your temper.
O - Once a liar, always a liar.
P - Pride come before a fall.
Q - Question your ego.
R - Radiate a cheerful simple.
S - Self help is the best help.
T - Time and tide wait for none.
U - United we stand and divided we fall.
V - Virtue is its own reward.
W - Where there is a will, there is a way.
X - X' mas will remind you of Jesus.
Y - Yield not to anything, but to your consciousness.
Z - Zero has its own value.

SOME FULL FORMS

Education :

E - Enlargement of knowledge
D - Discipline
U - Understandings of life
C - Character
A - Active habits
T - Trying hard
I - Identification of God
O - Obedience
N - Nature

Smart

S - Specific
M - Measurable
A - Accessible
R - Realistic
T - Time bound

Mother

M - Many things she does for us.
O - Obedience she expects from us.
T - Troubles which she takes for us.
H - Home that she has made for us.
E - Eatables she cooks for us.
R - Respect that we ought to give her.

Love

L - Lake of sorrow.
O - Ocean of tears
V - Valley of Death
E - End of life.

Wife

W - Worries
I - Invited
F - For
E - Ever

Scanned by CamScanner

WOMEN IN TWENTY FIRST CENTURY

Babita Saraswat
B. Ed.

Today we are living in 21st century. There are so many changes & improvement. But the society has not changed its attitude towards women. India is male dominated country yet.

In the ancient time, Indian woman was regarded as Ardhangni. An idol of Sita was made to complete Ashwa - Megh - Yagya by Ram.

After India's independence many women occupied high places. Mrs. Vijay Laxmi Pandit was elected the first President of Congress. Mrs. Indira Gandhi occupied the highest position as the Prime-Minister of India.

Today the condition of women is improved to a great extent as there is no limitation of fields for women to enter. Now they are I.A.S., I.P.S. officers like Kiran Bedi etc., Army officers. Truck & Train drivers, Doctors & Engineers etc.

These were male dominated fields a few centuries ago.

Like women, men are also entering in the fields of women, as now they are cooks, beauticians, tailors & fashion designers etc.

Many so called modern & educated people show themselves as having no difference between a boy and a girl. But, in reality, they always neglect the girl. Even at the birth of girl-child there is no celebration. Even now female foetus are aborted illegally with the help of the doctors.

Dowery is also increasing day by day. Engineers, Doctors & I. A. S. officers are purchased at various rates by the richest people. The girls of poor families are forced to commit suicide for relieving their parents from dowry's curse.

A girl is believed to be a burden on her parents but none should forget that the progress of a country depends on good citizens. A responsible citizen is made only by an educated and self dependent women. That's why Nepolean once said, "Give me good mothers and I shall give you a good nation." Ravindra Nath Tagore also said, "I am what my mother made me." In India women are not given same importance as men while in the developed country women are considered as the main pillar of the family.

But it's a bitter reality that for the boy the parents neglect the girls, but the girls never neglect them even in their old age, when the boy has neglected them.

So, It is the need of the time that girls should get the same position as boys. Due to western influence they are improving their condition. But efforts should be made by all classes of the society. ❐

Scanned by CamScanner

ROLE OF MOTIVATION IN OUR LIFE

Priyanka Sharma
Lecturer in B.B.A. Dept.

The importance of motivation feels when it comes to your personal life as well as the workplace well, unless if you don't have goal. Go work on and task to complete, motivation is quite worthless. Of course you and I both know that there are always things to do in life. The biggest challenge that many people how is being able to have enough motivation to do the things they know. They should be doing. One fact of life is that most of things that will give us what we want the things that we want to do the least.

Motivation is basically a feeling of movement when you are motivated. You want to go from doing one thing to another thing. Most of the time, you are going from doing nothing to doing something. This is the main problem when it comes to achieving your goals.

In the Workplace : When you don't have the motivation to do your work. You will either eventually get fired as you will not likely get promoted and will stay where you are for a long time. If you are the supervisor or the owner, a lack of motivation throughout your company can create a rather unproductive workplace. This will lead to loss of sales profits and market share.

In the Classroom : When you have no motivation to study. It can be hart to get the grades you need to accomplish your emotional/educational goals. Mostly students believe it or not, are capable of doing very well in school despite what their current grades are showing. Most of the time, it's not the lack of ability to learn the material but the lack of interest and motivation to put in the effort to actually do well.

If you are the teacher. Its important that you do what you can to teach the material in a way that will interest the student.

NEWS PAPERS

Priyanka Sharma
B.B.A. Student

Newspaper are our companion. In the morning they are waited by us very eagerly. They always come to us with some fresh informations. They have only ten a twelve pages mostly. On sunday, a magazine section also came with them. Thus they are very important for us to have the knowledge of world affairs. They are the media of mass communication. They are in difference language like Hindi, Urdu, Marathi, English and Punjabi etc.

Newspaper contain advertisements, vacancies, article and our editorial column also. These news papers make us acquainted with games and sports, cultural and social activities and Business matters. Newspaper are known with Dainik Jagaran, Desbandhu, Sainik. The header, Amrit Bazar Patrika, The Hindustan Times and National Herald etc. I read a few of them every day.

In war times a newspaper gives us prompt news. Burning topics of the day are published in bold heading on the first page of it. Views of political leaders are disputes among them are also published in a news-paper. Unemployed people get jobs through advertisement. They also give us matrimonial advertisements. ❐

Scanned by CamScanner

Think it Over

Dr. D.N. Gupta
Asstt. Professor
Economics

An old wood cutter, poor, alone, had only one way to earn his everyday bread and that was by cutting and selling wood. On the entrance of the forest there was a Bodhitree. The wood cutter used to see an old man sitting under that tree, so he always touched his feet before entering the forest and every time the old man would smile and say 'you are such an idiot'. The woodcutter could not understand as to why the old man always said so. One day the woodcutter gathered courage and asked the old man, 'what do you mean by calling me an idiot, when I touch your feet?' The old man replied, I mean that you have been cutting trees in this forest for your whole life, but if you go just a little deeper in the, forest, you will find copper mine.

The woodcutter could not believe it, because he knew the whole forest. He thought, 'This man must be joking'. But then he though that there is no harm in going a little further and see whether there is really a copper mine. So he went in deeper in the forest and found a copper mine. After collecting copper he was went only once a week in the forest, but the old tradition continued, he would touch old man's feet & the old man would smile and say, 'You are such an idiot'.

But, 'the woodcutter said' now this is not right! Because I have found the copper mine. Why are you calling me an idiot?' The old man said, You don't know. If you go a little further, you will find a silver mine. The woodcutter said, 'My God! Why did you not tell me before ?' The old man said, You didn't believe me even about the copper mine-how could you have believed about the silver mine ? Now, just go a little further. This time also there was suspicion in woodcutter's mind but there was a certain trust arising. And he found the silver mine. He came back and said, Now I have found silver enough that I will be coming only once a month. But the old man said, You are still an idiot, it makes no difference." The woodcutter asked, 'Even though I have found the silver mine?' Yes even then said the old man, You are just an idiot and nothing more - because if you go just a little deeper, there is gold. So don't wait for a month, come tomorrow.

Now the woodcutter thought This man must be joking. If there is gold in the forest, why should he be sitting under this tree in old rays, with no shelter from rain and sun, depending on the food which people bring and offer him? Sometimes nobody brings food and he has to remain hungry. If he knows where the gold is, then why should he suffer like this? But he took his advice and went further.

The woodcutter went further and found a big gold mine. He could not believe his own eyes-this is the forest he has been working in for his whole life. And this is the forest where that old man is sitting......... He brought enough gold and said, I think, now onwards, you will not say any more that I am an idiot. The old man replied, 'I will continue. Come tomorrow because this is not the end; this is only the beginning. What Gold is just a beginning asked the woodcutter.

Come tomorrow. Just a little deeper in the forest, you will find dia-monds-but that too is not the end. Tomorrow morning first you find the diamonds and then come to me.

The woodcutter could not sleep for the whole night, in the morning he went early-the old man was asleep. When the woodcutter touched his feet, the old man opened his eyes and said, I know you would come, because you could not sleep. First go and see the diamonds. He came dancing to the old man and said, Now you can not say that I am an idiot. But the old man said, still you are an idiot. The wood cutter was now puzzled and said. Then I am not going to leave you, unless you explain it to me.

The old man said, You can see that I know all about these mines, and I don't care about them. Because there is something more which is not in the forest but within you ? And because I have found that, I do not care about all these diamonds. Now it is up to you, you can stop your journey at the diamonds - but then you will remain an idiot. This can make you understand that there is something which is never found outside, how far you go, it is found inside you. The woodcutter dropped the diamonds. He said, I am going to sit by your side, unless you drop this idea that I am an idiot. I am not going to move from here. He was a simple innocent woodcutter. It is difficult to knowledgeable people to go inside, but it was not difficult for the woodcutter. Soon be entered into deep silence-of joy, a blissfulness and benediction. ❑

Scanned by CamScanner

Effects of Global Warming on Earth

Dr. B.D. Upadhyay
Associate Professor
Deptt. of Chemistry

Global Warming is defined as the increase of the average temperature on Earth. As the Earth is getting hotter, like hurricanes, droughts and floods are getting more frequent. Many scientists have specified various reasons for global warming effects on the environment and for human life. It is not easy to point one reason for global warming effects, but recently you might have saw many change in global climate. Global warming effects have various consequences such as glacier volume decreasing, rise in sea levels, shrinkage of Arctic and alterned fashion of doing agriculture have been named as direct effects on global warming. Secondary global warming effects are extreme weather events, increase in tropical diseases, change in the timing of seasonal pattern in eco systems, and drastic economic impact.

I. Global Warming Effects on weather

1. **Extreme weather due to global warming :** Increase in Storm strength which leads to extreme weather increasing, such as the power dissipation index of hurricane intensity Scientist have discovered that Worldwide, the proportion of hurricanes reaching their respective categories to 4 or 5 with wind speeds above 56 meter sec has risen from 20% in the 1970 to 35% in the 1990s.

2. **Increase in evaporation because of global climate change :** Because of increase in global warming, climate gradually growing warmer and most the causes of global dimming have been reduced and definitely evaporation will increase due to warmer oceans. Because the world is a closed system which will result in heavier rainfall, with more erosion. Many scientists think that increased evaporation could result in more extreme weather as global warming progresses.

3. **Cost of catastrophic storms :** If every single cause contributes towards big cause that it outputs dynamic cause. There is a prediction among researchers that each 1% increase in annual precipitation would enlarge the cost of catastrophic stroms by 2.8%. By limiting carbon emissions without increasing it level would avoid 80% of the predicted additional annual cost of tropical cyclones I by 2080s.

4. **Dynamic Change in Local : Climates :** In the part of northern hemisphere, south Arctic region are experiencing a huge temperature rise from 1C to 3C (1.8 F to 5.4 F) over the last 50 years. A study of changes to eastern Siberia's permafrost suggests that it is gradually disappearing in the southern regions, leading to the loss of nearly 11% of Siberia's nearly 11,000 lakes since 1971.

II. Global Warming Effects on Glacier

In historic time, people use to say as the Little Ice Age as glaciers grew during a cool period from 1550 to 1850 Just excluding the ice caps and ice sheets only of the Arctic and Antarctic, from the total surface area of glaciers world wide has decreased by 50% since the end of the this (21 st century) In Green land the period since the year 2000 has brought retreat to several very large glaciers that had long been stable.

III. Global Warming Effects on Oceans

1. **Rise in Sea level :** With the drastical change in earth temperature, the water in the oceans expands in volume, and additional water enters them which had previously been stored up on land in the form of glaciers, i.e. the Greenland and the Antarctic ice sheets. The level of sea has risen more than 120 meters since the peak of the last ice age in the past 18000 year ago.

2. **Rise in Temperature affecting global warming :** From the period of 1961 to 2003, the global ocean temperature has risen up 0.10C from the surface to a depth of 700m. It is predicted that, the temperature of the Antarctic Southern Ocean rose to 0.17 C (0.3IF) between the period of 1950s and 1980s, Which is quite high nearly twice the rate for the world oceans.

IV. Global Warming Effects on Economic

1. **Effects of Global Warming on Agriculture:** Before many time back, many scientist and researchers were hopping that a positive effect of global warming would be increased agricultural yields, because of the role of carbon dioxide in photosynthesis which might behave in positive manner, but now it resulting in destructions of several crops. In the area of Iceland, due the rising temperatures which have made possible the

Scanned by CamScanner

widespread sowing of barley easily in an effective manner, which was not possible twenty year from now. The net results is expected to be that 33% less maize the country staple crop will be grown. The reduction in rainfall has turned millions of land into deserts.

2. Global Warming effects on Insurance Industry: Insurance industry has been affected very badly with the risk of insurance; the number of major natural disasters has been increased to 300% since 1960s, and insured losses increased fifteen fold in real terms. According to Choi and Fisher (2003) each 1 % increase in annual precipitation could enlarge catastrophe loss by as much as 2.8%.

3. Transportation effecting due to global warming : All major transportation sources such as Roads, airport runways, railway lines and pipelines, always require time to time maintenance and renewal as they become subject to greater temperature variation. Regions already adversely affected include areas of permafrost, which are subject to high level of subsidence, resulting in buckling roads, sunken foundations, several cracked runways and many other related problems.

4. Number of Floods increasing : Most of the low lying countries such as Bangladesh, Indonesia, Netherlands, and many other small islands have been affected by sea level rise, in terms of floods or the cost of preventing them. In most of the poorest low plain countries, land is the only available space, or fertile agricultural land which is livelihood for them. But due to flood they are finding problem now to perform their activities.

V. Global Warming Effects on Eco systems

1. Forest getting effect due to increase in global warming: In the vast pine forest in British Columbia have been devastated by a pine beetle infestation, which has expanded unbindered from the period of 1998 at least in part because of the lack of severe winters since that time. Due to few days of extreme could kill most of mountain pine beetles and have kept outbreaks in the past naturally contained. Because of dynamically ecological and economic impact, all those giant dead forest resulting into rise of fire risk. In Indonesia rather than panting more and more tries they are clearing forest for agriculture. This fire emits CO_2 in an average year, to release 15% of the quantity of CO_2 produced by fossil fuel combustion.

2. Global Warming effects on Mountains : Change in climate have many impacts, one of the effected elements is mountain. Many scientists have discovered that over the period of time, Change in climate will affect mountain and lowland ecosystems, frequency of forest fires may increase, adversely affect on wildlife, and the distribution of water. Climate change will also affect the depth of the mountains snow pack and glaciers which is melting at a greater speed.

VI. Global Warming Effects on Environment

Water scarcity because of increase in temperature : Increase in temperature which resulting into rise of Sea level projected to increase salt water intrusion into ground water in some regions which affecting drinking water of people and agriculture in coastal zones as they can't use salt water for irrigation. Due to increase in the percentage of evaporation effectiveness of reservoirs will get reduce. The retreating of glaciers will have a number of different effects on water supply. A reduction in runoff will affect ability to irrigate crops adversely.

Global warming may extend the favourable zones for vectors conveying infectious disease such as dengue fever and malaria. In poorer countries this may simply lead to higher incidence of such diseases. In richer countries, where such diseases have been eliminated of kept in check by vaccination, draining swamps and using pesticides, the consequences may be felt more in economic than health terms. The World Health Organisation (WHO) says global warming could lead to a major increase in insect borne diseases in Britain and Europe, as northern Europe become wanner, tick-which carry encephalitis and lyme disease and sand flies which carry visceral leishman is as are likely to move in. However, Malaria has always been a common threat in European past, with the last epidemic occurring in the Netherlands during the 1950s. In the United States, Malaria has been endemic in as much as 36 states until the 1940s by 1949 the country was declared free of malaria as a signficant public health problem, after more than 4650000 house DDT spray application had been made. The World Health Organisation estimates 150000 death annually 'as a result of climate change' of which half in the Asia pacific region. In April 2008, it reported that, as result of increased temperature, malaria is appearing in the highland areas of Papua New Guinea, where it has always been too could for disease spreading mosquitoes. □

Scanned by CamScanner

Empowerment of Muslim Women

✍ **Dr. Samar Raza**
Asstt. Professor
Faculty of Commerce

The status of women has been law and subordinate in major part of human history from the ancient time to the modern period, the female part of humanity has been deprived of the basic human right and freedom the coming of Islam in the 7th century in Arabia Equality among men gender is the basic Islamic principle. Islam is against cruel exploitation of women.

The Holy Quran has ordained :

Wives have the same right as the husband have an them. A pinion of the prophet asked him about the rights of a wife over a husband. The prophet explained that he should feed her when he eats himself. He should clothes her when he clothes himself.

For the first time in a history a woman's right to property was preserved and her share was ensured in Islam.

The Holy Quran Says :

'There is a share for man what has been left by parents and relative there is a share also for women in what has been left by parents and relative, whatever it be little or much.'

A Muslim women can do the job in any field like teacher, principal doctor or engineer but she should adopt a modest dress and be punctual in her duty.

A misconception has taken place in Muslim Society that they cannot do work outside the house.

This is wrong they can do the job to adapt a proper and attention of the lustful eyes of the man.

Islam has not for bidden women from moving their homes. Islam only forbids Muslim women to adorn and beauty themselves. A Muslim women who observes the Islamic law of Hijab can also drive cars because cars can be considered as necessity and not a luxury.

'The holy Prophet has appreciated women of his time for riding out an camels, when it become necessary for them to go out. ❑

Three Things

Sumit Saxena
Computer Operator

Three things to Respect,
Old age, Religion & Law.
Three things to Love,
Honesty, Purity and Truth.
Three things to Watch,
World, Behaviuor and Character.
Three things to Follow,
Nonviolence, Honesty and Truth.
Three things to Value, Time, Health and Money.
Three things to Admire,
Intellect, Beauty and Piety.
There things to Cultivate,
Sympathy, Cheefulness and Contentment.
Three things to Avoid,
Drinking, Smoking and Gambling.
Three things to Govern,
Tongue, Temper and Action. ❑

Scanned by CamScanner

Rabindranath Tagore : The Gem of Anglo-Indian Literature

Dr. K. P. Singh
Asstt. Professor
Dept. of English

Tagore is the most outstanding name in modern Anglo-Indian Literature, and he is the one writer who first gained for modern India a place on the global literary scene. He is the first Indian to get the noble prize for literature in 1913 for his book **'The Gitanjali'**, a book of song. He was a poet, dramatist, actor, producer, painter, musician, short-story writer and novelist. In this way, he was many persons, he was a darling of versality, and **Gurudev of the whole world**.

The youngest of the seven sons, Rabindranath was born on 6th May 1861, in affluence and aristocratic culture surrounded him. He did not get the regular education. But he got the reflection of his father as he writes in his Reminiscences, **"I felt in him the presence of a great soul, and even today the recollection of it seems to give me a passport into the silent seclusion of temple of God."**

Tagore was not a voracious and systematic reader but like Shakespeare he was a practical observer of social, political and economic problems. He had written about 7000 lines of verse before he was eighteen. In 1883, Tagore wrote a play **'Sanyasi'** or the **'Ascetic'**. Basically, Tagore started to write into Bengali and translated into English. His immortal works are : **'The Gitanjali'**, **'The Gardsner'**, **'Fruit-Gathering'** and the **'Lover's Gift'**. In this manner, Tagore's Gitanjali is a world famous book for which he was awarded the noble prize. The great poet W.B. Yeats has written a memorable introduction about Gitanjali as follows :

I have carried the manuscript of these translations with me for days, reading it in railway trains, or on the top of omnibuses and in restaurants and I have often had to close it lest some stranger should see how much it moved me. These lyrics ... display in their thought a world I have dreamt of all my life long ... As the generations pass, travelers will hum them on the highway and men rowing upon rivers. Lovers, while they await one another, shall find, in murmuring them, this love of God a magic gulf wherein their own bitter passion may bathe and renew its youth. At every moment the heart of this poet flows outward to these without derogation or condescension, for it has known that they will understand; and it has filled itself with the circumstances of their lives.

The Gitanjali songs are mainly poems of **'Bhakti'** in the Great Indian tradition and gives the message to the whole humanity "Work is Worship". He refuses idolatry and blind worship:

Leave this chanting and singing and telling of beads! Whom dost mou worship in this lonely dark corner of a temple with doors all shut ? Open thine eyes and see thy God is snot before thee!

The tiller, the stone-breaker, the honest labourer working in the spirit of Gita ideal a yoga is

Scanned by CamScanner

skill in works. "God is with them too." The idea of **'Escape'** from the world's demands is puerile and vain.

Deliverance? Where is this deliverance to be found? Our master himself has joyfully taken upon him the bonds of creation; he is bound with us all for ever.

Tagore also articulates a payer for his country's Redemption, and many are the schools in India today where it is recited by the students at beginning of each day's session:

Where the mind is without fear and the head is held high;

Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls;

Where words come out from the depth of truth;

Where tireless striving stretches its arms towards perfection; Where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary desert sand of dead habit;

Where the mind is led forward by thee into ever widening thought and action.

Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

So, the poet's heaven lies in awaken and progressive outlook of India among the youths.

Thus, Tagore's immortal work enlightens to the whole humanity and leaves a message 'Work is worship'. In this way, it can be concluded that Rabindranath Tagore is a immortal figure of Indian thought, tradition, culture, perception, and dedication of common man for the welfare to mankind at the global level.

Test Your Knowledge About Computer

1. What do computers like to eat. **Ans. :** Chips.
2. What is computer's first sign of old age ? **Ans. :** Loss of memory.
3. What happens when computer falls on the floor ? **Ans. :** It slips a disk.
4. What is a computer virus ? **Ans. :** A terminal illness.
5. How does tree get on the internet ? **Ans. :** It logs in.
6. Which is the favourite key of astronaut on keyboard ? **Ans. :** Space bar.
7. What kind of doctor fixes broken web sites ? **Ans. :** AUR Logist.
8. Why is there a bug in the computer ? **Ans. :** It may be looking for a byte to eat.

Having faith means not to worry about the future but to plan and to learn to live in the present.

Scanned by CamScanner

What is Abnormal ?

Dr. Vikesh C. Gupta
Asst. Professor
Deptt. of Psychology
Gyan Mahavidyalaya, Aligarh

The 17^{th} Century was the age of enlightment, the 18^{th} century was the age of reason and the 19^{th} century was the age of progress but Present time is the age of Anxiety and stress

According to modern psychology it is very difficult to live healthy and happy with satisfaction. The person is surrounded by the feelings of various conflicts, stress, insecurity , doubt and competition so it is very easy to have a problematic attitude. Thus the problem of maladjustment is rising day by day.

In my point of view life is the second name of behavior that we use everywhere at any time while behavior means adjustment with the surroundings or society.

Abnormal means away from normal so the behavior that is strange, different or uncommon with a particular society is called abnormal but all the norms are abstractions which can not be measured so these may be examined on the basis of the values within of specified atmosphere.

The meaning of abnormal varies from place to place, society to society because every society has its own norms to live. When a person is not adjusted with the society or he does not follow the rules (customs and traditions) of the society, he is called abnormal by that society. It may be understood by the example of an English woman who walks in Aligarh with her short clothes we call her foolish or abnormal as she does not follow our social uniform.

Some emotional weight is attached with the word abnormal so specified feelings and thoughts are aroused and we can not find an objective and scientific method. In other words it may be said that every person is abnormal because he can not adjust himself with every society of the world. ❐

Scanned by CamScanner

Mahatma Gandhi
The Messenger of Peace

Shivani Chaudhary
B.A. 2nd Year

The United Nations observes 2nd October as the International Day of Non-Violence. It is the birthday of Gandhi, leader of the Indian Independence movement and pioneer of the non-violence movement. Gandhi led about 300 million Indians to freedom in 1947. What an amazing accomplishment! What can we learn from this uncommon man? The British ruled India for more than 200 years. Indians were forced to pay unreasonable taxes and give away their property, and were humiliated in their own country.

In South Africa, Gandhi started experimenting with living a simple life. He adapted to the new life in the Ashram by farming, teaching young students and making his own clothes. **In India, when Hindus and Muslims fought, Gandhi fasted for many days to stop the fighting.** Many other times, Gandhi fasted to show his protest of injustice. Gandhi adapted himself to a new approach called Satyagraha. It was a fighting for truth. He traveled throughout India for one year to see the country and feel the suffering of Indians. He was against untouchability, which meant that higher-caste people shouldn't touch people from the lower castes or people such as lepers. He published his newspaper **'The Harijan'** to eradicate this blot on Indian society.

It inspired to the eminent novelist of this time Mulk Raj Anand, and he wrote 'Untouchable' the world famous novel, that served Gandhi's purpose not at the national level but at the global level. Gandhiji campaigned the Savinay-Avagya Movement in 1929 and Quit India Movement in 1942 where he encouraged and motivated the Youths of India saying **'Do or Die'**. In this way, Gandhi ji played a crucial role to get Freedom. He was also a pure secular man. He said:

> **We are all children of God.**
> **I am Hindu, Christian,**
> **Jew and Muslim.**

Thus, Gandhiji inspired to thousands of people around the global to get their right with non-violence. Either it is Nelson Mandela in South Africa or it is Barrak Obama in America, are the product of Gandhian philosophy, i.e. Non-violence. ❐

Scanned by CamScanner

Swami Vivekanand

The Pioneer of Spirituality

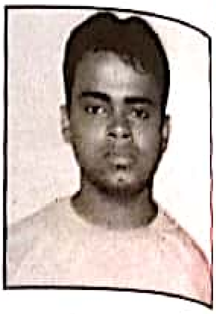

Rohit Prakash
B.A. 1st Year

Swami Vivekananda is the name of a world famous monk. He was born as Narendra nath Dutta in Calcutta on 12 January, 1863. His father Viswanath Dutta was a learned lawyer at the High Court of Calcutta. Narendranath obtained his education irregularly. He at first read in a Primary School with other children of suburban area to avoid the influence of the rough children, he was then kept at home. Again he studied in the Metropolitan Institution, founded by Iswara Chandra Vidyasagar. He was a good scholar, a good actor, player and wrestler. He was very popular for his knowledge in Sanskrit. Above all, he was a speaker of truth. He was never known to tell a lie. In 1877 he went to Raipur with his father. In Raipur there was no school where Bengali was taught. So he was forced to stay at home. He built up the habit of argument. He had self-confidence in it. Then his father came back to Calcutta. Narendranath resumed his study. After school examination, he studied at the Presidency College in Calcutta. Then he went to the General Assembly Institution, which was a Missionary College. He studied logic and philosophy. Young Narendranath came in contact with Keshab Chandra Sen, Devendranath Tagore, the famous members of the Brahma Samaja. He was disturbed in his mind by his own question "Who can show me God?" Finally he met Sri Ramakrishna, a Priest in the temple of the goddess Kali at Dakshineswar. The spiritual influence of Sri Ramakrishna changed him. Soon after his father's death, Narendra discontinued his college-study and looked for jobs. Being disappointed to get any job, he again met Sri Ramakrishna and accepted him as his spiritual master. He was then called Swami Vivekananda.

After the death of Ramakrishna, as his disciple, Swami Vivekananda started the Ramakrishna's Order. He attended the Parliament of Religions in Chicago on September, 1893. Of course he had to face enormous difficulties in Chicago. He surprised the Americans calling them – **'Sisters and Brothers'**. Here, were other persons representing different religions. Often Vivekananda spoke on Hinduism; he was greeted and sheered by all the audience there. One of the newspapers New York said that Swami Vivekananda was the greatest figure in the Parliament of Religions. Swami Vivekananda was a patriot. He was worried for the poverty in India. He also tried to remove poverty from this country. He died on 4 June 1902 only at the age of thirty nine. He was the greatest spiritual figure in India. His writings encourage to modern youths of India as :

"Weakness is death, strength is life."
"Arise, awake and not stop,
Till the goal is reached."

Scanned by CamScanner

Diseases Around Us

Rini Maheshwari
B.Com II

We live in the age of science. The role of science can not be described in words. We can see the wonders of science around us. It has made our life easy and comfortable.

But situation is just the reverse today, because progress in science and technology is also leading to pollution, adulteration and serious ecological imbalance which in the long run may prove disastrous for mankind.

The three basic amenities for living organism are air, land or soil and water. Some times in the past these amenities were pure virgin, undisturbed and basically most hospitable for living organism. The craze of progress in agriculture, industry transport, transportation and technology is taken as general criterion of development of any nation. Such activity of man has created adverse effect on all living organism in the biosphere. The root cause of environmental pollution has been the man's misbehaviour with the nature under the false ego that he is the master of nature. Motor vehicles traffic is a major source of air pollution. These pollutants directly effect the respiratory, digestive, nervous and cardiovascular system. The level of air pollutant ozone in small increase have an adverse effect on health of children because air in ozone can cause coughing, respiratory, irritation, nausea and permanent damage to the lungs in people of all ages. Eating food, drinking water and breathing air is very injurious to health now-a-days. Making a product attractive seems to be the first rule of successful marketing even at the cost of toxicity. Food in which colors are used are jams, sauces, drinks, fruits, synthetic syrups, chewing gums, biscuits, pastries, saunf and supari. Vegetables and fruits are also dipped in various dyes. A green colour copper solution is used for green vegetable like broccoli and parwal. Chillies are dipped in highly dangerous lead solution to make them red.

Adulteration with stuffs is very harmful to health. The risk ranges to kidney damage, sterility, brain damage and even cancer. For example pesticides in color, artificial coloring for pulse, synthetic milk in ice cream, artificial flavourings for ghee, argemone mixed in mustard oil, brick dust in chilli powder, rice husk in garam masala, colored chalk powder in turmeric, injectible dye in water melon and papaya seeds in black pepper. Oxytocin may be present in milk, coal tar dye may be present as additive in coffee and tea, some carcinogenic dyes are also added in dal and so they cause cancer. Lead chromate in turmeric causes anemia, paralysis, mental retardation and brain damage. Copper salt are added to pickle and cause damage to the kidneys, malachite green in Saunf, Rancill animal fat add to Vanaspati ghee cause nausea and vomiting.

Carbofuran which is additive for bringles causes development delays and cancer. Thus so many diseases are caused by pollution and adulteration. ❐

- Preventions is better than cure. It is easier to be always clean and pure than to dip your hands in dirt and impurities and then wash them off.
- Cold water is beneficial to a thirsty man but is harmful to one who has fever. Similarly, what is good for one may not be good for another. So each person must follow that path for which he is best suited.

Scanned by CamScanner

Vedic View of The Environment

Pushpendra Sharma
B.Com Ist

For ancient Indians, the Almighty creator Brahma is the protector and controller of all natural forces. They felt Brahma's presence in everything around them. Since these divine forces sustained all living creatures and organic things on this earth, to please God, they felt they must live in harmony with His creation including earth, rivers, forests, sun, air and mountains. This belief spawned many rituals that are still followed by traditional Hindus in India.

For example, before the foundation of a building is dug, a priest is invited to perform the Bhoomi Pooja in order to worship and appease mother and seek forgiveness for violating her. Certain plants, trees and rivers were considered sacred & worshipped in festivals. In a traditional Hindu family, to insult or abuse nature is considered a sacrilegious act.

Ancient Indians believed that human, gods and nature were integral parts of one 'organic whole. This Ancient Indian world view of ancient Vedic times become formalized in to the Sankhya system of the philosophy that promoted ecology care in Indian attitude.

"Our Vedic mantras have paid homage to the lord of air, water, fire, moon and the lord of creation and destruction and also the ancestors. In the words of Gautam Buddha : "The forest is a peculiar organisms of unlimited kindness and benevolence that makes no demand for the sustenance and extends generously the products of its life activity : it affords protection to all begings by offering shade even to the axeman who destroys it. Can we expect more beautiful perception than this?"

The Hindu prayer called Shantipath recited to conclude every Hindu ceremony, reflects the Hindus connectedness with nature: There is peace in heavenly region; there is peace in the environment; the water is cooling; herbs are healing; the plants are peace giving; there is harmony in the celestial objects and perfection in knowledge; everything in the universe is peaceful; peace pervades everywhere. May the peace come to me.

Alas! In the process of modernization and mimicking of Western life style and consumerism, Modern Hindus have forgotten their ancestors' view on ecology, and have acquired the western exploitative attitude towards nature.

Lush forests have been denuded, rivers, including the sacred river Ganga have been polluted with industrial wastes: Delhi has become one of the most polluted cities in the world. Many beautiful birds and animals have become extinct. This devastation is taking place in the name of progress.

The Indian environment protection movement opposing this ecological destruction is run by westernized elites, and based on western model. It has failed to become a mass movement, for it is devoid of spiritual foundation or content necessary to inspire Hindus. Unfortunately, Hindus have forgotten this Vedic view of the earth and don't protect their natural environment. They have not added a (traditional) Hindu point of view to the ecology movement which is perhaps the main idealistic movement is the world today. Part of the challenge of the modern Indianism is to reclaim its connection to earth. ❐

Scanned by CamScanner

Teacher's Corner

Divya Singh
B.Sc. 2nd Year

1. Chemical Homour : Once three professors of Physics, Biology and Chemistry went to a river side. The Physics professor said that he wanted to measure the length and breath of the river so he went in. The Biology professor said "I want to see structure of amoeba. So I am also going into the river and he went away.

After many hours the two did not return, the chemistry professor concluded that both professor were soluble in water.

2. Once three teachers were talking among themselves that if a thief came to their house at night and if they were in the house, what would they do ?

Mr. History, "I always keep the sword of Tipu Sultan with me and can kill him."

Mr. Chemistry, "I will kill him with KCN (Potassium Cyanide)"

For sometime, Mr. Mathematics kept quiet and then said, " I will put that stupid thief in brackets and multiply it by zero." ❐

Successful

Manoj Nigam
Lect. Dept. of Physics

Successful people don't relax in chair but they feel relaxed with their work. They sleep with sweet and positive dreams and wake up with a new commitment. ❐

Life of a Science Student

Yatin Kumar Varshney
B.Sc Ist Year

The life of a science student is full of care,
He meets only books & books every where.
He has no time to stand and stare,
Gases revovo in his mind every where.

There is no place for poetry in his world,
The chirping of birds. He has never heard.
No soul to hear what nature does say,
He thinks only of marks night and day.

In his heard, there is no room for sentiments.
He has become a busy man of experiments.
Scriptures like physics, chemistry are infront
of the poor boy.
Still his 'pad' thinks his life is full of joy.

❐

Thought

Kajal Varshney
B.Ed.

Life is like a camera
Focus on what's
Important
Capture the good time
Develop from the negatives
And if things don't work out
Take another shot.

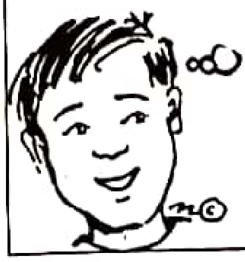

School is our Temple.
Teacher is our God.
Study is our Aim.
Student is our Name.

❐

Scanned by CamScanner

Electronic Commerce

Sagar Jindal
B.Com II

Electronic commerce, commonly known as **e-commerce** or **eCommerce**, consists of the buying and selling of products or services over electronic systems such as the Internet and other computer networks. The amount of trade conducted electronically has grown extraordinarily since the spread of the Internet. A wide variety of commerce is conducted in this way, spurring and drawing on innovations in electronic funds transfer, supply chain management, Internet marketing, online transaction processing, electronic data interchange (EDI), inventory management systems, automated data collection systems. Modern electronic commerce typically uses the World Wide Web at least at some point in the transaction's lifecycle, although it can encompass a wider range of technologies such as e-mail as well.

Business applications : Some common applications related to electronic commerce are the following :

- Email
- Enterprise content management
- Instant messaging
- Newsgroups
- Online shopping and order tracking
- Online banking
- Online office suites
- Domestic & international payment systems
- Shopping cart software
- Teleconferencing
- Electronic tickets

The True Beauty

Yatendra Kumar
'Saraswati Bhawan' Incharge

I likes spiritual beauty and dislike physical beauty physical beauty fades with the passage of time. But the other hand spiritual beauty never fades and the love based on it is even lasting.

Informant buoter

- Technology is just a tool. In terms of getting the kids working together and motivating them, the teacher is the most important. **- Bill Gates**
- If the next generation is to face the future with zest and self confidence. We must educate them to be original as well as competent. **- Mihaly Csikszentimihalyi**
- Challenge and opportunity are motivating friends of a consistent winner. **- Anonymous**
- Each individual creature on this beautiful planet is created by God to fulfill a particular role. One should never feel small or helpless. We all are born with a divine fire in us. Our efforts should be to give wings to this fire and fill the world with the glow of its goodness. **- Dr. A.P.J. Abdul Kalam**

Scanned by CamScanner

Be Thankful

✍ **Dr. Irfan Khan**
B.Com III

- *Be thankful that you don't already have everything you desire. If you did, that would there be to look forward to ?*
- *Be thankful when you don't know something, for it gibes you the opportunity to learn.*
- *Be thankful for the difficult times as during those times you grow.*
- *Be thankful for your limitations as they give you opportunities for improvement.*
- *Be thankful for your mistakes as will teach you valuable lessons.*

Be thankful when you're tired and weary, as it means you've made a difference. It's easy to be thankful for good things....

But try to find a way to be thankful for your troubles, and they become your blessing.............as "A life of fulfillment comes to those who are also thankful for the setbacks."

Thoughts

1. Time is not measured by the passing of years but by what one does, what one feels, and what one achieves.
2. The tree on the mountain takes whatever the weather brings, If it has any choice at all, it is in putting down roots as deeply as possible
3. Health is the greatest gift, contentment the greatest wealth, faithfulness the best relationship.

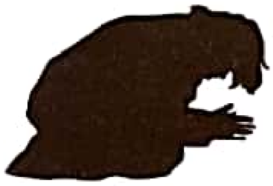

God is One

✍ **Manoj Rajpoot**
B.Com III

The stars are many, the moon is one.
but neither can hold is candle to the sun.
The aunts are many, mother is one. Among scores of ministers, king is one. We have one life and we use one tongue, We all pray to the sky, the young. because Good is one.

Body Cabinet

✍ **Harshdeep Malik**
B.Com Ist

Brain	***	**Prime Minister**
Lungs	***	**Home Minister**
Skin	***	**Defence Minister**
Head	***	**Education Minister**
Legs	***	**Transport Minister**
Stomach	***	**Transport Minister**
Stomach	***	**Food & Agriculture Minister**
Eyes	***	**Law & Order Minister**
Mouth	***	**Information & Broadcasting Minister**
Hands	***	**Industry Minister**
Ears	***	**Post & Telegraph Minister**
Nose	***	**Health Minister**
Teeth	***	**Civil Supply Minister**
Tongue	***	**Publicity & Propaganda Minister**

Scanned by CamScanner

Friendship Quotations

Manoj Kr. Gupta
B.A. II

Instead of loving your enemies, treat your friends a little better. **- Ed. Howe**

One friend in a lifetime is much, two are many, three are hardly possible. **- Henry Adams**

True friendship comes when silence between two people is comfortable.

- Dare Tyson Gentry

Friends are like stapler pins: Easy to attach but very hard to deattach..and even if the pin is removed it always leaves its mark. **- David Sarille Muzzey**

Making 50 friends in 1 year is not a very big thing but keeping one friend for 50 years is really an achievement. **- Woodrow Wilson**

Care is the sweetest power of friendship when some one says take care, it really means that you will stay in their heart till last beat. **- John Stienbeeh**

Secret of Success

Manveer Singh Yadav
B.A. Ist

The word success at once brings to our mind something pleasant. We all try to achieve success in life. Success means the realization of aim and aspirations. Success or failure is linked with a goal that a man has before him. Every rational man keeps a goal before him. He makes efforts to reach it. The attainment of the goal is called success. How can one achieve success.

1. Success does not come by chance.
2. It is the result of constant efforts.
3. Success comes to those who work hard with patience.
4. Success lies in facing hardships of life with courage.
5. Good character is an important factor of success.
6. Sincere labor means success.
7. Sound mind and sound body are essential for success.
8. Right kind of education shapes the success.

By following these qualities a man can get success.

Scanned by CamScanner

"The role of youth in strengthening Democracy"

Dipika chauhan
B.Sc.

Democracy is a form of government in which all eligible citizens participate equally either directly or through elected representatives in the proposal, development and creation of laws.

It encompasses social, economic and cultural conditions that enable the free and equal practice and self determination.

Democracy is the term originate from the greek word " Demokratia" which means 'demos'à people and 'kratos'à power or rule, therefore democracy can also be defined as government which is by the people and for the people.

ROLES OF VARIOUS DEPARTMENTS IN STRENGTHENING DEMOCRACY

1. The role of youth in politics to strengthen democracy : Youth is that spark which needs no ignition, youth is that clay which can be moulded in either shape one wants."

Politics is the science to manage the country of state. Youth is young blood of nation and active worker of nation, so it is very necessary and demand of nation that he must talk all the responsibility for managing whole country. Without Entering in politics, he cannot do anything but once entered than can surely handle one or the other thing and can make his own government with the help of democratic voting system and can help in strengthening democracy. "People shouldn't be afraid of their government, government should be afraid of their people."

2. The role of Anna Hazaare in strengthening democracy : Anna Hazaare with his team and the support started a revolution which refers to a kind of active but absolutely non-violent resistance to oppression. His revolution he began to call the Indian movement Satyagraha which means Satya (truth) implies love and firmness, Agraha means engenders and therefore equal to force.

He fought against corrupted leaders, corrupted government employers etc. and also asked government to pass 'Lok Pal Bill' to strengthen the countries condition. He even fasted for a long duration of time only for the cause of democratic country.

He also encouraged lakh of people to vote for the correct leader, realised people of their rights and asked each and every citizen to vote.

"A vote is like a rifle; its usefulness depends upon characters of user"

His revolution was encouraged by the youths of the country. All over country students, Teachers, women, common-man has done candle march all over the country to do lightening in all over darkness of country. This shows the democracy of the wide nation India.

3. The role of women in democracy : Women of India from educated to illiterate are aware of their right to and even to represent country by getting elected and should be given equal right to participate in countries welfare .

Now a days also, women suffer lack of democracy in India, in village, town etc. still girls and women are not allowed to do jobs and

Scanned by CamScanner

get education and enjoy the democracy, these problems can also be sort out by the women's stand because India is a democratic country, each and everyone his equal right to do what they want under rules and regulations of constitution.

"Our great democracies still tend to think that a stupid man is more likely to be honest than a clever man."

It is necessary for each and every citizen to participate in countries welfare programme and to strengthen countries democracy.

4. The upcoming role of Arvind Kejariwal in strengthening democracy : Arvind Kejariwal with the help of all youth department like college students, common men and women, middle and high class population of Delhi and many other came up with the great strength the of democracy. Arvind Kejariwal has won election and raised the name of Aam Admi Party (AAP) and has proved the main significant role of youth and strengthen democracy in Delhi. He made people realised about their right in a democratic country.

In our great strengthen democracy the common man will have more powers than others, because there are most of them and the will of majority is supreme.

He enjoyed serving for county all his efforts and encouraged Aam Janta for choosing right leaders for themself and became successful. He involved all the common population and therefore name of party is rising day by day.

"Democracy cannot succeed unless those who express their choice are prepared to choose wisely. The real safeguard of democracy is therefore is education."

At last but not least I want to say India standing tall on the four pillars of democracy namely- Legislature, Judiciary, Executive. Media and considered the largest democracy in the world. India is a nation of varied religions, cultures etc. where every second person is said to have different opinion about every second thing, and each and every opinion of citizens of country is important to strengthen democracy. Every citizens should try to wake up and do one or the other things for countries welfare and their welfare, democracy will strengthen itself.

❑

Do you Know ?

- The words 'Staymeva Jayate' have been from "Muunduka Uppanishad.
- Indira point located in Nicobar island is the southern most point of India.
- Dronacharya awards are given to outstanding sports coaches.
- The words "Vande Matram" meaning hail motherland has been taken from Bankim Chandra Chaterjee's Bengali novel 'Anand math'.

Scanned by CamScanner

Challenges and Remedies of Education In India After Independence

Poonam Yadav
B. Ed.

Today, have we really become independent and if not, why ? What is the reason behind that ? Despite political independence we are not Independent in true sense, at present also we are slaves of some bad habits of initiating.

If we talk about education, what is education ? According to me, education is not that knowledge which we gain only from schools and colleges but in true sense it means the knowledge which we acquire from our parents and other family members at our home and from those who are always around us, from those to whom we admire. Here, the question arises are the children of our country getting proper and real Indian education ? Are we really following our Indian values ?

The list of problems or we can say challenges of education in India after independence is vast but we can discuss some points. First of all I ask here, whom should be blamed for the distorting shape of our Indianness and true education ? Should we blame on one person or one group ? No, not actually becomes shaping our young generation is not the task of only one, it takes many people is that parents, teachers, atmosphere etc., they play a vital role in shaping our young generation.

Today people have become very practical, they always think practically, they have become insensitive. In vedic education. students were taught to control over their senses, to lead a disciplined life, to have a good characters. In older days parents and grand parents used to take help of Jatak Kathas, stories of Panchtantra and others religious stories to nurture their children with good thoughts and good character. But today the place of those things have taken by the video games, full of violence, social networking sites, Today, people are having lack of time for each others and it results in insensitivity . If parents are have this type of attitude towards others, then what they will teach to their children. Morals and values are deceasing day by day.

There is a famous Chinese saying with says, "If you plan for one year, plant grain, if you plan for ten years plant trees and if you plan for hundred years plant men."

Today, can we say that each and every teacher is doing his /her duty sincerely ? No, not at all, in government schools mostly teachers are just coming there to get salary and to distribute mid-day meals, which proved to be hazardous for many students, many a times. They daily come to school, pass this time and goes back to their home. Are they really doing their duty ? Some teachers takes help of keys to give answers to the students they don't take much pain in going through lessons thoroughly which results in student's sufferings. Many a time we have seen an English teacher not using proper words while conversation with students or while teaching, it affects students much because they will also learn that only which they are taught by their teachers.

Really, morals and values are missing

Scanned by CamScanner

somewhere those days have gone when children used to respect their parents, elders. Youth is much influenced by the western culture. They don't live in reality, they live in fantacies, they are restless, the distorted shape of our atmosphere is also responsible. Cheap movies are affecting very much.

Here, I would like to share an incident, which was reported in Times of India newspaper, which took place recently.

In Delhi, some students of VII and IX std. have beaten a boy of XI std. so badly that he lost his life. Do you know the cause behind that ? They used to blackmail him for money so that they can enjoy smocking but when he refused and complained against them for the school administration, they took their revenge by beating him badly as a result he died. Why these types of juvenile crimes are increasing day by day ? Rapes, murders, kid-napping, robbery, theft etc. in all these some tender minds are engaged. What is the reason behind their violent attitude ? They are not getting good education not is their school, not at their homes and not even through society. so, if they are not getting proper real education then one day definitely either they will make other people their prey so other clever people will make them prey.

Today, nobody have time neither parents nor do the teachers, they have forgotten their true duty. Parents are engaged in earning money and if they are illustrate also they are unable to nurture their children well. Teachers are also engaged in making money by coaching and giving bookish knowledge.

I think, for sorting their problems we have to take some concrete steps. A subject related to morals and the values should be made compulsory in all school and villages.

To observe teachers either of government school or of private an eye should always be kept on them, to confirm that they are doing their job sincerely or not.

Awareness regarding our culture and tradition should be spread through social networking Sites, Radio, T.V. and other informative channels.

In every school and college there should be psychologist, psychiatrist, and counselor so that they can analyse students' stress and guide them properly.

Parent should give time to their children and should observe their activities and should they to nurture good habits in them.

Teachers, apart from giving bookish knowledge should give much priority to shaping their minds as a good human beings. They should be made aware of their rights and duties.

As we all know that large population is the root cause of every problem in our country so that measures of population control should be taken. Actually measures have taken but not strictly so, a strict law should be made to control population.

Those movies should be banned or sensored which give or can give bad effect on young minds.

Parents should keep an eye while their children use social networking sites.

Now, I would like to conclude, I have not given much priority to that education. Which is given by schools and colleges but to that which make a person a human being, a true human being. So I am sure, if these steps are taken we will be able to shape our India a 'True India'. ☐

Wordsworth : The Poet of Nature

Priti Goswami
B. A. II

Words worth is a name of great poet. He composed many Poems. We find him as a mystic Poet as per his poems.

He was born on 7th April, 1770 in Cockermoth.

To understand the life of him who in tennyos's words, "uttered nothing base". It is well to read. The Prelude which records the impressions made upon words worth's mind from his earliest recollection untill his full method in 1805 when the Poem was completed. Outwardly his long and uneventful life devides itself naturally into four periods (1) his childhood and youth, in the Cumberland Hills from 1770 to 1787 (2) A Period of uncertainty storm and stress including his university life of Cambridge. He travels abroad and his revolution experience from 1787 to 1797. (3) A short but signification period of finding himself and his work from 1797 to 1799. (4) A long period of retirement in Northem like region where he was born and where for a full half Century he lived so close to nature that her influence is reflected in all his poetry. When one has autlined these four periods, he has told almost all that can be told of life which is marked, not by events.

But largely by spiritual experiences Words worth was born in 1770 at Cockermoth, Cumberland, where the Derwent.

Fairest of all rever loved to blend his mumurs with by nurse's song.

And from his older shades & rocky falls.

And from fards & shallows. sent a notice.

That flowed along my dreams.

He revolted against the artificial poetry which was written for the upper classes. He regarded nature as the best teacher in 1843. He become England's Poet lerreate. He died on April 23, 1850. His lierory contribution consists of lyrical Bollads 1798. Poems in Two Volumes and the prelude that is a sort of his autobiography and was published after his death in 1850. His memorable lines are as follow :

- "The world in too much with us is late and soon."
- "Getting and spending, we lay waste our time and power."
- "Little we see in nature that is ours : we have given our heats away a sording boo!"

"Child is the father of a man." ❑

Humankind has not woven the web of life. We are but one thread within it. Whatever we do to the web, we do to ourselves. All things are bound together. All things connect.

- Chief Seattle

Scanned by CamScanner

Mahatma Gandhi

M - Man of high calibre.
A - Admired by all.
H - Humbly served.
A - Active up to last.
T - Truth was his life.
M - Made India independent.
A - Avoided Personal Comforts.

G - Genius in all respects.
A - Ahinsa he preached
N - Nobles were his thoughts.
D - Devoted his life for the Nation.
H - Honest life he led throughout.
I - Indian he was in all respects.

Swami Vivekanand : Ideal of Youths

'O' My heart Swami Vivekananda
Where have you gone ?
Taking the torch of knowledge;
All world you have shone.
Speaking on 'Zero'
You became a 'Hero'
All Foreigners are defeated.
You have won.
You told us about Motherland.
We must always bend.

Teaching : A mission, not a mere Occupation

The goal of life is something higher and nobler than mere earning money. Earning money in a respectable manners is, no doubt, good, That is also part of our life struggle, for we will have to live. But that can not be the or and aim of life. Therefore the Upadhaya Sangham has been emphasizing both the aspects of Dharma & Artha. "Dharma, Artha, Kama and Moksha are four cardinals human aspirations envissaged in our culture". We call them Chaturvidha Purusharthas. It is the duty of every man to aspire, to strive to achieve them. In line with this harry cultural tradition, you have taken to his this teaching line not merrily as a Profession, as a mere occupation. It is a mission. Mere occupation cannot be a mission. A higher aim, a nobler motivation, is necessary for a mission. Occupation is only a means to take out our livelihood, to take care of our family. But yours is a mission. What is expected of us and the nature of work. We are expected to carry out. ❖

"जिस प्रकार माँ के दूध पर पलने वाला बच्चा अधिक स्वस्थ्य एवं बलवान होता है, वैसे ही मातृभाषा पढ़ने से मन तथा मस्तिष्क मजबूत होते हैं।"❖

—स्वामी विवेकानन्द

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति

'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:'

ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 11 सितम्बर, 1998 में स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय के साथ की गई थी। डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी पेशे से डॉक्टर थे, वह एक लेखक, समाजसेवी के साथ-साथ अच्छे शिक्षाविद् भी थे। इसीलिए सब शिक्षित हों, इस प्रबल इच्छा के कारण उन्होंने ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना की। Work is worship उनके जीवन की Philosophy थी। 2002 में उनके मरणोपरांत महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा संभाली गयी। लोग मिलते गये, कारवाँ बढ़ता गया और उन्होंने अपने महाविद्यालय की टीम के साथ ज्ञान महाविद्यालय को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और आज यह अलीगढ़ में प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में महाविद्यालय में पाँच संकायों में स्नातक कोर्स बी. एड., बी.एस-सी., बी.कॉम, बी.ए., बी.बी.ए. व बी.सी.ए. संचालित हैं तथा परास्नातक स्तर पर एम.कॉम का कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है। डॉ. गौतम गोयल के निर्देशन में ज्ञान आई. टी. आई. कोर्स की भी मान्यता दो ट्रेडों (इलैक्ट्रिशियन व फिटर) में प्राप्त हो चुकी है।

सचिव महोदय के प्रयासों द्वारा अलीगढ़ जिले में सर्वप्रथम बी.टी.सी. कोर्स की मान्यता प्राप्त हुई तथा 50 सीटों के साथ 2010 का बैच प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ है। महाविद्यालय के शिक्षा विभाग में आज 200 सीटें हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है कि यू.जी.सी. द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ग्रेडिंग में शिक्षा संकाय को 'A' ग्रेड से नवाजा गया है। यह आगरा विश्वविद्यालय का प्रथम कॉलेज है, जिसने सबसे अधिक अंकों के साथ 'A' ग्रेड प्राप्त किया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में Aeronautical Material में Delft University, Holland से पी.एच-डी. करके आये डॉ. गौतम गोयल का विशेष योगदान सराहनीय रहा।

महाविद्यालय में चार भवन डॉ. रघुनन्दन प्रसाद प्रशासनिक भवन, सरस्वती भवन, ज्ञान भवन व स्वराज्यलता भवन हैं। सरस्वती भवन जहाँ जन्तु, वनस्पति, रसायन, भौतिकी, भूगोल व मनोविज्ञान की प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है। वहीं पर ज्ञान भवन में मनोविज्ञान, भाषा, कला व शिल्प, शारीरिक व स्वास्थ्य, विज्ञान संगीत आदि के रिसोर्स सेंटर हैं तथा सुसज्जित आई. सी. टी. प्रयोगशाला है, जहाँ पर सभी कम्प्यूटर पर वाई.फाई. सिस्टम लगे हुए हैं। दोनों ही भवनों में पूरी तरह से कम्प्यूटीकृत पुस्तकालय है, जहाँ पर लगभग 20,000 Text Books हैं। इसके अतिरिक्त जर्नल, न्यूज लैटर, पत्रिका तथा समाचार पत्रों की भी पुस्तकालय में सुविधा है। इसके अतिरिक्त सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पूरा कैम्पस सी.सी.टी.वी. कैमरों से सुसज्जित है।

आगरा विश्वविद्यायल में पहला एकमात्र स्व-वित्त पोषित कॉलेज है, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम चल रहा है। इस वर्ष सात दिवसीय कैम्प नजदीक के ग्राम रुस्तमपुर सकत खाँ, मन्दिर नगला में आयोजित किया गया था।

महाविद्यालय द्वारा ग्राम बढ़ौली फतेहखाँ को सत्र 2012-13 में शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गोद लिया गया था। इसके अन्तर्गत 12 लड़कियों को महाविद्यालय में नि:शुल्क शिक्षण सुविधा दी गई तथा **''स्वराज्य स्वावलम्बी योजना''** के अंतर्गत 26 सिलाई मशीनों का वितरण गाँव की कन्यायों की शादी के शुभ अवसर पर प्रबन्धतन्त्र द्वारा किया जा चुका है। इस वर्ष महाविद्यालय द्वारा पाँच अन्य गाँव (मईनाथ, मुकन्दपुर, न्यौंटी, मड़राक, पड़ियावली) को गोद लिया गया है। इसके अन्तर्गत बी. ए. में प्रवेश के समय प्रत्येक गाँव की दो लड़कियों के लिए प्रधान की संस्तुति पर शिक्षण शुल्क माफ किया गया है। इसी क्रम में **''स्वराज्य स्वावलम्बी योजना''** के अन्तर्गत ज्ञान आई. टी. आई में प्रवेश के समय 5,000 रु. की छात्र भर प्रदान की जाती है। रक्तदान, भ्रष्टाचार रैली, पॉलोथिन हटाओ-पर्यावरण बचाओ आदि सामाजिक कार्य भी समय-समय पर आयोजित होते रहे हैं।

महाविद्यालय में विभिन्न समितियां हैं, जिनके अन्तर्गत वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक अनुशासन समिति है जिसकी देख-रेख में ही महाविद्यालय के छात्र अनुशासित रहते हैं। आगरा विश्वविद्यालय में पहली बार छात्र/छात्राओं की उपस्थिति के लिए Biometric Machine भी लगी हुई है।

Scanned by CamScanner

वर्तमान में महाविद्यालय में लगभग 2,000 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत् है तथा 70 टीचिंग स्टाफ व 50 नॉन टीचिंग स्टाफ है। अत: महाविद्यालय में शिक्षक–शिक्षार्थी का अनुपात लगभग 1 : 30 है जोकि सेल्फ फाइनेंस संस्था में एक बहुत ही अहम् बात है। गतवर्ष से इण्टरमीडिएट में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 30 प्रतिशत व द्वितीय श्रेणी पास करने वाले विद्यार्थियों को 20 प्रतिशत का शिक्षण शुल्क में लाभ छात्रवृत्ति के रूप में दिया जाता है।

महाविद्यालय में सेवायोजन प्रकोष्ठ व पुरातन छात्र समिति भी है। सेवायोजन प्रकोष्ठ के अंतर्गत छात्र/छात्राओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। कई छात्र/छात्रायें सरकारी सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। पुरातन छात्र समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष पदों के पदाधिकारियों के चयन हेतु प्रत्येक वर्ष पुरातन छात्र/छात्राओं से चुनाव कराया जाता है। इस वर्ष भी पुरातन छात्र समिति द्वारा एक पत्रिका **'ज्ञान दीप'** का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष 16 दिसम्बर को पुरातन छात्र/छात्राओं के लिये **'ज्ञान दिवस'** का आयोजन किया जाता है, जिसके अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है।

महाविद्यालय का **"Vision to be a Center of Excellence"** है। इस श्रृंखला में शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखने हेतु Internal Quality Assurance Cell (IQAC) भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को सेमिनार, कार्यशालाओं व Orientation Programme में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस सत्र में लगभग 80 प्रतिशत प्राध्यापकों को ए.एम.यू. में Orientation Programme के लिए भेजा गया और इसी तरह से कई प्राध्यापकों को Refresher Course के लिए भी भेजा गया। शिक्षण में नवीनता लाने हेतु शिक्षकों को Computer Note Book उपलब्ध कराये गये हैं। महाविद्यालय में समय–समय पर अध्ययन– अध्यापन की गुणवत्ता व उसमें नवीनता लाने के लिये अतिथि व्याख्यान, कार्यशालाओं व सेमिनारों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय **'ज्ञान पुष्प'** के नाम से वार्षिक पत्रिका व त्रैमासिक पत्रक **'ज्ञान दर्शन'** का भी सफल प्रकाशन कर रहा है। **'ज्ञान भव'** नामक जर्नल का तृतीय संस्करण भी प्रकाशित करने जा रहा है। इस वर्ष महाविद्यालय को डोयेक सोसायटी (भारत सरकार द्वारा संचालित) द्वारा **बी.सी.सी** तथा **सी. सी.सी.** कम्प्यूटर कोर्स के संचालन की मान्यता प्रदान की गई है।

कमजोर छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की गई। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा युक्त होने के कारण छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सत्रीय परीक्षाओं को **ओ. एम.आर. शीट** के माध्यम से कराया गया।

छात्रों के लिए खेल में प्रोत्साहन हेतु सभी प्रकार के खेलों का आयोजन होता है तथा छात्रों के लिए अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है एवं उसमें भाग लेने वाले छात्रों के आने जाने का व्यय महाविद्यालय द्वारा किया जाता है तथा प्रतिभाशाली खिलाड़ी छात्रों के लिए **'ज्ञान गौरव'** व **'ज्ञान केसरी'** पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

महाविद्यालय की छात्राओं के लिए बस सुविधा का भी प्रावधान है। बस स्टैण्ड चौराहे से महाविद्यालय तक बस सेवा उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र/छात्राओं के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाता है।

ज्ञान परिवार नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसके अंतर्गत युवा वर्ग के रुझान के अनुरूप फेसबुक पर भी **'ज्ञान वाटिका'** नामक ग्रुप के साथ छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों से जुड़ा हुआ है।

महाविद्यालय भविष्य के लिए अनेक योजनायें बना रहा है, जिनमें मुख्य हैं :

1. एम. एड. की मान्यता प्राप्त करना।
2. महाविद्यालय को स्वायत्त (Autonomous) संस्था बनाना।
3. सभी विभागों में सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन कराना।
4. प्रत्येक संकाय से जर्नल प्रकाशित कराना।
5. शिक्षण गुणवत्ता हेतु पाँच दिवसीय Orientation Programme का आयोजन कराना।
6. महाविद्यालय में इग्नू अध्ययन केन्द्र की स्थापना का प्रयास।

अंत में जिस तरह से ज्ञान महाविद्यालय ऊँचाइयों की तरफ अग्रसर है। हम सभी ज्ञान परिवार के सदस्य मिलकर इसकी उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ❖

डॉ. वाई के. गुप्ता
प्राचार्य

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ सत्र 2007–08 में हुआ। विश्वविद्यालय के नियमानुसार 100 छात्र/छात्राओं की एक यूनिट गठित की गई, इस यूनिट में बी.ए., बी.एस.–सी. एवं बी.कॉम. के छात्र/छात्राओं से नामांकन फार्म भरवाकर एक यूनिट तैयार की गई। इस यूनिट के संचालन हेतु विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. बी.डी. उपाध्याय का अनुमोदन कार्यक्रम अधिकारी पद पर महाविद्यालय की संस्तुति पर किया गया।

❑ राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. जिस समाज में रहकर कार्य करते हैं, उसे भली–भांति समझना चाहिए।
2. अपने समाज की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को पहचानकर उनके समाधान में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना।
3. स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक दायित्व की भावना विकसित करना।
4. व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं के समाधान खोजने में अपनी शिक्षा का उपयोग करना।
5. नेतृत्व के गुण एवं प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण ग्रहण करना।
6. संकटकालीन एवं दैवीय आपदाओं का सामना करने की क्षमता विकसित करना।
7. राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरूपता को क्रियात्मक रूप देना।
8. दूसरों के प्रति सम्मान एवं वैज्ञानिक सोच की भावना विकसित करना और लोगों को कुरीतियों, भ्रष्टाचार, कट्टरता, जातिवाद व साम्प्रदायिकता के विरूद्ध संघर्ष के लिये प्रोत्साहित करना।
9. अनुशासन की भावना जाग्रत करते हुए सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम : राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रम होते हैं :

अ. **नियमित कार्यक्रम** : इस प्रकार के कार्यक्रमों में स्वयंसेवी अपने पंजीकरण वर्ष के कार्यकाल में 240 घण्टे की विविध गतिविधियों में भाग लेते हैं। अभिग्रहीत बस्ती में एकदिवसीय शिविरों के आयोजन के साथ–साथ महाविद्यालयों में नगर के अनेक सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

ब. **विशेष कार्यक्रम** : इस प्रकार के कार्यक्रमों में किसी ग्राम सभा में एक सात दिवसीय रात–दिन शिविर का आयोजन किया जाता है। इस शिविर में छात्राओं को प्रतिदिन प्रातः आकर शिविर से शाम को जाने की अनुमति होती है। छात्र कार्यक्रम अधिकारी के साथ रात्रि विश्राम उसी ग्राम में करते हैं। इसका समय–समय पर निरीक्षण विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है। इस बार राष्ट्रीय सेवा योजना डा. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के समन्वयक डा. रामवीर सिंह चौहान द्वारा भी विशेष शिविर का औचक निरीक्षण किया गया। आपने भी अपने निरीक्षण में छात्रों को कार्यक्रम का उद्देश्य एवं शिविर गीत की महत्वता पर बारीकी से प्रकाश डाला तथा शिविर के सफल संचालन की तारीफ की। इस महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के छात्र/छात्राओं ने राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे– पल्स पोलियो, वृक्षारोपण, सफाई अभियान के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लिया। स्वयंसेवियों द्वारा राष्ट्रीय दिवस जैसे– सद्भावना दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस आदि का आयोजन नियमित रूप से प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय में होता है।

❑ राष्ट्रीय सेवा योजना के दूरगामी लाभ बहुत हैं। विविध चयन प्रक्रियाओं में इसके अतिरिक्त अंक निर्धारित हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संचालन के लिये कॉलेज के सचिव महोदय लगातार प्रोत्साहित करते रहते हैं। प्राचार्य महोदय समय–समय पर शिविर में निरीक्षण के साथ भाग लेकर छात्र/छात्राओं को समाज सेवा के लिये प्रेरित करते हैं। इसका लाभ आने वाले वर्षों में छात्र/छात्राओं को सार्वजनिक जीवन में प्राप्त होता है।

❑ राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समिति का भी महाविद्यालय स्तर पर गठन किया गया है, जिनमें सदस्यों के रूप में डा. ललित उपाध्याय, डा. कविता, श्री अमित कुमार की सक्रिय सहभागिता से सामाजिक कार्य को बेहतर तरीके से विभिन्न स्तरों पर आयोजित किया गया है।

❖

डा. बी. डी. उपाध्याय
कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट

वाणिज्य संकाय

वाणिज्य संकाय इस महाविद्यालय का एक आधारभूत एवं प्रतिष्ठित संकाय है। महाविद्यालय का शुभारम्भ सन् 1998 में बी.कॉम. कक्षाओं से हुआ और यह गौरव की बात है कि पिछले 16 वर्षों से संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रणी है। बी.कॉम. त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की सुविधा व्यवसाय प्रशासन समूह, लेखा एवं विधि समूह तथा व्यवहारिक व्यवसायिक अर्थशास्त्र समूह तीन विभागों के अन्तर्गत है और एम.कॉम. की सुविधा व्यवसाय प्रशासन तथा लेखा एवं विधि दो समूहों में है।

इस संकाय ने पिछले सत्र 2012-13 में बी.कॉम. एवं एम.कॉम के परीक्षा परिणामों में लगभग शत-प्रतिशत सफलता दी है। विभागाध्यक्ष डॉ. जे. के. शर्मा के कुशल निर्देशन में सहयोगी प्राध्यापकों डॉ. आर. के. कुशवाहा, डॉ. समर रजा, डॉ. हीरेश गोयल व श्री गिरीश कुमार गुप्ता के अतुलनीय सहयोग से विभाग प्रगतिशील बना हुआ है। इस सत्र में नव नियुक्ति डॉ. संध्या सैंगर जी की हुई है। वर्तमान सत्र में बी.कॉम. में लगभग 650 छात्र/छात्राएं एवं एम.कॉम. में लगभग 80 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत हैं। संकाय के सभी प्राध्यापक यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कालिज से प्रशिक्षित हैं।

विभागीय प्राध्यापकों ने महाविद्यालय के अनेक कार्यों में उत्कृष्ट भूमिका निभायी है। डॉ. आर. के. कुशवाहा (संकाय संयोजक), डॉ. समर रजा (प्रवेश समिति प्रभारी), डॉ. हीरेश गोयल (सहायक अनुशासन अधिकारी), गिरीश कुमार गुप्ता (क्रीड़ा समिति सदस्य) एवं डॉ. संध्या सैंगर (साहित्यिक समिति सदस्य) की भूमिका बखूवी निभा रहे हैं। वार्षिक पत्रिका **ज्ञानपुष्प**- 2012-13 के प्रधान सम्पादक एवं संकाय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. हीरेश गोयल जी का उत्कृष्ट योगदान रहा है। वर्तमान सत्र 2013-14 में वाणिज्य संकाय के विभागाध्यक्ष एवं कर्मठ वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. वाई के. गुप्ता, जोकि उप प्राचार्य थे, उनकी नियुक्ति प्राचार्य पद पर हुई है। उनके निर्देशन में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

सत्र 2011-12 में एम. कॉम. उत्तरार्द्ध छात्र विनोद कुमार ने यू.जी.सी. नेट दिसम्बर 2012 परीक्षा वाणिज्य विभाग के सुयोग्य निर्देशन में उत्तीर्ण की है।

बी.कॉम. तृतीय वर्ष में अध्ययनरत छात्रा कु. हिमानी भारद्वाज जिसे महाविद्यालय द्वारा गतवर्ष 'ज्ञान गौरव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, आज वह .22 राइफल शूटिंग में राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम स्थापित कर चुकी है।

ए.एम.यू. एकेडेमिक स्टाफ कालेज में आयोजित **'एकेडेमिक लीडरशिप'** विषय पर आयोजित कार्यशाला में विभागाध्यक्ष डॉ. जे. के. शर्मा ने हिस्सा लिया तथा सभी प्राध्यापक राष्ट्रीय सेमीनारों, संगोष्ठियों में यथा सम्भव अपने पेपरों को प्रकाशित करने का प्रयास समय-समय पर करते रहते हैं, जिससे वे समय की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने को अद्यतन रख सकें।

संकाय के कुशल सौजन्य से **'राष्ट्रीय पेंशन स्वावलम्बन योजना'** (एन.पी.एस.) विषय कार्यशाला का आयोजन ग्लोबल एजूकेशन सोसायटी के चैयरमैन डॉ. गिरीश कुमार वार्ष्णेय द्वारा महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ, ताकि वे इस योजना का लाभ उठा सकें। 3 फरवरी, 2014 को एक अतिथि व्याख्यान डॉ. जी.एस. मोदी, प्राचार्य राजकीय डिग्री कालेज, माँट (मथुरा) द्वारा **'भारत के आर्थिक विकास में ई-कॉमर्स का योगदान'** विषय पर किया गया।

संकाय द्वारा बी.कॉम./एम.कॉम के अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का **शैक्षिक भ्रमण** 1.12.2013 को डॉ. राजेश कुमार कुशवाह जी के कुशल निर्देशन में हुआ, जिसमें आगरा के ताजमहल, लालकिले का भ्रमण किया गया। समय-समय पर छात्रों को उनकी आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है, ताकि छात्र अपने विषय में पारंगत हो सकें। ❖

डा. जे. के. शर्मा विभागाध्यक्ष

विज्ञान संकाय

महाविद्यालय में विज्ञान संकाय डॉ. एस.एस. यादव प्रभारी के कुशल नेतृत्व में प्रगति पथ पर लगातार अग्रसर है। विज्ञान संकाय में छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। यह उपलब्धि प्राध्यापकों की कड़ी मेहनत, कर्मठता, ईमानदारी एवं कार्यकुशलता से है। महाविद्यालय के प्राध्यापक अति व्यस्तता के बाबजूद राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में पेपर भेजते हैं तथा सेमीनार, कार्यशाला एवं गोष्ठियों में

Scanned by CamScanner

भाग लेते रहते हैं। विज्ञान संकाय की समस्त लैबें (रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान) नवीन उपकरणों से सुसज्जित हैं। समस्त विभागों का परीक्षाफल उत्साहजनक रहा है। संकाय के प्राध्यापक डॉ. एस.एस. यादव, डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, डॉ. बी.डी. उपाध्याय महाविद्यालय की समिति सी.डी.सी. (कालेज डेवलपमेंट काउंसिल) के सदस्य हैं। डॉ. बी. डी. उपाध्याय रसायन विज्ञान विषय के अलावा एन.एस.एस., अनुशासन समिति व सामाजिक सरोकार समिति के प्रभारी का कार्य बड़ी कुशलता से कर रहे हैं। डॉ. एस.एस. यादव समन्वयक रोजगार समिति, प्रभारी परीक्षा समिति, समन्वयक पुरातन छात्र समिति के साथ उपप्राचार्य का कार्य भी देख रहे हैं। विज्ञान संकाय की छात्रा कु. दीपिका चौहान ने अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया जोकि डी. एस. कालिज में आयोजित की गयी थी। भारत विकास परिषद सुन्दरम शाखा द्वारा आयोजित स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर प्रतियोगिता में वेदान्त ने तृतीय व कु. रेशू गुप्ता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

रसायन विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का रसायन विज्ञान विभाग प्रभारी, डॉ. एस.एस. यादव एवं विभाग के साथी प्राध्यापक डॉ. बी. डी. उपाध्याय, डॉ. सौरभ शर्मा, डा. कविता सिंह के सहयोग से प्रगति कर रहा है। समस्त प्राध्यापक उच्च शिक्षा के मानकों को पूर्ण कर रहे हैं। डॉ. एस.एस. यादव, डॉ. सौरभ शर्मा, डॉ. कविता सिंह के दो पेपर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आयोजित सेमीनार में छपे हैं। इसी प्रकार एक पेपर गाजियाबाद में आयोजित सेमीनार में छपा है जोकि विशेष उपलब्धि है। विभाग के प्राध्यापक डॉ. बी. डी. उपाध्याय व डॉ. एस.एस. यादव विश्वविद्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया में पिछले तीन सत्रों से सहभागिता कर रहे हैं।

इसी वर्ष प्रबुद्ध मनीषि एवं शिक्षाविद् डॉ. (श्रीमती) अंजुल सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़ ने **''वान्डिंग इन मॉलिक्यूल्स''** विषय पर एक अतिथि व्याख्यान प्रस्तुत किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान **''एकेडेमिक लीडर शिप''** पर डॉ. एस.एस. यादव ने सहभागिता की जोकि ए.एम.यू. के समस्त वरिष्ठ विभागाध्यक्षों के लिए आयोजित की गयी थी।

भौतिक विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का भौतिक विज्ञान विभाग श्री वीरेन्द्र पाल सिंह यादव प्रभारी एवं साथी श्री मनोज कुमार के कुशल निर्देशन में निरन्तर कार्यरत है। इस वर्ष विभाग में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता डॉ. कविशंकर वार्ष्णेय, एसोसिएट प्रोफेसर भौतिक विज्ञान विभाग डी.एस. कालेज, अलीगढ़ रहे, जिसका विषय **'इलैक्ट्रानिक्स के सिद्धान्त'** था। विभाग के प्राध्यापकों ने NIIT के अलीगढ़ केन्द्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में विशेष सहयोग प्रदान किया।

जन्तु विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का जन्तु विज्ञान विभाग डॉ. प्रमोद कुमार प्रभारी अपने सहकर्मी डॉ. शचि भारती के साथ लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। संकाय के छात्र/छात्राओं का शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का प्रभार भी विभाग ने संभाला है। यह भ्रमण आगरा की विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल व लाल किला को देखने के लिए भेजा गया था। प्राणि विज्ञान के छात्र/छात्राओं का स्पेशल टूर शेखा झील, अलीगढ़ एवं पटना पक्षी विहार एटा गया, जिसमें छात्र/छात्राओं ने पारिस्थितिकी के बारे में जानकारी प्राप्त की। विभाग में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसके मुख्य वक्ता डॉ. वी. के. वार्ष्णेय, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़ थे। व्याख्यान का विषय **''भ्रूण विकास की विभिन्न अवस्थाएं''** था। दिल्ली में आयोजित **''वुमेन्स डिसीजन मेकिंग पोजीशन''** सेमीनार में महाविद्यालय की तरफ से डॉ. शचि भारती ने सहभागिता की। विभाग के प्राध्यापक अपने शोध पत्र भी भेजते रहते हैं।

वनस्पति विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का वनस्पति विज्ञान विभाग डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ प्रभारी एवं साथी डॉ. सुहैल अनवर व श्री राजेश कुमार के कुशल संचालन में प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस वर्ष विभाग द्वारा **'डी.एन.ए. स्ट्रक्चर एवं रेप्लीकेशन'** विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. रेखा आर्या, विभागाध्यक्षा, वनस्पति विज्ञान विभाग, टीकाराम कन्या महाविद्यालय अलीगढ़ थीं। विभाग के छात्र/छात्राओं को ए.एम.यू. द्वारा **''गुलिस्ता–ए–सैय्यद''** पार्क में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी **''क्राइजैन्थियम एवं रोज शो–2013''** में भ्रमण कराया गया तथा ए.एम.यू. के ही बॉटनीकल गार्डन एवं किले का भी भ्रमण कराया गया। डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ ने एकेडेमिक स्टाफ कालेज, ए.एम.यू. में आयोजित स्पेशल समर स्कूल प्रोग्राम व एकेडेमिक लीडर–शिप पर व्याख्यान में भाग लिया। आप छात्र कल्याण समिति की प्रभारी भी हैं तथा कालेज डेवलपमेंट कमेटी की सदस्या भी हैं। गत तीन वर्षों से विश्वविद्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया

Scanned by CamScanner

में भाग ले रही हैं। डॉ. सुहैल अनवर को शोध में महारत् हासिल है। आपने राष्ट्रीय सिम्पोजियम, सोलन में अपना पेपर प्रस्तुत किया। आपको 21-23 नवम्बर, 2013 को आयोजित सिम्पोजियम में लीडर टाक पर बुलाया भी था।

गणित विभाग :

महाविद्यालय के गणित विभाग प्रभारी डॉ. वाई.डी. गौतम एवं सहपाठी श्री अमित कुमार वार्ष्णेय के कुशल निर्देशन में प्रगति कर रहा है। विभाग के प्राध्यापकों का सहयोग महाविद्यालय के छात्रों के छात्रवृत्ति फार्म भरवाने, विश्वविद्यालय के पंजीयन फार्म भरने, पुरातन छात्र समिति चुनाव एवं खेलकूद कार्यक्रमों में सराहनीय रहा है। गणित विभाग में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन कराया गया, जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. (श्रीमती) अचलेश कुमारी एसो. प्रो. विभागाध्यक्ष गणित विभाग, श्री वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़ थीं। व्याख्यान का विषय '**सम एल्जबरिक स्ट्रक्चर**' पर आधारित था।

डा. एस. एस. यादव प्रभारी

कला संकाय

उ० प्र० सरकार व डा. भीमराव अम्बेडकर विश्व-विद्यालय, आगरा द्वारा सत्र 2010-11 में ज्ञान महाविद्यालय को सात विषय हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान तथा शिक्षा शास्त्र के साथ मान्यता प्रदान की गई। सत्र 2012-13 में तृतीय वर्ष का प्रथम बैच उत्तीर्ण होकर निकला, जिसका परीक्षा परिणाम 95 प्रतिशत रहा। सत्र 2013-14 में कला संकाय में 514 छात्र-छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। डॉ. विवेक मिश्रा प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं।

- संकाय में प्रत्येक प्राध्यापक एक आदर्श 'Mentor' की भूमिका निभा रहे हैं, जिसमें प्राध्यापक छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याओं आदि के बारे में जानने का प्रयास कर समाधान करने का प्रयत्न करते हैं।

- 25.10.2013 को कला संकाय के सभी छात्र-छात्राओं का **ओ.एम.आर. सीट** से एक बहुविकल्पीय टेस्ट कराया गया, जिससे छात्र-छात्राओं में **ओ.एम.आर. सीट** द्वारा बहु-विकल्पीय प्रश्नों को हल करने की योग्यता आए।

- 24.11.2013 को कला संकाय के छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण के अन्तर्गत एक टूर आगरा गया। जहाँ छात्र-छात्राओं ने ताजमहल एवं लालकिले को देखा एवं उसका इतिहास को जानने का प्रयास किया।

हिन्दी विभाग :

- हिन्दी विषय में डॉ. बीना अग्रवाल प्राध्यापिका हैं। डॉ. बीना अग्रवाल महाविद्यालय की साहित्यिक कार्यक्रम समिति में सदस्य हैं। हिन्दी का अतिथि व्याख्यान डॉ. वेदवती राठी (एसो. प्रोफेसर) डी.एस. कालेज, अलीगढ़ द्वारा किया गया, जिसका विषय '**आधुनिकता बनाम परम्परा**' रखा गया।

अंग्रेजी विभाग :

- अंग्रेजी विषय में डॉ. कुंवरपाल सिंह प्राध्यापक हैं। आप महाविद्यालय की अध्यापक कल्याण समिति तथा ज्ञान रोजगार एवं सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं। अंग्रेजी का अतिथि व्याख्यान डॉ. बीना अग्रवाल (विभागाध्यक्ष व एसो. प्रोफेसर) डी. एस. कालेज, अलीगढ़ द्वारा किया गया, जिसका विषय- **'Need of English Language in the Era of Globalization'** रखा गया।

समाजशास्त्र विभाग :

- समाजशास्त्र विषय में डॉ. विवेक मिश्रा एवं डॉ. ललित उपाध्याय प्रध्यापक हैं। डॉ. विवेक मिश्रा महाविद्यालय की छात्र कल्याण समिति, सामाजिक दायित्व कार्यक्रम, अनुशासन समिति एवं परीक्षा समिति में सदस्य हैं। डॉ. ललित उपाध्याय महाविद्यालय की अध्यापक कल्याण समिति, सामाजिक दायित्व कार्यक्रम, राष्ट्रीय सेवा योजना समिति में सक्रिय सदस्य हैं। डॉ. ललित उपाध्याय महाविद्यालय की मीडिया व सोशल मीडिया समन्वय सम्बन्धी कार्यों का भी बखूवी निर्वहन कर रहे हैं। इस वर्ष INTACH, New Delhi द्वारा आयोजित **MY LIVING ICON** पर दो इण्टर कालेज- सरस्वती विद्या मन्दिर, अलीगढ़ एवं रघुवीर सहाय इण्टर कालेज, अलीगढ़ में सुप्रसिद्ध कवि डॉ. गोपाल दास नीरज के ऊपर '**निवन्ध एवं चित्रकला प्रतियोगिताएं**' आयोजित कराई गईं। समाजशास्त्र का अतिथि व्याख्यान डॉ. श्रीमती कृष्णा अग्रवाल (विभागाध्यक्ष, एस.वी. कालेज, अलीगढ़) द्वारा दिया गया, जिसका विषय '**सुरक्षित महिलाएं, विकसित समाज**' रहा।

भूगोल विभाग :

- भूगोल विषय में डॉ. सोमवीर सिंह प्राध्यापक हैं। महाविद्यालय की रैगिंग नियन्त्रण समिति, खेलकूद समिति एवं परीक्षा समिति में सदस्य हैं। भूगोल की सुसज्जित प्रयोगशाला है। भूगोल का अतिथि व्याख्यान डॉ. एस.एल. गुप्ता (एसो. प्रोफेसर, पी.सी. बागला डिग्री कालेज, हाथरस) द्वारा दिया गया, जिसका विषय '**पर्यावरण अवनयन एवं उसके दुष्परिणाम**' रहा। भूगोल विभाग की उपकरणों से युक्त सुसज्जित एवं आधुनिक प्रयोगशाला है। डा. सोमवीर सिंह ने UGC NET परीक्षा उत्तीर्ण की है।

Scanned by CamScanner

अर्थशास्त्र विभाग :

■ अर्थशास्त्र विषय में डॉ. दीनानाथ गुप्ता एवं डॉ. रत्न प्रकाश प्राध्यापक हैं। डॉ. रत्न प्रकाश शोध एवं प्रकाशन समिति तथा कालिज डेवलपमेन्ट काउंसिल के सदस्य भी हैं। अर्थशास्त्र का अतिथि व्याख्यान डॉ. ए. के. तौमर (विभागाध्यक्ष डी. एस. कालेज, अलीगढ़) द्वारा दिया गया, जिसका विषय '**वर्तमान परिस्थिति में अर्थशास्त्र एवं अर्थशास्त्री की भूमिका**' रखा गया।

मनोविज्ञान विभाग :

■ मनोविज्ञान विषय में डॉ. विकेश चन्द्र गुप्ता प्राध्यापक हैं। वे महाविद्यालय की अनुशासन समिति में भी हैं। मनोविज्ञान पर अतिथि व्याख्यान डॉ. भगतसिंह (विभागाध्यक्ष एवं एसो. प्रोफेसर एस. वी. कालेज, अलीगढ़) द्वारा किया गया, जिसका विषय '**मनोविज्ञान में परीक्षण एवं प्रयोग लिखने की विधि**' था। मनोविज्ञान विभाग की उपकरणों से युक्त सुसज्जित एवं आधुनिक प्रयोगशाला है।

शिक्षाशास्त्र विभाग :

शिक्षाशास्त्र में श्री रामकिशन शर्मा व श्री नीरेश कुमार प्राध्यापक हैं। आप अनुशासन समिति के सदस्य हैं। छात्रों की रुचि को शिक्षा के प्रति बढ़ावा देने हेतु बी.टी.सी. एवं बी.एड. विभाग के प्राध्यापकों के द्वारा भी समय-समय पर अतिथि व्याख्यान कराए गए।

अन्य गतिविधियाँ

■ कला संकाय के बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र सचिन सैनी ने कुश्ती में '**जिला केसरी**' का खिताब हासिल किया एवं उन्हें महाविद्यालय ने 'ज्ञान केसरी' का सम्मान दिया। इसके साथ ही यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कालेज, ए.एम.यू., अलीगढ़ ने 20 मई, 2013 तक **Staff Development Pragramme for College Teachers** का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. सोमवीर सिंह तथा डॉ. रत्न प्रकाश ने भाग लिया।

■ यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कालेज, ए.एम.यू. अलीगढ़ ने 30 मई से 12 जून, 2013 तक **Faculty in Social Science** का आयोजन किया। यह कार्यक्रम ICSSR नई दिल्ली द्वारा प्रवर्तित था। इसमें डॉ. विवेक मिश्रा एवं डॉ. रत्न प्रकाश ने भाग लिया।

■ पी.एच.डी. चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, नई दिल्ली में 25 जुलाई, 2013 को ग्लोबल सी.एस.आर. समिट में कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत साझा विकास पर चर्चा की गई, जिसमें डॉ. ललित उपाध्याय ने भाग लिया।

■ 3 अप्रैल, 2013 को Guild for Service ने इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में यू.एन. वूमेन के समर्थन तथा इण्डिया इण्टरनेशनल हेवीवेट सेन्टर के सहयोग से National Consultation on Widows : Denial & Deprivation of Rights from Private to Public & Policy Realm में डॉ. ललित उपाध्याय ने भाग लिया, जिसको राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा डॉ. वी. मोहिनी गिरी ने सम्बोधित किया।

डा. विवेक मिश्रा प्रभारी

प्रबन्धन संकाय

❑ मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि प्रबन्धन संकाय में बी.बी.ए. की कक्षाएं निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। गत वर्षों में विद्यार्थियों ने निरन्तर प्रगति की है। विद्यार्थियों ने समय- समय पर महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रबन्ध कौशल व सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए विभिन्न प्रकार की अनेक सफलतायें प्राप्त की हैं। इसके लिये प्राध्यापक भी उनको प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस विभाग में श्री तुमल कुमार, कु. राधासिंह व कु. प्रियंका शर्मा द्वारा अपना अत्यन्त कुशल नेतृत्व प्रदान किया जा रहा है।

❑ विद्यार्थियों के लिए Group Discussion के माध्यम से विभिन्न विषयों पर चर्चायें करायी जाती हैं। प्रबन्धन के विभिन्न आयामों के बारे में उन्हें जानकारियाँ दी जाती है। जैसे- **Time Management, Personality Management and Communication Skill** पर विशेष जोर दिया जाता है जिससे कि वे समय का सदुपयोग करके अपनी Life को व्यवस्थित कर सकते हैं। छात्र-छात्राओं को समय-समय पर यह भी बताया जाता है कि वे अपने **Career** को कैसे आकार दे सकते हैं। इसके लिये उन्हें अपने **Resume** कैसे **Attractive** (आकर्षक) बनाना चाहिये, किस प्रकार से **Interview** का सामना करना चाहिए ? कैसे **Personality** को **Develop** कर सकते हैं? ऐसे ही विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देने के लिये अनेकों महाविद्यालयों से प्राध्यापकों को आमंत्रित किया जाता है, जिससे छात्र/छात्राओं को नवीनतम जानकारियाँ मिल सकें। प्रबन्ध संकाय के प्रवक्ता महाविद्यालय की ज्ञान रोजगार परामर्श समिति में भी अपनी सक्रिय सहभागिता निभा रहे हैं।

अभिषेक कुमार विभागाध्यक्ष

Scanned by CamScanner

B.C.A. DEPT.

- In the dimension of computer education Gyan Mahavidyalaya started B.C.A. Department in 2010 which is affiliated to Dr. B.R. Ambedkar University, Agra. Now B.C.A. Department is growing at rapid rate continuously day by day. B.C.A. Department also provides a training programme to spread computer literacy in other department students.

- B. C. A. Department is dedicated to provide a quality education by including a latest technology day by day as the requirement of corporate sector by which students can build up themselves as the demand of IT Industry in this cut throat competition.

- B. C. A. Department also organizes a special training program to improve the soft skill (Communication skill, Presentation skill, Personality Development & Time Management etc.) of the students to fulfill the requirement of the industry.

- A special guidance is provided to final year students about 'How to make Resume ? How to crack the interview by some mock activity.' Department invites to some industrial guru as a guest lecturer to share our experience and to aware the latest trend in industry which is beneficial to the students to get success in our career as time to time.

- Mr. Ranjan Singh is the Member of College Examination Committee contribute in the college for development of O.M.R. Examinations and Mr. Raj Kishore Chauhan is the member of discipline committee both are working very sincerely.

- In this session Km. Rítiviza Mittal and Km. Rachna Sharma joined this department.

❖

Mr. Lalit Kumar Varshney H. O. D.

शिक्षक-शिक्षा विभाग

(NAAC Grade 'A')

महाविद्यालय का शिक्षक-शिक्षा विभाग डॉ. खजान सिंह, विभागाध्यक्ष के कुशल निर्देशन में प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर है, विभाग में सभी शिक्षक साथी- श्रीमती आभाकृष्ण जौहरी, श्रीमती सरिता याज्ञनिक, डॉ. रेखा शर्मा, श्रीमती रंजना सिंह, श्रीमती मधु चाहर, श्री लख्मी चन्द, श्री गिर्राज किशोर, श्री रामकिशन शर्मा, श्रीमती शिवानी सारस्वत, श्रीमती पूनम माहेश्वरी, श्री नीलेश कुमार, मिस. शालिनी शर्मा, मिस भावना सारस्वत व श्री राजेश कुमार के सहयोग से विभाग उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। बी.एड. में छात्र संख्या-200 (दो यूनिट) है, जो अलीगढ़ मण्डल में एक गौरवमयी स्थान है, विभाग के समस्त प्राध्यापकगण अपने आपको अद्यतन करने के लिए सेमीनार, राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के शोध पत्र एवं कार्यशालाओं में भाग लेते रहते हैं। साथ ही साथ छात्र-छात्राओं को पाठयक्रम के साथ-साथ छात्राओं एवं प्राध्यापकों के ज्ञानवर्धन के लिए विषय विशेषज्ञों के द्वारा अतिथि व्याख्यान समय-समय पर कराये जाते हैं। विभाग के तीन प्राध्यापकों श्रीमती सरिता याज्ञनिक, श्रीमती पूनम माहेश्वरी एवं श्री लख्मी चन्द्र ने शिक्षण कार्य करते रहने के साथ-साथ, राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) पास कर ली है।

विभाग हेतु सुसज्जित पुस्तकालय सहित वाचनालय, आर्ट एण्ड क्राफ्ट संसाधन केन्द्र, मनोविज्ञान संस्थान केन्द्र, विज्ञान एवं गणित संसाधन केन्द्र, भाषा लैब, आई.सी.टी. एवं ई.टी. संसाधन केन्द्र, फिजीकल शिक्षा संसाधन केन्द्र हैं। गत वर्षों में बी.एड. की विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षा में छात्र-छात्राएं शत-प्रतिशत उत्तीर्ण हुए हैं। सत्र 2013-14 में विभागीय क्रियाकलाप निम्नांकित हैं :

अ. **सांस्कृतिक कार्यक्रम** : नृत्यकला, गायन-वादन, रंगोली, सजावट प्रतियोगिता एवं मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

ब. **साहित्यिक कार्यक्रम** : निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर बनाना प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। कु. निधि वार्ष्णेय (बी.एड.) छात्रा ने भारत विकास परिषद् की सुन्दरम् शाखा द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता (15 जिलों की) में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। कु. निधि वार्ष्णेय का चयन हैदराबाद में प्रस्तावित राष्ट्रीय स्तर की भाषण प्रतियोगिता के लिए किया गया है।

Scanned by CamScanner

स. **खेलकूद कार्यक्रम :** छात्रों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास के लिए इण्डोर एवं आउटडोर खेल समय-समय पर आयोजित कराये जाते रहते हैं।

द. **विश्वसनीय सलाहकार समिति :** छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक, नौकरी प्रतियोगिता की तैयारी, सामाजिक परिवेश में समायोजन की समस्या एवं व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान एवं सामना करने सम्बन्धी समाधान के लिए सभी विद्यार्थियों को 20 - 20 के समूह में विभाजित कर एक-एक प्राध्यापक (विश्वसनीय सलाहकार) के निर्देशन में रखा गया है।

शिक्षक-शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित अन्तर्राष्ट्रीय जनरल **'ज्ञान भव'** शिक्षक-शिक्षा द्वारा एक- Biannual and Bilingual International Journal **"GYAN BHAV"** ISSN 2319-8419 प्रकाशित किया जाता है जिसके **Editor-in-Chief** डॉ. गौतम गोयल, **सलाहकार समिति-** डॉ. वेदराम 'वेदार्थी (Ex. Dean, Faculty of Education, Agra University, Agra), प्रो. हरचरण लाल शर्मा (Curriculum Specialist (Moscow), (Ex. NCERT, NIOS-GOI) Consultant and Co-ordinator, School Education Think Tank, Surya Foundation, New Delhi), डॉ. राजीव कुमार (Head, Deptt. of Teacher Education, S.V.(PG) College, Aligarh) डॉ. जय प्रकाश सिंह (D.Lit., Head, Deptt. of Teacher Education, D.S. (PG) College, Aligarh) डॉ. पुनीता गोविन (Asstt. Professor, Deptt. of Education, A.M.U., Aligarh)।

Editorial Board- डॉ.रत्नप्रकाश (Director of Research), डॉ. खजानसिंह (Head, Deptt. of Teacher Education)।

Editorial Secretary- श्री सुमित सक्सैना व श्री नवीन वार्ष्णेय हैं।

विभाग के प्राध्यापकों के लिए पुनर्बोध एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम : शिक्षक-शिक्षा विभाग के प्राध्यापकों को महाविद्यालय समय-समय पर उनको उन्मुख करने के लिए ए.एस.सी., ए.एम.यू., अलीगढ़ केन्द्र पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम में प्रतिभाग के लिए भेजता रहता है एवं अपने-अपने विषय में पुनर्बोध के लिए भी प्राध्यापकगण यू.जी.सी. द्वारा संचालित कार्यक्रमों में जाते रहते हैं।

विभाग के शिक्षकों को अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा आमंत्रण : बी.एड. विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. खजान सिंह के नेतृत्व में विषय विशेषज्ञ के रूप में -श्रीमती सरिता याज्ञनिक, श्रीमती शिवानी सारस्वत, श्रीमती रंजना सिंह एवं श्री पुष्पेन्द्र सिंह को जी. एल. ए. विश्वविद्यालय, मथुरा के कुलसचिव डॉ. अशोक कुमार सिंह ने आमंत्रित किया और विचार विमर्श कर विश्वविद्यालय के बी.एड. विभाग को और अधिक आधुनिक बनाने सम्बन्धी सुझाव प्रदान किए गए।

वास्तविक सत्यता का प्रमाण : महाविद्यालय का शिक्षक-शिक्षा विभाग नैक 'ए' ग्रेड प्राप्त कर चुका है, जो अलीगढ़ मण्डल में प्रथम एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में सर्वोच्च अंक 3.16 (सी.जी.पी.ए.) प्राप्त कर चुका है और अधिक अंक (सी.जी.पी.ए.) प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।

नयी आशा की किरण : पी.जी. स्तर पर एम.एड. की मान्यता एवं बी.एड. की 100 सीट (अतिरिक्त) अथवा तृतीय यूनिट की मान्यता के लिए भी प्रयासरत् हैं। 'ज्ञान परिवार' गुणात्मक शिक्षा के लिए वचनबद्ध है। ❖

डा. खजान सिंह विभागाध्यक्ष

बी.टी.सी. विभाग

ज्ञान महाविद्यालय में जनवरी सन् 2011 से बी.टी.सी. (बैच 2010) योग्य प्राध्यापकगणों द्वारा विधिवत रूप से संचालित है। बी.टी.सी. 2010 का एक बैच 24 फरीवरी 2013 को सफलता पूर्वक पूर्ण हो चुका, जिसका परीखा परिणाम 100 प्रतिशत रहा, जिसमें विनीता वर्मा, साक्षी, भारती उपाध्याय तथा निर्मल कुमारी ने उच्चतम अंक प्राप्त किये। इस वर्ष बी.टी.सी. बैच 2012 का द्वितीय सेमेस्टर का अध्यापक चल रहा है।

विभाग में पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनेक स्मरणीय कार्यक्रमों का अयोजन वर्ष भर किया जाता है, जिसमें विविध प्रतियोगिताएं अतिथि व्याख्यान, समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के द्वारा प्रशिक्षुओं के ज्ञान-वर्धन का प्रयास किया जाता है, एवं उनकी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से छिपी प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है। विभाग के सभी प्रवक्ता वर्ष-भर चलने वाले इन कार्यक्रमों में अपना सक्रिय सहयोग देते रहे हैं।

07.05.13 को विभाग में बैच-2010 की विदाई व बैच-2012 का स्वागत (प्रतिभा परिचय) समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें सभी नवागंतुक प्रशिक्षुओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया तथा अपने वरिष्ठ साथियों को विदाई दी, इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य जी ने (NAAC) द्वारा किए गए मूल्यांकन में सहयोग देने वाले

Scanned by CamScanner

2010 के प्रशिक्षुओं को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

27, 28 व 29 मई, 2013 को विभाग में अतिथि व्याख्यान माला का अयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. रतन प्रकाश जी (ज्ञान कॉलेज अर्थशास्त्र विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता) द्वारा **'साक्षरता, गरीबी रेखा, पर्यावरण संरक्षण'** आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये।

05.06.2013 को विभाग द्वारा **विश्व पर्यावरण दिवस** के अवसर पर **जागरुकता रैली** निकाली गई, जिसमें प्रशिक्षुओं ने प्राथमिक विद्यालय, बढ़ौली में पौधारोपण किया तथा धरती को हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया, इस मौके पर विभाग के सभी प्रवक्तागण मौजूद थे।

15.07.2013 को विभाग में **निबन्ध लेखन प्रतियोगिता** हुई जिसका विषय था **'शिक्षा में निजीकरण उपयोगी या अनुपयोगी'** जिसमें प्रथम प्रमोद कुमार, द्वितीय चन्द्रवीर सिंह तथा तृतीय स्थान अमित कुमार ने प्राप्त किया।

22.07.2013 को विभाग में **कहानी लेखन प्रतियोगिता** हुई, जिसमें प्रथम स्थान माला कुमारी, द्वितीय स्थान अशोक कुमार तथा तृतीय स्थान वंदना ने प्राप्त किया।

1.08.2013 को अखिल भारतीय **निबन्ध लेखन प्रतियोगिता** हुई जिसमें सभी प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

08.08.2013 को विभाग में **मेंहदी प्रतियोगिता** हुई जिसमें प्रथम हिना व मेघा द्वितीय स्थान अंशू गुप्ता तृतीय स्थान ममता ने प्राप्त किया।

17.08.2013 को **राखी मेकिंग व थाल सज्जा प्रतियोगिता** हुई। राखी में प्रथम ममता, द्वितीय प्रियंवदा, तृतीय स्थान नताशा तथा थाल सज्जा में प्रथम ललित मोहन, प्रियंवदा द्वितीय ममता तथा तृतीय स्थान ज्योति ने प्राप्त किया।

05.09.2013 को शिक्षक दिवस के अवसर पर विभाग के प्रशिक्षुओं द्वारा **'प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की दशा'** पर एक नाटक प्रस्तुत किया।

30.10.2013 को **दिवाली मेले** के अवसर पर प्रशिक्षुओं द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर तथा दुकानें लगाई गईं। शिविर में स्वास्थ्य से सम्बन्धित सलाह तथा निःशुल्क दवाईयाँ वितरित की गईं।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ :

1. 22 फरवरी से 31 मार्च, 2013 तक यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के ओरियन्टेशन प्रोग्राम में भाग लिया तथा **'ए'** ग्रेड प्राप्त किया। **'वर्तमान संगीत की शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीकियाँ'** नामक पुस्तक में एक अध्याय लिखा जिसका शीर्षक था, **'वर्तमान संगीत शिक्षण में परिवर्तन की आवश्यकता– हाँ या ना'** ?
2. 8 फरवरी 2013 को यू.जी.सी से जे.आर.एफ. अनुदान पत्र बी.टी.सी. प्रवक्ता श्री पुष्पेन्द्र सिंह को प्राप्त हुआ।
3. 11 एवं 12 मई, 2013 को विवेकानन्द कॉलिज ऑफ एजूकेशन, अलीगढ़ द्वारा संचालित कार्यशाला में भाग लिया। जिसका प्रकरण **'Construction, Administration and Scoring of Achievement Test in Education'** था, में अपने विचार प्रस्तुत किए।
4. 25 मई 2013 को PM College of Education अलीगढ़ द्वारा संचालित कार्यशाला में भाग लिया तथा अपने विचार प्रस्तुत किए, जिसका प्रकरण **'Technique for the Effective Teaching and Learning'** था।
5. 20 व 25 मई 2013 तक UGC A. S. C., A.M.U. अलीगढ़ द्वारा संचालित 'Short Term Course" में भाग लिया, जिसका प्रकरण **'Staff Development Programme for College Teachers'** था।
6. 30 मई से 12 जून 2013 तक (ICSSR New Delhi) द्वारा संचालित 14 दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया जिसका प्रकरण **'Capacity Building Programme of Social Science Faculty'** था।
7. 17 सितम्बर, 2013 को Varshney Mahavidhyalaya द्वारा संचालित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया जिसका प्रकरण था **'शिक्षा में स्वायत्तता'** जिसमें **'भारतीय शिक्षा की मूलभूत आवश्यकता'** नामक प्रकरण पर अपना पत्र प्रस्तुत किया।
8. 27-28 अक्टूबर, 2013 को Monad University द्वारा संचालित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया व **'Use of Multi Media in Education'** नामक पत्र प्रस्तुत किया।
9. अगस्त 2013 में UP-TET की प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर की परीक्षा एव सितम्बर, 2013 में CTET की प्राथमिक स्तर की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण की।
10. 9 फरवरी, 2014 को (Three Dot's College, Aligarh) द्वारा संचालित नेशनल सेमिनार में भाग लिया एवं तीन पत्र प्रस्तुत किए गए।

श्रीमती बबिता यादव

Scanned by CamScanner

पुस्तकालय

वर्तमान समय में शिक्षा के लिए पुस्तकालय का विशेष महत्व है। शिक्षा ही राष्ट्र की नींव है। नींव जितनी मजबूत होगी, उतना ही सुदृढ़शाली राष्ट्र रूपी महल का निर्माण हो सकेगा। पुस्तकालय एक सार्वजनिक संस्था होती है। सन 1930 में भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक श्री एस.आर. रंगनाथ जी ने ग्रन्थालय विज्ञान के पाँच नियमों को बनाया था। **श्री रंगनाथ जी ने अपनी पुस्तक 'Five Laws of Library Science'** प्रकाशित की, उस पुस्तक में **श्री रंगनाथ जी ने जो पाँच सूत्र बतलाए,** वह निम्नांकित हैं :

1. पुस्तकें सभी के उपयोग के लिए हैं।
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।
4. पाठय के समय की बचत हो।
5. पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।

महाविद्यालय में पुस्तकालय का संक्षिप्त विवरण – महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना सन् 1998 में लघु रूप में हुई थी, जो आज पूर्णतया समृद्ध एवं आधुनिकतम तकनीक से युक्त है। पुस्तकालय पूर्णरूपेण Computerised है तथा Library Management Software Autoeye 1.1 नामक नवीनतम प्रोग्राम से संचालित है वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 20,000 से अधिक पुस्तकें हैं।

महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या विश्वविद्यालय एवं शासन के नियमों के अनुरूप है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विभिन्न कोर्सों एवं अलग–2 विषयों से सम्बन्धित अद्यतन संस्करण, अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त लेखकों की पुस्तकें कालिज के प्राध्यापकों एवं प्रबन्धकों द्वारा तैयार की गई सूची अनुसार क्रय करना प्रवन्धतन्त्र की विशेषता है।

महाविद्यालय में Library Advisory Committee की समय–समय पर मीटिंग करायी जाती है, जिसमें पुस्तकालय से सम्बन्धित आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर विचार–विमर्श किया जाता है।

महाविद्यालय में शिक्षा विभाग को U.G.C. की National Assessment & Accreditation Council (NAAC) की टीम ने अपने सर्वे में महाविद्यालय को 'A' ग्रेड का प्रमाणपत्र दिया, जिसमें पुस्तकालय को सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए।

पुस्तकालय महाविद्यालय के तीन भवनों **सरस्वती भवन, ज्ञान भवन एवं स्वराज्य भवन** में अलग–अलग स्थापित है।

अ. माँ सरस्वती पुस्तकालय – इस पुस्तकालय में बी.काम., बी.एस–सी., बी.ए., बी.सी.ए., बी.बी.ए. एवं एम. कॉम. विषयों के नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार प्रसिद्ध एवं विद्वान देशी–विदेशी लेखकों की पुस्तकें शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को उपलब्ध करायी जाती हैं। यह पुस्तकालय आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित पूर्णतया कम्प्यूटराइज्ड है। पुस्तकालय में पुस्तकें Glass Door Almirah में सुव्यवस्थित तरीके से सुसज्जित हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी जरूरत की पुस्तक को आसानी खोज सकें अथवा अपने इच्छित विषय से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक तक आसानी से पहुँच सकें। इस पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित लगभग 8,000 Text Books हैं। इसके अलावा Reference Books, Dictionaries, Journals, Encyclopaedia, Periodicals, Novels आदि भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। शोध से सम्बन्धित Research Materials भी पुस्तकालय में उपलब्ध है। इस पुस्तकालय की देखरेख व प्रबन्धन **श्री डी. के. रावतजी** के द्वारा की जाती है।

ब. ज्ञान पुस्तकालय– इस पुस्तकालय में बी.एड. एवं बी.टी.सी. विषय की Text Books उपलब्ध करायी जाती हैं। बी.एड. के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न लेखकों की 8,000 Text Books पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

✦ बी.टी.सी. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न लेखकों की 2,100 Text Books पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

✦ इस पुस्तकालय में Teacher's Guide के नाम से अलग से विशाल संग्रह है, जिसमें NCERT से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनका Gyanendra Collection के नाम से अलग संग्रहालय है।

✦ Education से सम्बन्धित लगभग 18 Journals एवं 8 Magazines क्रमवद्ध तरीके से मंगाए जा रहे हैं।

✦ इस पुस्तकालय में Reference Books, General Books, Dictionaries, Encyclopaedias, Year Books, Religious Books का अलग से संग्रह है।

✦ चार Daily Newspapers एवं रोजगार समाचार पत्र नियमित रूप से आ रहे हैं।

✦ इसके अलावा इस पुस्तकालय में e-resource station के नाम से अलग से विभाग है, जहाँ Users आकर Internet की सुविधा का लाभ लेते हैं। पुस्तकालय में तीन प्रकार की सीटें उपलब्ध हैं, जिससे पाठक अपनी आवश्यकतानुसार एवं सुविधानुसार सीटों का चयन कर

Scanned by CamScanner

आसानी से बैठकर पढ़ सकें। पुस्तकालय में Computer से Issue/Return का कार्य किया जाता है। पुस्तकालय में सी.सी. टी.वी. कैमरे भी लगे हैं, जिससे विद्यार्थियों की गतिविधियों पर नजर रखी जा सके।

स. स्वराज्य पुस्तकालय : इस पुस्तकालय में IT विषय की Text Books उपलब्ध करायी जाती हैं। पुस्तकालय खुलने का समय प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक है। पुस्तकालय से विद्यार्थियों को 14 दिनों के लिए Text Books दी जाती हैं।

पुस्तकालय द्वारा Users को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की जाती हैं :

1. Open Access Service
2. Circulation Service
3. References Service
4. Information Display & Notification Service
5. Book Bank Service
6. Online Public Access Catalogue Service
7. Clipping Service
8. E-Resource Station Service

❖

सुषमा वर्मा
पुस्तकालयध्यक्षा

छात्र कल्याण समिति

ज्ञान महाविद्यालय में छात्र कल्याण समिति डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ प्रभारी व सहयोगी सदस्यों डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. आर. के. कुशवाह, श्रीमती मधु चाहर, श्रीमती शोभा सारस्वत व श्री रंजन कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में कार्य कर रही है। सत्र 2013-14 में छात्र कल्याण समिति द्वारा छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार की सुविधायें दी गई हैं :

◆ महाविद्यालय में स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिये इण्टरमीडिएट में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को 30 प्रतिशत की व द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को 20 प्रतिशत की मेधावी छात्रवृत्ति शिक्षण शुल्क में दी गई, जिससे लगभग 1125 छात्र-छात्राएं लाभान्वित हुए।

◆ प्रत्येक प्रवेशित विद्यार्थियों को महाविद्यालय प्रबन्ध तन्त्र की ओर से एक घड़ी या टी-शर्ट उपहार स्वरूप दी गई जिसका उद्देश्य घड़ी विद्यार्थियों को कीमती समय की याद दिलाती रहे तथा टी-शर्ट उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रखे।

◆ जुलाई 17 व 18, 2013 को बी.टी.सी. व बी.एड. के छात्र-छात्राओं को प्रेरणास्रोत धावक मिल्खा सिंह की जीवनी पर आधारित फिल्म "भाग मिल्खा भाग" ग्राण्ड सुरजीत सिनेमाघर में प्रबन्धन द्वारा निःशुल्क दिखाई गयी।

◆ स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं को प्रसाद वितरण के साथ-साथ एक-एक पेन उपहार स्वरूप दिया गया।

◆ हरियाली तीज के उपलक्ष्य पर महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को घेवर का वितरण किया गया।

◆ 26 अक्टूबर 2013 को मुख्य अतिथि डॉ. अरुण कुमार दीक्षित, प्राचार्य एस.वी. कालेज, अलीगढ़ तथा ज्ञान महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा बी.बी.ए. व बी. सी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं को टेबलेट का वितरण निःशुल्क किया गया।

◆ 11 नवम्बर 2013 को मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर **'विज्ञान और समाज'** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा 14 नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर निबन्ध प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियों को एक-एक टिफिन उपहार में दिए गए।

◆ 9 दिसम्बर, 2013 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के 'गुलिस्तान-ए-सैय्यद' पार्क में आयोजित प्रदर्शनी **'क्राइजैन्थिनम एवं रोज शो-2013'** में बी.एस-सी. (2009) के छात्र-छात्राओं को निःशुल्क भ्रमण कराया गया।

◆ नववर्ष 2014 के आगमन पर प्रत्येक छात्र-छात्राओं को माँ सरस्वती का एक-एक केलेण्डर दिया गया।

◆ 8 जनवरी 2014 को बी.एड. व बी.टी.सी. के छात्र-छात्राओं को मेक्रो-टीचिंग के लिये श्यामपट, डस्टर व पोइन्टर का वितरण उनकी आवश्यकताओं को देखते हुए निःशुल्क दिया गया।

◆ संक्रान्ति के अवसर पर छात्र-छात्राओं को दोपहर के भोजन में इस त्यौहार के प्रमुख व्यंजन खिचड़ी, दही, अचार व पापड़ तथा अन्त में प्रसाद के रूप में रेवड़ी का वितरण किया गया।

◆ छात्र कल्याण समिति द्वारा छात्र-छात्राओं के विकास के लिये सामान्य ज्ञान, रंगोली व निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया तथा सभी विभागों के विभागाध्यक्षों की सहायता से अतिथि व्याख्यानों का आयोजन भी छात्र हित में कराया गया।

◆ महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को अन्तर्महाविद्यालयी

Scanned by CamScanner

व विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

◆ खेल के प्रति रुचि जागृत करने हेतु छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित खेलों में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क व यात्रा भत्ता भी दिया जाता है।

◆ इसी क्रम में डी.एस. डिग्री कालिज द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में बी.एस-सी. की छात्रा कु. दीपिका चौहान ने प्रथम तथा बी.एड. की छात्रा भूमिका माहेश्वरी ने स्वरचित कविता में प्रथम एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में कु. कोमल वार्ष्णेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

◆ बी.काम. की छात्रा कु. हिमानी भारद्वाज ने राष्ट्रीय स्तर पर निशानेबाजी में कई बार पुरस्कार प्राप्त किए तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी वह प्रयासरत है। बी.एस-सी. छात्र कैलाश कुमार बघेल ने हाकी में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पुरुष हाकी टूर्नामेन्ट में आगरा विश्वविद्यालय की हाकी टीम की ओर सहभागिता की।

◆ बी.ए. छात्र सचिन सैनी को जिला केसरी एवार्ड प्राप्त हुआ।

अन्त में छात्र कल्याण समिति महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ
प्रभारी (छात्र कल्याण समिति)

अध्यापक कल्याण समिति

महाविद्यालय में अध्यापक कल्याण समिति का गठन अध्यापकों की पारिवारिक समस्याओं पर चर्चा करने, उच्च शिक्षा के विकास हेतु शिक्षकों की भूमिका में उत्पन्न समस्याओं, महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को सुचारू रूप से बढ़ाने में शिक्षकों के समक्ष आ रही परेशानियों एवं शिक्षकों का सर्वांगीण विकास कैसे हो आदि समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से अध्यापक कल्याण समिति का गठन किया गया, जिसके तहत समय-2 पर बैठकें आयोजित की जाती हैं तथा बैठक में लिए गए निर्णय पर प्रबंध समिति/प्राचार्य द्वारा सुझाव भी दिये जाते हैं। अध्यापक कल्याण समिति की टीम का गठन प्रभारी डा. एस. एस. यादव के नेतृत्व में किया गया है जिसके सदस्य के रूप में डा. खजान सिंह, डा. समर रजा, डा. ललित उपाध्याय व डा. प्रमोद कुमार मेहनत व लगन से अपने कार्य को कर रहे हैं। अध्यापकों के कल्याण से सम्बन्धित बैठकों में कुछ लिए गए निर्णय निम्नांकित प्रकार से हैं :

1. महाविद्यालय के अध्यापकों के आने-जाने के लिए निःशुल्क बस सुविधा उपलब्ध करायी गयी है ताकि समय से एवं सुरक्षित आ जा सकें।
2. महाविद्यालय के प्राध्यापकों के लिए सेमिनार, कार्यशाला, गोष्ठियों आदि में जाने की सुविधा है,जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में और अधिक सुधार लाया जा सके व नवीन जानकारी भी प्राध्यापक हासिल कर सकें।
3. महाविद्यालय के ऐसे कर्मचारीगण जो पी. एफ. के नियमों में आते हैं, उनका पी. एफ. काटा जा रहा है एवं उतनी ही राशि महाविद्यालय उनके खाते में भेज रहा है ताकि उनका भविष्य सुरक्षित रखा जा सके।
4. महाविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के बच्चों को आई. टी. आई. में निःशुल्क प्रवेश देने की व्यवस्था की गयी है ताकि उनके बच्चे तकनीकी शिक्षा लेकर अपनी आय में वृद्धि कर सकें एवं परिवार को और सबल-सुदृढ़ बना सकें।
5. महाविद्यालय के स्टाफ को समय-समय पर अन्य सुविधायें भी उपलब्ध करायी जाती रही हैं जैसे- 'भाग मिल्खा भाग' फिल्म दिखाना एवं पेन, टी-शर्ट, घड़ी, चाय, कलैण्डर, छूट कार्ड, नोट पैड आदि प्रमुख वस्तुएं उपहार स्वरुप देना।
6. महाविद्यालय प्रबंध तंत्र द्वारा प्राध्यापकों को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की आजादी देना जैसे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के एकेडेमिक स्टाफ कालेज द्वारा समय-2 पर आयोजित ओरिएन्टेशन, रिफ्रेशर, अतिथि व्याख्यान, समर स्कूल कार्यक्रम आदि में ड्यूटी लीव के साथ सहयोग जिससे गुणवत्ता युक्त उच्च शिक्षा प्रदान की जा सके।
7. महाविद्यालय में संचालित कोर्स BCC व CCC को सीखने की व्यवस्था जिससे कम्प्यूटर के युग मे स्टाफ अपने को और अधिक सुदृढ़ बना सके।
8. महाविद्यालय के शिक्षक यदि शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल करते हैं तो उनके लिये अतिरिक्त वेतनवृद्धि सहयोग के रूप में दी जाती है।

डॉ. एस. एस. यादव
प्रभारी (अध्यापक कल्याण समिति)

Scanned by CamScanner

शोध एवं प्रकाशन समिति

इस समिति में श्रीमती आभा कृणा जौहरी, डॉ. सुहैल अनवर, डॉ. सौरभ कुमार शर्मा तथा डा. रत्न प्रकाश हैं। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों राष्ट्रीय संस्थानों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के विभागों आदि द्वारा प्रकाशित उच्चकोटि की शोध सामग्री महाविद्यालय के पुस्तकालय में लायी गयी है। इस सामग्री से प्रध्यापकण लाभान्वित हो रहे हैं। वर्तमान सत्र के दौरान अनेक प्राध्यापकों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में भाग लेकर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।

महाविद्यालय के निम्नांकित चार प्रकाशन हैं :

1. **ज्ञानभव** – यह शिक्षक शिक्षा विभाग का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल हैं। इस जर्नल की पंजीकरण संख्या आई.एस.एस. एन–2319–8419 है। यह जर्नल अर्द्ध वार्षिक तथा द्विभाषीय है। इसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों के लेख एवं शोधपत्र प्रकाशित किए जाते हैं। इसकी प्रतियाँ विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों को भेजी जाती हैं। इसके मुख्य सम्पादक डॉ. गौतम गोयल हैं।
2. **ज्ञान दीप** – यह महाविद्यालय की पुरातन छात्र समिति तथा प्लेसमेंट सैल की संयुक्त वार्षिक पत्रिका है।
3. **ज्ञान दर्शन** – यह ज्ञान महाविद्यालय का त्रैमासिक समाचार बुलेटिन है, इसका सीमित वितरण ज्ञान परिवार में किया जाता है। महाविद्यालय की प्रायः सभी गतिविधियों का समावेश इस समाचार बुलेटिन में किया जाता है।
4. **ज्ञान पुष्प**– यह महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका है। इसे महाविद्यालय का दर्पण भी कहा जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है।

❖

डॉ. रत्न प्रकाश
संयोजक, शोध एवं प्रकाशन समिति

अनुशासन समिति

महाविद्यालय में एक अनुशासन समिति का नियमित रूप से विधिवत तरीके से गठन होता आ रहा है। इस समिति के मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. बी.डी. उपाध्याय हैं। इस समिति में श्रीमती रंजना सिंह, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. सौरभ शर्मा, डॉ, विवेक मिश्रा, डॉ. हीरेश गोयल, कु. शालिनी शर्मा, श्री लखमीचन्द्र, नीरेश कुमार, नरेन्द्र कुमार, डॉ. रेखा शर्मा सदस्य सम्मिलित हैं।

महाविद्यालय में ड्रैस कोड मुख्य रूप से लागू किया जाता है। सभी छात्र/छात्राएं नियमित गणवेश में विद्यालय आते हैं। अनुशासन समिति के सदस्यों का महाविद्यालय में औचक निरीक्षण रहता है। छात्र/छात्राओं की यूनीफार्म एवं आई.कार्ड की समय–समय पर चैकिंग की जाती है।

अनुशासन हीनता को दूर करने के लिये शिक्षा प्रणाली में ऐसा परिवर्तन किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी शिक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे। सभी विद्यार्थियों को अनुशासन के प्रति बहुत सजग रहना चाहिये। एक विद्यार्थी के लिये यह आवश्यक है कि वह विद्यालय में जाने से पूर्व खुद को जांच ले कि वह विद्यालय द्वारा निर्धारित यूनीफोर्म में है या नहीं। विद्यार्थियों द्वारा अपने गुरुजनों का आदर करना अनुशासन का एक प्रमुख अंग है। आत्म संयम और अनुशासन ही जीवन में सफलता का वह द्वार है, जिससे वह सभी अभीष्ट कार्य सिद्ध कर सकता है।

❖

डॉ. बी. डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा सत्र 2012–13 में "**स्वराज्य स्वावलम्बी योजना**" का शुभारम्भ किया गया । इस योजना के अन्तर्गत ग्राम बढ़ौली फतेह खां को गोद लिया। इस योजना की शुरूआत 7/8/2012 को मा. जफर आलम, शहर विधायक, अलीगढ़ के कर कमलों द्वारा की गई। कालेज के सचिव श्री दीपक गोयल ने ग्राम सभा बढ़ौली फतेह खां की समस्त लड़कियों को बी.ए. में शिक्षण शुल्क से मुक्त करने के साथ समस्त ग्राम की लड़कियों को उनकी शादी के शुभ अवसर पर एक सिलाई मशीन देने की घोषणा की गई। इस योजना का लाभ लेने के लिए लड़कियों को निम्नांकित कार्यवाही करने की आवश्यकता होगी :

1. ग्राम प्रधान द्वारा संस्तुति किया हुआ पत्र।
2. राशन आई. कार्ड की छाया प्रति।
3. वोटर आई. कार्ड की छाया प्रति।
4. शादी का कार्ड।

Scanned by CamScanner

सर्व सम्मति से एक समिति का गठन किया गया जिसमें डॉ. बी.डी. उपाध्याय को प्रभारी नियुक्त किया गया। सहयोगकर्ता के रूप में डॉ. ललित उपाध्याय व डॉ. विवेक मिश्रा के नाम का अनुमोदन किया गया।

इस योजना के अन्तर्गत समस्त ग्राम की लड़कियां को अब तक 26 (छब्बीस) सिलाई मशीनें भेंट की जा चुकीं है। स्वराज्य स्वाबलम्बी योजना में नये संशोधन के अनुसार चयनित गाँवों की उन विवाह योग्य बालिकाओं को ही विवाह के शुभ अवसर पर सिलाई मशीन दी जावेगी,जिन्होंने ज्ञान महाविद्यालय में अध्ययन किया हो या अध्ययनरत हों। ❖

डॉ. बी. डी. उपाध्याय
प्रभारी, स्वराज्य स्वावलम्बी योजना

स्वराज्य ज्ञान योजना

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत सत्र 2013-14 स्वराज्य ज्ञान योजना का क्रियान्वयन किया गया। इस योजना में निम्नलिखित पाँच गाँवों को गोद लिया गया :

1. पड़ियावली 2. मुकन्दपुर 3. मईनाथ
4. मड़राक 5. न्होंटी

उपरोक्त पाँच गांवों में ग्राम प्रधानों के साथ अलग-अलग एक बैठक की गई। बैठक में ग्राम प्रधानों को योजना के बारे में अवगत कराया गया कि इन ग्रामों में से दो-दो लड़कियों को बी.ए. प्रवेश के समय शिक्षण शुल्क से मुक्त रखा गया है। इस पर हमारे महाविद्यालय में पड़ियावली से दो, मुकुन्दपुर से दो, मईनाथ से दो, मडराक से एक व न्होंटी से दो लड़कियाँ इस योजना के अन्तर्गत शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

उपरोक्त पाँच गाँव के लिये आई.टी.आई में प्रवेश लेने पर समस्त छात्रों को शुल्क में 5000 रु. की छूट छात्रवृत्ति के रूप में दी जायेगी। इस योजना का लाभ ग्राम सभा पड़िया वली से चार, मुकुन्दपुर से एक, मड़राक से दस, मईनाथ से दो व न्होटी से छः छात्र उठा रहे हैं। इस प्रकार उपरोक्त पाँचों गाँवों में कुल 23 (तेईस) छात्र आई.आई.टी. में प्रवेश लेकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इस योजना के सफल संचालन हेतु एक समिति का गठन किया गया, जिसमें डॉ. बी.डी. उपाध्याय को प्रभारी तथा डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. रत्न प्रकाश, श्री धर्मवीर सिंह व यतेन्द्र कुमार आदि सदस्यों को नामित किया गया।

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ितों की सहायतार्थ मुख्यमन्त्री आपदा राहत कोष के नाम 11,000 रु. (ग्यारह हजार) का एक चैक 4 जुलाई, 2013 को महाविद्यालय के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल डॉ. बी. डी. उपाध्याय प्रभारी सामाजिक दायित्व योजना, डॉ. रेखा शर्मा जन सम्पर्क अधिकारी तथा डॉ. ललित उपाध्याय संयोजक सामाजिक सरोकार एवं मीडिया ने जिलाधिकारी अलीगढ़ के कार्यालय पहुंचकर जिलाधिकारी के प्रतिनिधि श्री पंकज कुमार वर्मा (आई.ए.एस. प्रशिक्षु) को सौंपा तथा जागरण द्वारा उत्तराखण्ड आपदा राहत कोष में 5,100 रु. का एक चैक दैनिक जागरण कार्यालय, अलीगढ़ में सौंपा।

इसी सत्र में बी.टी.सी. के दिवगंत छात्र श्री प्रमोद कुमार पुत्र श्री रामखिलाडी के माता पिता की आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण 16 दिसम्बर, 2013 को एक लाख रुपये की एफ.डी. व 21,000 रुपये की धनराशि का चैक कालेज के सचिव श्री दीपक गोयल जी द्वारा प्रदान कर आर्थिक सहायता दी गई। इस पुनीत कार्य में कालेज के प्राध्यापकगण व बी.टी.सी. के छात्रों का भी सहयोग रहा। ❖

बी. डी. उपाध्याय
प्रभारी, स्वराज्य ज्ञान योजना

खेल विभाग

छात्र जीवन में शिक्षा के साथ खेलकूद का विशेष महत्व है। शरीर को बलवान, स्फूर्तियुक्त व ओजस्वी बनाने तथा मन को प्रसन्न रखने के लिए जो कार्य किए जाते हैं, वे सभी खेलकूद या व्यायाम की श्रेणी में आते हैं। शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए खेलकूद और व्यायाम करना आवश्यक है। इसी क्रम में क्रिकेट, फुटवाल, दौड़, बेडमिन्टन, टेनिस, कुश्ती आदि खेल खेले जाते हैं। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय में नियमित खेल अभ्यास भी कराया जाता है।

खेलों के महत्व को देखते हुए डा. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा भी इसवर्ष नवीनतम पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा का अनिवार्य प्रश्नपत्र प्रथम वर्ष के छात्रों हेतु किया है, जिससे वे खेल के प्रति सचेत रह सकें।

महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद सप्ताह का आयोजन 5 फरवरी से 10 फरवरी, 2014 तक किया गया, जिसका उद्घाटन श्री आले हैदर जिला खेल अधिकारी द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत खो-खो, भाला फैंक, रस्साकसी, कबड्डी, चक्का फैंक, गोला फैंक, बेडमिन्टन, शतरंज, कैरम, दौड़, लम्बी कूद आदि खेल हुए। इसके साथ ही डा. एल. सी. गौड़ मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेन्ट भी हुआ, जिसमें बी.ए. की टीम विजेता बनी, जिसका समापन मुख्य अतिथि डा. डी.सी. गुप्ता मण्डलीय वन अधिकारी,अलीगढ़ द्वारा हुआ।

नागेन्द्र सिंह मुख्य क्रीड़ा प्रभारी

Scanned by CamScanner

सत्र 2013-14 में आयोजित हुए महाविद्यालय के कार्यक्रम एक नजर में

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
1.	ज्ञान महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव	13.02.2013	**मुख्य अतिथि -** प्रोफेसर ए.आर. किदवई, निदेशक, एकेडमिक स्टॉफ कालेज, ए.एम.यू., अलीगढ़ **विशिष्ट अतिथि -** 1. श्री शमीम अहमद, सी.डी.ओ., अलीगढ़ 2. श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह, नगर आयुक्त, अलीगढ़ 3.श्रीमती ऐश्वर्य सचान धर्मपत्नी ए.डी.एम.सिटी श्री धीरेन्द्र सिंह सचान, अलीगढ़ **मानद अतिथि -** 1. श्रीमती आशादेवी, अध्यक्षा 2. श्री दीपक गोयल, सचिव	महाविद्यालय की छात्रा हिमानी भारद्वाज (निशाने बाज) को ज्ञान गौरव सम्मान में इक्यावन हजार का चैक दिया गया।
2.	विज्ञान संकाय का शैक्षिक भ्रमण	17.02.2013		छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापकगण मथुरा-वृन्दावन के भ्रमण पर
3.	कन्या भ्रूण हत्या पर निवन्ध प्रतियोगिता	18.02.2013		
4.	बी.ए. अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों का विदाई समारोह	25.02.2013		
5.	भूगोल विज्ञान का शैक्षिक भ्रमण	03.03.2013		छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापकगण मथुरा-वृन्दावन के भ्रमण पर
6.	लोकगीत व लोकनृत्य का रंगारंग कार्यक्रम	07.03.2013	ज्ञान महाविद्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, आगरा का संयुक्त आयोजन 1. मुख्य अतिथि- श्री राजीव रौतेला, जिलाधिकारी, अलीगढ़ 2. विशिष्ट अतिथि- श्रीमती शकुन्तला भारती, महापौर, अलीगढ़ 3. संयोजन- श्रीमती पवित्रा सुहृदय आकाशवाणी की सुप्रसिद्ध कलाकार एवं ब्रज रत्न से सम्मानित	
7.	स्काउट एवं गाइड शिविर	12.3.2013 से 16.3.2013 तक	श्री यतेन्द्र सक्सैना जिला संगठन कार्यालय स्काउट एवं गाइड	बी. एड. के विद्यार्थियों ने जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड) में भाग लिया
8.	बी.एड. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	20 मार्च से 23 मार्च, 2013 तक		महाविद्यालय के विद्यार्थी तथा प्राध्यापकगण
9.	बी.एड. विभाग की सत्रीय परीक्षा	1 मार्च से 8 अप्रैल, '13 तक		बी. एड. के विद्यार्थियों ने भाग लिया।
10.	बी.टी.सी. विभाग द्वारा आयोजित विदाई एवं स्वागत समारोह	7 मई, 2013	मुख्य अतिथि- डॉ. राजेन्द्र सिंह चैयरमैन एम.एम.यू., शारीरिक शिक्षा विभाग	अध्यक्षा श्रीमती आशादेवी, सचिव श्री दीपक गोयल तथा डॉ. गौतम गोयल आदि भी उपस्थित थे।
11.	विश्व पर्यावरण दिवस चेतना रैली का आयोजन	5 जून, 2013	स्थानीय ग्रामीण	गाँव बढ़ौली फतेह खाँ में बी.टी.सी. विभाग के शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

Scanned by CamScanner

12.	विद्यार्थियों को प्रेरणापद फिल्म, 'भाग मिल्खा भाग' दिखाई गयी	17.07.2013		बी.टी.सी. व बी.एड. के विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों ने ग्राण्ड सुरजीत सिनेमा घर में फिल्म देखी।
13.	बी.एड. विभाग में प्रतिभा परिचय दिवस का आयोजन	30.07.2013	वरिष्ठ पत्रकार एवं समाज सेवी श्री चन्द्रशेखर जी (मथुरा)	सचिव श्री दीपक गोयल तथा डॉ गौतम गोयल आदि ने कार्यक्रम में भाग लिया।
14.	महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण	31.07.2013		प्राचार्य, प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं
15.	स्वतन्त्रता दिवस समारोह	15.08.2013	मुख्य अतिथि- डॉ. एस. पी. एस. जादौंन, पूर्व प्राचार्य, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ एवं अध्यक्षता डा. वाई. के. गुप्ता प्राचार्य ने की।	
16.	BCC तथा CCC का प्रशिक्षण शुरू	सितम्बर 2013		दोनों पाठ्यक्रम की मान्यता एन. आई. ई. आई. टी. से है।
17.	शिक्षक दिवस का आयोजन	05.09.2013		महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शिक्षकों को सम्मानित किया।
18.	ज्ञानार्जन दिवस (संस्थापक दिवस)	11.09.2013	**मुख्य अतिथि–** श्री देवेन्द्र दीक्षित, अपर आयुक्त, अलीगढ़ मण्डल **मानद अतिथि–** प्रोफेसर अनवर जहाँ जुबैरी, पूर्व कुलपति, कालीकट विश्वविद्यालय केरल **विशिष्ट अतिथि–** श्री चाँद गोयल (आई.ए.एस.) महाराष्ट्र के पूर्व मुख्य सचिव एवं मथुरा से पधारे अनेक विद्वजन	महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी तथा सदस्यगण भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।
19.	हिन्दी दिवस	14.09.2013	प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता	
20.	राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस	24.09.2013	प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता	
21.	लैपटॉप चलाने का प्रशिक्षण	01.10.2013	एच.पी. कं. के प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्रजी व श्री मुकेश जी ने प्रशिक्षक की भूमिका का निर्वहन किया।	
22.	माता की भेंट एवं डांडिया कार्यक्रम	10.10.2013	1. श्रीमती शकुन्तला भारती महापौर, अलीगढ़ 2. श्रीमती नीरज त्यागी, डि. कमाण्डेण्ट, आर.ए.एफ. 3. श्रीमती नीलम ध्यानी, आर.ए.एफ. कमाण्डेण्ट की पत्नी 4. डॉ. पी. के. शर्मा, डी.एस. कालिज, अलीगढ़ 5. श्रीमती आशादेवी, अध्यक्षा 6. श्री दीपक गोयल, सचिव	
23.	बी.एड. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	15.10.2013		मथुरा-वृन्दावन में छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापकगण
24.	मतदाता जागरूकता कार्यक्रम	17.10.2013	मुख्य अतिथि– 1. श्री विजय कुमार, एस. डी. एम. कोल (अलीगढ़) 2. डॉ. प्रमोद कुमार पोरवाल रक्त कोष प्रभारी जिला चिकित्सालय, अलीगढ़ 3. श्री के.एल. वर्मा नायब तहसीलदार	

Scanned by CamScanner

25.	रक्तदान शिविर का आयोजन	19.10.2013	1. डॉ. अर्जुन सिंह, सी.एम.ओ., अलीगढ़ 2. डॉ. आर.पी. सिंह, अपर निदेशक (स्वास्थ्य) 3. डॉ. राहुल कुलश्रेष्ठ, जिला चिकित्सालय 4. डॉ. दिनेश गुप्ता, अलीगढ़ 5. डा. सईद, जिला चिकित्सालय 6. डॉ. प्रमोद कुमार पोरवाल, जिला चिकित्सालय	50 विद्यार्थी तथा एक शिक्षिका ने रक्त दान किया।
26.	बी.एड. विभाग में अतिथि व्याख्यान	23.10.2013	**अतिथि वक्ता-** डॉ. बी.पी. सिंह, सहायक क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू	
27.	B.B.A. व B.C.A. के विद्यार्थियों को मुफ्त टेबलेट वितरण	26.10.2013	**मुख्य अतिथि-** डॉ. ए.के. दीक्षित, प्राचार्य, एस.वी.कालेज, अलीगढ़	बी.बी.ए. व बी.सी.ए. के प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए
28.	दीपावली मेले का आयोजन	20.10.2013	**मुख्य अतिथि-** 1. श्री अनिल कुमार ध्यानी, कमाण्डेट आर.ए.एफ. 2. श्री शकुन्तला भारती, महापौर, अलीगढ़ 3. डॉ. आर.एन. सिंह, प्राचार्य डी.एस. कालिज, 4. डॉ. पी. के. शर्मा, धर्म समाज कालिज, अलीगढ़ 5. श्रीमती प्रतिभा राघव, कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर 6. कु. पूनम बजाज, सचिव, एस.वी. कालेज 7. डॉ. रेशमा जमाल, ए.एस.सी. ए.एम.यू., अलीगढ़ 8. श्रीमती मोहनी जी सांस्कृतिक कर्मी 9. श्री दीपक गोयल, सचिव 10. डॉ. गौतम गोयल तथा मथुरा से पधारे श्री काशीनाथ, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री रमेशचन्द्र गर्ग तथा श्री असलूब अहमद	
29.	उ.प्र. शासन द्वारा लैपटॉप वितरण	31.10.2013	1. श्री जमीरउल्ला, विधायक कोल, अलीगढ़ 2. जिले के प्रशासनिक अधिकारी	ज्ञान महाविद्यालय में अध्ययनरत 745 पात्र विद्यार्थियों में से उपस्थित विद्यार्थियों को कृष्णांजली नाटयशाला प्रदर्शनी मैदान, अलीगढ़ में लैपटॉप मिले।
30.	यू.जी.सी. द्वारा प्रवर्तित निबन्ध प्रतियोगिता	11.11.2013	विषय - विज्ञान और समाज	प्रतियोगिता में ज्ञान महाविद्यालय के 538 विद्यार्थियों ने भाग लिया।
31.	समाज शास्त्र विभाग में अतिथि व्याख्यान	22.11.2013	अतिथि वक्ता- डॉ. कृष्णा अग्रवाल, एसो. प्रोफेसर, एस.वी.कालिज, अलीगढ़	विषय : 'सुरक्षित महिलाएं - विकसित समाज'
32.	एप्टेक कम्प्यूटर द्वारा आयोजित कार्यशाला	23.11.2013	एप्टेक टीम के प्रशिक्षण अधिकारी	विद्यार्थियों को रोजगार-परक जानकारी दी
33.	कला संकाय का शैक्षिक भ्रमण	25.11.2013	बी.ए. विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रतिभाग	ताजमहल लालकिला, आगरा
34.	राजविद्या केन्द्र द्वारा शांति संदेश	26.11.13 से 28.11.13 तक	राजविद्या केन्द्र की टीम द्वारा श्रद्धेय श्री प्रेम रावत जी महाराज के प्रवचनों का वीडियो प्रदर्शन	छात्र-छात्रा एवं प्राध्यापकगण
35.	भौतिक विज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान	28.11.2013	अतिथि वक्ता- डॉ. कवि शंकर वार्ष्णेय एसो. प्रोफेसर, धर्मसमाज कालिज, अलीगढ़	विषय : इलैक्ट्रोनिक्स के सिद्धान्त

Scanned by CamScanner

36.	भारत विकास परिषद द्वारा भाषण प्रतियोगिता	30.11.2013	प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण	स्वाम विवेकानन्द के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता विषय पर भाषण
37.	बी.एस.सी. व बी. कॉम. का शैक्षिक भ्रमण	01.12.2013	बी.एस-सी. व बी.कॉम के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग	ताजमहल एवं लालकिला, आगरा
38.	जी.एल.ए. विश्व-विद्यालय मथुरा द्वारा ज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकों को संदर्भ व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया।	03.12.2013	डॉ. खजान सिंह, श्रीमती सरिता याजनिक, श्रीमती रंजना सिंह, श्रीमती शिवानी सारस्वत एवं श्री पुष्पेन्द्र सिंह	जी.एल.ए. विश्वविद्यालय, मथुरा
39.	जन्तु विज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान	04.12.2013	अतिथि वक्ता- डॉ. वीरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय, एसो. प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान डी.एस. कालिज, अलीगढ़	विषय : 'Embryological Development'
40.	एस्कॉट द्वारा विद्यार्थियों को प्लेसमेन्ट की ट्रेनिंग	05.12.2013	एस्कॉट के प्लेसमेन्ट प्रभारी श्री कासिफ खान, श्री संजीव कुमार शर्मा, श्री राहुल दीक्षित, श्री किरन शर्मा	विद्यार्थियों को रोजगार-परक जानकारी दी
41.	मनोविज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान	06.12.2013	अतिथि वक्ता - डॉ. भगत सिंह एसो. प्रोफेसर श्री वार्ष्णेय कालेज	विषय : 'मनोविज्ञान में परीक्षण एवं प्रयोग लिखने की विधि'
42.	एन. आई. आई. टी. के अलीगढ़ केन्द्र ने विद्यार्थियों को प्लेसमेन्ट ट्रेनिंग दी	11.12.2013	एन.आई.आई.टी. टीम के निदेशक श्री अनुराग शर्मा	विद्यार्थियों को रोजगार-परक जानकारी दी
43.	पुरातन छात्र समिति के चुनाव में पदाधिकारी निर्वाचित घोषित	12.12.2013	मुख्य अतिथि- डॉ. जयप्रकाश प्रधानाचार्य, जनता इण्टर कालेज, छेरत	श्री कुलदीप भारद्वाज (अध्यक्ष) श्री प्रदीप कुमार (उपाध्यक्ष) श्री अरुण कुमार शर्मा (सचिव) व श्री प्रशान्त जैन (कोषाध्यक्ष)
44.	जन्तु विज्ञान विभाग का शैक्षिक भ्रमण	15.12.2013	सहभाग - संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, डॉ. सुहैल अनवर व श्री राजेश कुमार	पटना पक्षी विहार एटा व शेखाझील, अलीगढ़
45.	ज्ञान दिवस का आयोजन	16.12.2013	मुख्य अतिथि- डॉ. अनिल कुमार डिमरी (रीजनल डायरेक्टर) इग्नू, डॉ. बी.पी. सिंह (महा. रीजनल डायरेक्टर) अलीगढ़ केन्द्र, इग्नू, श्री दीपक गोयल सचिव	पुरातन छात्र समिति के नव निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह व छात्र सचिन को जिला केसरी खिताव पर ज्ञान केसरी का सम्मान तथा दिवंगत छात्र प्रमोद कुमार के माता-पिता को आर्थिक सहयोग के रूप में एक लाख इक्कीस हजार रुपये की एफ.डी. द्वारा मदद
46.	गणित विभाग में अतिथि व्याख्यान	21.12.2013	अतिथि वक्ता- डॉ. अचलेश कुमारी एसो. प्रोफेसर गणित विभाग, एस. वी. कालिज, अलीगढ़	विषय : 'सम एलजेब्रिक स्ट्रक्चर'

Scanned by CamScanner

47. राष्ट्रीय सेवा योजना के एक दिवसीय चार शिविरों का आयोजन	18.12.2013 20.12.2013 24.12.2013 18.02.2013	अतिथि- ग्राम प्रधान प्रतिनिधि एवं प्रधानाध्यापिका प्राथमिक विद्यालय श्रीमती विमल सक्सैना	रुस्तमपुर सकत खाँ (नगला मंदिर)
48. भूगोल विभाग में अतिथि व्याख्यान	10.01.2014	मुख्य वक्ता- डॉ. एस.एल. गुप्ता एसोसिएट प्रोफेसर भूगोल विभाग, पी.सी. बागला कालेज, हाथरस	विषय : पर्यावरण अवनयन एवं उसके दुष्परिणाम
49. बेटी ही बचाएगी अमर उजाला के साथ संयुक्त कार्यक्रम	13.01.2014	उद्योगपति श्री मुरारीलाल अग्रवाल, श्रीमती प्रीति अग्रवाल, श्री दीपक गोयल सचिव, श्री कमल शर्मा, सिटी इंचार्ज अमर उजाला	प्राचार्य, प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं
50. हिन्दी विभाग में अतिथि व्याख्यान	17.01.2014	मुख्य अतिथि वक्ता- डॉ. वेदवती राठी विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़	विषय : 'आधुनिकता बनाम परम्परा'
51. अंग्रेजी विभाग में अतिथि व्याख्यान	24.01.2014	मुख्य वक्ता- डॉ. बीना अग्रवाल एसो. प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग, डी.एस. कालिज, अलीगढ़	विषय : 'नीड ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज इन द एरा ऑफ ग्लोब-लाइजेशन'
52. गणतंत्र दिवस समारोह	26.01.2014	प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता एवं उप प्रधानाचार्य श्री सुरेश चन्द्रा (ज्ञान आई.टी.आई.)	प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं
53. अर्थशास्त्र विभाग में अतिथि व्याख्यान	27.01.2014	डॉ. ए. के. तौमर, विभागध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़	विषय : 'वर्तमान परिस्थिति में अर्थशास्त्र एवं अर्थशास्त्री की भूमिका'
54. क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, आगरा द्वारा लोकगीत व लोकनृत्य कार्यक्रम	28.01.2014	अतिथि- डॉ. ए. पी. गौड रजिस्टीकरण अधिकारी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, आगरा एवं सचिव श्री दीपक गोयल	प्राचार्य, प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं
55. राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन	29.1.2014 से 4.2.2014 तक	उद्घाटन सत्र - डॉ. वाई. के. गुप्ता, प्राचार्य समापन सत्र - डॉ. मो. यामीन (समन्वयक रा.से.यो. ए.एम.यू., अलीगढ़)	रुस्तमपुर सकत खाँ (नगला मंदिर)
56. रसायन विज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान	30.01.2014	डॉ. अन्जुला सिंह, एसो. प्रोफेसर, रसायन विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़	विषय : 'वान्डिंग इन मॉलिक्यूल्स'
57. वाणिज्य संकाय में अतिथि व्याख्यान	03.02.2014	डॉ. जी. के. मोदी, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, मॉट (मथुरा)	विषय : 'भारत के आर्थिक विकास में ई-कॉमर्स का योगदान'
58. खेल सप्ताह	5.2.2014 से 10.2.2014 तक	**उद्घाटन सत्र-** मुख्य अतिथि- श्री आले हैदर जिला खेल अधिकारी **समापन सत्र-** मुख्य अतिथि- डॉ. डी. सी. गुप्ता मण्डलीय वन अधिकारी, अलीगढ़ मण्डल	
59. वनस्पति विज्ञान विभाग में अतिथि व्याख्यान	11.02.2014	डॉ. रेखा आर्य, एसो. प्रो. वनस्पति विभाग, टी. आर. कालिज अलीगढ़	विषय : 'डी.एन.ए. स्ट्रैक्चर एण्ड रैप्लीकेशन'
60. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	11.02.2014	महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएं	

Scanned by CamScanner

Visitor's View

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ जनपद का एक श्रेष्ठ कॉलेज है यहाँ का वातावरण शिक्षण कार्य तथा विभाग के प्रोफेसर एवं प्राध्यापक भी बहुत अच्छे है। अनेकों प्रसिद्ध नामित कार्यक्रम एवं आउटरीच के द्वारा समाज का मार्गदर्शन किया जाता है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में यह महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश में अपना स्थान प्राप्त करेगा।

12/7/18

डॉ० [illegible] जनता इण्टरमीडिएट कॉलेज [illegible]
अलीगढ़

[illegible]

Visiting the institution is the matter of pleasure to me. In my opinion, this institution is prestigeous regarding the maintenance of Zoology Deptt Faculties are very much intelegent & delige.

Dr. Virendra Kumar Varshney
Deptt of Zoology
D.S. College
Aligarh

It is a great privilege as well as opportunity to visit Gyan Mahavidyalaya on the day of Deepak. A dynamic administrator Mr. Deepak Goyal Jee and his team members are extremely praiseworthy. I wish all the best for this great institution, administrative staff, faculty members and the new generation of the nation who are the students of this Mahavidyalaya.

Dr. (Mrs) S. Roshma Jamal

The students were found to learn new/innovative ideas to make their teaching effective and meaningful.

Dr. Bhanu Pratap Singh
Assistant Regional Director
IGNOU Regional Centre
3/310 Marris Road Aligarh

Scanned by CamScanner

Practical lab should be properly arrange, because Geography is practical subject. Everything is well settled & maintained.

Dr. Abha Kiran Varshney
Deptt. of Geography
S.V. College. Aligarh.

I happen to be the Internal Examiner for BSc II (Chemistry Practical). The faculty is making all efforts to contribute to the purpose of chemical education. I wish them good luck. Thank you.

Dr Vinita Gupta,
Asst. Professor, Dept. of Chemistry,
TRKM, Aligarh

I feel Pleasure to visit this institution and seeing the behaviour of the staff is very cheerful. Teachers are too co-operative and students are disciplined. Building is maintained. good gardening.

Dr. K S [illegible]
D S college
Aligarh

Visiting Gyan Mahavidhyalaya on the occasion of Gyan Diwas was very rewarding experience. The initiatives taken by the institute are praise worthy particularly taking the interest of students into consideration. With the commitment from the teachers and associates, the college will definitely reach a new height in time to come.

16/12/2013
Dr. DR ANIL K DIMRI
REGIONAL DIRECTOR
IGNOU Aligarh.

It's a great honour to be a part of Gyan Mahavidhyalaya. I have delivered a lecture on bonding in molecules. I realized that the students of science stream responded very well which shows the dedication of the teachers towards the students. I wish all the very best and hope to visit this college again & again.

Dr Anjul Singh
Asstt Professor
D.S College, Aligarh

Scanned by CamScanner

Work is satisfactory

मनोविज्ञान विभाग में एक प्रोफेसर अनुभवी व्यक्ति Permanent होना चाहिए जिससे की कार्य का विभाग सुचारु रूप से चल सके क्योंकि प्रयोगात्मक विषय होने के कारण सभी क्षेत्र का ज्ञान होना आवश्यक है।

Deptt. of Psychology.
Dr. A. N. Quresh.
S. V. College, Aligarh

11 Practical lab should be properly arrange because psychology is practical subject. Every thing is well settled & great maintained.

Dr. Sunita Kumari
Deptt. of Psychology.
S.V. College, Aligarh.

It was the great pleasure to me visit in this institute. It is well furnish, green & clean. I hope, I will be going very well forever.

10.01.2013

Dr. S.P. Singh (Assist. Prof)
Physics Deptt, Govt. Degree College
Sambhal (U.P.)

All Students are not so good but they are hard working, they should be in good computer industries. I wish for them.

08/01/2013

Dr. Amit Singhal,
IET, Khandari Campus.
Dr. B.R. Ambedkar University
Agra

Gyan College is one of the colleges who are using new innovation method in teaching & learning. I appreciate this activity a lot. My best wishes.

Dr. Bhagat Singh, Associate Prof.
Dept. of Psychology, S.V. College, Aligarh

Scanned by CamScanner

I am Very Enjoyed Diwali festival in Gyan Mahavidyalay. I pray this festival Good may bless this College reached the Very highly top the mountain.

Prabhu Raghu
30-10-13

It is a matter of pleasure that the staff of Sh Gyan Mahavidyalaya is dedicated to the Quality education ensuring active involvement of students and new teaching methods. Students are receptive, sincere and well disciplined. Faculty members are working collectively for the betterment of College.

Thanks.

(Dr. Beena Agarwal)

Dr. Beena Agarwal
Associate Professor
D.S. College, Aligarh

महाविद्यालय का वातावरण [illegible] [illegible] संस्कारों से युक्त [illegible] यहाँ के [illegible] आने पर गर्व की अनुभूति हो रही है [illegible] महाविद्यालय के प्राचार्य [illegible] उत्तरदायित्वों के [illegible] [illegible] संस्थानों [illegible] परिस्थितियों के विपरीत [illegible] समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में इस महाविद्यालय की भूमिका निरन्तर सराहनीय एवं महत्वपूर्ण है। मैं महाविद्यालय के समस्त परिवार का आभारी हूँ कि इन्होंने मुझे यहाँ आने का अवसर प्रदान किया।

डॉ. [illegible] मोदी
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, मांट (मथुरा)
[illegible]

इस महाविद्यालय [illegible] के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है। यहाँ के शिक्षक निरन्तर प्रगतिशील हैं [illegible] विद्यार्थियों के [illegible] कॉलेजों की श्रेणी में [illegible] अग्रसर है। यहाँ के स्टॉफ में बहुत आत्मीयता है। यहाँ स्टॉफ विद्यार्थियों को अपने व्यवहार से सन्तुष्ट रखता है उनकी समस्या का समाधान करता है। यहाँ [illegible] बहुत अच्छा [illegible] प्राचार्य जी का व्यवहार बहुत उत्तम है। समस्त स्टॉफ में सद्भाव और अपनापन है। मैं इस महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं और आभार के साथ —
17/1/2014

डॉ० वेदवती राठी, रीडर
हिन्दी विभाग, धर्मसमाज कॉलेज
अलीगढ़

It was the great movement of my life when I was in Gyan degree college for conducting B.Sc. II physics practical Examination.

10.6.2013

DR. JEET SINGH (Assitt. prof.)
Head
Department of physics
Government degree college, Mant
Mathura

Scanned by CamScanner

I feel that Gyan Mahavidyalay is the best self financed college in Aligarh in terms of discipline, academic status, staff and infrastructure. best wishes for the college upliftment. thanks.

[signature] 22.11.13

Dr (Mrs) Krishna Agrawal, Deptt of Sociology
S.V. College, Aligarh

To know that Gyan Mahavidhyalaya also do social service and give admission to girls without fee, I am very happy, and hope that Gyan Mahavidhyalaya will achieve its goal and make its name in reputed colleges of Aligarh.

Dr BHAGAT SINGH
Dept. of PSYCHOLOGY
S.V. College Aligarh (UP)

I know that Gyan Mahavidyalya is great for B.Com, M.Com, BBA, BCA, B.Ed and IT Education for Rural Area. I am very happy and found it Institute 'A' Grade by NI [illegible]. It is all well arranged and clean. Students are disciplined. [signature]

Dr [illegible], Deptt of Commerce
SRK (PG) College, Firozabad (UP)

Exam is being conducted with dignity & purity

[signature]

Dr. Bharat Singh, Principal, MB College
Dadri (G.B. Nagar)

श्री ज्ञान महाविद्यालय में पुन: प्रवेश करने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ का शैक्षिक वातावरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। भूगोल विभाग के [illegible] [illegible] [illegible] अत्यन्त [illegible] [illegible] हुआ।

DR. S.L. Gupta
ex Associate Prof. & Head.
Deptt. of Geog.
P.C. Bagla College Hathras

Scanned by CamScanner

Today I attend the Annual sports day on campus. The organisation of sports was very good. They are celebrating many sports activities for the growth of development of students.

I Really appreciate the Promotion of sports activities in the college and we want to Encourage the sports person if the college desires.

Thanks

[signature] 05/2/14

A. [illegible]

Distt. sports officer

Aligarh

Meet the principal & Secretary of the College Shri Deepak Goyal ji and impressed by the vision that he keeps for the institutions. Best wishes for the future.

Prof. Sudhir Bhardwaj

BSA College

Mathura

It's a good experience to be the examiner here & I impressed by the secretary & principal, Twish that the lab condition will be more satisfactory next time.

Dr. Alpna [illegible]

Asstt Prof.

Agra College Agra

I'm Feeling nice to be practical examiner here. The interaction with the staff and the students was excellent. The institution seems to be serving the aim of providing quality and a value based education to the students.

[signature] 08/01/13

Dr. Anil Kumar

Lecturer, Deptt. of Botany,

R.B.S. College, Agra

The infrastructure and arrangements are excellent. All faculty members are devoted & sincere. I wish them good luck. I hope this academic institution will rise all its escalators.

with all good wishes [signature]

DR. K. P. Tiwari

Deptt. of Physics

Agra College, Agra

मैं [illegible] महाविद्यालय में आज [illegible] मुझे यहाँ का [illegible] [illegible]

[signature] 30/1/2013

(डॉ० [illegible]) [illegible]

[illegible]

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

ज्ञान महाविद्यालय में अमर उजाला के बेटी ही बचाएगी अभियान में उमड़े विद्यार्थी

युवाओं ने ली शपथ, बेटी के हक में जुटाएंगे जनमत

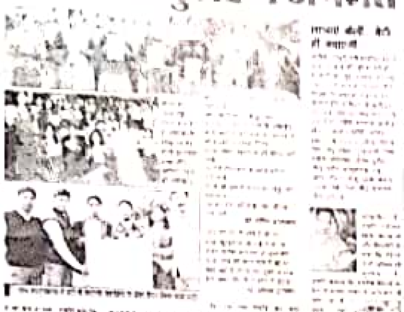

www.jagran.com दैनिक जागरण 23 जनवरी 2014

मेरो बांके बिहारी लाल...

THE SEA EXPRESS

छात्रों ने ग्रामीणों को किया जागरूक

05.02.2014

२४ फरवरी २०१३

'ज्ञान पुष्प' का हुआ विमोचन

मैं नन्हा सा फूल, मुझे अपनी...

अलीगढ़ | कार्यालय संवाददाता

जागरूकता कार्यक्रम

हिन्दुस्तान 08

प्रस्तुतियों से मोहा मन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सराबोर रहा। उत्सव के मुख्य अतिथि एएमयू के प्रोफेसर और एसएससी के निदेशक प्रो. एआर किदवई रहे। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सचिव दीपक गोयल ने निशानेबाज हिमानी भारद्वाज को 51000 का चेक भेंट किया। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ज्ञान-पुष्प 2012-13 का विमोचन भी किया गया। इस दौरान प्राचार्य डा. गणतंत्र, उप-प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता आदि मौजूद रहे। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी मो. शमीम अहमद, नगर आयुक्त शैलेन्द्र कुमार, और अपर जिलाधिकारी प्रशासन की पत्नी ऐश्वर्य सचान मौजूद रहे।

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित समारोह में ब्रज की होली प्रस्तुत करते छात्र-छात्राएं।

लोकगीत और लोकनृत्यों पर झूमे

अलीगढ़ | हिन्दुस्तान संवाद Folk Dance 7.3.13

बढ़-चढ़कर आगे आएं युवा

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से ज्ञान महाविद्यालय में गुरुवार को होली पर्व पर लोकगीत और लोक नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश की विलुप्त होती प्राचीन परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए युवा पीढ़ी को जागरूक किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मेयर शकुन्तला भारती व विशिष्ट अतिथि डीएम राजीव रौतेला, आरएएफ कमांडेंट भूपेन्द्र कुमार और ज्ञान महाविद्यालय के प्रबंधक दीपक गोयल द्वारा संयुक्त रूप से मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने गणेश वंदना प्रस्तुत कर सभी अतिथियों का स्वागत किया।

संबोधित करते हुए डीएम राजीव रौतेला ने ज्ञान महाविद्यालय व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के आयोजकों को बधाई देते हुए युवाओं को ऐसी कलाओं में बढ़-चढ़कर आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि ऐसी कलाएं तभी बचेंगी जब हम उनके कद्रदान होंगे। मेयर शकुन्तला भारती और आरएएफ कमांडेंट भूपेन्द्र कुमार ने कहा कि लोक कला के प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब हम स्वयं उनके दर्शक व श्रोता बनें। इस मौके पर एडीएम सिटी धीरेन्द्र सचान, सिटी मजिस्ट्रेट वीपी राय, एसीएम प्रथम सुनील कुमार, पूनम बजाजा एडवोकेट, दीपक गोयल, प्राचार्य डॉ. गणतंत्र कुमार गुप्ता, डॉ. गौतम गोयल, डॉ. गोविन्द वार्ष्णेय, उप प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, मनोज यादव, डॉ. ललित उपाध्याय आदि उपस्थित रहे।

प्रस्तुतियो ने बांधा समां

कार्यक्रम की शुरुआत बीएड के छात्र-छात्राओं द्वारा उड़ेला गुलाल लोकगीत पर सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति देकर किया गया। इसके बाद तो मानो मनमोहक प्रस्तुतियों की झड़ी सी लग गई। किसी ने एकल नृत्य प्रस्तुत किए तो कोई सामूहिक नृत्य से लोगों को झूमने पर मजबूर करता रहा। सभी ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

हिन्दुस्तान 31-10-2013

ज्ञान महाविद्यालय में लगे दीपावली मेले का शुभारंभ करती अतिथि। • हिन्दुस्तान

दीपावली मेले में स्टॉलों को सराहा

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में बुधवार को दीपावली मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न रंगारंग और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच छात्र-छात्राओं ने अपने स्टॉल सजाए।

उद्घाटन मुख्य अतिथि आरएएफ कमांडेंट अनिल कुमार ध्यानी द्वारा किया गया। इस दौरान मेयर शकुन्तला भारती, डीएस कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह, डॉ. पीके शर्मा, कृषि विश्वविद्यालय कानपुर की प्रतिभा राघव, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय की सचिव पूनम बजाज, एएमयू के यूजीसी एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज की रेशमा जमाल व सांस्कृतिक कर्मी मोहिनी विशिष्ट अतिथि व गेस्ट ऑफ ऑनर के तौर पर आरएएफ कमांडेंट की पत्नी ने कार्यक्रम में भाग लिया।

अमर उजाला अलीगढ़ शनिवार 25 जनवरी 2014 (12)

अंग्रेजी का ज्ञान भाषा संस्कृति तथा साहित्य के लिये आवश्यक है : प्रो. वीना

[illegible]

...मेति की बैठक चौ0 ...अध्यक्षता में सम्पन्न

[illegible]

अब शराब से चलेगी कारें

[illegible]

ग्लोबल समिट में ज्ञान महाविद्यालय ने लिया भाग

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के दल ने पीएचडी चैंबर नई दिल्ली में आयोजित एक दिवसीय ग्लोबल सीएसआर समिट-2013 में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत सतत साझा विकास पर व्यापक चर्चा की। ज्ञान महाविद्यालय की ओर से डॉ. गौतम गोयल, डॉ. बीडी उपाध्याय व डॉ. ललित उपाध्याय ने प्रतिभाग किया।

27 जुलाई 2013 हिन्दुस्तान

अलीगढ़ अमर उजाला 22/12/2013

[illegible]

हिन्दुस्तान 02

कैम्पस अलीगढ़ • बृहस्पतिवार • 25 सितंबर 2013

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया। [illegible] 250 [illegible] 32 [illegible]

रंगोली प्रतियोगिता में भावना अव्वल

अलीगढ़। डीएस डिग्री कॉलेज छात्र कल्याण समिति के द्वारा रंगोली प्रतियोगिता हुई। इसमें डीएस कॉलेज के अलावा एसवी कॉलेज, टीकाराम महाविद्यालय, मदर टेरेसा, ज्ञान महाविद्यालय और हैरिटेज इंटरनेशनल स्कूल के 65 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम स्थान पर डीएस कॉलेज की छात्रा भावना रहीं। दूसरे स्थान पर टीआर कॉलेज की आकांक्षा रहीं। तीसरे स्थान पर [illegible] कॉलेज की [illegible] कुमारी रहीं। सांत्वना पुरस्कार एसवी कॉलेज की तुलसी, ज्ञान महाविद्यालय की [illegible] और डीएस कॉलेज की नेहा शर्मा को मिला। निर्णायक मंडल में टीआर कॉलेज के चित्रकला विभाग की डॉ. रेखा शर्मा, एसवी कॉलेज के डॉ. [illegible] सिंह और [illegible] कॉलेज के [illegible]

घटनाक्रम हिन्दुस्तान 13/12/2013

सचिन पहलवान का सम्मान 16 दिसंबर को

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में बी0ए0 प्रथम वर्ष के छात्र सचिन उर्फ विक्की पहलवान की जीत पर उनका जोशीला स्वागत किया गया। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 वाई0के0 गुप्ता, उप-प्राचार्य डा0 एस0एस0 यादव, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के कार्यक्रम अधिकारी और महाविद्यालय के चीफ प्रोक्टर डा0 बी0डी0 उपाध्याय, डा0 ललित उपाध्याय, कला संकाय के मनोविज्ञान विभाग प्रभारी डा0 वी0सी0 गुप्ता ने उनका स्वागत किया गया। इस मौके पर विक्की पहलवान ने गुरूओं के चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सचिन उर्फ विक्की पहलवान को 16 दिसम्बर को आयोजित होने वाले ज्ञान दिवस पर ज्ञान केसरी पुरस्कार से सम्मानित मुख्य अतिथि व महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा किया जायेगा।

ज्ञान महाविद्यालय में खेरेश्वर में हुए दंगल के विजेता का सम्मान करते प्रबंधन समिति के पदाधिकारी।

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

हिन्दुस्तान 02
अलीगढ़ • शनिवार • 21 दिसम्बर 2013

दिल्ली के करणी सिंह शूटिंग रेंज में हुई नेशनल चैंपियनशिप में रोशन किया शहर का नाम

हिमानी ने किया इंटरनेशनल शूटिंग ट्रॉयल के लिए क्वालीफाई

अलीगढ़। हिन्दुस्तान संवाद

पैसे और सुख-सुविधा की कमी, लेकिन हौसला इतना बुलंद कि विपरीत परिस्थिति भी लक्ष्य तक पहुंचते कदम को डिगा नहीं पाई। ऐसा ही कुछ शहर की निशानेबाज हिमानी भारद्वाज ने कर दिखाया। माता-पिता और गुरुओं के आशीर्वाद ने बेटी को ऐसी हिम्मत दी कि आखिरकार उसने इंटरनेशनल शूटिंग ट्रॉयल के लिए क्वालीफाई कर लिया। उन्होंने दिल्ली में हुई 57वीं नेशनल चैंपियनशिप में जूनियर वीमेन ग्रुप के दो प्रतिस्पर्धाओं में लक्ष्य पर निशाना साधा दिया।

ज्ञान महाविद्यालय में बीकॉम फाइनल की छात्रा हिमानी भारद्वाज ने दिल्ली के करणी सिंह शूटिंग रेंज में 11 दिसंबर से 20 दिसंबर तक आयोजित नेशनल चैंपियनशिप के .22 50 मीटर जूनियर और सीनियर वीमेन थ्री पोजीशन व जूनियर वीमेन प्रोन में प्रतिभाग किया था। जिसमें उन्होंने थ्री पोजीशन जूनियर वीमेन में 600 में से 514 अंक और जूनियर वीमेन प्रोन में 600 में से 590 अंक हासिल किए। थ्री पोजीशन जूनियर वीमेन में क्वालीफाई के लिए 505 और जूनियर वीमेन प्रोन में क्वालीफाई करने के लिए 540 अंक हासिल करने थे। अब वे जनवरी में दिल्ली में होने वाले इंटरनेशनल ट्रॉयल में अपनी प्रतिभा दिखाएंगी। एक मध्यम परिवार से संबंधित हिमानी के पिता मुकेश भारद्वाज रेलवे स्टेशन के पास पान की दुकान लगाते हैं और उनकी मां चन्द्रप्रभा घर से बेल्ट बनाने का काम करती हैं। हिमानी के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि वे एक राइफल, कारतूस और किट खरीद सकें। मजबूरन उन्हें किसी भी प्रतियोगिताओं के लिए दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। इससे पहले भी 2012 में दिल्ली में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में टॉप-10 में स्थान बनाने की वजह से उनका चयन जापान में होने वाली प्रतियोगिता के लिए आयोजित इंटरनेशनल ट्रॉयल के लिए हो गया था। लेकिन आर्थिक स्थिति सही न होने और प्रशासनिक मदद न मिलने से वे उसमें भाग नहीं ले सकी थीं।

हिमानी की जुबानी

हिमानी का कहना है कि परिवार की स्थिति के कारण मेरी सबसे बड़ी कमी मेरे पास राइफल का न होना है। हर बार की तरह इस बार भी रेंज पर पहुंचने पर मुझे लगा कि शायद राइफल का इंतजाम नहीं हो पाएगा और मैं नहीं खेल पाऊंगी। लेकिन किसी तरह से मुझे राइफल मिली और मैंने बिना अभ्यास के ही प्रतिभाग किया। माता-पिता और सभी गुरुओं का आशीर्वाद है कि मैंने उम्मीद से अच्छा प्रदर्शन किया।

आगे होने वाली प्रतियोगिताएं

इस प्रतियोगिता में सफलता के बाद हिमानी को अब 8 दिल्ली में 25 दिसंबर से 15 जनवरी के बीच दिल्ली में होने वाले नेशनल गेम, पूना में फरवरी में होने वाले कुमार सुरेन्द्र शूटिंग चैंपियनशिप और जनवरी में दिल्ली में होने वाले इंटरनेशनल ट्रॉयल में भाग लेना है।

जागरण 13.09.2013
www.jagran.com

अब पढ़ाई के साथ कीजिए कमाई भी

- 13वीं पंचवर्षीय योजना के लिए बिजनेस सर्वे की तैयारी

वरिष्ठ संवाददाता, अलीगढ़ : एएमयू के छात्र हों या मंगलायतन के। डीएस के हों या एसवी के। अब छात्रों को ज्ञान के साथ कमाई का भी मौका मिलेगा। व्यावसायिक इकाइयों के सर्वे के लिए विभिन्न कॉलेजों के ग्रेजुएट स्टूडेंट्स को जोड़ने की तैयारी चल रही है। इसके लिए डीएम राजीव रौतेला ने क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी को पत्र भी लिखा है।

सर्वे 20 सितंबर तक किया जाएगा। इस काम में लगे प्रत्येक प्रगणक को निर्धारित प्रपत्र भरे जाने पर ग्रामीण क्षेत्र के लिए 50 रुपये प्रति इकाई व नगरीय क्षेत्र के लिए 30 रुपये प्रति इकाई की दर से मानदेय मिलेगा। इस काम में पैसे साथ उन्हें अपने विषय का व्यावहारिक ज्ञान भी मिलेगा। 13वीं पंचवर्षीय योजना के लिए केंद्र सरकार ने बिजनेस सर्वे कराने की योजना बनाई है। यह व्यवस्था पूरे देश में शुरू हो रही है। सर्वे के आंकड़ों के आधार पर ही पंचवर्षीय योजना को आकार दिया जाएगा। राज्य सरकार के स्तर से अर्थ व संख्या विभाग को इसकी निगरानी की जिम्मेदारी मिली है। शुरुआती सर्वे पूरा होने के बाद अलीगढ़ का बिजनेस रजिस्टर भी बनाने की योजना है। अलीगढ़ में खादी ग्रामोद्योग की 100 इकाइयां, शॉप एक्ट में 22 हजार दुकानें, लघु उद्योग में तीन हजार इकाइयां, सहकारी सम्बद्धता उद्योग 300 हैं। 250 फैक्ट्रियों के साथ यहां पर चिट फंड की 473 संस्थाएं काम कर रही हैं। सर्वे में प्रतिष्ठानों की आर्थिक स्थिति, वर्तमान में रोजगार, आगे की संभावना, सड़क, बिजली व पानी व दूसरे संसाधनों की पड़ताल हो सकेगी। प्रदूषण और पर्यावरण को भी सर्वे में शामिल किया जाएगा।

इनसे किया संपर्क

एएमयू, मंगलायतन विश्वविद्यालय, डीएस कालेज, एसवी कालेज, चौ. चरण सिंह शिवदान महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय खैर, श्री राममूर्ति गुप्ता राजकीय कालेज छर्रा और ज्ञान महाविद्यालय।

हिन्दुस्तान • अलीगढ़ • बुधवार • 13 फरवरी 2013 • 08

रसायन विज्ञान रटने का विषय नहीं

अलीगढ़। मंगलवार को ज्ञान महाविद्यालय में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि डॉ. मुकेश शर्मा ने कहा कि रसायन विज्ञान रटने का विषय नहीं है। थोड़ी सी ट्रिक का इस्तेमाल कर इसे आसानी से समझा जा सकता है। कम्प्यूटर की तरफ कट एंड पेस्ट पॉलिसी भी रसायन विज्ञान को समझने में मददगार होगी। इस दौरान प्रिंसीपल डॉ. वीके गुप्ता, वाइस प्रिंसीपल डॉ. वाईके गुप्ता, निदेशक डॉ. गोविंद वार्ष्णेय मौजूद रहे।

डीआईओएस पर डायट प्रिंसिपल का कार्यभार

अलीगढ़। डायट प्रिंसिपल अंजना गोयल को संयुक्त निदेशक बना दिया गया है। डायट प्रिंसिपल का कार्यभार अब डीआईओएस प्रमोद कुमार संभालेंगे। अंजना गोयल एडी बेसिक का भी कार्यभार संभाल रही थीं। एडी बेसिक का भी चार्ज डीआईओएस प्रमोद कुमार को सौंपा गया है। मंगलवार को डीआईओएस प्रमोद कुमार ने दोनों पदों का कार्यभार संभाल लिया है।

सौगात
दैनिक जागरण 01 फरवरी 2014
दैनिक

छूना है आसमान

इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास ने हिमानी की हिम्मत को सदैव बढ़ाया है। मुश्किलों ने उसे हर मौके पर घेरा, मगर वह कभी घबराई नहीं। संघर्ष के दौरान भी उसके हौसले बुलंद रहे। इसी की बदौलत वे .22 राइफल शूटिंग में नेशनल तक अपनी पहचान बना चुकी है। जानते हैं हिमानी के सफर के बारे में।

नौरंगाबाद कालोनी निवासी मुकेश कुमार भारद्वाज पान की एक छोटी दुकान से परिवार की जीविका चलाते हैं। उनकी बड़ी बेटी हिमानी भारद्वाज ज्ञान महाविद्यालय से बीकाम तृतीय वर्ष की छात्रा है। हिमानी की मां चन्द्रप्रभा देवी भी छोटा मोटा काम करके परिवार का खर्च चलाने में मदद करती हैं।

अलग सोच से बढ़ी आगे

हिमानी बताती हैं कि बचपन से ही वह कुछ अलग करना चाहती थीं। इसलिए स्कूल के समय से ही खेलकूद में आगे रहीं। वह 11वीं में पढ़ाई कर रही थी, उसी समय टीवी पर राइफल शूटिंग की प्रतियोगिता देखकर उसके मन में भी इच्छा जागृत हुई। यह बात 2011 की है। डीएवी कालेज में हिमानी ने एनसीसी ज्वाइन की। कैंप में उसे पहली बार .22 राइफल थामने का मौका मिला। निशाना सटीक लगा। फिर उसके हौसले बढ़ते गए।

बढ़ते गए कदम

इसके बाद हिमानी के कदम नहीं रुके। एनसीसी की तरफ से ही राष्ट्रीयस्तर की प्रतियोगिताओं में भी उसका दबदबा रहा। इसका निशाना गोल्ड पर सटीक बैठता गया। पुणे, लखनऊ, गोवा आदि स्थानों पर हुई प्रतियोगिता में हिमानी ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।

सिटी की शान

हिमानी भारद्वाज

मेडल ने दिलाई पहचान

हिमानी बताती है कि 2012 में उसे दिल्ली में सात गोल्ड मेडल मिले। तीन सिल्वर और दो ब्रांज भी। इसके बाद तो मुझे राइफल शूटिंग गर्ल के नाम से शहर में एक अलग पहचान मिल गई। जिला प्रशासन ने सम्मानित किया। ज्ञान महाविद्यालय में भी मुझे पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष जनवरी में हिमानी ने नार्थ जोन प्रतियोगिता में भी एक गोल्ड पर कब्जा जमाया।

पिता को दूंगी सहारा

हिमानी कहती है कि मेरे पापा का एक हाथ नहीं है। वह अपनी आजीविका किसी भी मौसम में घर पर नहीं बैठते हैं। उन्हें पता है कि यदि वह बैठ गए तो घर का खर्च नहीं चलेगा। इसलिए मैं उनका सहारा बनना चाहती हूं। कठिन मेहनत करूंगी। मुझे विश्वास है कि इस बार मैं भारतीय टीम में जरूर अपनी जगह बनाऊंगी। फिर, मैं पापा को कभी काम पर जाने नहीं दूंगी। क्योंकि उनकी मुश्किलें मुझसे देखी नहीं जाती।

❑ संतोष पाण्डेय

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

पैगाम-ए-अमन

हिन्दुस्तान के आयोजन पैगाम-ए-अमन में कवियों ने बिखेरे काव्य विधा के अलग-अलग रंग

कविता से किया दीवाना

अलीगढ़ | कार्यालय संवाददाता

दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते डीएम राजीव रौतेला साथ में एडीएम सिटी वीरेंद्र सिंह सचान।

कविता के कुछ ऐसा रंग चढ़ा कि देर तक तालियां गूंजती रहीं

कवियों की रचनाओं को सुनने के लिए शहर के लगभग सभी क्षेत्रों के लोग खासी संख्या में पहुंचे।

ये रहे मौजूद

इस दौरान कलक्टर राजीव रौतेला, एसएसपी मनींद्र सिंह यादव, एडीएम सिटी वीरेंद्र सिंह सचान, एडीएम फाइनेंस डी. डी. सिंह, एडीएम प्रशासन शत्रुघ्न सिंह, आर आयुक्त देवेंद्र दीक्षित, एसपी सिटी पंकज पांडे, जेल अधीक्षक एसपी यादव, सीओ प्रथम ज्ञानेंद्र सिंह, सीओ द्वितीय रामसोहन सिंह, भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री अनीता जैन, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मधु मिश्रा, सुभाष हरकुट, गौरव हरकुट, प्रवीण गुप्ता, नितिन पुरी, दीपा गुप्ता, सतीश सिंह, दीपू सर्राफ, गौरव मोदानी, अंकुर मोदानी, प्रांजुल गर्ग, प्रदीप अग्रवाल, भरत अग्रवाल, पवन खंडेलवाल आदि उपस्थित रहे।

तालियों की गूंज बता रही थी कि कवियों की रचनाएं न केवल स्तरीय थीं बल्कि लोगों की रुचि के अनुसार भी थीं।

इनका रहा सहयोग

- हरकुट इलेक्ट्रॉनिक्स
- कृष्णा इंटरनेशनल स्कूल
- प्रशांत एंटरप्राइजेज
- वैष्णवी अपार्टमेंट्स
- अल-हम्द एग्रो
- मां गायत्री आर्य कन्या महाविद्यालय एटा
- 112 साल की बुढ़िया की घुट्टी
- रेडियंट स्टार्स इंग्लिश स्कूल
- विवेकानंद कालेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
- वरुण ड्रामा वर्न एंड हार्ट सेंटर
- ज्ञान महाविद्यालय
- शन्नू बिल्डिंग पेन्ट कान्ट्रेक्टर

दुर्गाबाड़ी पर मां दुर्गा की मूर्ति स्थापित होने के बाद डांडिया खेलती युवतियां। • फोटो: हिन्दुस्तान

ज्ञान महाविद्यालय में सजी माता की चौकी

अलीगढ़ | हिन्दुस्तान संवाद

ज्ञान महाविद्यालय के ज्ञान भवन में गुरुवार को सप्तमी पर माता की चौकी का आयोजन किया गया।

पूजा अर्चना के अलावा डांडिया कार्यक्रम भी हुआ। कार्यक्रम में मेयर शकुन्तला भारती, आरएएफ के डिप्टी कमांडेंट नीरज त्यागी, कमांडेंट अनिल कुमार ध्यानी की धर्मपत्नी नीलम ध्यानी, ज्ञान महाविद्यालय की अध्यक्षा आशा देवी, सचिव दीपक गोयल व डीएस डिग्री कालेज के डा. प्रमोद कुमार शर्मा ने विशेष रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत हवन से की गई। इसके बाद दुर्गा माता की स्तुति व महिमा संबंधी भजन गाए गए। भजनों के बाद डांडिया कार्यक्रम हुआ। अन्त में सभी उपस्थित लोगों को प्रसाद वितरित किया गया और सामूहिक भोजन के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। संचालन डा. रेखा शर्मा ने किया।

इस दौरान प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता, उप प्राचार्य डा. एसएस यादव, कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डा. बीडी उपाध्याय, डा. ललित उपाध्याय आदि मौजूद थे।

फेयरवेल पार्टी में मौजूद दीप्ति और विजय अन्य अतिथियों के साथ।

दीप्ति मिस और विजय बने मिस्टर फेयरवेल

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के कला संकाय में सोमवार को बीए अंतिम वर्ष के छात्रों का फेयरवेल मनाया गया। जिसमें दीप्ती दुबे मिस फेयरवेल और विजय कुमार को मिस्टर फेयरवेल का खिताब दिया गया। फेयरवेल पार्टी का संचालन डॉ. ललित उपाध्याय, धर्मेन्द्र और मोहित शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में विशेष योगदान देने के लिए प्रमाणपत्र और शील्ड देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. गणतंत्र कुमार, उप-प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, डॉ. गोविन्द वार्ष्णेय, डॉ. बीडी उपाध्याय, डॉ. एसएस यादव, डॉ. नीतू सैनी उपस्थित रहे।

विदाई समारोह का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में कला संकाय द्वारा बीए अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें दीप्ति दुबे को मिस फेयरवेल और विजय कुमार को मिस्टर फेयरवेल बनाया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. ललित उपाध्याय व छात्र धर्मेन्द्र, मोहित ने किया। रवि कुमार, जयकिशन, आशा, शिवानी आदि ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। साल भर विभिन्न प्रतियोगिताओं में अव्वल रहने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। इस दौरान प्राचार्य डा. गणतंत्र कुमार, उप-प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता, डा. गोविंद, डा. बीडी उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान 26.02.2013

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

दैनिक जागरण 18.01.2014

ज्ञान महाविद्यालय में वेदवती राठी को प्रतीक चिह्न प्रदान करता स्टाफ।

भारतीय संस्कृति को अपनाने का आह्वान

◆ ज्ञान महाविद्यालय में व्याख्यान

अलीगढ : ज्ञान महाविद्यालय में आधुनिकता बनाम परम्परा विषय व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता डीएस कालेज हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर वेदवती राठी ने भारतीय संस्कृति अपनाने का आह्वान किया।

प्रो. राठी ने कहा कि खाओ पियो और मौज करो की शैली पश्चिमी संस्कृति का तरीका है। एक वर्ग हमारे देश में फूहड़पन, फिजूलखर्ची और वैभव प्रदर्शन कर रहा है। हमारी संस्कृति चिंतन प्रधान है और उसका आधार वैज्ञानिक है। भारतीय त्योहारों को मनाने के पीछे सामाजिक तथा वैज्ञानिक कारण है। पश्चिमी संस्कृति रिश्तों की बजाय बाजारवाद पर आधारित है। कार्यक्रम का संचालन डा. बीना अग्रवाल ने किया। यहां प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता, डा. ललित उपाध्याय, डा. सोमवीर सिंह, डा. वीकेश चन्द मौजूद रहे।

ज्ञान महाविद्यालय में मना ज्ञान दिवस

अलीगढ़ | हिन्दुस्तान संवाद

ज्ञान महाविद्यालय में सोमवार को ज्ञान दिवस व पुरातन छात्र समिति के समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रतिभावान व पुरातन छात्रों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों नृत्य, गीत, एकांकी, भजन, हास्य व्यंग्य व लोकगीत की प्रस्तुति की गई। इस दौरान रक्तदान शिविर में रक्तदान करने वाली महाविद्यालय की एक प्राध्यापिका तथा 50 विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र देकर, कुश्ती प्रतियोगिता में जिला केसरी का खिताब पाने वाले बीए प्रथम वर्ष के छात्र सचिन कुमार, भाविप द्वारा महाविद्यालय स्तर व क्षेत्रीय स्तर पर कराई गई भाषण प्रतियोगिता में प्रथम तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर हैदराबाद में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आमंत्रित ज्ञान महाविद्यालय की बीएड की छात्रा निधि वार्ष्णेय व बीबीए तथा बीसीए में 70 प्रतिशत या अधिक उपस्थिति वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बीटीसी के दिवंगत छात्र प्रमोद कुमार के माता-पिता को एक लाख की एफडी व इक्कीस हजार रुपये नगद की आर्थिक सहायता दी और छात्र द्वारा जमा की गई पूरी फीस की धनराशि भी वापस की। मंच का संचालन डॉ. एसएम यादव व डॉ. ललित उपाध्याय द्वारा किया गया। इस मौके पर सचिव दीपक गोयल, डॉ. गौरव गोयल, प्रबंधक मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, उपप्राचार्य डॉ. एसएम यादव, इग्नू के रीजनल डायरेक्टर डॉ. अनिल कुमार डीमरी, असिस्टेंट रीजनल डायरेक्टर डॉ. बीपी सिंह आदि उपस्थित रहे।

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

अलीगढ़

रंगारंग कार्यक्रमों से सराबोर रहा ज्ञान महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

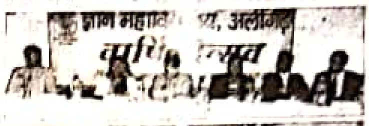

ज्ञान महाविद्यालय द्वारा एकदिवसीय एन0एस0एस0 का शिविर आयोजित

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वाधान में प्राथमिक विद्यालय रुस्तमपुर सकतपुर (मन्दिर नगला) में एन0 एस0एस0 का द्वितीय एक दिवसीय शिविर की अध्यक्षता प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती मीनाक्षी शर्मा व डा0वाई0के0 गुप्ता प्राचार्य द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। शिविर में प्रधान प्रतिनिधि श्री चन्द्रपाल ने राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयं सेवकों को समाज सेवा के महत्व के बारे में बताया। ज्ञान महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं ने घर-घर जाकर गाँव रुस्तमपुर सकतपुर (मन्दिर नगला) में परिवारों का सामाजिक शैक्षिक व आर्थिक आधारभूत सर्वेक्षण किया। इसके साथ ही एन0एस0एस0 के स्वयं सेवकों ने आपस में विभिन्न सामाजिक व शैक्षिक टॉपिक पर ग्रुप डिस्कशन किया। शिविर का संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डा0 वी0डी0 उपाध्याय द्वारा किया गया। इस अवसर पर डा0 एस0एम0 यादव उपप्राचार्य, डा0 ललित उपाध्याय तथा डा0 रेखा शर्मा, डा0 खजान सिंह, डा0 हरीश गोयल, डा0 विवेक मिश्रा, डा0बी0सी0 गुप्ता व, डा0के0पी0 सिंह, प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका, श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, श्रीमती बीती शर्मा, शिक्षामित्र श्रीमती बीना, धर्मपाल राकेश सहित एन0एस0एस0 स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविका ग्रामवासी उपस्थित रहे।

डांट से क्षुब्ध युवती द्वारा जहरीला

अमर उजाला

ज्ञान महाविद्यालय मे बनाए वोटर

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में युवाओं को मतदाता बनाने के लिए एसडीएम कोल विजय कुमार के नेतृत्व में शिविर लगाया गया। जिसमें युवाओं ने फार्म 6 भरकर अपने वोटर कार्ड बनवाने में उत्साह दिखाया। जिला प्रशासन ने कथावाचक विजय कौशल महाराज के आयोजन में भी युवाओं को जागरूक करने के लिए मतदाता पहचानपत्र बनवाने का शिविर लगाने का फैसला किया है।

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

सोमवार 14 जनवरी 2014

अपना शहर

बेटी ही बचाएगी
अमर उजाला की अनूठी पहल

ज्ञान महाविद्यालय में अमर उजाला के बेटी ही बचाएगी अभियान में उमड़े विद्यार्थी

प्रावदा
अलीगढ़ रविवार 1 दिसम्बर 2013 (12)

ज्ञान महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग में सम्पन्न हुआ अतिथि व्याख्यान

[illegible]

प्रावदा

शनिवार 14 सितम्बर 2013

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में पुरातन छात्र समिति का चुनाव सम्पन्न

अलीगढ़। अलीगढ़ ज्ञान महाविद्यालय [illegible] में गत दिन पुरातन छात्र समिति का चुनाव [illegible] संपन्न हुआ। [illegible] मुख्य अतिथि की भूमिका का निर्वाह किया। [illegible] प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया तथा कहा कि महाविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों पर पुरातन छात्र [illegible] प्राचार्य जी ने स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। [illegible] दिसम्बर को महाविद्यालय परिसर में ज्ञान दिवस मनाया जायेगा तथा निर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलायी जायेगी।

लोधा विकास खंड में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का आयोजन

[illegible]

॥ प्रणाम ॥

शनिवार, कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिप्रदा, विक्रम संवत् 2070

रक्तदान : ज्ञान महाविद्यालय में रक्तदान शिविर सुबह 10:30 बजे।

अलीगढ़ • शुक्रवार • 22 फरवरी 2013 • हिन्दुस्ता

छात्रों ने किया वृंदावन का भ्रमण

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के विज्ञान संकाय का एक शैक्षिक भ्रमण मथुरा-वृंदावन के लिए रवाना हुआ। प्राचार्य डॉ. जीके गुप्ता झंडी दिखाकर रवाना किए गए इस समूह में लगभग 40 छात्र-छात्रा और शिक्षक शामिल हैं। यहां बच्चों ने वृंदावन में मां वैष्णोदेवी मंदिर, अक्षरपात मंदिर, मंदिर जम्बू स्वामी, प्रेम मंदिर, बांके बिहारी जी, इस्कॉन मंदिर आदि जगहों के दर्शन किए। इस मौके पर विज्ञान संकाय प्रभारी डॉ. एसएस यादव, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. कविता देवी, ऊषा सेंगर, अमित वार्ष्णेय आदि ने अपना सहयोग दिया।

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

अमर उजाला अलीगढ़ | बुधवार | 6 फरवरी 2013

अमर उजाला.. आगे बढ़ो और आगे बढ़ाओ

हिमानी को मिलेगा ज्ञान गौरव पुरस्कार

जागी उम्मीद

- ज्ञान महाविद्यालय देगा गौरव पुरस्कार
- 13 फरवरी को वार्षिकोत्सव में समारोह

अमर उजाला ब्यूरो

अलीगढ़। अब तक अलीगढ़ जिले की गुमनाम शूटर हिमानी को 'अमर उजाला' का साथ मिलने के बाद कई संस्थाएं मदद के लिए आगे आने लगी हैं। उम्मीद है कि जल्द ही हिमानी को आर्थिक सहयोग के साथ नई राइफल और शस्त्र लाइसेंस की सौगात मिलेगी।

ज्ञान महाविद्यालय ने हिमानी को 13 फरवरी को ज्ञान गौरव पुरस्कार देने का ऐलान किया है। महाविद्यालय के सचिव दीपक गोयल और प्राचार्य गणतंत्र कुमार गुप्ता ने कहा है कि 'अमर उजाला' में हिमानी की पूरी कहानी पढ़ने के बाद महाविद्यालय ने उसकी मदद की योजना बनाई है। उपप्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने बताया कि कॉलेज के शिक्षकों और विद्यार्थियों को सूचना बोर्ड पर 'अमर उजाला' की दोनों खबरों का प्रमुखता से डिस्प्ले किया गया है, ताकि हरेक विद्यार्थी और शिक्षक हिमानी की मदद को आगे आ सके।

इस तरह से जितनी भी धनराशि एकत्र होगी उतनी ही धनराशि प्रबंध तंत्र मिला कर ज्ञान गौरव पुरस्कार देगा। जिससे युवाओं को इस तरह के प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित हों। सामाजिक सरोकार और मीडिया समिति के संयोजक डॉ. ललित उपाध्याय ने बताया कि 13 फरवरी को होने वाले वार्षिकोत्सव में हिमानी को यह पुरस्कार दिया जाएगा। इस मौके पर विद्यालय प्रबंधतंत्र की बैठक में प्लेसमेंट सेल के डॉ. एसएस यादव, मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. बीडी उपाध्याय, राष्ट्रीय सेवा योजना की अधिकारी अतिमा

धड़कन हिन्दुस्तान

मशीन का वितरण करते पदाधिकारी।

शादी के लिए दीं सिलाई मशीनें

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की ओर से स्वराज्य स्वावलम्बी योजना के तहत शुक्रवार को गांव बढ़ौली फतेह खां की तीन बेटियों को उनकी शादी के लिए सिलाई मशीन दी गई। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, डॉ. गौतम गोयल, डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. बीडी उपाध्याय ने शशि, गीता कुमारी और सुनीता को एक-एक सिलाई मशीन दी। इस मौके पर डॉ. गौतम गोयल, डॉ. एसएस यादव, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. खजान सिंह, मीना खान आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण

ज्ञान के शिक्षकों ने जुटाया ज्ञान

अलीगढ़ : एएमयू के यूजीसी एकेडमिक स्टाफ कॉलेज ने स्थानीय कॉलेजों के शिक्षकों के लिए चल रहा छह दिवसीय शार्ट टर्म कोर्स सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि राष्ट्रपति नामित ईसी सदस्य पूर्व आइआरएस एमके शेरवानी ने कहा कि शिक्षकों की राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका है। वर्तमान में उनकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। प्रतिभागी रेखा शर्मा ने कहा कि छात्रों के विकास में इस कोर्स से मदद मिलेगी। इसमें ज्ञान महाविद्यालय के 28 शिक्षक शामिल हुए। ज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य वाइके गुप्ता व गौतम गोयल का सम्मानित किया गया। एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के निदेशक प्रो. एआर किदवई आदि इसमें मौजूद थे।

अमर उजाला बृहस्पतिवार | 6 फरवरी 2014

ज्ञान महाविद्यालय में खेलकूद सप्ताह प्रारंभ

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद सप्ताह का शुभारंभ बुधवार को किया गया। इस अवसर पर एएमयू के अहसान अहमद, जिला क्रीड़ा अधिकारी आले हैदर, डॉ. वाईके गुप्ता आदि उपस्थित थे।

4 कल्पतरु एक्सप्रेस www.kalptaruexpress.com 23/11/2013

अपनों के बीच महिलाएं सुरक्षित नहीं

डॉ. कृष्णा अग्रवाल को सम्मानित करते पदाधिकारी।

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापिकाएं व छात्राएं।

कल्पतरु समाचार सेवा

अलीगढ़। महिलाओं की सुरक्षा हेतु समाज को नजर व नजरिया बदलना होगा। समाज में ... आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मअनुशासन ... की आवश्यकता है। यह बातें डॉ. कृष्णा अग्रवाल ने कहीं। वे ज्ञान महाविद्यालय कला संकाय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा 'सुरक्षित महिलाएं-विकसित समाज' विषय पर हुई व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रही थीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित उपाध्याय ने किया।

डॉ. कृष्णा अग्रवाल ने कहा कि महिलाओं में असुरक्षा का भय केवल अजनबियों से नहीं है, बल्कि अपनों के बीच में भी वे सुरक्षित नहीं है। ऐसे खतरों ... के लिए महिलाओं को जागरूक होना पड़ेगा, तभी अनुकूल माहौल बनेगा।

डॉ. ललित उपाध्याय ने बताया कि भारत में 2011 के एक आंकड़े के अनुसार 24206 दुष्कर्म, 35662 अपहरण, 8618 दहेज हत्या, 99135 उत्पीड़न व 135535 अत्याचारों की दुर्घटनाएं महिलाओं के संदर्भ में हुई है, जो कि चिंताजनक है। इस मौके पर डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. वाईके गुप्ता, डॉ. एसएस यादव, डॉ. रत्न प्रकाश, डॉ. बीडी उपाध्याय, आकांक्षा जौहरी आदि मौजूद थे।

ज्ञान महाविद्यालय ने भेजा 11 हजार रुपये का चेक

अलीगढ़। आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय की ओर से उत्तराखंड पीड़ितों की मदद को मुख्यमंत्री राहत कोष में ग्यारह हजार रुपये की सहायता राशि का ड्राफ्ट प्रशिक्षु आईएएस पंकज वर्मा को सौंपा।

इस मौके पर बीडी उपाध्याय, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. ललित उपाध्याय आदि मौजूद थे। हिन्दुस्तान 05-07-13

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय सुर्खियों में

प्रावदा

04-02-2014

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में वार्षिक खेलकूद सप्ताह का आयोजन

खेलकूद से खिलाड़ी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है -हेदर

हिन्दुस्तान 02/10/2013

घटनाक्रम

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।

महाविद्यालय में लैपटॉप चलाने का प्रशिक्षण

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के स्वराज्य सभागार में शासन की ओर से लैपटॉप के पात्र विद्यार्थियों को मंगलवार को लैपटॉप संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर एचपी कंपनी के प्रतिनिधि सुरेन्द्र व मुकेश ने छात्रों को लैपटॉप के बारे में समझाया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने बताया कि बीए, बीकॉम, बीएससी, बीबीए व बीसीए के पात्र छात्र-छात्राओं को लैपटॉप वितरण से पहले साल 2012 में इंटर पास की मूल अंकतालिका, महाविद्यालय की ड्रैस, परिचय पत्र व फीस रसीद लाना अनिवार्य होगा। इस मौके पर उपप्राचार्य डॉ. एसएस यादव, डॉ. बीडी उपाध्याय, डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. प्रमोद कुमार उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान अलीगढ़ • शनिवार • 23 फरवरी 2013 06

घड़कन

सामाजिक चेतना रैली में दिया संदेश

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की ओर से गांव मडराक में चल रहे एनएसएस के सात दिवसीय शिविर में सामाजिक चेतना रैली का शुभारंभ ग्राम प्रधान रनवीर सिंह ने किया। सामाजिक चेतना रैली में स्वयं सेवकों ने पोलियो को मिटाने, पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया। गांव में गलियों में हाथों पर लिखे जागरुक संदेशों को बताते हुए नारे लगाए। गली की दीवारों पर नारा लेखन का कार्य भी किया। शिविर के दौरान ग्रामीणों को पशुओं में फैलने वाली बीमारी की रोकथाम करने के उपायों को पशु चिकित्सा विभाग के डॉ. राजू उपाध्याय ने बताया। इसस मौके पर उप प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, डॉ. अंतिमा कुलश्रेष्ठ, डॉ ललित उपाध्याय, यतेन्द्र कुमार, सत्यवान उपाध्याय, राकेश कुमार, दीपक पाठक आदि लोग मौजूद थे।

---

folk dance U.P. Govt. Event

अलीगढ़, 8 मार्च 2013

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ज्ञान महाविद्यालय में झलकी लोक संस्कृति

हिन्दुस्तान अलीगढ़ • 24 अक्टूबर 2013

वोटर आईडी के लिए लगाए दो बूथ

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में बुधवार को एनएसएस की ओर से पहचान पत्र शिविर आयोजित किया गया। इस मौके पर डॉ.बीडी उपाध्याय, डॉ. जेके शर्मा, डॉ.सोमवीर सिंह ने कालेज के कई विभागों में कुल 187 आवेदन पत्र जमा किए गए। इस दौरान डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. रेखा शर्मा रहे।

दैनिक जागरण अलीगढ़, 7 जुलाई 2013

श्रद्धांजलि सभा में रो पड़े परिजन

अलीगढ़ : उत्तराखंड के शहीदों के लिए शनिवार को हुई श्रद्धांजलि सभाओं में अपनों के आंसू टपक पड़े। ज्ञान महाविद्यालय में प्राचार्य वाइके गुप्ता की अगुवाई में बीटीसी संकाय के विद्यार्थियों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। यहां डा. अंतिमा कुलश्रेष्ठ, डा. ललित उपाध्याय, डा. रत्न प्रकाश, शोभा सारस्वत, रेशु अरोड़ा, पुष्पेंद्र सिंह आदि थे। प्राचार्य वाइके गुप्ता समेत पूरी कमेटी ने जागरण उत्तराखंड राहत कोष में 5,100 रुपये की मदद भी दी। इसके पहले मुख्यमंत्री राहत कोष में भी 11,000 रुपये की मदद दी गई है।

SUNDAY अमर उजाला अलीगढ़ । रविवार । 7 जुलाई 2013

तीर्थयात्रियों को दी श्रद्धांजलि

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के बीटीसी संकाय के छात्र छात्राओं ने उत्तराखंड में मारे गए तीर्थयात्रियों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा। संतोष वाटिका में हुई सभा में छात्र, छात्राएं, शिक्षक और प्राध्यापक मौजूद रहे। इस मौके पर वाईके गुप्ता, अंतिमा कुलश्रेष्ठ, ललित उपाध्याय, रत्नप्रकाश, शोभा सारास्वत, रेशु अरोड़ा, पुष्पेंद्र सिंह उपस्थित रहे।

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

श्रीमती आशा देवी	अध्यक्षा
श्री अवि प्रकाश मित्तल	उपाध्यक्ष
श्री दीपक गोयल	सचिव
श्री असलूब अहमद	कोषाध्यक्ष
डॉ. मधु गर्ग	सदस्य
श्री अनिल खण्डेलवाल	सदस्य
श्री ब्रजेन्द्र मलिक	सदस्य
इं. इन्द्रेश कुमार कौशिक	सदस्य

ज्ञान महाविद्यालय की सहयोगी संस्था

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

आगरा रोड, अलीगढ़–202001

NCVT व श्रम मंत्रालय से मान्यता प्राप्त

इलैक्ट्रीशियन व फिटर

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक, प्रबन्धक, प्राचार्य एवं स्टाफ

Scanned by CamScanner

Mob.: 9219419405
E-mail : gyanmv@gmail.com
Website : www.gyanmahavidhyalaya.com

मुद्रक : नवमान आफसैट प्रिन्टर्स – 09358251032

Scanned by CamScanner